पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

www.bhojpuripaati.com

अंकः 97-98(संयुक्तांक) **दिसम्बर-मार्च' 2021**

(तिमाही पत्रिका)

प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी

ग्राफिक्स
जितेन्द्र सिंह सिसौदिया

कंपोजिंग
अरूण निखंजन, सत्यप्रकाश

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा0 ओम प्रकाश सिंह

संपादक
डॉ0 अशोक द्विवेदी

आवरण–चित्र
आशीष पी. मिश्रा

'पाती'- परिवार (प्रतिनिधि)

हीरालाल 'हीरा', शशि प्रेमदेव, अशोक कुमार तिवारी (बलिया) डा० अरूणमोहन 'भारवि', श्रीभगवान पाण्डेय (बक्सर), कृष्ण कुमार (आरा), विजय शंकर पाण्डेय (वाराणसी), दयाशंकर तिवारी (मऊ), जगदीशनारायण उपाध्याय (देवरिया), गुलरेज शहजाद (मोतिहारी पूर्वी चम्पारण), डा० जयकान्त सिंह, डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), भगवती प्रसाद द्विवेदी, दिनेश पांडेय (शास्त्रीनगर, पटना), आकांक्षा (मुम्बई), अनिल ओझा 'नीरद' (कोलकाता), गंगाप्रसाद 'अरुण', (जमशेदपुर), डा० सुशीलकुमार तिवारी, गुरूविन्द्र सिंह (नई दिल्ली)

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

e-mail:-ashok.dvivedipaati@gmail.com,

संपादन-कार्यालयः-

टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया–277001 एवं
एफ–1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली–19
मो0– 08004375093, 08707407392, 91–8373955162

सहयोगः
एह अंक के–70/-
सालाना सहयोग-300/- (डाक व्यय सहित)
तीन वर्ष के सहयोग-800/-
आजीवन सदस्य सहयोगः
न्यूनतम-2500/-

[अशोक कुमार द्विवेदी के नाम से चेक/डी०डी० अथवा
SBI A/C No. 31573462087, IFSC Code-SBIN0002517
में नकद सहयोग जमा करके हमें सूचित करें]

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के आपन निजी हऽ दायित्व लेखक के बा, ओसे पत्रिका परिवार के सहमति जरूरी नइखे)

एह अंक में...

हमार पन्ना –
- कोरोना काल क बेवसी / 3

संस्मरण –
- गाँव के नाटक आ नचनिया के खोज / गंगा प्रसाद अरुण / 19–21

आलेख –
- संत कवि बुलाकीदास आ घाँटो राग / आनन्द 'संधिदूत' / 22–24

इयाद –
- **''पाती'' कविता–अंक–सितम्बर 1993 सम्पादकीय सहित / 6–18**
- उमाकान्त वर्मा / 8
- मोती बी.ए. / 9–11
- पाण्डेय कपिल / 12
- भोलानाथ गहमरी / 12
- आनन्द सन्धिदूत / 13
- कुमार विरल / 14
- भगवती प्र0 द्विवेदी / 15
- दयाशंकर तिवारी / 15
- प्रकाश उदय / 16
- अनीस श्रीवास्तव / 17
- सतीश्वर सहाय वर्मा / 17
- अवधेन्द्रदेव नारायण / 18

कहानी–खण्ड –
- **तिसरा दशक (नब्बे के बाद) के कुछ चर्चित कहानी–'खण्ड–3' / 25–77**
- भोर ना भइल / अरुण मोहन भारवि / 26–67
- मछरी / रामेश्वर सिंह काश्यप / 28–30
- सुद्ध–असुद्ध / शिव प्रसाद सिंह / 31–34
- दुख–सुख / विश्वनाथ प्रसाद तिवारी / 35–38
- पियासल पण्डुक / प्रेमशीला शुक्ला / 39–41
- बिना ओरिचन के खटिया / विष्णुदेव तिवारी / 42–44
- हम बदलल नइखीं / कृष्णानन्द कृष्ण / 45–50
- चितकबरा पहाड़ / अशोक द्विवेदी / 51–56
- जरसी गाइ के बछरू / रामदेव शुक्ल / 57–61
- महासमर ठाटे परेला / प्रकाश उदय / 62–64
- दयालु / बरमेश्वर सिंह / 65–68
- गुरु दक्षिणा / अनिल ओझा नीरद / 69–77

अंक के कवि –
- **दिनेश पाण्डे / 78–80**

कविता–गीत–गजल –
- ओम धीरज / 4–5
- सुभाष पाण्डेय / 81
- अशोक द्विवेदी / 5 एवं कवर–3
- गुरुविन्द्र सिंह / 24
- अशोक कुमार तिवारी / 41
- योगेन्द्र शर्मा'योगी' / 82
- गंगा प्रसाद अरुणा / 83
- शशि प्रेमदेव / 84
- हीरालाल 'हीरा' / 85
- अनिल ओझा 'नीरद' / 108

कहानी –
- जनरेशन गैप / अरविन्द कुमार सिंह / 87–88
- गुदगुदी में लोर / आशारानी लाल / 89–91

सामयिकी –
- काल कोरोना / राजगुप्त / 92–93

लघु संस्मरण –
- जग सुधरी / विजय मिश्र / 86

कथक्कड़ी –
- कथा भर औकात / प्रकाश उदय / 94–103

पुस्तक चर्चा / समीक्षा –
- जाये क बेरियाः लोकमन आ लोकचरित के स्वर / 104
- तोहरे तोहके सउँपत काव्ययात्रा / डा0 अशोक द्विवेदी / 107
- भोजपुरी साहित्य समृद्धि में 'नीक–जबून' / डा0 अर्जुन तिवारी / 111–112

सांस्कृतिक गतिविधि –
- पृ0 109–110

(तीन) सगरो जहर बा

का खाईं का पीहीं
सगरो जहर बा।
गँउवाँ क मनई
शहरियो से बड़ बा!!

दूधवा ओगारै छछात देइ सूई
बछरू गदेला भले जाँय मूई
बेहया क फूल जूही
कहि-कहि बिकाला
नइखे कानून नाहीं
दउओ क डर बा!

डारी क आम पेड़ लागल पपीता
जातै बजार देह बान्है पलीता
मारे लँ रोज-रोज रोवै न देंय
चुरइन मिलावट क
एतना जबर बा!

हाथ भर काँकर क नौ हाथ बीया
इमिली से बड़ बाटे इमिली क चींया
पइसा क लँगड़ी पहड़वो के डाँकै
टी वी विग्यापन क
केतना असर बा!

❑ अभिज्ञान शाकुन्तलम् सा-14 / 96—55,सारंगनाथ कालोनी, सारनाथ, वाराणसी - 221007

अशोक द्विवेदी

फागुन-चइत

पियरी क रंग उड़ि गइले
कोइलि तोर चहक न गइले।
हहरत दिनवाँ ओरइलें
कोइलि तोर, अहक न गइले।

अरिया चलावे, मोर सिहिकै परनवाँ
नहँकै चिहुँकि उठे/सजी मधुबनवाँ
कटहर बिरिछ मदइले
कोइलि तोर अहक न गइले।

केकर सुधिया/करक उठै हियरा
कउन रे कँटवा/घँसल तोरे जियरा
मोजरल अमवाँ सिहइले
कोइलि तोर अहक न गइले।

अल्हर बतसवा के/सुइया से छेदे
कवन पिरितिया जे/कुरुछे-कुरेदे
रँगवा क दिन निगिचइले
कोइलि तोर डहक न गइले।

❑ टैगोर नगर, बलिया-277001

कविता-अंक "पाती", सितम्बर-1993

धुँधुआइल जनचेतना आ साहित्य पर संकट

आज के असहाय, उपास, बेचैन आ फिकिरमंद अदिमी के दिनो-दिन झुरात जीवन-रस आ सौंदर्य-चेतना के महसूस करे वाला रचनाकार का सोझा सबसे पहिले जेवन चुनौती बा- ऊ 'जोगवला' आ 'जगवला' के बा। आडियो-वीडियो का धुआँधार में लिखित-साहित्य के अस्तित्व पर अइसन संकट कबो ना घहराइल रहल हा।

आधुनिकता का पइसार का साथे कई गो विकृतियो समाज में आ गइली सन। ओम्में सबसे खतरनाक विकृति रहे सांस्कृतिक चेतना आ स्तरीय साहित्य से लोगन के विरति। कुछ लोग एकरा खातिर आजु के व्यस्त आ कठिन जिन्दगी के आ कुछ खुद साहित्यकार के कारन मानेला। हमरा समझ से भारतीय जनमानस आ ओकरा सोच के भटकावे-, ओकरा के घटिया फिलिम आ बाजारू साहित्य का ओर झुकावे वाला 'माध्यम' आ 'लोग' ज्यादा जिमवार बा। मीडिया आ सरकार एह विकृतियन के रोक का बजाय चुपे-चुपे प्रोत्साहित कइलस। व्यवसायीकरण धीरे-धीरे सभके दबोचत चलि गइल।

आजु देश के बड़-बड़ अखबार आ पत्रिका बन्द होत जा रहल बाड़न स। त छोट-मोट पत्रिकन के का औकात? टेप, टी०वी० आ वी०डी०ओ० का एह घुमगज्जर में साहित्य के सरलीकृत मनोरंजन के चीझु बनावे के साजिश आ अभियान चल रहल बा। आ सरकार मने-मन खुस होतिया कि चलऽ हमनी का तरफ से जनता के ध्यान बँटल बा। देश के नामीगिरामी समाजिक आ साहित्यिक संस्था खाली नाँवें के नौबत बजावत बाड़ी सन। कबो साल-दू साल पर कवनो समारोह भा कवनो अधिवेशन आ ओमे अपना हया-लाज के केहूँ तरे तोपला-ढँकला का अलावे एह संस्थन में कवनो चेतना जगावे आ नया बदलाव खातिर संघर्ष करे के प्रवृत्ति मू गइल बा।

अइसना में हर साहित्यकार-पत्रकार के कर्त्तव्य बा कि ऊ अब्बो से आत्मनिरीक्षण करो। आत्मविस्मृति आ आत्ममुग्धता से उबरि के एकजुट होखो... मिलि जुलि के हर जगह अइसन-जागरूक मंच बनाओ जहाँ से एह विकृतियन के दूर करे के जुझारू अभियान चलावल जा सके। कवि सम्मेलन आयोजित करे वाला लोगन से निहोरा बा कि ऊ विदूषक आ भांड़ कवियन से परहेज राखो आ जनचेतना के जगावे आ ओकरा 'सोच' के बदले वाला स्तरवान कवियन के प्रोत्साहित करो। सघन विचार गोष्ठियन में, उत्कृष्ट प्रतिनिधि साहित्य पर चर्चा होखो; गम्भीर, सरस आ उद्देश्यपूर्ण कविता के पाठ होखो।

संवेदनशीलता कवि के पहचान हऽ। ऊ एही का जरिये समय-सत्य के साक्षात्कार करेला। अपना युगबोध के सहज संस्कृति-चेतना से सँवार के समाज के 'सोच' के बदले खातिर ऊ ना उकसाईआ, ना जगाई त आज का संदर्भ में ओकर कविताई बेमानी बा। अपना 'अहं' के विसर्जित क के जन-जागृति खातिर, उद्देश्यपूर्ण दिसा देबे के जिमवारी रचनाशील लोगन के लेबहीं के पड़ी।

समकालीन भोजपुरी कविता

भोजपुरी कविता अपना लमहर विकास-यात्रा में अब अइसन मोकाम पर पहुँच रहल बिया कि ओकरा के दोसरा भाषा के साहित्य का आगा सम्मान से राखल जा सकेला। लोक-संपृक्ति आ सांस्कृतिक चेतना से जुड़ल लोकगीतन के थाती त ओकरा लगे पहिलहीं से रहे, अब ऊ अपना तेवर, लहजा, मिठास आ जिनिगी के भीतर समाइल शब्द संदर्भन का जरिये नया काव्य-प्रतिमान गढ़े जा रहल बिया। पारंपरिक छंद आ लय-विधान में एक से बढ़ के एक गीत आइल; सानेट, फ्री-वर्स आ नव-शिल्प-संरचना में भोजपुरी कविता धिरही-धीरे आपन पहिचान कायम कइलस। सुघ्घर चित्रमय-प्रतीकात्मक संकेत-सूतन से बिनाइल भोजपुरी कविता एह दशक में परंपरा से हटि के कबो सपाट बेयान, कबो अथ-गर्भ वक्र-कथन कबो संवाद का मुद्रा में लउकति बा।

कुछ लोगन के कहनाम बा कि एकरा पर बाहरी प्रभाव पड़ रहल बा; बाकि गौरतलब बात ई बा कि संरचनात्मक परिवर्तन का बावजूद सशक्त कवितन में भोजपुरिया तेवर आ अनुभुति आन्हरों के लउकि जाई। आधुनिक जीवन-शैली आ समांतर भाषा-साहित्य का प्रभाव से कविता का लहजा, तेवर आ कथन में विविधता, तिक्खरपन आ गहराई आइल बा। एही से ऊ कहीं वक्तव्य, कहीं मुनादी, कहीं एकालाप आ कहीं बातचीत का लय में लउकति बा। भावो बा आ अनुभूति के गहिराइयो बा।

आजु के विसंगति भरल, जटिल मानव जीवन के अभिव्यक्त करत खा, ईमानदार कवि कल्पना के हवाई उड़ान नइखे भर सकत, सिरजन करत खा ओके कहीं संकेत, कहीं प्रतीक, कहीं व्यंग, कहीं चित्रविधान के सहारा लेबे के परत बा। असलियत के चित्रण खातिर वाजिब शब्दन के कलापूर्ण संयोजन आ भाषा के अर्थ-गर्भ इस्तेमाल से भोजपुरी कविता अउरी समृद्ध भइल बिया।

एह अंक के कई गो अइसन सशक्त कविता बाड़ी सन जवन आगे चल के भोजपुरी कविता के प्रतिमान बनावे में मदद करिहन स। नइकी पीढ़ी के कुछ कवि अइसन बाड़न जिनका लेखनी से नया संभावना उभर रहल बा। अइसन कवियन में प्रकाश उदय, दीप्ति, अनीश आ विजय प्रताप 'आँसू' के कविता अपना कथ आ भाषिक रचाव में एगो पहिचान बनावत लउकत बाड़ी सन।

हम कविता के नाम, विशेषण आ वाद से ना जोड़ि के, खाली 'कविता' का रूप में परोसे के कोशिश कइले बानी। 'कविता आ कविकर्म' पर खुद कवि के कहनाम महत्वपूर्ण होला। हर कवि के आपन अलग रचना-संसार बा। अभिव्यक्ति, टेकनिक, भाषा के बिनावट, कविता का संरचना में समाइल संदर्भ, अर्थ, लय, गति, आ काव्यानुभूति का लिहाज से इ 'फरक' लउकी। एह 'फरक' के कारन होला कवि के आपन मौलिक दृष्टि, अनुभूति आ सृजनात्मकता। कवनो अनुभूति केहू के कम, केहू के बेसी, केहू के सतही, केहू के गहिर हो सकेले.... कारन ओकर अलग-अलग संदर्भ आ भावभूमि के स्तर (स्टेज) होला। एह अंक के कविता रउवा से 'सहृदयता' का साथे 'समझदारी' के मांग करत, अपना में डूबे, आ अपना के समझे के न्यौता देत बाड़ी सन।

अशोक द्विवेदी

सितंबर 1993

पाती "कविता विशेषांक", सितम्बर, 1993

'कथ' आ शिल्प के तनाव में अर्थ के 'लय'

डॉ. उमाकान्त वर्मा

(अपना कवनो परिचित-अपरिचित, बोझिल स्थिति से उकेरल प्रभाव के मानसिक दबाव के महसूस करीले त हमार सृजन प्रक्रिया सुगबुगाले। ई दबाव कथ आ शिल्प दूनों में होला आ तबतक होत रहेला जबले ऊ मूर्त होके अभिव्यक्त होखे खातिर बेबस ना कर देव। दूनों के बीच के द्वंदे सायद हमरा मानसिक तनाव के जनम देला जेकरा के पूरा अभिव्यक्त करे का चेष्टा में हम अभिव्यक्ति के नया आयाम खोजत रहीले। एह खोज में 'लय' हमरा के सृजन पीड़ा से छुटकारा दियावेला।)

(एक)

हउवा के सीढ़ी से उतर
रोजे चाँदनी जइसन सरके
जन-जन के कंठ से बोले वाली
ए श्वेतवसना आवऽ
तू आवऽ।
आज हमरा मन के गाँव में
कउनो मीर कासिम के करिया चदरा
गिर गइल बा।
आज हमरा मन के मंडप में
कउनो फरहर सोनहुला केस वाली उरबसी के
बोल कजराइल बा
आज हमरा मन के समुन्दर में
करिखा लिपाइल पोताइल कउनो मल्लाह के
नाव आके लाग गइल बा।
अइसन समय/'प्रज्ञा' के दियरी जरा
'बोधिसत्व' के किरिन फेंक आवऽ,
तू आवऽ,
ए श्वेतवसना, तू आवऽ।

(दू)

अनचिन्हार जंगल के
बीच से ससरत, काँपत
टेरत हम ऊ डँड़ेर हईं
जे आँसू बोथाइल आँखि से
हर पल दिसा हेरत रहीले।
हमहीं कुन्ती, सीता अउर राधा हईं
जे अपना कोखि में
सरापित जुग के डोर पर
थिरकत मुसुकी छीटत रहीले।
हमहीं लेके अन्हरिया से अँजोरिया
कटोरा भर चंदन छिरिक के
अँचरा पसारत/नेह-दान देत रहीले।
सिकाइत तोहरा से नइखे
ऊ लोग से बा
जे हमनी के कुँआर सोहागिन बनावेला
आ कबहूँ
कवनो दुःसासन अइसन
कोलाहल का बीचे हमनी के/लँगटे करत
परत-दर-परत उघारत
ठठात हँसेला।
अब हमनी के भठ्ठी हो गइल बानीं
आ एगो आगि के लौ
जेके तोहरा अस लोग
नीबू अइसन निचोड़ के
अपना खुर्दुरा तरहत्थी में मींसि के
कवनो घूरा पर
कबहूँ कतहीं ना फेंक सके।

❑ कन्हाई मल, हाजीपुर, वैशाली-844101

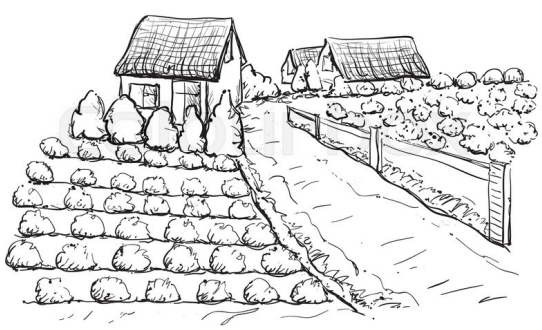

कविता और कविकर्म

मोती बी.ए.

(जितनी गहरी अनुभूति उतनी ही श्रेष्ठ कविता। अनुभूति के मध्य से कल्पना का उदय होता है। कल्पना उर्ध्वमुखी होती है। ऊँचाई की कोई सीमा नहीं होती, लेकिन इसकी ऊर्जा की अनुभूति ही होती है। जितनी गहरी अनुभूति उतने ही ऊँचे उठती है कल्पना। कविता और कवि कर्म इस अवस्था से भिन्न नहीं होते। लगनशीलता और क्षमता एक तीसरी शक्ति है जिसका संबंध अनुभूति की गहराई और कल्पना की ऊँचाई से होता है। रसात्मकता ही एक सम्बल है, जिसके अभाव में यह खेल नहीं खेला जा सकता, साधारणीकरण में इसकी पूर्ण व्याप्ति है।)

(एक) रचना प्रेम

देहि त्यागि के
अतमा बा बइठल-
एगो कगरी!
सोचति बा-
कइसे फूँकीं ऐ देहि के
ई हमार आवास ह
कइसे अपने घर में
हम अपनहीं लगाईं आगि
एके एहीगाँ छोड़िके
कँहवा जाईं भागि?
ई हमार रचना ह
का जियते जिनिगी
क दीं एकर श्राद्ध!
देहि त्यागि के
आतमा बा बइठल
एगो कगरी!

(दू) खून-आपन-आन

ओकरे देहि में
आपन खून
त हइए नइखे
जेतना पियले रहल ह
खून दोसरा के
एक चटकन में
बोकरि के मरि गइल।
मच्छर के जाति।
जेकरे देहिये
आपन खून ना होखे
दूसरे के खून पीके
जे जियत होखे
ऊ ह मच्छर!
दोसरा के पीयल खून
पचावल ना जाला
खाली बोकरल जाला!

(तीन) इयादि से

इयादि से कहि द जाउ-
चलि जाउ!
आवे के ढेर मन करे त
अगिला जनम में आवो
हमरे मुअला के बाद
ईहो कहि द ओसे/बीतल बाति ऊ भुला देउ
जब बीतल बाति
आवे के नइखे त
बेवा मेहरारुन मतिन आके
ऊ करबे का करी!
हमहूँ कहीं जाए के तयारी में बानी
जतरा में ऊ-
घड़ी मति काटो!
फेनू-
जब आइए गइल बा
त कहीं जाउ मति
रहो बाकी हमरे सँगे
मति चलो!

(चार) राखी में आगी

राखी में कइसे-
जगाईं हम आगी?
ईहे एगो सोच बा
बड़ा भारी सोग बा
जे उभरि आवऽता
सभे एगो भूत ह
ईहे वर्तमान बा।
सभे साथ छोड़ि दीहल-
केहू जी के
केहू मूँ के,
एकला चलो!
एकला चलो!
कहवाँ?
केकरे लगे?
का करे?
राखी में कइसे
जगाईं हम आगी?

(पाँच) मुर्दा संख

पाञ्चजन्य त ढेर बजवलऽ
आवऽ भाई
मुर्दासंख बजावल जाउ!
ढहल भीति उठावल जाउ
सूतल देस जगावल जाउ
बिगड़ल भागि बनावल जाउ
ऊखि छीलि भइलऽ त आवऽ
अब ढेंढ़ी निकिआवल जाउ
होरहा फूँकऽ
कउड़ा बारऽ
खूब लहर करऽ तापल जाउ
पाञ्चजन्य त ढेर बजवलऽ
आवऽ भाई
मुर्दासंख बजावल जाउ!

(छह) सानेट

अहिंसक बाघ जो होखे बड़ाई सब करी ओकर
अहिंसा के बड़ाई के सुनी बकरी के मूँहे से?
पुजाली देस में दुर्गा सवारी बाध ह जेकर
नहालें व्यालमाली नित्य गंगा जल से, दूधे से
समूचा देस होके एक बोले एक सुर से जो
खड़ा हों तानिके सीना चढ़ाके भौंह जो तिरछा
पहाड़े काँपि जाई आदिमी के बाति के कहो
सुटुक जाई सजे अणुबम जो तनिको बोलि दे कड़खा
चिरउरी हो रहल जेतना, घिनावन हो गइल बाटे
अहिंसा वीर के भूषण, बपौती ह सनातन से
अबे सझुरा रहल जे-जे, उहे अझुरा रहल बाटे
वफादारी में गद्दारी समाइल बा सिंहासन से
कुरुसिया एक एके पर लदाई सब त का होई-
ई कुरुसी टूटि जाई जो त का इतिहास ना रोई?

(सात) हाइकू

ई ह हाइकू
हीक भरि लिखि ल
छन्द सलोना।

पहिले पाँच
कहँवा खोलीं जूरा
बादो में पाँच!

हाइकू का ह?
सजहर के पुड़िया
घोंटि के देखऽ

सूतल बानी
तोहार का लागऽता?
जाता हमार!

मँड़िया मारे
कनई में भँइसि,
लोला ल लोला!

आँखी के पानी
केतना पिआइबि
पेटे में आगि!

डोलिया डोले
बोली बोले कँहार
काजर भींजे!

आँखि गलावे
रूप गदराइल
छीजे जवानी!

लागल आगि
कहवाँ जाईं भागि
जरे खतोना!

कसऽ न एँगाँ
तनी रहे द ढीले
बड़ा दुखाता!

अपने बूझऽ
मूवल केतना मीठ
केसे पूछेलऽ?

(आठ) दोहावली

मोती मोती बावरा यद्यपि हों जलजात
सीपी में सागर तिरे, सीप न सिन्धु समात।

स्वाति बून पाके मगन गहिरे गहिरे पइठ
मोती लेके गोद में गइल अतल में बइठ।

गोताखोर सराहिये साहस विकट कराल
पइठ सिंधु के पेट से मोती लियो निकाल।

नीमन बात कहा गइल ओही के दोहराउ
रे कउआ नीमन बदे खेत-खेत मत जाउ।

कागभुसुन्डी नाँव पर कउवा नाहिं पुजाय
कड़े-कड़े ढेलवाँसि से सदा भगावल जाय।

घूमत फिरे सरेहि में चरत दुधारू गाइ
बछरू हो भा साँप हो देले दूध पियाइ।

आरक्षण का जोर पर खीर चाँपि ले आजु
कोइला, हीरा होय ना चाहे जेतना माँजु।

जानेलऽ कब के तरे, देस भइल आजाद
सत्य अहिंसा प्रेम जब होइ गइल बरबाद।

भइँस-गाइ दूबर भइल, गोबर भइल मोहाल
चीठी स्विटजरलैंड के लिखि भेजीं तत्काल।

दूध दूध का बके रे, दूध गइल परदेस
बिन डालर कइसे चली अतना भारी देस।

पानी-दूध मेराइ के रोगिन देहु पियाय
लरिका साढ़ी के हठे अँगुरी देहु चटाय।

सिगनल डाउन हो गइल, गाड़ी आवत बाय
बैकवर्ड आ दलित जन, बिना टिकट चढ़ि जाय।

गान्ही जी अइले इहाँ, अपने भारत देस
जहवाँ मूअल जियल ह तहवाँ कवन कलेस।

गली-गली घूमें जहाँ लम्पट कामी चोर
तमसोगा ज्योतिर्गमय चोकरत फिरे अँजोर।

भाखा सतमेरवन भलो भाव विचार विहीन
दोहा पानी दे कहे, जल के बाहर मीन।

बाउर सब आसक्ति ह नीमन हउवे शक्ति
बाउर संगति छोड़ि के करीं शक्ति के भक्ति।

बरहज, देवरिया

पाण्डेय कपिल

दू गो गजल

(एक)

आह निकलल ह दुख सहे खातिर।
अपनहीं आप में रहे खातिर।
मन के अपना, 'रही' बनवलीं हँ
जिन्दगी के दही महे खातिर।
जे भी बाटे बनल तनल ओकर
बखत तय बा गिरे ढहे खातिर।
आज कइसन ई बाढ़ आइल बा
बाँध बेचैन बा दहे खातिर।
कवनो हद तक उतर सकेले ऊ
दाव आपन तुरत लहे खातिर।
कवनो शिकायत ना रहल उनका से
बात कहलीं हँ, बस, कहे खातिर।

(दू)

आज कइसन त मन करत बाटे
काहे रह-रह नयन भरत बाटे
याद में उनका साध के दियना
रात-भर नेह से बरत बाटे
हमरा हियरा के सून कुटिया में
चुपके से पाँव के धरत बाटे
के इहाँ बाँसुरी बजावत बा
गइया केकर इहाँ चरत बाटे
कइसना जिन्दगी जिये खातिर
जिन्दगी ई जियत-मरत बाटे
आज कवना 'गगन-गुफा में ई
'रस' अइसन 'अजर' झरत बाटे।'

भोलानाथ गहमरी

(बिना कवनो दबाव-जोर के जब उमंग के लहर में अनायास कवनो गीत फूटेला त मन के तार-तार झनकार उठेला। अइसने छन में एगो गीत अपने सबके सामने परोसे के साहस कइले बानीं।)

हिया के मोरा गीत कुसुम लहरे।

जब-जब महँके साँझ सेनूरी
छलकि उठे सपना अँगूरी
एक नसा उभरे।

गंध भरल मादक रस चूवे
बढ़त पियास मरम एक छूवे
अँजुरिन नेह झरे।

रूप सुघर छवि, छंद रचावे,
भाव-कँवल अनगिनत उगावे
मन भँवरा बिचरे।

कोमल राग रचे रितु मन के
गत औ मंतरा सब गिन-गिन के
लय-सुर-ताल भरे।

- परसपुरा, गाजीपुर

श्वाँस आ स्पर्श भर के अनुभूति

आनन्द सन्धिदूत

(लइकाईं में गाय पर लेख लिखल आसान रहे बाकिर आज उहे लिखत बहुत कठिन-गूढ़ हो गइल बा। अइसहीं दू चार साल पहिले कविता पर पन्ना के पन्ना रंग मारे के सवढ़ रहे बाकिर आज सोचतो खानी थथमा लागत बा। असल में हमार रचना हमार सवख ह। हमरा मन के ढीलढाल संगठन ह। कसल संगठन त निबन्ध, लेखा होला, ओइसहीं जइसे कसल रचना के फूल कहल जाला आ ढील ढाल रचना के फूल। जवना में बस श्वाँस आ स्पर्श भर के अनुभूति होले।)

(एक)

फूल के, फर के, टपक-चू के निझा जाये के बा।
के रहल, कइसन रहल एहिजे बुझा जाये के बा।

फूल के पचकत तपन बन के जुड़ा जाये के बा
ए दिया तोहरा भभक के बुता जाये के बा।

जिन्दगी हउए अगर रुकबऽ रुकी, चलबऽ चली
या तऽ घिस जाये के बा या जंग खा जाये के बा।

सोर बा एतना कि सोचे में बड़ा लौना लागे
काँच पाकल जौन बा तौने पचा जाये के बा।

का फरक बाटे पड़त लाठी चले कंकड़ चले
रात का तरई नियर किस्सा छिटा जाये के बा।

जलन नियर अतीत ना कइले छमा धीकत रही
ना बुतइबऽ त धुआँ बन के हेरा जाये के बा।

कहत जेकरा के प्रगति ऊ हऽ समुन्दर के लहर
उठ गइल त का भइल, गिर के समा जाये के बा।

❑ वासलीगंज, मिर्जापुर

(दू)

गड़तिया अँखिया बथत बा कपार
हमें सुतहूँ न देत बाटे पेट के पहाड़।

काम बाटे केतना ले बीने के बेरावे
रतिया बिछावे के अँजोरिया सुखावे के
हाँके के बा तरई उड़ावे के बा चान
हमें सोचहूँ न देत बाटे पेट के पहाड़।

पेटवो में पेट जइसे छिलका पिआज के
साँप मुंह बेंग बइठ जोहेला सिकार के
एतने सुलभ सुख एतने सुतार
हमें कहहूँ न देत बाटे पेट के पहाड़।

छन-छन बदलत सुख सुघरइया
बदरा बयार बूनी फुलवा पतइया
फूलि-फूलि सूखि जाता सुरुचि सिंगार
हमें देखहूँ न देत बाटे पेट के पहाड़।

रावा-रावा कन-कन टेर पारे दुनिया
कहीं बोले कोकिला त कहीं ललमुनिया
काटऽ तानी अँगुरी बेरावऽ तानी घास
हमें सुनहूँ न देत बाटे पेट के पहाड़।

छोड़ि-छोड़ि खात बानीं धइ-धइ कनवाँ
कुल्हि बनि देखलीं न कतहीं चयेनवाँ
तोरऽ तानी' दिकिया नववले अधिकार
हमें रोवहूं न देत बाटे पेट के पहाड़।

कविता उद्‌बेगेले

कुमार विरल

(कविता हमरा जिनिगी के एगो खास जरूरत हऽ। व्यक्ति आ समाज के परिवर्तन में एकर जरूरत होखे भा मत, ई हमरा भीतर एगो आदमी बने के हरमेस लहर पैदा करेले। जीवन के बिख पी के जवन कुछ अमृत बाँटीले ओकरे के हम कविता भा गीत कुछुओ कहीले। हमार रचना हमरा थकला पर दरद पी जाले आ हम जीए लागीले। हमरा भितरे कुछ पघिले लागेला आ उहे कलम का जरिए उतरे लागेला। हम कलम बरिआरी ना धरीं, कविते उद्‌बेगेले आ कुछ लिखाए लागेला।)

(एक)

दउर-दउर खोजीले गाँव कहाँ रे।
ठहरे के तनिकी सा ठाँव कहाँ रे।

सपना के होला जहाँ होलिका दहनवा,
मनवाँ में खउलेला प्रीत अदहनवा,
मयगर ऊ अँचरा के छाँव कहाँ रे।

चिन्ता चनकि जाला नेहिया के अएना,
झुठहूँ ना देला केहु एक टूक बएना,
रुनझुन ऊ पायलिया पाँव कहाँ रे।

रेत-रेत काट रहल रिश्ता आ नाता,
प्रेम बिना कोरा उमिरिया के खाता
आन्ही तूफान बीच नाँव कहाँ रे।

दरद टीस बाथा से जीवन अकुलाता
उपर से तनिको ना कुछुओ बुझाता
भीतर से भीतर ले घाव कहाँ रे।

(दू)

हम सरापित यक्ष
अपना प्रिया से बिछुरल
परदेशी हो गइनी
जहिया सरकारी कागज मिलल
नो...क...री।
आषाढ़ के पहिला दिन
आकाशी मेघ उनहल
दूत बनिके कवनो सनेस लेके
बाकिर कहवाँ कवनो रहन कालिदास
जे हमरा विरह के अपना लेखनी से
पी जास
आ लिख देस एगो अउर अमर कृति
मे...घ...दू...त...।
बजर धरती करेज में दरार फाटि गइल
बुझाता तोहरे बेचैनी से
मौसम अकुलाइल बा
हवा पिआसल छिछिआइल बा।
तोहार बाया छछनत होई
भर नजर देखे खातिर
इचि बतिआवे खातिर
अवरी हलुके छतियावे खातिर।
बाकिर हम अलचार बानी
आ सरापित यक्ष बनके
ट्रांसफर भइल बानी
बहुते अलटा
नोकरी खातिर मजबूर
रासगीरी पहाड़ पर
जहवाँ सरापित अपछेया
जिनिगी के साट देले बानी कुर्सी में।

❑ भोजपुरी विभाग, श्याम नन्दन सहाय कालेज, मुजफ्फरपुर

मानवीय संवेदना के अभिव्यक्ति

भगवती प्रसाद द्विवेदी

(हमरा खातिर कविता ना त तीन-पाँच ह, ना तुकबंदी आ गलाबाजी के कलाबाजी ह, बलुक ई मानवीय संवेदना के बहुत गहिर आ गझिन अभिव्यक्ति ह। आज के अमानवीय परिवेश में अगर कविता के मनुष्यता के मातृ-भाषा कहल जाउ त अत्युक्ति ना कहाई। कविता खाली लांगट यथार्थ के अभिव्यक्ति नइखे, बलुक सवालन के जरिए समस्यामूलक समाधानो के ओज प्रतीकात्मक ढंग से संकेत करे के कोशिश ह। 'पेवन लागल जिनगी' में टुकी-टुकी जिनगी जीए खातिर अलचार आम आदमी के संघर्षशीलता आ जीवटता के काव्यात्मक अभिव्यक्ति बा।)

का शहर/का गाँव/उहे टीसत घाव/दरद के पड़ाव
बस ठहराव आ ठहराव
रोज-रोज के जीयल-मूअल
बनि गइल बा लोगन के सुभाव
अब गोड़ में ना, बलुक ओठ पर फाटेला बेवाई
आपन लोगन के अपनापन
जइसे मिमियात खँसी के गर में बान्हल 'जाई'
खाली हम खाईं आ उन्हुका के मुँह बिराई
दरक गइल बा बिसवास के दरपन
आस हो गइल बिया बांझ
किरिन फूटे का पहिलहीं
आके धरना दे देत बिया सांझ

साँप खुदे बजा रहल बा बीन
आ नचावत बा आदमी के ताकधिनाधिन
जेकरा के धोबी के कूकुर नियर
बना दिहल गइल बा कउड़ी के तीन
आदमी/जवन खात बा, पियत बा
हँसत बा, बोलत बा, रोवत बा, गावत बा,
लुटात बा, भोंकात बा, थुरात बा, पिसात बा
बाकिर तबो ऊ मूवत नइखे
सी-सा के/पेवन लगा के जी रहल बा आदमी
आखिर कब मिली ओकरा के
एगो मुकम्मल जिनगी?

❑ मीठापुर, पटना - 800001

दया शंकर तिवारी

कइसन कइले घड़िलवा तयार कोंहरा
करिले गढ़ले के पहिले विचार कोंहरा।।

कइसन मटिया के लोनवा बनवले,
हथवा के कवन करिस्मा देखवले।
बटुरी बाउर, सुघर दुइ चार कोंहरा।।

घमवा बतसवा में सभके सुखवले
बुनिया बरखवा की मारि से बचवले।
कवनो नीमन बा कवनो बिमार कोंहरा।।

छोट बड़ साथ-साथ सबके पकवले,
एक साथ अउवाँ में अगिया लगवले।
पाकल पंडित बा सेवर गँवार कोंहरा।।

कवनो की गरवा में बान्हलि रसरिया
कवनो में अनगिन भरलि मोहरिया।
कवनो कलसा बा कवनो बखार कोंहरा।।

किसिम किसिम के बा सभके सुरतिया
कवनो ससति कवनो महँगी मुरतिया।
कवनो साजलि बा कवनो उधार कोंहरा।।

गँवई बिके कवनो बिकेला बजरिया
मड़ई मिललि कतहीं मिलेले महलिया।
कवनो नगदी बा कवनो उधार कोंहरा।।

कवने जुगुतिया से गुल इ खिलवले
कवन-कवन चीज केतनी मिलवले।
काहे फुटले पर होला चिकार कोंहरा।।

❑ गायत्री भवन, भीटी, मऊ - 2751101

जे बोले से निहाल

प्रकाश उदय

(कविता बोले-बतियावे खाती। ओकरो से जेकरा से कभी के जान-पहचान ना, देखा देखी ना। - कहल जाला कि फलाना के बोली में लस नइखे। लस नइखे त कविता नइखे। बा त बा। - एह लस के लासा से जोड़ीं भा रस से भा दूनो से। कविता एक दूसरा से जोड़ी, नगीच ले आई आ मिल-व्यवहर के दुख से लड़े के बल दी, दुख के सागर में जेने-तेने छितराइल सुख के सीपी के संगे-साथे बटोरे-बाँटे के बेंवत बनाई।)

(एक)

बाबा के दुलारी धिया नाचे अँगना
नाचे छान्ही प चुहानी के धुँआइल सपना।

गमके गुम्हौरियो में बेलिए गुलाब
मइया मने-मने माने महरानी अपना।
धिया गावेले-गवावेले उलटबँसिया
मइया बूझले-बुझावे मतलब कतना।

तसला पर तबला बजवला पर डँटला प-
अबकी भ भाई, अबकी से अब ना।
खने हँसेले त उतरे हजार किरिया
खने रोएले त हो जाला पहाड़ झरना।

भोरे-भोरे जागे कँउची-कँउची दोना माँगे
एगो मँगले ले थोरे, का त चाहीं हतना।
बाबू तहरो ना धिया, मइया तोहरो ना मैना
अपना चाचा के जे जोरे लेके जइहें पटना।

जले सूते सपराँ लीं घर भर के उदय
जब जागी त उठा ली मथवा प गगना।
जब-जब जिदियाले, बड़ी भारी परि जाले
'फुआ जाले ससुरारी, काहे जाईं हम ना?'

माँगे माई दे दू पाई खाईं बरफ मलाई
माँगे मुनरी न अँगुरी कलाई कँगना।
धिया पाई-पाई राखे द बचा के भिरिया
जाने कतना में मुदई मिलसु सजना।

बाबा के दुलारी धिया नाचे अँगना
नाचे छान्ही प चुहानी के धुँआइल सपना...

द्वारा : श्री रमाकान्त पाण्डेय, प्रकाशपुरी, आरा

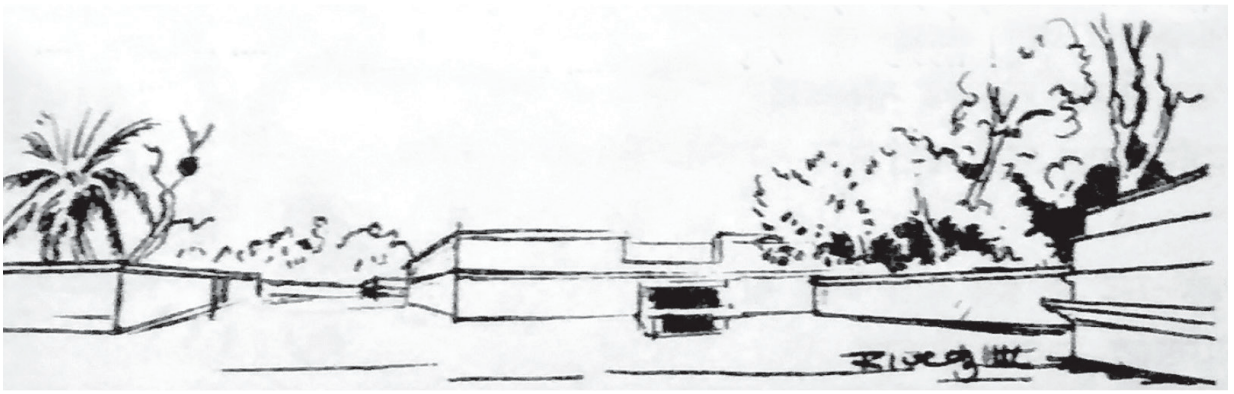

अनीश श्रीवास्तव

(कविता, अनियंत्रित नदी के धार हीयऽ, रोके से रोकाय ना, क हाली चहनीं कि, झुठहूं कविताई कइला से का फायदा, त मन में एगो बात आइल कि- "झुठहूं जियला से का फायदा?" कविता झुठहूं ना हऽ, ऊ सूचहूं हऽ, खाली मन के आवेग चाहे थोथा आदर्श आ भावना भी ना, ऊ त आदमी के 'होख' के पहिचान हऽ, जीव बा त जीवन बा, आ जीवन बा त कविता बिया, हमरा खातिर जीवन से कविता ना, कविता से जीवन बा।)

रात के अन्हार में
चान निकसेला
ओसे पहिलहीं
सभकर केंवाड़ी बन हो जाला।
बाबूजी पूछेलन-
रात के कर्फ्यू
कहिया बन होई?
चान के देखला
ढेर दिन भ गइल।

एक दिन/दू दिन/चार दिन
फेरू पांच दिन
बाबूजी मनलें ना
छत पर
चान देखे आ गइलें।
धुरिआइल चस्मा
पोछलें-पहिरलें-
आ जब ऊपर तकलें
त फेरू नीचे ना उतरलें।
एगो गोली छूटल रहे....
आ चान के
करिया बदरी छाप ले ले रहे।

❑ बाँसडीह, बलिया

सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश'

एक मूठी दूइ मुठी मुठियन से रेत झरे।
खाली गगरियन में बालू काहे के भरे?

पानी के हचलकाल बा रेत भरल नदिया
भीड़ बा उदास खड़ा गांव नगर गलिया

पगला कुकुर-जन,
देखे जल-रूप डरे।।

भोरहीं से फाड़े काटे कहवाँ सिहरावन
बीच दुपहरिया के घाम बा कटावन

हतेआ के लहू लांघी
सांझि गते डेग धरे।।

छुँछ बालू-रेत कहीं ऊँच कहीं खइया
गति मति बिनु लागेले खलिहा समइया

मान-मरजाद खर-पात
मन घास चरे।

❑ बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

अवधेन्द्रदेव नारायण के तीन गो गीत

(एक)

अतना ठाठ अनेरे छवलीं
जनम-मरन के बीच अकारथ
मन-मिरिगा सँग धवलीं।

घिरल-थमल तूफान राह में
चुपके पतझर बसल चाह में
छछनत जिनिगी, तपल दाह में
आस-अनेर लगवलीं।

केश-जाल रतिया के जमकल
बिसरल गीत, लरकि के चमकल
काल-नगिनियाँ लहरल ठमकल
ओर-छोर ना पवलीं।

डोर साँस के टूट रहल बा
दरद घनहा के फूट बहल बा
माया के बन्धन जकड़ल बा
छछनत भाग जगवलीं।

अरपन के बेरिया नियराइल
काशी-करवट के दिन आइल
अकुला के चिन्ता गहराइल
मिलन रागिनी गवलीं।

(दू)

घोर अन्हरिया घेरले आवे
नीनि उतरि आइल नयना में
जिनगी के रतिया थपकावे।

बिसरल बात, करेजा कसके
मन-पाखी के टिसुना थसके
कंठ रुँधल, सपना छितराइल
मोह उपट अँचरा फइलावे।

बेसुध थथमल, प्रीति-लहरिया
चादर छोट, उदास उमिरिया
जहुआ के दुख-दरद घनावे।

नाता टूटल, निरगुनिया मन
घटराइल माया के बन्धन
गुपचुप थथमल भाव थिरा के
मरघट के मंजिल देखलावे।

(तीन)

मुरली-तान तरंगी
रास-पगल झंकृत सुर जागल
श्रुति रूपा पागल रस-रागल
साँस-साँस हुलसत अगरा के
सहकल धुन मकरन्दी।

रागन के बरखा मन भींजल
मन-दरपन में सुधिया छीजल
जीव-जगत-माया मद मातल
मिलन-पहर अनुरंगी।

पोर-पोर नाचल थिकन से
नेह बन्हल हियरा तड़पन से
छन्द-ताल-लय में मोहकता
मंत्रित लगन त्रिभंगी।

मुरली-तान, मधुरिया बोली
चितवत, छेड़त, करत ठिठोली
उमगावत सखियन के टोली
पलक खोल, गुन-संगी।

कान्हा-राधा रास रचावे
राग-रंगल, जिनिगी गहरावे
गोपिन बनल उमिरिया गावे
अधराधर सतगरंगी।

रामधनपुर, गया, 823002 (बिहार)

गाँव के नाटक आ नचनिया के खोज

✍ गंगा प्रसाद अरुण

ए भाई, अब कइसे इज्जत बाँची गाँव के? आजे नाटक खेले के बा आ कवनो लौंडा–नचनिया के जोगाड़े ना हो सकल दू–दृश्यन के बीच के खाली समय भरे खातिर, लोगवा का कही? भोरे–भोरे नाहर के पुल पर बतिआवत छात्र–संघ के सदस्यन में घोर निराशा–बेचैनी पसर गइल। अइसे त बीच–बीच में कौमिक–प्रहसन के प्रचलन रहे आ इहो साँच बात रहे कि बात–बिनाई, कौमिक–प्रहसन में पड़रिया के मात अवार–जवार में कोई दे सको, अइसनका रहबे ना कइल तब। बाकिर बिना नचनिया के नाटक! ए भाई, चले के कतहूँ से लौंडा–नचनिया के खोज ले आवल जाय। हमार गाँव हड़रिया के छात्र–संघ के नाटक के अवार–जवार में सकसोर, लोग टूट परे हमनी के नाटक देखे खातिर। तब पता ना कतना हुलास–हिलार चले मन में कि शादियो–बिआह में साटा पर नाटक खेल के ओह साठ–सत्तर के दशक में हमनी के अगहर राम आधार पाँड़े जी लगभग 5000 हजार के परदा–ड्रेस–मुकुट आ नाटक खातिर जरूरी आउर–आउर सामान बनारस से खरीद के ले आइल रहले। एह ममिला में हमनी के छात्र–संघ बहुते साधन–सम्पन्न रहे।

खैर, अबहीं त ओह दिन खातिर नचनिया के समस्या रहे। से, चार गो चतुर–चल्हाँक–चलबिधर लोग तइयार भइल चले के एह खोज–अभियान में। चार गो साइकिल आ चार गो खोजी–पारखी जवान गोधन भाई, हरिनाथ चाचा, गोपीचन मास्टर आ हम, गंगा। आठ बजे के लगभग पयान करके पहुँचल ई चारो जीव गोड़ारी। काशी के दोकान से चाह आ भिखारी के गुमटी से पान खाके तइयार। अब ओहे ना लागे कि कवना बह में निकलल जाय, तले उहवें कोई बतावल कि अमरथा में एगो नीमन डांसर बा धरीछना, ओकरे लगे चल जाय के लोग सलाह दीहल। फिर का, उहवाँ से उड़ चलल ई चतुरंगी साइकिल सेना अमरथा खातिर। लहालह दुपहरिया में चहुँपले चाहत रहीं जा अमरथा गाँव में कि बहरिये अहरा पर लउक गइले लुंगी–गंजी में लमहर–लमहर जुलुफी–बबरी बढ़वले एगो नौजवान, पूरा नचनिया देह–धाजा–लचक में। नांव पुछाइल त 'धरीछन' सुन के बाग–बाग हो गइल दिन सबके। मन खुश, चलीं, मेहनत सफल भइल। बात–बतकही में उनकर जबाब, नहकार से मन झवान हो गइल। साटा पर उनका जतना रतबी मिलत रहे ओकरा से दोगिना पइसा देबे पर ई गरजू–दल तइयार– गाँव के इज्जत के सवाल। बाकिर एक बार ऊ ना कहले त नाहियें मनलें चले खातिर। हम बोललीं, ए धरीछन बाबू, तू ना जइब

त हमनी के नामी गाँव के मान चल जाई आ हमनी के तोहरा के गरिआवते नू लौटब। बाकिर ऊ टस से मस ना भइल, हालांकि ओह रात के ओकर कवनो साटा–उटा ना रहे। हँ, ऊ अतना सलाह जरूर दिहलस कि चल जाईं सभे नाहर पकड़ले 'सहरी' बाल पर, जहवाँ नचनिया–बजनियाँ लोग के एगो टोले बा। उहवाँ केहू ना केहू जरूरे तइयार हो जाई। माह दुपहरिया में हमनी के चल चललीं जा 'सहरी' खातिर धरीछना के सरापत–गरिआवत।

नाहर के पींड़ धइले चहुँप गइलीं हमनी सहरी के पुल पार करके एगो खरिहानी में जहवाँ एगो अधबूढ़ दँवरी नधले रहले। अब उहाँ के गंधर्व–टोला के जानकारी ना रहला से पूछ बइठलीं जा हमनी के ओह दँवरिहा से, "बाबा, नाचे–गावे वाला लोगन के टोला केने बा?" अरे बाप रे, अतना पूछके जइबऽ कहाँ, बिर्हिनी के छाता में जइसे हाथ ढुक गइल होखे– लगलन ऊ गरमाय–गरिआवे हमनी के, नन्हीं–नन्हीं बाड़न लोग आ एही उमिर में ताव चढ़ल बा। पहिले त उनका गरमाये के कवनो कारन बुझाइल ना, बाकिर तनिका अंदजला पर गरमाये के पारी अब हमनी के रहे– "बाबा, अतना खखुआत आ गइत काहे बूझत बानीं? आरे महाराज, ऊ टोला अतने घिनावन ह, त बसवलीं सभे काहे उहनी के? गाँवे हमनी के नाटक बा आ कवनो डांसर नइखन स मिलल, रउरे चल के लुग्गा–झुला पहिर के सम्हार देब हमरा गाँव के इज्जत? बाकिर गलत मत बूझीं, हम नइखीं जानत, रउरा गाँवे हमनी अइसन पढ़गीतो त होइहें!" बुढ़ऊ तनी नरमइलें आ बिना ओने तकले अपना बैल–हँकना पएना से दखिन–पुरुब के ओर इशारा कइलें, होने बा, होने।

अभी हमनी के ओह बदनाम टोला के बहरिये रहीं जा कि एगो सुन्नर–सुभेख लौंडा हमनी के लउकल। बड़ा खुशी भइल, चलऽ, उमेद से जादहीं मिल गइल लागता हमनी के! बाकिर उहनी के दलान में बइठल साजिन्दा–ढोलकिहा से हमनी के ओकरा से कुछ गावे–सुनावे के कहलीं, त मुँहे बवा गइल। एकदमे फाटल बाँस अस आवाज। – 't का इनका के पहलवान जी गोदी में सुतावे के बा! समाजी लोग बोलल कि रउरा सभे के हँसारत ना होई, इहवाँ एक से एक सुन्नर–सुभेख बाई जी लोग बाड़ी। करमुआं, तनी बिमला जी के त बोला ले आव! बिमला जी अइली। मेहराइल ढोलक पर धप–धप (टन–टन ना) थाप परल। दमा के पुरान मरीज अस हरमुनियाँ के हफर–हफर, पें–पाँ शुरु भइल आ शुरू भइली बिमला बाई, अपना काक–कंठी सुर में– "बहारों, फूलि बरिसाओ मेरा महबूबि आया है।" लय उहे रहे महफिल–समेआना में धूहा–पानी के मोका पर नचनियन के गावे वाला सेहरा के– "ऊचे पुर नूर का सेहरा मुबारक हो, मुबारक हो–" वाला हमरा अब अड़ाव! खीसो बरल– 'इहे तर्ज ह एह गीत के? रह, हमहीं सुनावत बानीं– आ पिहिंक उठलीं अपना सधल–कोमल कंठ से– "बहारों फूल बरसाओ, मेरा महबूब आया है।" चले के भाई, इहाँ से हमनी के काम ना बनी। ना होखी त हमहीं साड़ी पहिन लेब, ताल पर नाच ना सकब त का, गीतिया त गाइये लेब। फिर चिलवन पर चढ़ल मछरी निकल जाय, कइसे बरदास होई! से, करमुआँ बोलल– "मालिक सभे, अभी अउरो बाई जी लोग बाड़ी, शिमला, डिमला, पारबती, बासमती आउर ना जाने कवन–कवन नांव ऊ उचार–पराच गइल। हमनी के आभास हो गइल कि इहवाँ गीत–नाच के महफिल ना जमे। ओह बुढ़ऊ दँवरिहा के तेवर इयाद पर गइल। उदासल–हतासल लौट चललीं जा हमनी के करुप के राहे अपना गाँव खातिर काहें कि उहवें तीन बजत रहे आ छवे बजे दिआइल रहे देश–भक्ति से ओत–प्रोत नाटक 'भारत माता' शुरू करे के।" बीच में एक चुरुआ पानियो ना मिलल रहे पीये के हमरा, आ सुबह 8 बजे गोड़ारी में खाइल पान अबहियों सुबहिते रहे मुँह में।

ई पानो एगो अजीबे जिनिस ह। ना जाने केकर कहाँ पानी उतार दे, एगो तवायफी संदर्भ में त आउरो। इहाँ एगो क्षेपक दिहल जरूरी बुझाता। हमार मउसिआउत भाई एक बेर हमरा के अपना संगे काराकाट गोला में लिआ गइले। तब हमार उमिर अधियाइलो ना रहे। चेहरा–मोहरा चिक्कन चुलबुल आ केश–जुल्फी के शौकीनी। कड़ेर लगन के दिन आ

हार के हार कानपुर ओर से उतरल बाईजी लोग के गोल लगन कमाये खातिर। लोग नाच–साटा करे के पहिले कुछ सुने–परखे में लागल कई–कई गोल में। हमार भाईजी हमरा अनिच्छा के बावजूद बइठा दिहलें एगो गिरोह में आ अपने चल गइलें पान ले आवे खातिर। तब हमरा पान के सवख रहे। भाईजी त अपने खा के अइलें आ हमरा आ ओह बाईजी खातिर पान ले अइलें। हमरा तनिका अनकसावन बुझाइल आ निकल गइलीं बाहर सब्जी बाजार में। घरे कार–परोजन रहे से अगिला मंगर के बाबा (बाबूजी) कुछ सज्जी वगैरह बेसाहे खातिर हमरो के साथे लिया गइलीं। जइसहीं हमनी ओह बाईजी के अड्डा के सोझा चहुँपलीं, बाईजी के जोरदार पुकार भइल,– "बाबूजी, हमार पनवाँ दे के जाइब।"– हमरा देह में त कटले खून ना। बस, महटिआवत बढ़ गइलीं। – "का सोचते बाबा!" साँच कहल बा मुँह पान आ पनहीं, दूनो से लाल होखेला। एक बे पान दोकान पर एक जने से पुछले रहीं– "पान कि पनहीं?" ऊ बूझले, छोटका (मगही) पान के पनही कहल जात होई, से बोलत भइले– "पनही" – आ ठठा के हँस दिहल उहाँ पर सभे।

देखीं ना, कइसे हम बिचिल–बिछिला के एह क्षेपक पर उतर गइलीं। फिकिर त रहे नाटक आ नचनिया के। त करुप चहुँपला पर अपना मुँह के गिलौरी, जवन कि 8 बजे के लगभग मुँह में डलले–दबवले रहीं, सड़क पर साबुत उगिल दिहलीं– कबीरदास के शब्दन में– "जस के तस धर दीनीं।" फिर सड़क से गोड़ारी के पयान। अबही पुल पर चहुँपले रहीं जा कि खुशखबरी सुनाइल, – "अच्छा भइल कि तूं लोग कवनो नचनिया के ना खोजलऽ, चिकसिल के राम खेलावन सिंह अपना साथे तीन गो लौंडा लेके आ गइल बाड़न इज्जत सम्हारे। मन खुश हो गइल। उहवें चाह–पानी भइल आ फिर सकला नाहर धइले गाँव पर पड़रिया। आखिर ड्रामा के तूल–तगाड़ त करहीं के रहे। राम खेलावन सिंह के गाँव के तिलेसर भाई से हितई–हितारो काम आइल।" मन खुश हो गइल। उहवें चाह–पानी भइल आ फिर सकला नाहर धइले गाँव पर पड़रिया। आखिर ड्रामा के तूल–तगाड़ त करहीं के रहे। राम खेलावन सिंह के गाँव के तिलेसर भाई से हितई–हितारो काम आइल।

एने हम का कहले रहीं कि 'भारत माता' नाटक के पात्र–परिचय 'नौटंकी' के तर्ज पर पहिलहीं तइयार कर दिहले रहीं। नौटंकी के 'बहरत' आ बिना डुग्गी–नगाड़ा के! से बुढ़वल बाजार से बकरीदन मियाँ के घर से ओकरो जोगाड़ हो गइल रहे। ऊ कवनो भांड–नौटंकी में चलत रहलन। आ एने डुग्गी सेंके में माहिर सुमेसर आ ओने डुग्गी–नगाड़ा के ओस्ताद दूधनाथ।

–"बाद मुद्दत के आया हूँ मैं सामने,
आप सबका मिलेगा सहारा सही,
शांत से बैठिये फिर मजा लीजिए,
जिससे बिगड़े ये नाटक हमारा नहीं।"

नगड़ची दूधनाथ के डुग्गी पर कड़कड़–कड़कड़ आ नगाड़ा पर धम–धम–धम– खूबे जमल पात्र परिचय।

बाकिर आहि दादा, ई का? नचनिया के देरी तक ना मिलला से फिकिरमंद बिरिछ ठकुराई आपन अलगे पलान बना लिहले रहन। गाँव के इज्जत के सवाल। गाँव के हाता में स्टेज आ बगले में मेकप में तइयार बिरिछ भइयवा अचक्के स्टेज पर कूद गइल– "मिल के बिछिड़ गइल अँखिया, हाय राम, मिल के बिछिड़ गइल अँखिया" – के अपना जाने कोमल से कोमलतर सुर में दोहरावत। स्टेज पर अइसन बनरकूद कि बुझाय स्टेज अब भसल कि तब भसल। साजिन्दा लोग से ताल–सुर ना धराइल त फगुआ–चइता के ठेका घर लिहल लोग। अइसन बुझाइल कि बिरिछ स्टेजे ढाह दीहें। नाटक के समहुते ठीक, त जमो कइसे ना।

पता चलेला, अबहियों गाँव में नाटक खेलल जाला, खास करके दुर्गापूजा के अवसर पर, बाकिर अब राम आधार पाँड़े, किरित चाचा, नचनिया गोसाईंजी, हरिनाथ, गोधन, शौकत अली, उम्मत अली, लछुमन मास्टर, चनरिका मास्टर, रामबचन, जुगुल बिहारी के कमी जरूरे खलत होई। खैर, हम त इहे मनावत रहीले कि ई परम्परा पड़रिया गाँव में बराबर बनल रहो। ●●

संत कवि बुलाकीदास आ घाँटो राग

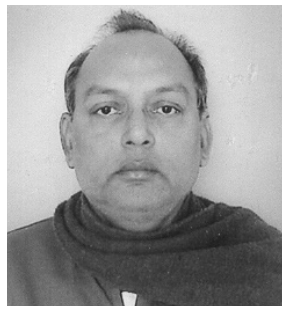

आनन्द 'संधिदूत'

लोकजीवन में लोकगीतन के जेतना प्रकार बा ओह में चइता, चइती आ घाँटोराग के सेसर स्थान बा। चइता रितुअन के राजा बसन्त के समापन समारोह के गीत ह। एह से एकरा के लोकगीतन के राजा भी कहल जा सकत बा। चइता गीतन में जवन कशिश होले, पियास होले, मीठी शिकाइत होले आ अपना प्रेम में मातल जवन तकरार होले, ऊ चइता के असाधारण राग सिद्ध करे खातिर बहुत बा।

चइता गीतन के गायन कबसे सुरू भइल आ एकर शब्द आ स्वर के शिल्प कइसे विकसित भइल– एह बिषय पर साधिकार कुछ बोलल कठिन बा। चइता गीतन के ध्वनि प्रसिद्ध गीत पुस्तक जयदेव के गीत गोविन्द में सुनाई देला। चइता गीतन के छायास्थल बौद्धकाल के चैत्यो बिहार हो सकेला। हिन्दू कैलेण्डर का अनुसार जब चन्द्रमा चित्रा नक्षत्र में होला, त चइत के महीना आवेला। ई समय अइसन होला जब अखझो से अखझ पेड़–पौधा फूल–फल आ हरियाली से लथर उठेलन स। पूरा बाजार नाना प्रकार का फल से महक उठेला। हिमालय के घाटी, कैमूर के नमी वाला स्थान, खेत के शीतल डाँड़–डहर आ साहु–महाजन के बगइचा–फार्म हाउस भाँति–भाँति के फूलन का सुगन्ध आ सुघराई से खिलखिला उठेला। एह महीना में खेत रबी का फसल का उल्लास में सोनहुला हो उठेला। ई मास मधु निर्माण के होला। एह से एके मधुमासो कहल जाला। मधुमास में सम्पूर्ण जीव जगत का अण्डज का पिण्डज का उष्मज–वायरस आ का बीजोत्पन्न जड़ चेतन वृक्ष–वनस्पति एह मधुमातल वातावरण में अँगरात देह–तोरत प्रणयातुर हो उठेलन। एही नशीला वातावरण में केहू का दुआर पर चाहे आँगन में भा निरा सुदूर साधू–महतमा का मड़ई में चइता गीतन के उपस्थिति दर्ज होले।

चइत का महीना में अँजोरी नवमी के दशरथ नन्दन मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के जन्म भारतीय सभ्यता आ संस्कृति के एगो महत्वपूर्ण घटना हऽ। चइता गीत का डाँड़ी–डाँड़ी में राम के उपस्थिति एकर प्रमाण बा। चइता में त गीत के मंगलेचरण रामजन्म का सुमिरन से होला–

एही मासे राम जनमले हो रामा
अवधपुरी में।

जे चइता लिखे चाहत होखे ओकरा ई ध्यान राखे के चाहीं कि कम से कम आज का तारीख तक एह महाराग में अश्लील फूहड़पन नइखे आइल। वस्तुतः देखला पर अइसन लागत बा कि चइता गावल ना जाय 'बइठावल' जाला। स्थापित कइल जाला। एह राग के एक माह तक बइठा के आराधना कइल जाला आ चइत पूर्णिमा के समापन का बाद भर गरमी जेठ का गंगा दशहरा तक सन्नाटा रहेला। गंगा दशहरा से भादो में बाभन दुआदसी तक लोकगीतन के रानी कजरी के धूम, भर बरसात देखे–सुने के मिलेला।

चइता गीतन में राम के लटका गीत–संगीत में भक्ति रस के नहर–नदी खोल देला। कई गो बिद्वान लोग त लटके के गिन के चइता के प्रकार तय करेलन। साहित्यकोश में डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय लिखले बाड़न कि "चइता का दूगो पंक्तियन में पहिली आरोह आ दूसरी अवरोह के होले। आरोही पंक्ति रामा शब्द से बिराम पावेले।" डॉ0 उपाध्याय का अनुसार चइता झलकुटिया आ साधारण दू प्रकार के होला। चइता का प्रशंसा में उहाँ का लिखले बानी कि लोकगीतन में पेशलता मनोहारिता आ द्राविकता के गुण बा।

उपाध्याय जी के बक्तव्य निःस्सन्देह भावी पीढ़ी के रचना सिद्धान्त के मापदण्ड बा। बाकिर एह बक्तव्य से चइता के, ऊ ना समझ पाई जे कबो चइता सुनले नइखे। एकरा खातिर जरूरी बा कि जे संगीत जानत बा। ऊ चइता के ताल–मात्रा का सिद्धान्त के संगीत लिपि में उजागिर करो। चइता एगो लोकप्रिय गायन ह जवन शास्त्रीय संगीत आ लोकसंस्कृति दूनो ओर बा। उपशास्त्रीय संगीत (ठुमरी) वगैरह में त चइता गायन के आपन अलग ऊँचाई बा। गिरिजा देवी, शोभागुर्टू, कंकमा बनर्जी, किशोरी अमोनकर वगैरह का चइता गायन में एगो गजब के सुरूर बा नशा बा। श्रोता ओतने दत्तचित्त होके संगीत सुनेलन, जेतना एकाग्र होके भालू शहद पीयेलन सऽ।

लोकगीत में चइती–चइता के खाली एगो कैसेट के जानकारी बा– मनोज तिवारी के "आइल चइत महीनवाँ"। एह में कुछ गीत त बड़ा सुग्घर बाड़न स। अपना एह कैसेट में मनोज तिवारी चइता आ चइती दूगो राग के परिचय देले बाड़न। एह में चइती अगर कवनो पहाड़ी नदी का जलप्रपात नियर बा त चइता भीमकाय सोन नद का मैदानी बहाव अस। चइता के दू–चार अदिमी ना कबो–कबो चालिस–चालिस अदिमी दू गो दल बना के मिल–बइठ के गावेलन। लेकिन ठुमरी चाहे लोकगीतन का रिकार्ड कइल गायन में घाँटो राग के दर्शन नइखे होत। जइसन कि पहिले कहल जा चुकल बा कि राग के समझे खातिर संगीत के समझ जरूरी बा। लेखन का द्वारा त खाली स्थूल परिचय मिल सकत बा। बाकिर हृदय में पहुंचे खातिर संगीत के संग साथ चाहेला। चइती, चइता आ घाँटो राग के अन्तरो समझे खातिर खाली 'राम' शब्द के संख्ये एगो आधार बा। उदाहरण में सन्त कवि बुलाकीदास के एगो रचना इहाँ दिहल जा रहल बा, जवन गायन में लटका जंजीरा में जोड़–घटा के कबो चइती आ कबो घाँटो में गावल जाला। पहिले चइती देखीं। एह चइती के भाव ई बा कि एक बेर जमुना नदी में गोपी लोग का संगे जलक्रीड़ा करत कृष्ण लुका गइलन। गोपी लोग सगरो खोज के परेशान बा आ गावत बा–

मानिक गइले हेराय हो रामा।
एही जमुना में।
घटिया में खोजलीं हो
बटिया में खोजलीं
खोजि भइलीं पिया के चदरिया हो रामा।
एही जमुना में।

ई लोकगीत पूरा के पूरा घाँटो राग में बा, जवना पर कवि बुलाकीदास के छापो बा। एगो जमाना रहे जब 'बुलाकी के घाँटो' पूर्वी उत्तर प्रदेश आ पश्चिमी बिहार का गाँव–गाँव में गावल जात रहे–

आहो रामा मानिक हमरो हेरइले हो रामा
रामा जमुना में केहू नाहीं खोजेला
हमरो पदारथ हो रामा।
आहो रामा ओहि रे जमुनवा के
चिकनी मटियवा हो रामा
चलत पाँव बिछलइले, केहू नाहीं खोजेला।
आहो रामा ओहि रे जमुनवा के
करिया पनिया हो रामा
देखत मन घबड़इले, केहू नाहीं खोजेला।
आहो राम मोरा लेखे ग्वालिन
मानिक हेराइल हो रामा
बीच अकसवा में चान छिपिगइले, केहू नाहीं खोलेजा
आहो रामा दास बुलाकी चइत घाँटो गावे हो रामा
गाइ–गाइ बिरहिन के समुझावे
केहू नाहीं खोजेला।

एगो दूसरा घाँटो में सन्तकवि बुलाकीदास बाबा एगो अइसन दुलहिन के बर्णन कइले बाड़न, जवना के ओकर सासु–ननद आधी–आधी रात के फुलवारी में फूल लोढ़े के भेजत बाड़ी स–

रामा सासु–ननदिया जनमवाँ के बैरी हो रामा
रामा आधी रात कुसुम लोढ़े मोहे भेजे हो रामा।
रामा गोरी–गोरी बहियाँ, पतरी अँगुरिया हो रामा

रामा कुसुम लोढ़त काँट गड़ले हो रामा।
रामा केहू मोर कँटवा निकलिहें हो रामा
रामा केहू मोर हरिहें दरदिया हो रामा
रामा बाबा मोर कँटवा निकलिहें हो रामा
रामा सइयाँ मोर हरिहें दरदिया हो रामा
रामा दास बुलाकी चइत घाँटो गावे हो रामा
रामा गाइ–गाइ बिरहिन के समुझावे हो रामा।

सन्तकवि बुलाकीदास के चर्चा लोकसाहित्य का इतिहास में बा। कहल जाला कि इनकर एगो पाण्डुलिपि नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी में सुरक्षित बा। बुलाकीदास के जनम आज से करीब दू सइ साल पहिले बलिया जिला का रसड़ा तहसील का कवनो गाँव में भइल रहे। जाति से ऊ गहरवार राजपूत रहलन। कालान्तर में ऊ ब्रह्मचर्य से दग दग शरीर का साथ महान संन्यासी भइलन आ गाजीपुर जिला का गहमर गाँव में एगो मठिया बना के रहे लगलन। उनका सिद्धि आ चमत्कार का बारे में कई गो चर्चाआम जनता का जबान पर बा। कहल जाला कि एक बेर दतुअन कइ के फेंक दिहलन आ ऊ आम के झंगाठ फेड़ हो गइल। एक बेर एगो गरीब किसान रोवत–कलपत आ मूअल बैल गंगा में परवाह करे के ले आइल। ओह किसान पर बुलाकीदास बाबा का दया आ गइल आ ऊ कस के एक लात बैला के मरलन आ ऊ जिन्दा होके पोंछ उठवले दउरे लागल। अइसहीं ऊ पाव भर आटा आ पाव भर घीव से सैकड़न गो नागा साधुअन के भोजन करा दिहलन।

बुलाकीदास बाबा के उत्तराधिकारी रामदास बाबा रहलन। उनके हमनी का लइकाईं में देखले बानी जा। ओह समय ऊ नब्बे–पंचानबे बरिस से कम ना रहलन। रामदास बाबा के उत्तराधिकारी तपसी बाबा भइलन आ तपसी बाबा के उत्तराधिकारी कमलनयन ब्रह्मचारी रहलन। ऊ अपना पूर्ववर्ती महंत लोगन के लिखल पाण्डुलिपि सहेज के रखले रहलन। कमलनयन का बाद पता ना पाण्डुलिपि कवना हालत में बा कि नष्ट हो गइल। अगर गाजीपुर, आरा, बक्सर, बलिया, छपरा का गाँवन में खोजल जाय त बुलाकी के घाँटो गीत अबहियो मिल सकत बा। एह लोकगीतन के संग्रह आ प्रकाशन होखे के चाहीं। ●●

❑ पदारथलाल के गली, वासलीगंज, मिर्जापुर

सामयिकी

गुलजार लगे गउवाँ

गुरुविन्द्र सिंह

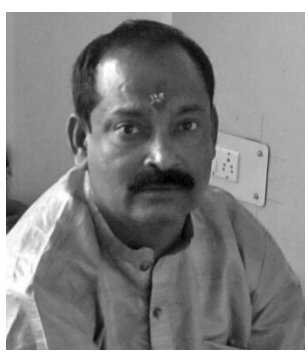

चढ़ल कपारे परधानी क चुनउवा
गुलजार लगे गउवाँ।

मँगरु सोमारु के भाव 'बाटे हाई'
दस दिन क मेला, फेर के पूछे आई?
मगन भइले पी-पी के अद्धा भा पउवा।
गुलजार लगे गउँवाँ।

जात भा कुजातो के बाटे गोल बंदी
हेने बाड़े शंकर त होने बाड़े नंदी
होखत बा दुनों ओर रस्सा-घिंचउवा।
गुलजार लगे गउँवाँ।

लिटी-चोखा सँग वाँ मिलल बाटे मुरुगा
खँसी का गरदन प' चढ़ गइली दुरुगा।
साँझ-सुबह होखत बा बानर-बझउवा।
गुलजार लगे गउँवा।

❑ आर० के० पुरम् नई दिल्ली-२२

तिसरा दशक (नब्बे के बाद) के कुछ चर्चित कहानी

खण्ड - तीन

- भोर ना भइल / अरुण मोहन भारवि
- मछरी / रामेश्वर सिंह काश्यप
- सुद्ध-असुद्ध / शिव प्रसाद सिंह
- दुख-सुख / विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
- पियासल पण्डुक / प्रेमशीला शुक्ला
- बिना ओरिचन के खटिया / विष्णुदेव तिवारी
- हम बदलल नइखीं / कृष्णानन्द कृष्ण
- चितकबरा पहाड़ / अशोक द्विवेदी
- जरसी गाइ के बछरू / रामदेव शुक्ल
- महासमर ठाटे परेला / प्रकाश उदय
- दयालु / बरमेश्वर सिंह
- गुरु दक्षिणा / अनिल ओझा नीरद

भोर ना भइल

अरुण मोहन भारवि

विन्ध्याचल के मन बड़ा उदासल रहे। आपन संघतिया से भेंट करे खातिर जेहल के फाटक पर बइठला ओकर पहर भरसे बेसी होत रहे। ऊ एगो जम्हाई लेलस आ अपना चारू ओर नजर फेकलस। बर के पेड़ तर ओकरा अगल–बगल आउर मुलाकाती आके, अपना लोगन से भेंट करे के इन्तजार में बइठल रहे लो। कुआर के महीना रहे। ओइसे बरखा–बुनी के दिन बितत रहे बाकिर काल्ह खूब मजगर बरखा भइल रहे, आ आज ओसहीं बीख अस चटक घाम उगल रहे। हवा थथमल रहे। उमसले रहे। पुरवइया खरात रहे। पसेना अइसे चुअत रहे जइसन बरखा भइला पर चुअहा पलानी। सूरूज अब माथ पर आ गइल रहे। "हद हो गइल!" ऊ मने–मन बुदबुदइलस। सिपाही बारह के घण्टा बजवलस– टन... टन... टन...। ऊ उठि के टहरे लागल। मुलाकाती अपना लोगन से मिले खातिर गेटो पर भीड़ि लगवले रहन। एगो गरीब आपन खोंचा लगवले चीनाबेदाम बेंचत रहे। छाँहा में दूगो रेक्सा खाड़ रह स आ ओकरा सीट पर रेक्सा वाला बइठल ऊँघात रह सन। जेहल के फाटक भकसावन लागत रहे। अच्छा, त जेहलो एगो जगहे ह। एहिजा केहू के केतनो आराम दे, तबो एहिजा आवे से भी कगरियाला। जेहल आखिर जेहले ह। सब सुविधा के बादो एगो दिमागी चिंता बनले रहेला। मनई अपना के गुलाम बुझेला। हमेसा ओकरा बुझाला कि ऊ अपना मन से कुछो नइखे कर सकत। ऊ सोंचे लागल कि भीतर ई जेहलवा कइसन होई? ई त अब आजाद भारत के तीरथ हो गइल बा। केहू कवनो जायज मांग एह सरकार से मांगो बाकिर ओकरा खातिर एकरा सरन में आवहीं के पड़ी। ई त कृष्ण भगवान के जन्मभूईं ह। एहिजा आवे से कवनो मनई का घबड़ाए के ना चाहीं। जतना महापुरुष भा साहित्यकार भइल बाड़न– चाहे महात्मा गाँधी, नेहरू, तिलक, वीर सावरकर, रामप्रसाद विस्मिल, डॉ. लोहिया, जयप्रकाश, रामवृक्ष बेनीपुरी सभे आपन किताब एकरे काल कोठरी में बइठि के लिखले बाड़न। जेहल ऊ भट्ठी ह जवन नेता–कार्यकर्त्ता रूपी सोना के तपा के ओकरा के आउर खरा क देला।....

ऊ एहिजा अरुण से मिले आइल बा। देर भइला से उठि के ऊ टहले लागल। एगो जम्हाई लेलस त ओकरा हाथ में लागल लाठी के पुरान चोट चिल्हिक गइल। ओकरा मुँह से एगो सिसकारी निकल गइल। ऊ आपन हाथ के आँखि का सोझा कइलस आ ओके बुशशर्ट के बाँहि से बाहर निकललस। हाथ के चोट हरदी चूना महीनो छपला का बादो ठीक ना भइल रहे। ई चोट पन्द्रह अगस्त 74 के ओकरा लागल रहे। ईहो एगो अचरजे बा। दुनिया के आठवाँ अचरज। ई देश पन्द्रहे अगस्त के आजाद भइल। आज के दिने सभका ई आजादी बा कि ऊ देश के राष्ट्रीय झण्डा आदर का संगे फहरा सकेला। बिहार में जयप्रकाश के आंदोलन चलत रहे। ऊपर से एलान भइल कि सब लोग सरकारी झण्डा कार्यक्रम के बायकाट करी आ जनता का ओर से झण्डा फहरावल जाव। बस, अतने बात रहे। जनता का ओर से, शहर में, पोस्ट ऑफिस का मैदान में गनेसिया मेहतरानी से झण्डा फहरावल गइल। ई बात शहर के अधिकारियन का बरदास्त के बाहर हो गइल। ऊ जरि के अंगार हो गइले सन। जमि के लाठी से पिटापट भइल। घर में, दोकान में, जे–जे सोझ परल सभकर दुखहरन छूटल। छट्ठी के दूध इयाद पड़ गइल। केतने के कपार फूटल, केतने

लूल्ह भइलन, केतने लंगड़। पचासन जना पकड़ के जेहल में ठूस दिहल गइलन। एक जाना त टेंय बोल देलन। एही पिटापट में ओकरो बाँही पर दूगो लाठी बजरल, जवना के दरद रहि–रहि के आज तक उपटल रहता।

ऊ छवे दिन में दउड़ धूप के उनकर जमानत करा लेलस। बाकिर, जब ऊ छूटि के घरे चललन तले दुआरी पर जाते–जात फेनु गिरफ्तार होके जेहल में। जस के तस। फेनु बैतलवा डाँढ़ि पर। नया–नया दफा, झूठहूँ के नया–नया केस। जमानत के चरखा फेनु सुरू जय प्रकाश नारायण बक्सर अइनी। तीस हजार रुपया के कूपन आइल। चंदा असुले खातिर। एहिजा के सभ पंच आ नेता मिलि के क गइले चंदा चट, हिसाब गायब, कूपन नदारद। जे–जे जेहल में पकड़ाइल ओकर जमानतो के पइसा छात्र संघर्ष समिति वाला लोग ना दिहल। आपस में खाली मंत्री आ अध्यक्ष बने खातिर – कुरसी के लड़ाई सुरू हो गइल। कूपन संघर्ष जोर पकड़लस। जे पकड़ा जाय ओकरा से केहू भेंटों करे ना जाय। ओकर त दुखो दरद सुने वाला केहू ना रहे। "रहा न कुल कोउ रोवनिहारा. ....।" अतने ना, त ऊ आपन संघतियान के जमानत अपना घरे का पइसा से करववलस आ ओकर बील समिति के देलस, लोग वादा कइले रहे देबे के– तवनो ना मिलल। समिति सब आपन काम सरकारी अधिकारियन से पूछ के करे लागल। नेता कहाए वाला लोग कोटा–परमीट लेसु आ ब्लेक में बेचाय। सिमेन्ट के ट्रक पकड़ाय आ पइसा लेके छोड़ाय। दोकानदार के डेरवा के चंदा लियाय। भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन चलावे वाला लोग खुद गरदन तक भ्रष्टाचार के पाँकी में डूब गइल। आदमी के ऊपर उठे में देरी लागेल–गिरे में ना। जब ऊ मना करे त ओकरा के सोझबक आ मुहदुब्बर जानि के ओकर बात टरा जाय। ओकर बात लोगन के बाउरो लागे काहें कि जेकरा मुँहे लालच के खून लाग जाला ओकरा फेनु दोसर कुछ ना नीक लागे– कुकुर के पोंछ भला सोझ होला मरला से? अफसरन के चमचागिरी, शराबखोरी आ सब कुकूरम, आपन साथियन संगे गद्दारी, दुःख में माथ छोड़ि के भागे के नियत ईहे रोजगार रहे– ईहे व्यवहार। चंदा के नकली रसीद काट के लोग आंदोलन के महका देलन। ओकर काहे– सभ जनता नकिया गइल। उबिया गइल। ऊ आपन 'छात्र–संघर्ष' जवन निकालत रहे बंद क देलस। धीरे–धीरे सब नीक आदमी आंदोलन से किनारा कसे लगलन, आपन हाथ सिकोरे लगलन। रह गइलन बस सब तीन पतवा, तीन तसवा। किराइल नवहा, पोढ़ चलफर, पकठाइल नेता–सेवा जेकर धरम ना रोजी–रोटी के साधन रहे। जय प्रकाश अब देवता आदमी के अइसने लोग नू बदनाम करत बाड़न, बिजली के अँजोरिया के कवनो रंग ना होला। जइसन रंग के बलब होला ओइसने अँजोर निकलेला। जइसन कार्यकर्त्ता होलन– ओही के देखि के जनता सिद्धांत समझेले। महात्मा गाँधी से नीक के रहल? कांग्रेस के सिद्धान्तो केकरा से बाउर बा? बाकिर नेतन के चउपट भइला से सब गड़बड़ घोटाला हो गइल। ऊहे हाल एह आंदोलनों के भइल। धीरे–धीरे ईहो आपन दम तूड़त गइल। उबड़ा जोश–खरोश आ लमहर विश्वास लेके एह आंदोलन में आइल रहे। भ्रष्टाचार मिटावे खातिर, एगो नया बिहार बनावे खातिर। तिलक–दहेज, जाति–पाँत, घूसखोरी खतम करे खातिर। शिक्षा में जरी–सोरी से बदलाव ले आवे खातिर। बाकिर ओकर इच्छा पूरा ना भइल।

देश में इन्दिरा जी इमरजेंसी लागू कइली। सगरो मशान के चुप्पी पसर गइल। नामी–नामी नेता पकड़ के जेहल में ठुँसा गइलन। जे0 पी0 के नाम पर चंदा लूटेवाला नेता रातो–रात संजय गाँधी के चेला बन गइलन। फेनु ऊहे लूटपटार चालू। जनता सँकाइल रहे। घुटन बढ़त रहे। आखिर एह दमघोटू हालत के खतम करे खातिर लोग कमर कसलस। एगो रक्तहीन क्रांति भइल। सम्पूर्ण क्रांति के पहिला चरण पूरा भइल। जनता सरकार बनल। दिल्ली के गद्दी पर इन्दिराजी के बदला मोरारजी भाई बइठलन। जे0 पी0 आंदोलन के पीठ पर बइठ के कतने लोग एम0पी0, एम0एल0ए0 बन गइलन। नशाबंदी से नशाबंदी के नारा उछलल। बाकिर अफसरशाही के मदइल हाथी पर अंकुश ना लागल। घूसखोरी ना खतम भइल। बेरोजगारी ओसहीं रहि गइल। शिक्षा के हालत प पहिलहूँ से बाउर बा। आरक्षण के नाम पर जातीयता फइलल बा। पूरा बिहार जर रहल बा। ओही आंदोलन में अरुण गिरफ्तार भइल बा, जे से मिले ऊ आइल बा। सरकार बदल गइल बाकिर व्यवहार ना बदलल। चलन ऊ रहि गइल। लूटपाट बढ़ल बा। सभकर जानमाल असुरक्षित बा। जनता के हाल ओह सुग्गा अस बा जवन लाल टहकर फूल देखि के, फेरु सुघर फर देखि के, बड़ा आशा से फर के सेवलस, बाकिर जब चोंच मरलस त खाली रुआ–हाय रे करम! अन्हरिया ना बितल। उरुआ बोलते रहि गइल। ना बेकारी मिटल, ना गरीबी खतम भइल। हँ, आशा निराशा में जरूरे बदल गइल।

– "विन्ध्याचल केकर नाम ह जी? चलीं भेंट क लीं।" ओकरा कान में आवाज पड़ल। ऊ डेगरगरे फाटक ओर बढ़ि गइल, ई सोंचत कि देखीं कब ले आफत के दिन ओराला? अबले कालरात बितल नइखे। पह नइखे फाटल

– 'भोज0 कथा–कहानी', दिसं0, 1978

मछरी

रामेश्वर सिंह काश्यप

ताल के पानी में गोड़ लटका के कुंती ढेर देर से बइठल रहे। गोड़ के अंगुरिन में पानी के लहर रेसम के डोरा लेखा अझुरा जात रहे आ सुपुली में रह–रह के कनकनी उठत रहे जे गुदगुदी बन के हाड़ में फैल जात रहे। कबहूँ, झिंगवा मछरी एँड़ी भिरी आके कुलबुलाए लागत रही सन त सऊँसे देह गनगना जात रहे। कुछ दूर पर सरपत में बेंग टरटरात रह सन आ कवनो–कवनो जब तब पानी में कूद जात रह सन जेकरा से ताल में चक्करदार हल्फा उठे लागत रहे आ तरेंगन के परछाहीं लहर पर टूटे लागत रहे।

झींगुर के अजब मनहूस झनकार हवा में भर गइल रहे। नीम के फूल के गंध से मातल बेआर ढिमिलाइल फिरत रहे। दिन भर के तवँक से अँउसाइल कुंती के मन भइल कि गते से पानी में उतर जाय आ अपना देह के पानी में बोर दे। चुहानी में साँझे से चूल्हा फूँकत–फूँकत ओकर जीव उजबुजा गइल रहे। मारे पसीना के लूगा देंह में सट गइल रहे। कसहूँ जीव जाँत के सब केहू के बीजे करा के फजिरे बरतन बासन मले खातिर पानी ले आवे निकललि रहे। राते में डूभा, छीपा आउर बटुआ पानी में ना फुला दिआई त बिहने जूठ अइसन खरकट जाई कि छोड़वले ना छूटी। बाकी, कुंती से पानी में उतरल ना गइल। अपना देह के आउर ढील कके ऊ चुपचाप बइठल रहलि।

बगले में, दहिने ओकरा घर के दुआर लउकत रहे। निकसार में ढ़िबरी धुआँत रहे। ढिबरी के मइलछहूँ लाल अँजोर में अपना पोंछ से मच्छड़ उड़ावत भँइस लउकति रहे। धवरा बैल कोना में बइठल पगुरात रहे। कुंती के बुझाइल कि ओकर माई सूत गइल होई आ ओकर नाक फोंय फोंय बोलत होई, बाबूजी ओ आँख मूँद के महटिअवले होइहें आ दम्मा के मारे उनकर साँस अदहन लेखा हनर–हनर करत होई। सीतवा, गीतवा, मोतिया, गएत्रिया, अबिलखवा, कअिया सब एके खटिया पर गुड़मुड़ा के सूतल होइहंसन। कवनो के लात कवनो के मूँड़ी पर चढ़ल होई, कवनो के मूड़ी लटकल होई, कवनो के गोड़ खटिया के ओरचन में बाझ गइल होई। अब ओकरा जाके सबके सोझ करे के परी। सब पिल्ला लेखा काँय–काँय किकिअइहन स आ माई काँचे नीदे जाग के अलगे अनरवाह करी– "अइसन कुलच्छिन ई कुंतिया बिया, दिन रात लइकन के डँहकावत रहेले, एकर बस चले त ई सब के छछना–छछना के मुआ दिही।" बाबूजी अलगे अपना खटिया पर से गुरगुरइहें– "काहे रोवाबत बाड़ि स रे, हमरा के जीए देविस कि ना? एक त हमार जीव अपने खों खों।" आ ऊ सब के ओइसही छोड़ दे त माई लगिहें बिख बोले– "एकर रहन देख के त हमार पित लहर जाता। काठ के करेजा हइस। पत्थल ह पत्थल। एकरा कवनो दम–फिकिर हऊ स! लइका मूअ सन भा जीय सन।"

घर का इयाद आवते कुंती के जीव उदास हो गइल जइसे खँखार पर गोड़ पर गइल होखे। कुंती के ना चहलो पर पहिले के याद ओकरा आँख के आगा पंवरे लागल।

कुंती नौ बरिस के रहे तबे ओकर माई मू गइल रहे। ओकरा अपना माई के मउअत सोझा लउके लागल। माई मउराइल बैगन लेखा हो गइल रहे आ ढकना में लाल मिरचाई जरा के टहल ओझा बेंत पटक–पटक के ओझाई करत रहन, फिर माई के मूड़ी एक देने लटक गइल आ बुढ़िया मेहरारू सब सियार लेखा फेकरे लगली स, आजी हमरा के करेजा में जाँत के माई के गुन रो रो के गावे लागल रहे। कुछु दिन बाद बाबूजी आ चाचा मूड़ी छिलवा लेलन, खूब भोज भंडारा भइल आ छौ महीना बाद नइकी माई आइल। पहिले दिन ओठ बिजुका के हमरा के देखते पूछलस– "तूँही हमरा सवत के बेटी हऊ?" हम मूड़ी हिला के कहली– "हूँ।" तहिया से आज ले ऊ हमार जेतना साँसत कइलस ओतना कवनो दुसमनो केहू के ना कइले होई। के जाने ओह जनम के कवना कमाई से हम दस बरिस में जीयते, छछात नरक के भोग भोग लेलीं। माई के बरसाएने लइका भइल। पाँच गो त मूँ गइलेंस। ओकरो पाप माई हमरे कपारे पर थोपेले कि इहे हंड़साखिन मुअवलस। बाबूजी के दम्मा हो गइल। माई रोज कवनो ना कवनो रोग कछलहीं रहेले। चाचा माइए से आजिज आके अलगा हो गइलन। लइका देखीं त हम, खैका बनाई त हम, भँइस गोसि के सानी पानी करीं, गवत लगाईं त हम। माई अपना हाथे खरो ना टारे। दस बरिस से दिन रात चंग पर चढ़ल रहीला, मिजाज चरखा भइल रहेला, अतनों साँवस ना मिले कि अएना में सुबहिते मुँह देखीं।" सोचत–सोचत कुंती के बुझाइल कि ओकरा देह में देहे नइखे।

अठमी के चनरमा, सड़ल तरबूजा के फाँक लेखा बाँस के फुलुँगी में अझुराइल रहे फीका, उदास, सकुचाइल। मारे धूर के असमान सिलेट लेखा साँवर लागत रहे। पानी में डूबल–डूबल कुंती के गोड़ कठुआ गइल रहे, पेडुरी चढ़े लागल रहे। ऊ गते से आपन गोड़ पानी से बाहर निकाल लेलस। एक मन कइल कि घइला भर के घरे चलीं। ढेर रात बीत गइल। बाकि ओकरा से टकसल ना गइल, आलम ओकर गतर गतर बान्ह देले रहे। कुंती गते से एगो खपड़ा टकटोर के अपना एँड़ी के मइल छोड़ावे लागल।

चिंता के टूटल धागा फिर जोड़ा गइल। एने तीन साल से त हमरा अपने चुप–चाप बइठे के मन ना करे। जहाँ अकेले बइठीं मन में किसिम–किसिम के विचार उठे लागेला। ई सभ सोचला से का फयदा? बाकि जहाँ इचिको सँवस लागल कि फिर बैताल ओही डाढ़ पर। मनवाँ खरावे बात देने झुकेला। एही से जान बूझ के हरदम अपना के काम में बझवले रहीला। जेतना हमउमरिया सखी सहेली रही सन सभ के बिआह कहिए भइल। कै गो त लरकोरिओ हो गइली सन। जहाँ ऊ सब बइठिहँ सन। खाली ससुर के बात, अपना मरद के बात। खोद–खोद के दोसरा से पूछिहऽ सन आ रस ले ले कहिंहऽसन। हमरा त ई सुनल इचिको नीमन ना लागे बाकि केहू सुनइबे करै त का कान मूँद लिहीं? झूठ काहे के कहीं, जहिया ई सब सुनीला नींद ना लागे उऊँसे रात करवटे बदलत बीतेला। मने–मने हमहूँ सपना देखे लागीला कि कइसन हमार ससुरा होई, कइसन सास के सुभाव होई, सवाँग खिसियाह मिलिहें कि मिठबोलिया? ऊँह कइसनो मिलस। आपन आपन भाग ह। नइहर में सौतेली मतारी के दिन–रात के किचकिच से त नीमने होई। माई के बोली हइ स? बुझाला कि चइली से मारत होखे। बाबूजी के मति न फेर देले बिया। परियार साल बाबूजी एक जगे ठीक ठाक कइल स त माई ठेन बेसाह देलस कि एह साल बैल किनाई। बँटइया पर खेती ना होई, अपने हर चली। जब रोपेया बैल में उठ गइल, हमार तिलक कहाँ से दियाव? परसाल फिर बाबूजी एक जगे बात चलवलन। लइकवा दोआह रहे। डाकपीन के काम करत रहे। एक तरे से सब कुछ पक्के रहे। सखी सहेली में केहू हमरा के मनीआडर वाली कह के चिढ़ावे, केहू लिफाफा पोसकाट वाली कह के चउल करे। हमहूँ मनेमने गाजत रहीं कि दोआह बा त का ह? करकस मतारी से त जान बाँची। बाकि माई बेंड़ देली कि हम अपना जीयत जिनगी कुंती के बिआह दोआह बर से त ना होखे देब, नाहीं त सब केहू मेहना मारी कि सवत के बेटी रहइन एही से दोआह के गले मढ़ देली, जिनगी भर अकलंक के अपना माथे लिही? बाबूजी त हर बात में माई के मूँहे जोहत रहेलन। लागल बात कट गइल। भितरिया बात त हम जनबे करीला। माई सोचली कि कुन्ती चल जाई त लइका के खेलाई?

कुन्ती के बुझाइल कि ओकरा कंठ में कुछु अँटक गइल बा आ दुखाता। पँजरी आ हँसुली के हाड़

में जइसे टभक अमा गइल होखे, सऊँसे देह जइसे घवदाह हो गइल होखे, माथा के नस के जइसे केहू ताँत लेखा तान देले होखे आ ऊ टन टन बाजत होखे। कुन्ती के साँस तेज चले लागल आ गरम साँस के धार ओकरे ओठ पर साफ बुझात रहे। गदराइल देह समुन्दर के हल्फा लेखा साँस के ताल पर उभरत रहे, डूबत रहे, ओठ रह रह के ओइसहीं काँप जात रहे जैसे भोरहरी के हवा में बबूर के पतई काँप जाला। बहुत दूरे मनियारा साँप के कतार लेखा छोटी लैन छकछकात चलल जात रहे। मधिम अँजोरिया बेरमिया लेखा बेदम होके गते हाँफत रहे। कुन्ती के एगो लहर ठंढ़ा साँस निकल गइल आ ओकर सउँसे देंह लूक में जरल मोजराइल आम के गाछ लेखा सिहरे लागल।

"अइसे कब तक चली? डेग–डेग खाई खंधक बा। ओह दिन अछैवट सिंह के छत पर गेंहू सुखावे गइल रहीं त उनकर भगिना गते से आके हमार नाँव पूछे लागल। सुनीला जे पटना पढ़ेला। मन त भइल कि खूब सुना दीहीं कि बहरकू तोरा हमरा नाँव से मतलब? बाकि पित घोंट के रह गइलीं। हमार खिसिआइल मुँह देख के ऊ अपने लवट गइल। बिरीछ काका के बेटनो के उहे हाल, जहाँ हम ताल में नहाए अइलीं कि केवाड़ी का दोबा में लुका के अपना दलान पर से घंटन निहारल करी। मउगा कहीं का। मन त करेला कि कान धर के मारी दू थप्पर। सीक अइसन त बाड़न, एगो थप्पर के मउआर ना होइहें आ रसिया बने के सवख बा। आ बंसियो का कम आफत कइले बा, सिलिक मिरजई पेन्ह के दिन भर में चार भाँवर हमरा गली में फेरा लगावेला। हम का ओकर रंग–ढंग ना चीन्हीं? बाकि बोलेउले ना। जहिया टोकलन, अइसन उघटब कि फेन हमरा सोझा आवे के नाँवे ना लीहें।.... बाकि कब तक? अइसे कहिया ले चलीं?"

कुन्ती के बुझात रहे कि साँप के बिख के लहर ओकरा देंह में उठ रहल बा आ गोंइठा के धुआँ में जइसे ओकर दम घोंट रहल बा आ ओकर गत्तर गत्तर अब पारा लेखा चारो देने छितरा जाई। गाँव के दखिन सिवान पर कुकुर भुँकत रहलन। खेत में सियार फेंकरत रहसन। काली माई के मंदिल से पाठ कर के चरित्तर काका लवटल आवत रहन। उनका खड़ाऊँ के खटर–खटर साफ सुनात रहे। कुन्ती सोंचलस कि एह रात के चरित्तर काका ओकरा के ताल किनारे बइठल देखिहें त का सोंचिहें? झप्प से धइला बुड़का के घरे चलल। निकसार के बगल में दहिने हट के नेनुआ के लत्तर चढ़ावल रहे। ओहिजा कुछ आहट बुझाइल। कुन्ती चिहा के पुछलस के ह? बंसी के काँपत, खखन से भरल आवाज आइल– "हमार किरिया, तनी एगो बात सुनजा।" मारे घबराहट के कुन्ती के हाथ–गोड़ काँपे लागल। ऊ धड़ से निकसार के भीतर जाके केवाड़ी के पल्ला भिड़ा लेलस। एह समय ओकरा अपना करेजा के धड़कन साफ सुनाई देत रहे ओकरा माथा पर पसीना चुहचुहा आइल रहे आ साँस बहुत तेज हो गइल रहे। घइला थवना भिरी रख के ऊ मने मने बंसी के खूब गरियवलस।

आँगन में माई ना रहे। लड़का सभ दँवरी लेखा खटिया पर पटाइल रह सन। बाबूजी के घर में दिया बरत रहे। पल्ला ओठँघावल रहे आ बुदुर बुदुर के आवाज आवत रहे। आपन नाँव सुन के कुंती गोड़ जांत के गते से जाके केवाड़ी में कान लगा के सुने लागल। माई बाबूजी के समझावत रहे– "एह साल कुंती के बिआह के नांव लेल त ठीक ना होई। तोहार बेरामी एह साल बहुत उखड़ गइल बा। चलऽ बनारस रह के दवाई कराव। हमहूँ ओहिजा डाक्टर से जांच कराइब।" बाबूजी कहलन– "से त बड़ले बा बाकि लोग बाग अब अँगुरी उठावता, जवान जहान बेटी के कबले कुँआर रखबू?" माई तड़प के बोललली "वाह रे, लोग बाग कही त कुँइयो में कूद जाइब? एह साल ना सही, पर साला सही, कवनो मछरी ह जे सड़ल जात बिया।" बाबूजी मान गइलन– "ई त ठीके कहत बाड़ू, कवनो मछरी त ह ना जे सड़ जाई। परे साल सही।"

कुंती के बुझाइल कि पचासो बिच्छी एक साथ डंक मार देलन। बेहोसी में अपना खटिया देने बढ़त बाकिर अचक्के ओकर गोड़ लगो जूठ थरिया में पर गइल। झन्न से आवाज भइल। माई भीतरे से चिचिया के पुछलस– "काहे रे कुंतिया, का भइल?"

कुंती के फफक–फुफक के रोए के जीव करत रहे। मन करत रहे कि लाज लिहाज के छोड़के बाबूजी से अबहिएँ जा के कह दे कि बेटी मछरी ह बाबूजी, पानी के बाहर कब तक जिही? सड़ी ना त बिलाई ले भागी।

कसहूँ रोआई जाँत के कहलस "कुछ ना रे माई, बिलार रहे एगो। भाग, बिल, बिल।" ●●

सुद्ध-असुद्ध

शिव प्रसाद सिंह

चइत क रात गाँवे में जब उतरेले एगो नसा जइसन पसर जाला सगरी ओर। सुबह होखे के घंटा भर पहिले हवा में गुलाबी सर्दी होला आ देह में अइसन सिहरन कि लागेला कि आजु के रात भाँग छानि के सूतल रहल ह लोग–बाग। कहाउत हव कि सारा जाड़ा एक कम्बल से कट जाला बाकिर चइत के सुबह क जाड़ काटे खातिर सँवरू अपन बछिया बेच के रजाई बनवलन। आज सबेरे–सबेरे सेवा आ सँवरू दूनो जाने बात बे बात पर लड़ गइलें।

"देख सँवरुआ" घरे के चौकठ लांघि के गल्ली में पैर रखते सेवा मिसिर चिल्ला के कहलन– "तू काहे के मरले रे पुरसोतमा के?"

"ससुर ऊ हमार बेटा हौ। ओके हम मारब काटब त, तू सारे कौन होत हउवे। बीच में पड़बे त अइसन कुजगहाँ मारब कि जावत जिन्दगी रोइ रोइ के बितइबे। ससुर खुदै सहका के ओके सिलेमा देखे के भेजले आ अब तू हमके डाँटे आ गइले।"

सँवरू पांडे बोललन– "चुपचाप चल जो एहीजां से, नाहीं अच्छा ना होखीं। बरिस दिन पर एकै दाईं आवेले होली। एकै बेर जरेला सम्वत्। तू आज चुप रह। तोर मन बहुत बहसल हव त फगुआ बाद गाँवे के खरिहान में होई हमार तोर दंगल, जेतना पवरा होखे देखइहें, कुछ उठाइ मत रखिहे। जो आज भर अउर मुसुक बनाव आ ऐना में अपने चेहरा देख–देख के मुस्किया ले।"

"देखा हो मुंशी जी बात तोहरे सामने होत हव" सेवा मिसिर कहलन– "ई नाहीं कि बखत परै त तू बाँये–दाँये झँकिहा। खुल के कहेके पड़ी। जनला! सेवा मिसिर पेड़े के खोंड़रा से ना निकसल हउँअ। मतारी के दूधे के लाज राखबि आ तोहर बढ़ि–बढ़ि के बतिआइब हरमेसा खातिर छोड़ाइ के रहब।" सेवा बोललन आ जाँघ ठोकलन। "तू हमार मुसुक उतरबे, हमरे चेहरवा से हमार मुस्कियाव छीन लेबे स्सारे करमदरिद्दर? तू अपने बेटा पतोह के ना भइले त तू हमार का होबे। कइसन फगुआ आ कइसन संवत्। जब तोर मन में दरार परिए गइल त बरिस दिन का दोहाई का देत हउवे– हो जाव आजे हमार तोर फैसला। सारे तोरे बाँह उखार के तोरे कपारे प ना धइलीं त कहिहे। बकरी के मूत से ई मोछ मुड़वा देब। का गलती कइलस परसोतमा? इहै ना कि आपन मेहरारू लेके बस पर बइठ के चलि गयल बनारस आ दुइठे सिलेमा देख के आ गयल। त तूं का ओकर जान लेबे? स्सारे तोहरे जिन्दगानी में सिनेमा नइखे लिखल त तू का सारे देहात के सिनेमा देखनहरुन के हत्ता करबे?"

"तू हमरे घरे के ममिला में नाक मत घुसावऽ सेवा मिसिर। अरे हमसे बिना पुछले साला मउगड़ा पुरसोतिमा बनारस गइल। अपने मेहरारू के सिखाय–पढ़ाय के उल्टा पल्लू क साड़ी पहिनवलस। एतना बड़ा नवहँसाई करा देलस आ तू सार ओकरे

ओर से लड़े आ गइले हमसे! तू के हउवे रे? हम अपने बेटा पतोह के बखरी में ना हेले देहलीं त तू ओकर असरन सरनदाता हो गइल? बोल स्सारे। सुना हो मुंशी, धियान से सुना– ई दूसरे के ममिला में टाँग अड़ावे के अपराधो कइलस ऊप्पर से सरवा सेखियो बघारत हव। अब बतावा एक ओर त ई बाप बेटा में लड़ावे क चालो चल देलस आ हमके साला करमदरिद्दरो कहत बा। काहे, कौन दरिदरई देखले रे तू हमार? हम सारे तोरी ओरी के नीचे ना बइठली आजु तक। स्सारे जब तोकें गाँव–गिराँव मूरख कहके तोर अँग–डँग रोक देलस त हमही तोर पच्छ रखलीं। हमहीं बोललीं कि ना? बोल सायर माई के नाम ले के। तोर लाज बचवलीं कि ना?"

"अच्छा चुप रह। ढेर बढ़–बढ़ के बतिअइबे त हम तोहरे पेट में से हाथ भर के दाढ़ी खींच के चौराहा पर धइ देब।"

"हमरे पेट में कवन दाढ़ी छिपल हव रे" संवरू पांडे पूछलन। सच कह त तोरे पेटे में जाँघ भर लमकी दाढ़ी हव। तू ससुर उघटा पुरान पर उतरबे त हम तोके बिना नँगिअवले छोरब ना।"

"हमरे पेट में कवन दाढ़ी हव, अब बताले त हम अपन बात क अरथ तोकें बताइ देब।"

"अरे कवन बात क अरथ समझइबे। तू अपन बड़वरगी देखावे खातिर अँग–डँग वाली बात हजार बार कह चुकल हउवे। देख सँवरू तू हमार अँग–डँग चालू करा के अपने के बचवेले।"

"हमरे जजमानन के तोरब बड़ा मुस्किल हव सेउवा। बड़ा मुश्किल। मध्यमा क परीक्षा एही बदे पास कइलीं कि कौना माई क लाल करमकांड करावत क हमार एको सलोक में असुद्ध ना बता सकत?"

"त का हम मध्यमा फेल हईं? हमहूं त सँगवे पास कइले हईं कि ना मध्यमा?"

"देखा हो मुंसी, एके हम मध्यमा फेल कहलीं हं? बतावा तू" सेवा कहलन– "हम एके फेल कहलीं हं?"

"हे पंडित बाबा, हमार पिंड छोड़ऽ तू लोग। तोहन लोगन के बीच में आके के आपन मुँह चुँथवाई। एतना देर से तोहन लोग क बात सुनत हईं बाकिर हम के ईहे ना पता चलल अबहीं तलक कि तू दुनो जने लड़त काहे बाटऽ। कवन बात क झगरा होत हौ ई?"

"भाग स्साले मुंसिया" सँवरू पांडे दूनो हथेली से अइसन घस्सा मरलन कि ऊ मुंशीजी डेराय के गल्ली में भगलन। दुनो ठठाके हँसलन। "भाग स्साले, सच्चो बड़ बुरबक बाड़े। एकरा पते नइखे कि हमहन काहे लरत हईं। अच्छा सँवरूआ रह जो। हम कौनो दूसर बिचवइत खोज के ले आइब घंटा आध घंटा में। तू ई मत समझ ले कि तोरे डर से हम ई बात कह रहल हईं। हमरे पर विसवास ना होत होय त कवनो दोसर बिचवइत तूंही जा के ले आव। आज हमार तोर त फैसला होई के रही।"

"त तू अपन जज ले आवऽ हम आपन। दूनो के बिचवइत बराबर होवे के चहिहन। हव कि ना।"

"हौ त, पर जब ले एक्को बिचवइत फँसी नाहीं तब तक का हमहन के सांती मिली?"

"हमरी ओर से त तोके सान्ती नाहिये मिली।"

"त हम का तोके छोड़ब। हमरियो ओर से तोके सांती ना मिली।"

ओही बखत मिसराइन आ पँडाइन बाहर आ गइलिन– "तू बहसल का बाड़ऽ। ई सेउवा क अतियाचार अब सहात नइखे। तू अपन दुआरी दक्खिने ओर खोल ल। जवन गोसैया का मर्जी होई, होवे द। लोग बाग कहेलन कि दखिन मुँहे दुआर असगुन कहाला बाकिर पूरूब रहिके रोज सेउवा से किच–किच के करी?"

"अरे बाह भौजाई! कइसन नियाय कइलू ह? बाह बाह।" सेवा बोललन।

"तू पागल हवऽ।" मिसिराइन बोललीं– "तू अपन दुआर उत्तर के खोल ल। बन्द करऽ पच्छिम ओरी क दुआर। उत्तर न त सही कहाला न गलत। मेझराह सगुन हव। मगर ए कदजिम्मी से रोज झाँव–झाँव कइला से त अच्छै न रही।"

"तबै तोहन लोगन के सान्ती मिली?" मिसिर आ पांडे पूछलन।

"ई सान्ती के हव रे मिसराइन? ई दूनो सान्ती खातिर एतना लड़ाई काहे छेड़ले बाड़न लोग?"

"तू खुदै पता चलावऽ पंड़ाइन। हमहूं के कुछ न कुछ गड़बड़ लागत बा। केहू न केहू के पेट में दाढ़ी जरूर छिपल बा।"

"दाढ़ी?"

"हँ पड़ाइन, दाढ़ी?"

"हे भगवान।" पंड़ाइन सिसके लगलीं आ

लिलार पीटत घरे में घुस गइलीं।

"कारे बुड़बक सेउवा। देखले का का अरथ होत हव शान्ती के?"

"ईहौ ससुरी घुस गइल घरे में, अब का कयल जाव सँवरू भइया।"

"हमरे बिचवइत से काम चलि जाइ कि दूगो खोजे के परी?" सँवरू मुस्किया के पूछलन।"

"अरे हँसी ठट्ठा मत समुझऽ एके। तोहार देह ओनच के रख देही भौजइया। सगरी मटरगस्ती हवा हो जाई।"

"त तू का अइसहिं छूट जइबा? तोहरो चूल्ल ढीला कइके मानी मिसरइनियाँ। धत्तेरे के। एतना नीक दिन बीतै जात रहल ह कि ई किरकिरा हो गइल। अब चला कौनो बिचवइत खोजा।"

"तोहंऊं त खोजा भइया।"

"त का एक बिचवइत से काम ना चली?"

"कइसन पागल बाड़ऽ हो, बौड़म। मरद–मेहरारू के झगरा में एक बिचवइत रख के हुल्लड़ करइबऽ का?"

"हँ यार, हमहूँ कबौ, कबौ बेवकूफ नियर बोल देहिला। हाँ अलगे अलगे अपना मामिला के सुलझावे खातिर बिचवइत बुलावे के परी?"

बड़ी मुस्किल भइल। लाख कोसिस कइलो प मुंशी के अलावा सेवा के केहू दोसर बिचवइत ना मिलल। सँवरू पूरे गाँव में घूम अइलें बाकिर केहू दोसरा के ममिला में टांग अड़ावे खातिर तैयार ना भइल– "सुनऽ पांडे।" कालू साह कहलें– "कुछ सुलफा चिलम क इन्तजाम करावऽ त हम बिचवइत बन सकीला। तू त इहो जानत होबा कि भौजाई हमरा के हरीचन्दर समझेली। बाकिर हर काम ई हरिचन्दर मुफुत में करे लगी त केतना घाट होई भइया। अपन राम बनिया हईं न। कुछ नगद ना चाहीं बाकी एक भर गाँजा के बिना त हम एमा हाथ ना डालब।"

"त सारे तू बनिया बक्काल, हमसे घूस लेइ के तू हम मरद–मेहरारू के बीच समझौता करइबे सारे। अइसन पुराचरन बाँचब कि तोर खटिया कल्हिये उठ जाई।"

"राम–राम।" कालूराम कहलन– "भाई ई पुराचरन से त हमके हुराचरनो से अधिका डर लागेला। लोग बाग कहेंले कि सँवरू पांडे जदि मन से पाठ बाँच दें त आगिया बैतालो के बुला सकेलन। त तू मत दीहा गांजा। पकौड़ी आ जिलेबी त खिया सकेला न?"

"हाँ खिया देब।"

दूनो बिचवइत अपने अपने मुवक्किलन के समझावे पहुँचलन। मुंशी अपन कानूनी दाँव लगा देहलन। "देखऽ भौजाई" ऊ मिसिराइन से कहलन "आजकल सरकार नान्हें जात वाला चलावत बाड़न स। ओनहन के कहला से सरकार ई मान लेले बा कि आज हिन्दुनों में तलाक होइ जाई। अगर मिसिर चाहें त तोके तीन बार तलाक, तलाक, तलाक कहके घरे से बाहर कर सकेलन।"

"का?" मिसिराइन क आँख चम्मच नियर फइल गइल– "ई मिसिरवा हमके तलाक देके डरवावे खातिर तोहँके भेजलस ह? रह पहिले तोहरे मरम्मत कइ देहीं त मिसिर से त बाद में फरिया लेब।"

ओही समय कोने वाले घर से पुरसोतिमा निकलल– "अरे चाची ई तोहार काम ना हव। तनी हमहूँ के नया कानून समझे दे। बइठऽ तू। करे मुंसिया तू साले गाँव भर के मर्दुमसुमारी करवले। तनिक बताव त ए गाँव में केतना सान्ती हइन स?"

"हम का दिमागे में लिखि के चलल बानी?"

"त तू ई बताव कि हिन्दू कोड में तलाक कब लिखाइल?"

"अब तू पढ़त बाड़ऽ हम नइखीं जानत। ना होत होई तलाक।"

तबले सेवा बो आ पुरसोतिमा क मेहरारू, झाड़ू ले के मुंशी पर पिल पड़लीं स। मुंशी क हाय–हाय सुन के सेवा मिसिर के लिलारे पर पसीना आवे लागल।

एहर कालू राम पांडे के घरे पंड़ाइन के समझवलन कि सान्ती खातिर तोहरा सरबत में काल्ह जहर पिआवे क मनसूंबा बँधले बाड़न पाँड़े। एहसे तू अपने पर अजलेम काहे लेताडू। ओनके मौका मत द। सगरी गाँव कही कि पंड़ाइन के दोस नइखे– ई सब सँवरू क चाल बा।

"हमरा के मुवा के ऊ सान्ती से बिआह रचावे के सपना देखत बा" पँड़ाइन रोवे लगलीं। "तू हमार हरीचन्दर देवर हउअ कालू साह। जब तू कहत बाटऽ त जरूर ई बात साँच होखी। ई पँड़वा बुढ़ौती में नई नई सादी रचावे खातिर मउर बाँधे में लागल बा। हे

भगवान जी ई उफ्फर परो, एकरा बदन में कीड़ा परो– ई हमरा जइसन सती सवितरी नारी के छोड़ के जाने कौन बेसवा से बिआह कइल चाहत बा। हम जानके रहब। हम एके सांती से बिआह नाहीं करे देब। देखीला कि कइसे ई बिआह करेला।" पड़ाइन बुक्का फाड़ के रोवे सुरू कइलीं तब ले बगल के कमरा में से मिसिर क लइकवा बिरजुआ आइल आ ऊ कूल साह क गदरन दूनो हाथ से पकरि के दबवलस।

"हं, हँ अरे हमार जान लेबे का रे बिरजुआ?" साह जी गर्दन झटकरलन।

"ए सरवा झगरा से हमार का मतलब। सँवरू जवन कहे के कहलन हं हम उहे कहलीं ह।"

बिरजुआ मार चप्पल साह क खोपड़ी गरमा देहलस। मचल कउआरोर। संवरू क त साँसे टँगा गइल। ओहर मिसराइन क उग्र रूप देखि के मिसिर सकपकाइल रहलन। आ एहर कउआरोर सुनि के पांड़े के धुकधुकी बढ़ गइल।

दूनो पास आ के, एहर–ओहर झाँकि के एक दोसरे के आँख में आँख डालि के बोललन स– "कहाँ के पचड़ा में फँसली हम सब।" एक जाना कहें कि सान्ती तूँ कहलऽ दोसर जानी कहें कि ना पहिले तूँ कहलऽ।

तब ले रघुनाथ उपधिया बगुला के पाँख नियर सफेद धोती–कुर्ता झाड़ि के आ गइलन।

"ई का होत हव हो सेवा आ सँवरू? तू लोग काहे अइसन रमझौंरा मचवले बाड़ऽ? जमाना एतना खराब आइल बा कि केहू बामन क हित चाहे वाला नइखे। ए सगरो राज में बस रूपइय्या क दबदबा बा। जेकरे पास ऊ हवे ओकरे समान गियानी केहू नइखे। तू सभे आपुस में लड़ि के काहे बदे नाक कटा रहल बाड़ऽ लोग बामन जात क? एही गाँव में एक से एक विद्वान आ जोतिखी होत रहलन। चारों ओर नवरातर में पाठ करावे वालन क अइसन भीर होत रहल कि एक–एक बटुक लोग दस–दस पाठ करत रहलन। ई हमरे आँख के आगे क गुजरल बात बा। केहू कहूँ ना कहल कि फलाँ के दुइयो पाठ नाहीं मिलल एह नवरातर में आ काहे के फलनवाँ के बारह–बारह जजमानन क पाठ करे क न्योतल गयल। फलनवा के बारह ठे कन्हावर मिलल, फलनवा के एगो गंजियो नाहीं नसीब भइल। त भइया तू लोग आपुसे में लड़ि के काहें आपन भविस्स खराब करत बाड़ऽ?"

"देखऽ हो सँवरू भइया, कइसन गियान दे रहल बाड़न रघुनाथ उपधिया। अरे ई काहे नाहीं कहत बाड़ऽ चच्चा कि अपने पवरा से, डलिया देइ देइ के खुस कइले बाड़ऽ थानेदार आ अमीन के। बलाक से तोंहके सब कुछ दे रहल बा गवरमिंट। स्साला बीडीओ तोहरे दुआरेहि पलंगड़ी तोड़त बाटे, हमहम जइसन गरीब गुर्बन प आजो अंगरेजी जमाने क कहरै टूट रहल बा।"

"देख रे सेवा, इनकर एगो बटुक बारह गो पाठ कइ रहल बा नवरात में। सीरी गनेश जी आए नम' सुवाहा। काली मैया आये नमः सुवाहा। गोरया बीर बाबा आये नमः सुवाहा।"

"अरे सँवरू पांडे एतना सुद्ध मत बोला कि चच्चा के लिलाटे क चन्दन चड़चड़ा जाये। अरे पइसा से सब होत हव हो संवरू भइया। पइसवे पाठ करावेला, जग्य करावेला आ पइसवे सब असुद्ध के सुद्ध बता देला। बस चच्चा परनाम। तोहार किरपा चाही। हमहन क त पेट बाँधि के सुत्ते के आदत लग गइल बा। परनाम।"

"भाड़ में जा तू लोग। सही बातो जब तोहन लोगन के कुनैन जइसन लगत बा त तोहन लोगन के समुझाइब बेवकूफिये बा। जा लोग उफ्फर परऽ। हम काहे अइसन बुड़वकवन से बात करके बेमतलब गारी सुनब। हमसे चिढ़ के तू लोग का कर लेबा?"

"हँ चच्चा।" पाँड़े आ मिसिर हाथ जोरि के बोललन– "एही से त हमहन क तीन बार बोललीं हँ सभ– तलाक, तलाक, तलाक।"

"माने?"

"सुनत हई जा कि केहू से तीन बार तलाक कहले से कुट्टी हो जाला। त हमहन के अपना हाल पर छोड़ीं रउआ। जेकरे पास नगद नारायन होखे, जेकरा ऊपर गुसैंया क किरिपा होखे, उहै सुद्ध बा।" सँवरू कहलन।

"बिना रुपैया वाला त असुद्ध होखबे करेलन" सेवा कहलन।

"जै हिन्द।" ●●

दुख-सुख

✍ विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

मुंसी रामनाथ के नींद टूटि गइल। ऊ बहुत गुस्सा में उठलें। दुपहरिया के नींद उनके बहुते प्रिय रहल। उनके रातिन में नींद नाहीं आवे, एकर भरपाई ऊ दुपहरिया में कुछ देर सूति के करत रहें। ऊ सीधे अंगना में अइलन। रामू आ सामू अपने में खूब गुत्था–गुत्थी कके लड़त रहन स; एक–दुसरा के खूब गरिया–गरिया लातन मुक्कन मारत रहलन। मुंसी रामनाथ का मन में आइल कि दूनूँ कि खूब पीट दीं, बाकि उनके डाँट भर सुनिके ऊ दूनूँ फरका–फरका खड़ा हो गइलन। बहुत डेराके ऊ मुंसीजी की ओर एह भाव से देखत रहन स जैसे कि आपन गल्ती मान लेले बान सऽ आ सजा भोगे के तइयार बानऽ स। दुनूँ कि डेराइल आँखिन में मुंसी जी पता नाईं का देखनंऽ कि बिना कुछु बोलले चुपचाप अपनी कोठरी में लौटि अइलें। फेरु खटिया पर लेटि के छत की ओर देखे लगलें। फागुन क महीना रहे, मौसम क उदासी कोठरी में भरि गइल रहे, हालाँकि ऊ आपन सब खिरकी बन्द क देले रहलें बाकि पछुआ क फुफकार के महसूस करत रहलें। उनके घर के पीछे खड़ा तरकुले के पेड़ खूब झूमि–झूमि के शोर मचावत रहे। ऊ झरत आ उड़त बेहिसाब पतइन का खरखराहट सुनत रहलें। उनकी आँखिन में ना जाने केतना बिना पत्तन के पेड़ दइत की तरे आपन उधार बांहि आ अंगुरी फैला के खड़ा रहन स। ऊ छत की ओर से आपन आँखि हटा लिहलन।

इहे फागुन रहे जब मुंसी रामनाथ क बड़का लड़िका बीनू मरल रहे।.... उनकी आँखिन में बीतल दिनन क एक लमहर संघर्ष उभरि आइल।.... बीनू आ बिहारी.... बिहारी आ बीनू....। बीनू के ऊ संगीतकार बनावल चाहत रहलें आ बिहारी के जहाज चलावे वाला पाइलट। मुंसी रामनाथ के जीवन ऊ दुनो इच्छा अतृप्त रहि गइल रहे– सितार बजावल आ कुलि दुनिया घूमल। उनकर ई दुनों इच्छा पूरा ना भइल। आदमी जवन खुद नाहीं पावेला ओके अपने संतान से पूरा करावल चाहेला। मुंसी रामनाथो इहे सोचले रहले।

मुंसीजी क पत्नी पड़ोस में गइल रहलीं। ऊ लौटि आइल रहली आ आवते मुंसी जी पर बरिस परलीं– "केतना बेर बहू से कहलीं कि लइकन के बाहर मति जाये द, बाकि ऊ कब्बो ध्यान ना दीहली। ल! आज फेरू बगलगीर लोग तोहरी राम आ सामू क सिकाइत करत रहल ह लोग।"

"का कइलं स रामू–सामू?" मुंसी जी बिना कौनो खास ध्यान दिहले पुछलें।

"आजु फेरू मरल हं स राधिका की बेटी के। अब त इहे रहि गइल बा कि एह अभागन खातिर टोला भर से झगरा करत रहीं जा।" पत्नी कौनो काम सोचिके चौका में चलि गइल रहलीं।

"लइका हउँवँ स बीनू कऽ महतारी, सब ठीक हो जइहँ स।" ई बाति आगे न बढ़े एह ख्याल से मुंसी जी कहलें।

"ठीक का हो जइहँ स। ओ कुल्हिन के न तूँ साजताड़ऽ न रानी साहिबा डांटताड़ी। अब त हमहूँ इहाँ नाहीं रहब। तोहरे साथे रहले क सुख बहुत भोंगलीं।" पत्नी

झनकि के अपनी खास लहजा में कहलीं।

मुंसी जी कौनो जवाब ना दिहलं जइसे कि ऊ ए कहला के बेमतलब समझत रहले। ऊ पत्नी की फाटल साड़ी आ उनकी सफेद रुक्खल बारे की ओर देखी के देखते रहि गइले। पत्नी उंहाँ से चलि गइल रहलीं बाकि मुंसी जी क आंखि अब्बो ओहरे टिकल रहे। उनके आपन सोहाग राति मन परल। तब ई केतना बच्ची रहली। केतना कम बोलत रहली। मुस्कायें त जइसे जाड़ा में धूप खिल उठे।... मुंसी जी उदास हो गइले। उनकी आंखिन में पुरान बातिन क पूरा सिलसिला उमड़ि परल। बीतल दिन उनके दुखी करे लागल। अमूमन ऊ इहे करबो करेला काहेंसे कि ऊ आदमी की जीवन क मरल हिस्सा होला। बीतल दिन केतनो सुख क रहल होखे स ओके याद करत आदमी अपनहूँ के बीतल महसूस करेला। मुंसी जी क त बातिये दूसर रहे। उनक बीतल दिन त उनकी हाड़न के अक्सरे की तरे छेदि देले रहे।

मुंसी जी क समय हो गइल रहे। ऊ आपन पुरान कुर्ता पहिरले, छड़ी उठवले आ सेठ मंगतू राम की घर की ओर चलि दिहले। सात–आठ बरिस से इहे उनकर रोज क नियम रहे। सबेरे जागत रहले। सात से इगारह बजे ले एकठो प्राइवेट स्कूले में रजिस्टर–ओजिस्टर लिखे क काम करत रहेलं आ सांझि के चारि से आठ बजे ले सेठ मंगतू राम की रोकड़–बही क हिसाब किताब ठीक करत रहेलें। बीच क दुपहरिया खइले आ सुतले में बीते। मुंसी जी हिसाब–किताब क माहिर रहलें। रेल विभाग की लेखा–जोखा आफिस में मुलाजिम रहलें। सोचले रहलें कि रिटायर भइले पर हिसाब किताब की जहमत से छुट्टी मिल जाई। बाकि मुंसी जी एतना भागिमान ना जनमल रहलें कि उनकर चाहल पूरा होत। रिटायरमेंट की बरिस भितरे उनुकर दुनूँ जवान बेटा एक–एक क के गुजरि गइलं स। बीनू तीस क रहे आ बिहारी बाईस क। दुनूँ रेले विभाग में मुलाजिम हो गइल रहलें स। उनहन के नोकरी दियावे खातिर का–का नाहीं करे के परल मुंसी जी के। अप्सरन के बीबिन क छोड़न ले फींचे के परल।...

आजु मुंसी जी चलल जात रहलें अन्हार भविष्य की ओर, जरत अतीत पर जल्दी जल्दी पैर धरत। एगो लमहर सड़कि उनकी सामने रहलि जवन देखते–देखत खूब घुमावदार गल्लिन में बदलति जाति रहे। उनुके एइ सन लागत रहे कि ऊ सड़कि पर ना, कौनों ऊबड़–खाबड़ पथराइल इलाका चाहे रेगिस्तानी इलाका में चलत रहलें। कब्बो खूब जोर से आंधी आ सकेले। कब्बो ऊ बालू की परत में दफन हो सकेलन।.... मुंसी जी दू लइकन के जनमवलें, पललें–पोसलें, पढ़ा–लिखा के लायक बनवलें।.... दुनुन क चितवो अपने हाथे सजवलें। जब उनके सहारा क बहुत जरूरत रहे तब एगो और करिया पहाड़ उनकी कान्हें पर लदा गइल। मुंसी जी क कदम लड़खड़ात रहे।.... जवन डरावना रास्ता ऊ चलि चुकल रहलें फेरु वोही पर चलले की बारे में सोचते भर से उनका पैर औरी जोर से कांपे लागल।.... कौनो पत्रिका में मुंसी जी कबो एक ठो कहानी पढ़ले रहले। कहानी क शीर्षक रहे 'सबसे बड़ दुःख'। अमेरिका के एगो अस्सीतल्ला बिल्डिंग के सबसे ऊपर वाला तल्ला की एक कोठरी में तीन साथी रहल रहलें। तीनों लिफ्ट से चढ़त उतरत रहलें। कोठरी के एक्के गो चाभी रहे जवन नीचे दरबान की लगे रहत रहे जे पहिले पहुँचे ऊ चाभी ले लेत रहे आ जे बाद में निकले ऊ चाभी दरवान के दे दे। एक दिन अइसन भइल कि लिफ्ट खराब हो गइल। जल्दी ठीक भइला क उमेद ना रहे, तीनों साथी सीढ़ी के रास्ते चढ़िके कोठरी में पहुँचले क निश्चय कइल लोग ऊ लोग सीढ़ी चढ़े लागल। रस्ता लम्बा रहल ऐसे ई तै भइल कि पारा–पारी सब लोग एकहक कहानी सुनाई जेसे रास्ता कटि जाय। एक साथी कहानी सुनावल सुरू कइलें पैंतीस मंजिल निकलि गइल। दुसरका साथी एकगो दूसर कहानी सुनावल सुरू कइलें त चालिस मंजिल और गुजरि गइल। अब तिसरका क पारी रहे ऊ थोरे देर सोचिके फेर कहलें आप सब कुछ धीरज धरीं आजु हम दुनिया क सबसे बड़हन दुःख वाली कहानी सुनाइब।" दुनूँ साथिन क उत्सुकता बढ़ल आ एहीं उत्सुकता में ऊ दुनूँ बचल पांच मंजिल रास्तो तय कर लिहलें। अब ऊ तीनों अपनी कोठरी के सामने रहलं। कोठरी के सामने पहुँचि के दुनूँ साथी कहलें– "अरे! अब त सुनाव आपन कहानी अब त सब रास्ता कटि गइल।" तिसरका साथी सांस खींचत–खींचत बोलल– "यार! सुन! अब हम संसार क सबसे दुखद कहानी सुनावे जा तानीं। हमहन का दरबान से अपनी कोठरी क चाभी ले आइल भुला गइलीं जा।" मुंसी रामनाथ ए कहानी के मने–मन याद कइलें आ खूब जोर क सांस खिंचले। उनकी आंखिन कि आगे अन्हार हो गइल। फेरु उहे रात। उसे सीढ़ी। उहे चढ़ल, उहे उतरल। उहे उतरल उहे चढ़ल।....

राति के नौ बजे जब मुंसी जी घरे लौटलें त छोटका सामू जइसे उनहीं क इन्तजार करत रहे। देखते बोलल– "दादा! दादी आ अम्मा मिलिके रामू भइया के मारल ह लोग। ऊ दुनू जने के गरियावत रहल ह।" मुंसी जी सामू की बाति पर बहुत ध्यान ना दिहलं। रोज

की तरे ऊ अपनी कोठरी में दाखिल हो गइलें। ऊ छड़ी धइलें, कुर्ता निकललें आ अंगना में आके हाथ–मुँह धोवे लगलें रामू उनके पीछे–पीछे लागल रहे। जइसे ऊ अपनी शिकाइत पर उनके प्रतिक्रिया जानल चाहत रहे। मुंसीजी ओकर भाव बुझत रहलें। रामू आ सामू के सुभाव से मुंसी जी खूब वाकिफ रहलें। दुनूँ दिनभर अपने में लड़ स बाकिर टुनहुन के अलगे–अलगे क दिहला पर घण्टे भर ना रहि पावें स। दुन्नू दुसरका के पिटात देखि के खुश होखें स, बाकि जब कौनो रोवे लागे तब दुसरका का आँखि डबडबा जाँस कब्बो–कब्बो दूनों मिलिके मुंसी जी के खिलाफो मोर्चा बना लेव स। मुंसी जी के ना रहला पर घर में का–का भइल ई सब बाति घर में आवतें मुंसी जी के पता चलि जाय।.... मुंसी जी का पीछे–पीछे लागल सामू की ओर देखलें अमूमन एतनी बेरले उ सूति जात रहे। ऊ अपना पत्नी की मुँह की ओर भी देखलें आ बहू की बंद दरवाजा की ओर देखलें। पूरा घर में उनके एक चुप–चुप तनावे क गंध का अनुभव भइल। आजु ऊ एह मूड में ना रहलें कि सबके जुटा के डाँटे–डँपटें। होली आ गइल रहे आ बढ़त महंगाई उनकी रीढ़ के और झुकावत जाति रहे। ऊ दिन–ब दिन खामोंश होत जात रहलें। खामोश आ असथिर।

मुंसी जी चुपचाप भोजन कइलें आ अपनी खटिया पर आके परि गइलें। उनके नींद ना आवत रहे। ऊ अपने आ परिवार की भविष्य की बारे में सोचत रहलें। थोरिके देर बाद उनकी पत्नी कहलीं "का सुति गइलीं।" मुंसी जी बिना केहू की कुछु बतवले जानि गइलें कि आजु पत्नी आ बहू में जरूर कुछ कहा सुनी भइल बा। पत्नी जौने तरे चुपचाप आके सुति गइली ओसे ऊ इहो अन्दाज लगा लिहलें कि आजु ऊ खाना ना खहलीं आ जाहिर बा कि बहूओ उपासे कइलें होइहें। ई सब जानि के एह समय मुंसी जी मधु की छत्ता के खोदल ना चाहत रहलें। करवट बदलत ऊ बड़ी राति ले भविष्य में का करेके बा ई सोचत रहलें। ऊ महसूस करत रहलें कि पत्नीओ के नींद ना आवता। उनके उनकी पर दया आवे लागल। का दोष बा ए बेचारी क। ए घर क देवालि का दिहलीं स उनुके? उनके चंचलता, भावुकता, हँसी–खुशी सब त एहीजु छलल गइली स। एहिजू उनकी आंखिन की रोशनी मद्धिम परल, एहिजू त इनकी बार सफेद भइल, एहिजू इनकी चमड़ी झूलल आ सूखल। झाड़ू लगवले से लेके उपास कइला ले का–का ना भोगली आ कइली ऊ ए घर में। का खूब गोर गुराज देहिं रहे जब ई दुलहिन बनिके एह चौखट में दाखिल भइलीं। माई दउरी में डेर डलवा के इनके चौका से देवकुरी ले ले गइली। उनकर ऊ लाल–लाख एंड़ी कब करिया होके सरल पतई की तरे बदरंग हो गइल बा उनके चिरई तरे चहकल आ आपन बार–बार डाँटल मुंसीजी के ओही तरे मने पड़े जइसे अबक काल्हि के एक बाति होखे।.... मुंसी जी की मन में आइल कि ऊ उठिके उनसे मांफी मांगि लें। ऊ बहुत धीरे से कहलें, "बीनू क महतारी! तोहके नींद नाहीं आवता का? तनी एक गिलास पानी देबू"।

पत्नी अन्हारे में सगबगइलीं। मानो बड़ी देर से ऊ एकर इन्तजार करत होखें। उठिके ऊ धीरे–धीरे अँगना में गइली आ गिलासी क पानी ले आके मुंसी जी के थम्हा दिहलीं। मुंसी जी पानी पीके पत्नी क हाथ खींचि के अपनी खटिया पर बइठा लिहलें। कुछ देर ले त चुप्पी रहे आखिर चुप्पी तुरिके मुंसीजी पुछलें, "आजु तूँ खाना ना खइलू बीनू क महतारी।"

"तोहके एसे का मतलब! हम खाई चाहे मरीं। तूं त तानि के सूतऽ ताड़ऽ न।" पत्नी कहलीं आ कहला की साथ हीं उनके इहो लागल कि एतना कड़ा जवाब नाहीं देबे के चाहत रहल ह।

"आखिर भइल का?" मुंसी जी के अउर नम्रता से पूछलें। बीनू की महतारी क सुभाव ऊ जानत रहलें।

"तोहरे खातिर त बाति कुछ नाहीं भइल, पर हमसे अब ई सब सहि ना जाई। आजु फेरु तोहार महारानी जी हमसे लड़ि परली। सात पुश्त क गड़ल मुरदा उखारत रहलीं ह, हम साड़ी ना दिहलीं, गहना ना दिहलीं, कोनो सुख ना दिहलीं। अब हम ई सब कहाँ से ले आईं। देबे वाला त तुँहई ठँहरल न! का रामू पर अब हमार एतनो अधिकार नइखें कि हम मारि–पीटि के ओके ठीक रास्ता पर ले आईं। आजु हमार बीनू आ बिहारी रहतें त का एह घर में हमार इहे दुर्गति होइत।" आखिरी बात तक पहुँचत–पहुँचत बीनू क महतारी सिसके लगलीं। मुंसी जी उनके आंसु पोछलें आ उनके अपनी गोदी में खींचि लिहलें। जवानी क याद स्मृति की तरे आइल आ चलि गइल। तब की आ अबकी भाव में बड़ा फरक आ गइल रहे। मुंसी जी क दिल रोवत रहे, बाकिर ऊपर से ऊ पत्नी के समझावत जात रहलें। ऊ घर की रिश्तन की बारे में समझवलें। विधि की विधान की बारे में समझवलें। अपनी जिम्मेदारिन की बारे में समझवलें। उनकी सुक्खल होंठ और पचकल गाल के सुहरवलें आ छाती से लगा लिहलें। जीवन भर रोटी आ कपड़ा खातिर तरसे वाला लोगन में कवनो बहुत बड़कन इच्छा पैदे ना होले। एइसन लोग कौनो बहुत मान सम्मान ना चाहेला।

प्रेम क दूठों छूँछ बोली ओ ए लोगन क बेचैनी खतम करके शान्त करे खातिर काफी होला। विश्वास में लेके दुठो मीठ बाति कहि दे केहू त एइसन लोग छलछला जाला। राति काफी बीति गइल रहे। मुंसीजी की बाति से निडर सहज आ निश्चिंत होके बीनू की महतारी सुत्तत रहलीं बाकि मुंशी जी बड़ी देर ले जागत रहलें। पत्नी के ऊँच–नीच समझवले की बाद उनके बहू क चिन्ता होत रहे। ओ बेचारी के त बीनू की महतारी की तरे क सुखे नसीब ना भइल। का जाने ऊ कौने तनाव में सुत्तलि होई चाहे के जाने अबे जागते होखे। आजु मुंसी जी के अपनी बड़का बेटा का मरल बहुत अखरता। ओहू के मरे के रहे त छोटके की तरे बिना बिआहे शादी के मरि गइल रहत। कम से कम बहू क दुख त उनके ना देखे के परित।

सबेरे जब मुंसी जी टहरि के लौटत रहलें त उनके पत्नी रोज की तरे पूजा–पाठ खतम कके चउका में चाय बनावत रहलीं। उनकी चेहरा पर राति की घटना क कवनो तनाव ना रहे। ऊ मुंसी जी की ओर देखि के मुस्कइलीं। जवाब में मुंसीयो जी मुस्करइलें। जइसे कि ऊ मुस्कइले क कारण जानत होखें। उनके एह बात क खुशी रहे कि ऊ परिवार की तनाव कम कइले में कामयाब हो तारें।

आजु मुंसी जी बहुत खुश बाड़ें। ऊ रामू के आवाज लगवलें जवन रातिये से उनकी डर की मारे छिपल बा। रामू के ऊ एक रुपया क नोट देके जलेबी ले आवे के कहलें। मुंसी जी जब खुश होखेलें जिलेबी क नाश्ता कइल ना भुलालें। एही बीच में सामूओ आ गइल। ऊ मुंसी जी के खुश खबरी सुनावत कहलसि "दादा दादा, आजु हमनी का अम्मा की साथे नानी की घरे जाइल जाई।" मुंसी जी के ई सुनि के कौनो अचरज ना भइल। ऊ जानत रहलें कि राति की बाति से नाराज होके बहू ई सोचले होइहें। थोड़े देर चुप रहला कि बाद ऊ सामू से एह तरे बोललें कि बहूओ सूनि लें। "बेटा! अब त होली आवति बा। होली में हमरी साथ रंग नाहीं खेलबऽ? होली की बाद हमहूँ तोहरी नाना की इहाँ चलब। बहुत दिन से गइलीं नाहीं। हमरिये साथे तोहनो लोगन चलि चलिहऽ।" मुंसी जी ई बात एतना गंभीर आ तटस्थ होके कहलें जइसे एह बारे में ऊ बहुत सोचि समझि के आपन अन्तिम फैसला सुना दिहले होखें। ऊ जानत रहलें कि एह समय बहू के अउरी सहानुभूति के जरुरत बा। उनकी पर शासन चलवले की कोशिश में परिवार क कड़ी बिखरि जइहँ स। एह समय परिवार में केहू पर शासन कइल जा सकेला त खाली उनहीं पर आ एकरी खातिर ऊ अपना के तइयार करत रहलं। ऊ एह बात के बुझत रहलें कि पत्नी आ बहू में जवन तनाव चलि रहल बा ओकरी दूनूँ की अभाव में बा। दुनूँ जनी के पीड़ा आ अतृप्ति आपस में टकरा रहल बा।

रामू जलेबी लेके आ गइल रहे। मुंसीजी जलेबी क दोना लेके सबकी खातिर बराबर–बराबर हिस्सा लगवलें। आ दोना क तीन जलेबी लेके खुदे खाये बइठि गइलें। रामू आ सामू एक दूसरा के चिढ़ा–चिढ़ा के जलेबी खात रहलन। मुंसीजी ओ कुल्हिन की ओर देखलें। उनके बीनू आ बिहारी मन परि गइलें। ठीक इहे आदति उन्हनों क रहे। उहो एहि तरे लड़त–झगड़त रहें स। एहितरे दिन भर सैतानी करें स। एही तरे....। मुंसी जी बीतल दिन की याद की बानन से विंधत जात रहलें। उनके हाथ दोना में जस क तस रुकल रहि गइल। ऊ रामू आ सामू की ओर देर तक देखलें का देखते रहि गइलें। पल भर में रामू सामू क चेहरा बीनू–बिहारी की चेहरा में बदलि गइल। फेरु रामू आ सामू। फेरु बीनू आ बिहारी।..... मुंसीजी आपन आँखि हटा लिहलें आ अपच का शिकाइत करत अपनी दोनों क तीनो जलेबी डेढ़–डेढ़ करके रामू आ सामू के बाँटि दिहलं। ऊ चाय क प्याला उठा के अपनी कोठरी में चलि अइलं। जब आदमी पर दुख क चाबुक परेला त ऊ भागि के अकेल भइल चाहेला। मुंशीजी कोठरी में अकेले त हो गइल रहलं बाकिर रामू आ सामू क चेहरा उनकी आँखिन से अन्हें ना होत रहे। ए दूनून क मुखड़ा बीनू से केतना मिलेला। उहे नाकि, उहे आँखि, ओइसने ओंठ, ओइसने भूअर बार, ओइसने बोली आ उहे कुल आदति। मुंसी जी बीनू की महतारी के बोलवलें आ जइसे कौनों बहुत भेद क बाति खोलत होखें ओहित रे बोललें, "बीनू क महतारी! हमार बीनू आ बिहारी मरल नाहीं बानँ ऊ खाली देहिं–धजा से छोटा हो गइल बानें"। मुंसीजी अंगना में खेलत रामू आ सामू की ओर इशारा कके पत्नी के देखवलें। उनकी ओठें पर एक हल्लुक मुस्कान आ गइल रहे, गोकि ऊ जानत रहलें कि एह बाति के पूरा करे खातिर उनकी मन की भावना के केतना कठिन रास्ता तै करे के परल। उनके खूद लागत रहे कि ई सब एक ठो आत्म–छल बा। केहूओ केहू दुसरे क जगहि ना ले सकेला। ई बाति जेतना आसानी से ऊ अपनी पत्नी से कहि दिहलें का एतने आसानी से बहूओ की सामने कहि सकेलें? का बहू एह बाति के कब्बो मानि पइहें? मुंसी जी देखलें कि रामू आ सामू अब्बो एक दूसरा के चिढ़ा–चिढ़ा के जलेबी खा तारन सं। उनकी आँखिन में शोक में घुलल खुशी आइल, आ चाय क प्याला उठा के ऊ धीरे–धीरे पीये लगलें। ●●

पियासल पण्डुक

✍ प्रेमशीला शुक्ला

सगरी दुनिया के साथे हमार पूरनपूर गाँवो एकइसवीं शताब्दी देने हाँफत–हाँफत दउरि रहल बा। पहिले गाँव भर में एके गो पक्का मकान रहे बाकी कवनो फूसे के कवनो खपड़ा के अब एकाधगो फूस चाहे खपड़ा के बा, पक्का मकानन के गिनती बहुत बढ़ि गइल। सभे कहेला कि गाँव में बिकास बड़ा हाली–हाली होता। अइसन एको घर नइखे जवना क कवनो सवांग बहरा कमाये ना गइल होखे आ जवने घर में अब मनीआडर ना आवत होखे। ई सब शान आ खुशी के बाति ह। जवन एकाधगो खपड़ा के घर रहि गइल बा ओहि में एगो घर बा पुरनकी पक्की मकान के पिछुवारे ओमें रहे वाला दूगो परानी बाड़ें सासु आ पतोहि। ना ऊ घर बदलल, ना ओमें रहे वाला लोग। बिना मरद मानुस के घर अपने करम के रोवे। अइसन नइखे कि ओघर में मरद नइखे। बा, बाकी कलकत्ता के कवनो बड़हन मिल में कमाला, छठे छमासे आवेला आ कबोकाल गिनल चुनल पइसा भेजि देला। मेहरारू जाति खातिर ओतने बहुत बा।

ई घर हमरा कब्बो ना भुलाइल। छोटपन के बाति आजु जब आँखि के आगे घूमेले त सबसे ढेर इहे घर हमरे मने परेला। शहर में के बड़का सरकारी बंगला आ गाँव के दुमंजिली कोठी से तनिको कम पिछुवारे के ई खपरैला घर हमरी खातिर ना रहे। शहर से गाँवे आवते जब गोड़ ओ घर ओरे होखे त ईया के बोली छनभर खातिर ठमका दे। "बुझाला एकर खेढ़ी परतापे के घरे गाड़ल हवे।" बाकी दूसरे छन भागत–फानत हम ओ घर में रहीं, चाची सामने। ईहे चाचीओ घर के पतोह रहलीं, हमरी खातिर गिनल–चुनल सुन्नर लोगन में एगो। बहुत नीक। पातर कोर के मटमइल साड़ी पहिनले चाची अइसन लागें जइसे सेवारे से झाँकत बेरा के फूल। हाथ–गोड़ एतना सुकुवार कि बुझाला कबो कवनो कामे ना करत होखें कूटे–पीसे वाला हाथ सुरवारी हमरी इस्कूले मैडम के पैडीक्योर आ मेनीक्योर के देखभाल के सजावल हाथ–गोड़ के पानी पिआवे वाला रहे। पलकि से लागलि आँखि अइसन लागे– जइसे भँवरा अब उड़ल कि तब उड़ल। कब्बो कब्बो सबेरवें हम पहुँचि जाई त देखीं, चाची नहा धो के सिंगार करे बइठल बाड़ीं। सबसे पहिले पीयर सेनुर से माँगि भरें, तब सुक्खल कजरे से आँखि आ सबसे पाछे टह–टह लाल रंग से एड़ीं। हम चुपचाप टुकुर–टुकुर देखत रहीं त नगिचे बोलाके कहें "देखऽ बबुनी, सिंगार के माने भरल माँगि भर सेनुर हाथ भर चूड़ी से बड़हन सिंगार दुनियाँ में कवनो ना हउवे।" हम तनी बूझीं तनी ना बूझीं बाकी चाची एतना नीक लागें कि शहर में अइला के बादो, मोट–मोट किताब में उलझलो पर हमरी दिमागे में चाची घूमल करें। पढ़ाई के बोझ कब्बो चाची के इयाद दबा दे तब्बो गाँवे पहुँचते हम ओही घरे के ओर भागीं।

एक बेर गरमी के छुटी में गाँवे गइला पर जेठ के दुपहरिया चाची की साथे बितावे के मोका मिलल, चाची के दलानी में। टाटे पर हमार आ चाची के महफिल

जमलि रहे। गाँव के सीवाने की ओर इशारा कके चाची हमके दुपहरिया देखावे लगलीं– "बबुनी, हऊ देखऽ के तरे दुपहरिया नाचत बा। ओकरा कवनो दवरि नइखे मिलत जहाँ ऊ रुकि जा ठहरि जा। इहाँ–उहाँ छटपटा के भगले ओकर भागि ह। लोग झूट्ठे कहेला कि ऊ डाइन नाचेले ऊ त हमार भागि ह, ना हमरा ठवरि मिलेला ना ओ दुपहरिया का। का करीं कहाँ जाईं?"

हमरा फेरु कुछु ना बुझाइल। अषाढ़ के रिमझिम आ कजरी के गीत खातिर हमार मन हुमसल। चाची हमरे कहला पर गावे लगलीं?

नजरी मरले रे सजनवाँ, जियरा ले गइले हमार
सवतिन संगवा रास रचवले, हमके बतिओ के तरसवले
जियरा ले गइले हमार..... .....

चाची के गवले के ढंग आ बगइचा के आमे के पेड़–दुनु के जोड़ कुछ अइसन बइठल कि हमरा झुलुआ की पेंग के आनन्द मिले लागल। जब गीति खतम भइल त चाची के लोर भरल आँखि देखिके का जाने काहें हमरो रोवे के मन करे लागल।

दूसर दिने सबेरे सबेरे परताप चाचा के माई परसादी लेके अइलीं, हमरी ईया के गोड़ लगलीं आ खुशखबरी सुनावे लगलीं कि "रतियें परताप अइलें ह, दुनु सासु–पतोही के कपड़ा–लत्ता लेके, दुलहिनि खातिर सोना के टिकुलिओ ले आइल बाड़न। महीना दिन के छुट्टी बा हमार घर–दुआर थोरे दिन गुलजार रही। ऊहे परसदिओ ले अइले हँ, कलकत्ता के काली माई के, ओहि के साथ मिठइओ बा।"

एतना बाति एके साँसि में कहिके परताप चाचा के माई दूसरे घरे गोड़ लागे चलि गइलीं। मन कइल भागि के जाईं आ देखीं कि चाची केतना खुश बाड़ीं, नाया सारी आ सोने के टिकुली में त अउरी सुन्नर लागत होइहें। चले के भइनीं कि अम्मा रोकि देहलीं– "अब्बे ना, बाद में जइहऽ।"

गोड़ ठमकि गइल। तिजहरिया के कइसो जायेके मिलल त देखनीं कि चाची अंगना में अरगनी से सूखल कपड़ा उतारत बाड़ी आ गावतो बाड़े–

ससुर दुअरवा चउकिया, ओ पर पियवा हमार।
झुकि–झुकि झारेलें जुलुफिया, जियरा ललचे हमार....।।

ओह, कहाँ गइल काल्हि के ऊ ठहरल–ठहरल कजरी, उदास आवाज आ बहत लोर। आजु के ई गीति का ह– कजरी, चइता, बरहमासा, जवने होखे, गवले में अइसन उड़ाव बा कि बुझाता चाची सतवें असमान से गावऽतारी। देखि के बड़ा नीक लागल। तबले चाची पलटलीं आ दुनुँ हाथे से पकड़ि के कहे लगलीं– "बबुनी, हमरा ढवरि मिलि गइल, चाचा आइल बानीं, एक महीना के छुट्टी बा।" चाची के एतना खुश त कब्बो ना देखले रहलीं।

हमार छुट्टी बीत गइल। हम फिर अपनी किताबि–कॉपी में बाझि गइलीं। दूसरे बेर बड़ा दिन की छुट्टी में चाची से मिलेके सुयोग भइल। चाची के उहे पुरान रुप सुन्नर बाकी कुछ खोजत, कुछ खातिर बेचैन। चाची के हमसे एगो फरमाइस–भइल– "बबुनी तनी अपनी चाचा लगे चिट्ठी लिखि देतू। जबसे गइलें, ना चिट्ठी ना पतरी। का जाने का हो जाला, रहला पर कोह–मोह से गदराइल, चलि गइला पर सब खतम। नजरी से अन्ह त मन से अन्ह। का करीं, केसे कहीं, जिनगी अकारथ जाता। रामजी कोखिओ खोलले रहितें त आगम अँजोर होइत। अइसन गदरल पेड़ के छाँहि तरे बिना फल के रहल... हमार अभागि।"

तनी–देरि रुकि के चाची फेरू ओही उदासी में बोललीं जाये द, चिट्ठी लिखले से का बनी। मन के डोरी जबले ना बन्हे, अच्छरि के डोरी तबले का करी।

चाची के हम अक्सर उदास देखीं। चाची आजुओ ओइसे बाड़ीं। चाची के बाति पूरा बूझि ना पाईं। जइसन चाची के अबूझ बाति रहे ओइसने चाची के अबूझ खिंचाव। अचानके चाची के बोली के ढंग बदलल। तनिक खिंचल आवाज में चाची बुझउव्वलि बुझावे लगली। "बूझऽ बबुनी" अइसन लागल चाची के बोली जइसे सूखल इनार से आवे– "असी कोसके पोखरा चौरासी कोस के घट, बजर परे ओहि पोखरा, जहाँ पण्डुक पियासा जाय" सुनल–बूझल बुझउव्वल रहे। हम झट से कहनीं– "ओस"।

"ना, ई ओस ना ह। एकर पण्डुक हम हईं। जेईसे बड़हन रूख तरे हम फल खातिर तरसनीं, ओइसे असी कोस के पोखरा के सामने पानी खातिर। बबुनी, तोहरी चाचा के कवनो दोष नइखे।"

ओह दिन चाची के दुःख के बोझा कुछ ढेर भारी हो गइल रहल। हमरा लागल चाची के दुःख एगो छोट मुकी बाबू के रहला से कम हो सकेला। ई सोचि के हम तुरते कहि बइठलीं–

"चाची, तुहके डॉक्टर के मिले के चाहीं। इलाज से तुहके फायदा हो सकेला।"

चाची तकली। मार खाइल लइका जइसे।

"डाक्टर?" डाक्टर के लगे हमरे खातिर एके नुस्खा बा– "जाओ, अपने आदमी के साथ रहो। बबुनी, ई नुस्खा हमरे खातिर अकासे के जोन्ही बा, कइसे मिली?"

हम कहिके पछताये लगनी। चाची के मन के दुआरि ओहि दिन बन्द होखे के ना जाने। चाची पूछे लगलीं।

"बबुनी मदारी के खेल देखले बाडू? दुनुँ ओर दूगो बाँस गाड़ी के रसरी बान्हि दिहल जाला ओ पर मदारी हाथे में एगो डण्डा लेके चढ़ि जाला। नीचे तमासा देखे वाला लोग रहेलें, ऊपर मदारी। जब मदारी एक बाँस से दूसर बाँस तक रसरी पर चले लोगला त तमाश देखेवाला हँसेलें पइसा फेंकेले। जो गिर गइल तब्बो हँसेलें। मदारी के चलल आ गिरल–दुनुँ तमसवे ह।"

चाची के मन दोसरा ओर मोड़े खातिर हमार फरमाइस भइल– "चाची कवनो गीति सुनाव।"

हमार बाति मानि के चाची गीति के लहर में बहे लगली।

कुछ अइसन संजोग भइल कि पढ़ाई के कारन हमार गाँवे गइल कम हो गइल। हालि–चालि कबो–कबो मिलि जा। गाँवे से आइल अदमी–जन बतावें कि परताप गाँवे आइल छोड़ि देले बाड़ें, ढेर दिन पर दू सौ रुपया मनीआडर आइल रहे। अपनी बिआहे के बाद ससुराल में अइला पर चाची के कवनो समाचार ना मिलल। आजु ढेर दिन पर उहाँ से अइला पर गाँव–घर के नया समाचार में सबसे ढेर दुःख देवे वाला समाचार चाची के बा। ईया बतावत हईं कि चार पाँच दिन पहिले झुलमुलात अन्हरवें धगरिन के परताप के घर में जात देखिके सबके माथ ठनकल। धगरिन के कवन काम परताप के घरे? खोज में गाँव भर के काकी–माई लगि गइलीं त ई पता चलल कि परताप के दुलहिन सबका मुँहें करिखा पोति दिहलीं। पहिले त बड़ा चिठी पतरी गइल कि परताप आ जाँयें, पाप पुन्नि में बदल जाइ। उनका ना अइला पर धगरिन के हाथ गोड़ जोरि के परताप के माई चुप्पे–चुप्पे बोलवलीं।

सुनिके पहिलवें अइसन भाग के चाची से मिले के मन भइल। बाकी ईया के हुकुम– "ना अब उनकी घरे नइखे जायेके, अइसन पतुरिआ के साथ–बाति कवन?" सुनिके बिलम जाये के परल। आँखि के आगे चाची के ऊहे पुरनका रूप आवे– गीत गावत चाची, कथा कहत चाची। पिआसल पण्डुक केतना दिन पिआसल रहे? मदारी की रसरी पर चलेवाली चाची गिरि गइलीं। देखवइया हँसत बाड़ें। चललो तमाशा आ गिरलो तमाशा। चाची के बात के मरम आजु बुझात बा। ●●

गजल

अशोक कुमार तिवारी

जे ना समझी ओकरा के समझाई के,
पीछा परला में का बा परछाई के?

तें केहू में शामिल होखे ना जइबे,
तोरा में शामिल होखे तब आई के?

पूछे ना जे अपना बाप–मतारी के,
सुनी कहाँ ऊ ताऊ अउरी ताई के।

पापकर्न कुरकुरे चिप्स के जलवा बा,
गइल जमाना लकठो खुरमा लाई के।

खुल्लम–खुल्ला बीच सभा जयमाल भइल,
अब सोहाग के सेजिया पर शरमाई के?

–सूर्यभानपुर, लालगंज, बलिया

बिना ओरिचन के खटिया

✍ विष्णुदेव तिवारी

फूआ, माने गिरिजा फूआ–पुरुषोत्तम के बाबूजी के छोटकी बहिन– बाति ए तरी पागेली जे शब्द केनियो ले भरके ना पावसु लोग। अनचक्के में केहू के खींचि ले जइहें अतीत के अखदवनी खोह में जहाँ हर अदिमी अनयासे खरोंच लगवावे खातिर जाइल चाहेला, जेमें भविष्य के अगाध शून्य के कम से कम एक बून सगुन के खून त चढ़ा सके। विलक्षण दिमाग बा उनुकर। याददाश्त में सज्जी घटना दर्ज बाड़ी स– दिन, महीना, वर्ष–सभ सिलसिलेवार।

पुरुषोत्तम के बेटी डोरा आ ओकर चचेरा भाई बीर के बेटी बउली दूनो बे ओरिचन के खटिया प कूदत–फानत रहली स। पुरुषोत्तम उहनी के मयगर मन से देखलस, कहलस ना कुछुओ। ऊ कोठरी में एह खातिर आइल रहे जे झोल मारत खाट में ओरिचन लगा दे। तनी सुस्ताए खातिर पलंग प ओठँघले रहे तले बिजुरी के तरंगन के माध्यम प सवार होके फूआ छने में ओकरा आगे झलमला उठली।

–सूते लगलऽ का, बबुआ?

पुरुषोत्तम सूतत ना रहे। ऊ त चाहत रहे जे रेंगनी प से चदर खींचि के गोड़ तोप ले बाकिर तब डोरा आ बउली ओकरा के देखि सकत रहली स। अइसन ऊ चाहत ना रहे। जहाँ ऊ रहे, ओहिजे ऊहो रहलीं स–नगीचो–पास कहि सकेला अदिमी, एह से ई असंभवे रहे जे ऊ ओकरा के ना देखँ स। ऊ लफलर के कान में नीक से बन्हलस आ ओकरा दूनो छोर के बीचे तरहथिन के अर्द्ध–प्रार्थना के मुद्रा में क के सुतला नियर बेखबर हो गइल। अब, जदि, डोरा आ बउली ओकरा के देखबो करितीं स, तबो–छउके–कूदे में सँकोच ना करितीं स। जदि करितीं स त कइले का जा सकत रहे। ओइसे लइकिन के ध्यान ओकरा ओर गइल ना रहे आ ऊ बिना कवनो ताप–झाम के अपना में रम गइल रहलीं स।

बुचिआ खेले में रमल रहलीं स आ पुरुषोत्तम गते–गते अतीत के खोह में सरकत चलल जात रहे।

फूआ कहले रहलीं– "का जाने तोहरा इयाद बा कि ना जे एक बेर खटिया से उतरत खा ओरिचन में फँसि गइल रहलऽ। इयाद बा, मनोहरपुर में तब डोरा ले छोटे होइबऽ चाहे ओकरे बरोबर। छोटकी भउजी भइया के संगे घूमे–ओमे गइल रहली। हम छत प ले सूखल गहूँ उतारत रहलीं। त तूँ ओरिचन में अँटकि गइल रहऽ। एबो बिलार रहे। का जाने, भउजी अपना नइहर ले नेग–नेवता में पवले रही कि भइया के कवनो साहेब–सुबहा भेंट–वेंट कइले रहे, राम जानुस। ऊ पोसुआ रहे आ आधा सेर दूध एक बेरा पी जात रहे। त ओह बिलार से तू बहुते डेरात रहलऽ। साइत ओकरे डरे उतरि भागे के चक्कर फँसि गइल रहलऽ। हम देखलीं त छते प ले बोल पड़लीं। आ दउरकिए में उतरि अइलीं। हमरा के देखि तोहरा लोर बरिसे लागल। तोहार रोआई हमरा से ना बरदास होत रहे– इचको ना। हमूँ रोवे लगलीं। आजु जब अपने सुअरी के छवना हो गइल बाड़े स

त मोह–ओह पहिले वाला रहल ना आ तूहूँ बड़ हो गइल, बाप–बाप बनि गइलऽ त पहिले जइसन कुछु होत–वोत नइखे बाकिर ओ घरी त तूंही प्रान के अधार रहलऽ।" हम रोवे लगलीं त तू थपरी बजावे लगलऽ– "जिया मोर मुसकिल में परि गयो रे.....। ओ घरी इहे गीत खूब बाजत रहे रेडिओ–ओडियो प। त तू एकरा के गावत जात रहलऽ आ हम तोहरा के कोरा में उठवले–उठवले दरवाजा के बहरी ले भागल–भागल देखत अइलीं तोहरा गोड़ ओड़ के जे कतहूँ छिला–ओला त ना गइल घनचक्कर।"

बउली खटिया प गोड़ पसारि दिहलसि। डोरा नीचे उतरलि आ ऐने–ओने कुछु खोजे लागलि। पुरुषोत्तम, बे–गरदन घुमवले, आँखिन के बायाँ ओरि तिरकट क के, देखलस जे ऊ सनूक प रखल डोलची में ले शॉल निकालत बिया। शॉल ले के ऊ बउली के लगे आ गइलि। 'बड़ा अजीब लागेला' – पुरुषोत्तम सोचलस– "अपनी लइका ले अधिका भाई के लइकन में नेह लगवले लोग लउकेला बाकिर आपन लइका होखते कर्र से ह्रदय दरकि काहें जाला दू फाट में? नेह–छोह त तबे कहल जाई जब बे–स्वारथ, बिना अहसान जतवले, बड़ छोट के अंतर से सबके भावना आ जरुरत के अपना हैसियत के, मोताबिक पूछ होखे।"

"–मिलि गइल दीदी?" शॉल देखते बउली झूम उठलि।

"– हँ रे बाकिर तू पटुआइल रहु। चिचिअइबे त तोर माई जानि ना जाई?"

"– ठीक बा दीदी। ..... बाकिर तू हमरा के मरबू ना नूं?"

"काहे के मारबि? बुचिया के केहू मारेला का, बोलऽ?"

"– ना मारेला नूँ दीदी।".... आँखि फइला के बउली कहलसि– "हमूँ त इहे कहेनी जे डोरा दीदी हमरा के ना मारेली बाकिर आजी कहेली जे बड़ा हथछुटुक लइकी ह डोरा। दाँत गड़ा दीही चाहे नोहे नखोर दीही। दीदी, आजी ठीक ना नूँ कहेली?" डोरा जवाब ना दिहलसि।

पुरुषोत्तम मने–मने खुश होत रहे आ तनी दुखितो। बुचिया कतना निश्छल बाड़ी स। कतहूँ व्यंग नइखे, कतहूँ मिलावट नइखे। जवन सोचेली स, कहि देली स, जवन सुनेली स, कहि देली स। इहनी के ममत्व के परिधि में आसमानी बड़का गड़हा नइखे जे समूचे सौरमंडल के गटकि जाई आ ढेंकारो ना लेई। एहिजा त जवन बा–प्रत्यक्ष आ जीवंत बा। बाकिर.... जब इहनियो के बड़ हो जइहें स त... ... का इहनियो के नस में करिया रकत रेंगे लागी?

"एक बेर भइया आ भउजी सँगे बहरा जात रहीं।" फूआ कहले रही– "तूँ आँचर–वाचर छोड़बे ना करऽ त तहरो के लेबे के परल। डुमराँव उतरि के रेक्सा भा टमटम से ओहिजा जाइल जात रहे। अब त बसो जाले उहाँ। चारि आदिमी रहे त टमटम कइल गइल। घर से चलल रहीं जा तबे से आकास बदरिआह होखल आवत रहे बाकिर ई अनेसा त नाहिए रहे जे बीचे राह में घनघोर बरखा होखे लागी। बाकिर भइल ऊहे। एकाध कोस रहता अबे बाकी रहे जे लागल कइ गो पम्प सेट चलि गइले स। छने में जइसे समुंदर उबिछाए लागल–घनर! घनर! बाबू रे, हवो ओसहीं उमखि–उमखि के कूदत रहे। आधा लूगा देहि में लपेटले, आधा से तोहरा के तोपले, सोचत रहीं जे अब का होई? गतरे–गतर पानी चूअत रहे। जेने देखऽ ओनिए बरोहि अस बूनी के धार–लागे जे ध के चढ़ि जा त इनरासन–ओनरासन में चहुँप जा। त अइसने होत रहे बरखा। तबे अइसन भइल जे जहाँ टमटम रहे नू, ओहिजा से एक बिगहा हटि के बिजुरी गिरलि। घोड़ा चिहुँकि के टमटम घिसिरावत भागल सरपट। तबे दोसरकी आ तिसरकी बिजुरी एकेके मिनट प। बिना चाभुके खइले घोड़ा महराज रेल हो गइले। आ भइया के सूरत देखितऽ त कहितऽ! अब नू छीमानुख–छीमानुख बा। ओ घरी त जनाइ जे सइ बाभन मरला के मुँह ह।" हिचकिया के रोवे लागल रहलें– "बुचिया, बड़ा, जुलुम भइल रे। हमनी के मरि जाइबि जा त कुछुओ ना होई बाकिर एकरा कुछु हो हवा गइल त मूँह ना देखा सकबि जा।" एक बेर त हमरो मन कइल जे खूब रोईं–ओईं बाकी बाद में हमी सभके सबुर धरवलीं।.... आ.... ई जे तोहार चाची–वाची हई नूं!– बउली के आजी, बड़ा सिधवा रहलीं, बाबू। कबो भूलो से जे कडुआ सबद निकालसु। उहें जब हाथ भाँजि–भाँजि उघटा–पुरान करेली त करेजा में दराँती चले लागेले बेटा। तोहरा के बेटा से कम कबो ना कइली।

मने–मन जरि बुता गइलन पुरुषोत्तम, बहुत कइलीं, मनली; बहुत कइलीं बाकिर कब कइलीं, इहो त सोचऽ? जबले उनुका लइका ना भइल रहे। पहिलका बेटा होखते ऊ दुलार केने बिला गइल? बीरन के ऊहो त सँझवत के दीआ अस चपकवले रहत रहे। उहे बीरन जब खेलत–खेलत खटिया से नीचे गिर गइल रहे, त चाची कइसे दूथप्पड़ जमा दिहली– "टुकरखोर"। तब सभ कुछ खतम ना हो गइल का? जी भर के दुलारऽ आ ही भर के कोसऽ। तश्तरी भर खियावऽ आ परात भर उगिलवा ल! ई त ना भइल छोह। एह से त नीक रहे जे माई–बाप से हीन लइका के जहर दे दिहल जाइत।

बउली दुलहिन बनल बिया। डोरा शॉल ओढ़ा के ओकरा के घूहवाली बनावत बिया। फेरु डोरा घूहवाली बनऽतिया। पारा–पारी दूनो दुलहिन बनतारी स। जे दुलहिन नइखे बनल ऊ मुँह देखे वाली बनऽतिया।

"बाकिर जब मुँह देखावल जाला त आँखि बन नू कइले रहल जाला, दीदी?" बउली कहलसि।

"–काहे?" डोरा पुछलसि।

"–काहें का। माई त असहीं करेले।"

"–तू देखले बाड़े का?"

डोरा साठि साल के बुढ़िया अस मुँह बनवलसि। कहलसि– "तबे त कहऽतानी। काल्हु चालो मइया आइल रहली, त आजी, माई के मुँह देखवले रहलीं कि ना बोलऽ?"

"–आँखि काहें बन क लिहल जाला, बउली?"

"–एतनो नइखू जानति भकलोल।"

बउली के अपना ज्ञान पर गर्व हो आइल– "आरे, बुढ़िया के आँखि में कींचर होला। दाँत टूटल रहेला, त ओकरा से डर लागेला नूं। त आँखि खोलि के काहें रखे. .....?"

"– हमरा आँखि में त कींचर नइखे नूँ बउली।" डोरा बड़ा निरीहता से पूछलसि।

"– नइखे, नूं तोहरा आँखि में कीचर बा नूं हमरा आँखि में कीचर बा ए से हमनी के आँखि खोलिए के राखे के। हूँ नू बुचिया।" डोरा कहलसि आ धधाइ के बउली के गाल चूमि लिहलसि।

एगो आँगन। दू गो परिवार। दूनों में बोलचाल नइखे। जब पटते नइखे त जीभि हिलावे के कष्ट काहें? आदिमी लासा से ना सटे, सटिए ना सके।

अच्छा धंधा बा। आपन कूड़ा–करकट मुफ्त विरासत छोड़त जा। इतिहास–पुरान के साँच–झूठ कहानी दूनो पलरा प तउला सकेले। तउलऽ, पासंघ मत देखऽ।

"– दीदी, भूखि लागल बा।"

"– जइबू?" – डोरा पूछलसि।

"– फेरु माई आवे दी?"

"– त?"

– कुछ देर अउरी खेल लिहीं जा।

डोरा दियरखा प राखल दिआसलाई उठवलसि आ बउली से कहलसि जे अन्हार हो गइल बा, ढिबरी जरा लिहल जाउ। पुरबवारा जँगला पर ढिबरी रखात रहे। लइकिया ढिबरी जराइ के ओहिजा ना रखली स। ओकरा के पुरुब–पच्छिम बिछावल खटिया के मुँड़तारी, बायाँ पार प, रखल गइल।

खेलो के रूप बदलल– "ओका बोका तीन तड़ोका, लउआ लाठी चनन काठी.... ढोंढिया पचक जो। लातालुत्ती। लातालुती। लातालुती।

लातालुती जम गइलि। ऊ डोरा आ बउलिए में होत रहे बाकिर लात से डर लागल ढिबरी रानी के–पलक झपकते किरासन बोकरत खटिया से नीचे। लइकी खेलत रहली स। आगि सिरहाना लटकल बिछवना के धरत झपाक से खटिया प चढ़ि गइलि। एक बाएके भक् से अंजोर। डोरा आ बउली एके संगे चिचिअइली स– "माई रे।"

पुरुषोत्तम आँखि बन कइले–कइले कुछ–कुछ नीनि में भरमे लागल रहले। डोरा आ बउली अतना डेरा गइल रहलीं स जे उहनी से उतर भागल संभव ना रहल। ऊ खटिए प उछलत–कूदत रहली स। आगि गँवे–गँवे खटिया के लीलत जात रहे। एक–ब–एक जइसे खतरा के साइरन बाजि गइल। भीतर ले घबराइल आवाज अइली स– "का भइल?"

पुरुषोत्तम के ई सोचे के मोहलत ना मिलल जे अचानक आगि लागि कइसे गइलि? जब ले कुछु सोचित ऊ, ओकरा लागल ओकरा देहि में करेंट आ गइल होखे। ऊ समूच चेतनता में पलंग से नीचे कूदि गइल आ एक–एक बाँहि में एक–एक लइकी के दबवले सनाक से चउखट से बहरिआ गइल।

ओकर दिमाग खदके लागल रहे।

ऊ संभरे, तले केहू बचियन के ओकरा से छीनि चुकल रहे। के? ओकर मेहरारु? ओकर भावज? ओकर चाची? आखिर के? ओकरा कुछुओ पता ना चलि पावल आ डोरा आ बउली भीड़ि में हाथे–हाथ, गरे–गरे लपिटात रहलीं स। जटाधर महतो–ओकर चाचा–निकसार घर में लँगड़ात दउरले–दउरऽस रे– सरोजवा, झुलना, मदन पांड़े। आरे, आगि लागल बा रे। बतावऽ स रे, केहू जरल–मरल त ना नूं राम?

दस मिनट में आगि बुता गइलि। बे–ओरिचन वाली खटिया जरि गइल रहे। पटिया अउरी पारो साबूत ना बाँचल। एकाध पुरान कपड़ा अउरी बिछावन आ एगो नया शॉल जरि गइल। डोरा आ बउली डेराइल रहलीं स, उनही के कुछुओ ना भइल रहे तबो।

एक दिन असहीं, फूआ से बतिआवत पुरुषोत्तम के अचके इयाद परल जे ऊ पहिले बउलिए के उठवले रहलें। बउली–माने ओकरा चचेरा भाई बीरन के बेटी, याने– डोरा के बुचिया। ●●

हम बदलल नइखीं

✍ कृष्णानन्द कृष्ण

जेठ के खरउरी दुपहरिया में जब धरमपुर चउराहा प बस आके रूकल त पांड़े जी के दिल के धुकधकी बढ़ गइल। हाली–हाली अटैची लेले बस के बहरी अइले आ कन्डक्टर से कह के बस के ऊपर से अउर सामान उतरववलें। सामान पीपर गाछ के सोर प रख के इतमिनान से एने–ओने नजर धउरवलें। केहू त गाँवे से जरूर आइल होई। अउर केहू ना त सिरी भगवान जरूर आइल होई। भइया से हमरा आवे के खबर ओकरा जरूर मिलल होई। इहे कुल्ह सोंचत पांड़े जी एने–ओने ताकत रहन। सामने जीउत साहू के दोकान प खूब भीड़–भाड़ रहे। पांड़े जी एकरा पहिले जब कबो आइल बाड़न अइसन नइखे भइल। सबसे पहिले त जीउते धउरल आवत रहलें– "आईं–आईं बाबा, कतना दिन के छुट्टी आइल बानी? लइका–फइका सब ठीक–ठाक बाड़न स नू? रउवा त अब बहरवासू हो गइलीं। चलीं कुछ खाईं–पीही। कहत जीउत सब सामान उठाके के दोकान में ले जइहें। पांडे जी नास्ता–पानी क के इतमिनान से घरे जइहें। उनकर सामान पहुँचावे के हारा–होसी लाग जाई। बाकिर पांड़े जी के सामान उठाई सिरी भगवान।

सिरी भगवान माने उनका हरवाह के लइका आ उनकर लंगोटिया इयार। सिरी भगवान स्कूल के बाद जे टाइम बाँचे ओह में उनकरा साथे रहे। बगइचा से लेके खेत–खरिहान तक। कबो–कबो कबड्डी भा चिल्ला लेखे में ऊ हार जइहें त ओकरे के खूब पिटिहें। ऊ कुछ ना बोली। चुपचाप पिटइला का बाद कही– "बबुआ कहीं चोट–उट नइखे नूँ लागल। घरे मत कहब। ना त बाबू मारत–मारत दम निकाल दीहें।" आ ऊ पांड़े जी के कुरता पैंट में लागल धूर झारे लागी। आ पांड़ेजी ओकरा के माफ क दीहें। घरे अइला पर साँझ खा, जे चूरा–चबेना फँकिहें ओही में से ओकरो के मिली। उहो दिन–भर उनका आगा–पीछा लागल फिरी। दुआर प रही त मवेशी सब के सानी–पानी गोती। झाड़ू–बुहारू क दी। कुइयाँ से पानी खीच के भीतरे जनानी किता में दे आई। कहे के मतलब कि ऊ उनका घर के एगो अंग हो गइल रहे। कवनो काम होई ओकरे खोजाहट होई। आ ऊहो आपन घर भुला गइल रहे। खाए–पीए से ले के सूते–बइठे तक। कबो–कबो ओकर माई आई– ओकरा के मना के ले आई बाकी ओकर मन ओहिजा ना लागी, फुर्र से उड़के आ जाई। हमउमिरिया भइला के चलते उनकर कपड़ा–लत्त ओकरा देह में आँट जात रहे। उ आपन पुरान कपड़ा ओकरा के दे देत रहन। उ ओह कपड़न के खूब फीच के तह लगा के रखत रहे आ कबो नेवता–हँकारी में हितई जाए तब पेन्ह के बाबू बनके जाए। ओकरा हितई के लोग कहे– "भगवनवा त जेन्टुल मैन बन गइल बा। एकर मालिक, बड़ा मानेलन एकरे। तबे नू अतना महँगा–महँगा कपड़ा देलन।" ओह लोग के बात से ओकरा भीतरे खुशी के एगो लहर दउड़ जाय। अपना इयारी प मने–मने फूल के कुप्पा हो जात रहे। बाकिर ओह लोग के सामने खिसिआत कही– "का कहलऽ हा, मालिक! आरे मालिक कइसन। उ त बड़का भइया हवन। उ कबो हमके नोकर ना बूझस। जे खालन, खिआ देलन। जे पेन्हेलन, उहे हमके देलन। कहाँ मालिक–मलिकार के बात बा। उहाँ त भाई–चारा बा

आ हमार उनकर इयारी त अइसन बा कि कह नइखीं सकत।" सब लोग ओकर बात मुँह बा के सुनी। हई देखऽ त कइसन–कइसन बात करत बा। आ उ ओह लोग के चिहाइल देख के तनी अउरू अकड़ जाई।

गाड़ी के हार्न के आवाज सुन के पांड़े जी के ध्यान टूटल। चारों ओर नजर दउड़वले। उनकर नजर चारो ओर सिरी भगवान के खोजत रहे। अब त चउरहो बदल गइल बा। पहिले अतना भीड़–भड़क्का ना होत रहे। शुरू में त एगो पान के दोकान रहे, टीमल तमोली के। आम के नीचे आपन दोकान लगावस। आम के पेड़ से सटा के एगो पुरान बड़का सीसा लटका देस जवना में मुँहो साफ ना लउकत रहे। उ ओहीजे आके खड़ा होइहें। थोरही देर में सिरी भगवनवा धउरल आई। सब समान हाथे–पाथे उठा के चल दीही। उ आगे–आगे चली आ पांड़ेजी पाछे–पाछे। सिरी भगवनवा के पैर जतना तेज चली ओह से जादे तेज ओकर मुँह चली। उ चाही कि घरे पहुँचत–पहुँचत सब समाचार सुना दीहीं। बड़की बगइचा में बइठ के सुस्ताई। लाठा कुंड़ी से पानी पीही। आ फेरू समान लाद–पाथ के चल दीही। फेरू स्टेशन चालू हो जाई। ओकर मुँह तब बन्न होई जब सामान माथा प से उतारी। बाकिर आज ओकर कहीं पता नइखे। भीड़ों त अतना बढ़ गइल बा कि आसानी से कुछ लउकत नइखे। रेक्सा–टमटम के भीड़ जीप, मोटर–साइकिल आ बस के पों–पों आ रह–रह के उड़त धूर के बवंडर जइसे सब कुछ के लील जात बा। उ ओनिए बढ़त बाड़न। सामान छोड़ के। कबो आगे देखस त कबो पीछे घूम के सामानो देख लेस। कहीं अइसन ना होखे कि समनवा गायेब हो जाव। के केकर जिम्मा ले ले बा। इहे कुल्हि सोचत उ एने–ओने सिरी भगवान के खोजत रहन। तले उनकर नजर पीपर पेड़ के नीचे अपना सामान भिरी खाड़ एगो आदमी प पड़ल। चेहरा पूरा ना लउकत रहे। ऊ आदमी गमछी से मुँह तोपले रहे। पांड़े जी अपना सामान भिरी अइलन त सिरी भगवान के देख के बड़ा खुश भइलन। कहलन– "काहे भगवान कहवां छिपल रहऽ। घरे ना चलल जाई का? चलऽ सामान उठावऽ ना त घाम अउरी तेज हो जाई।" उनुका बात के कवनो असर ओकरा प ना पड़ल। ऊ चिहा के फेरू टोकलन– "का हो, सिरी भगवान, बोलत काहे नइखऽ। गूँग नइखऽ नू हो गइल।" उनकर बात सुन के अबकी ऊ आपन मूँड़ी उपरे उठवलस। चकचिहाइल एक बेरा चारो ओर नजर घुमवलस। सामने पान दोकान प खाड़ सुरेश मास्टर से नजर मिलते ओकरा भीतरे एगो भय आ के बइठ गइल। ओकर हिम्मत ना परल पांड़े जी के सामान उठावे के। ऊ चुपचाप फेरू मूँड़ी गड़ले खाड़ हो गइल। ओकर चुप्पी देख के पांड़े जी के धीरज जबाब देत जात रहे। भीतर से खीसो बरत रहे। ई ससुरा बोलत काहें नइखे। कुछ कहित त समझ में आइत। आखिर अइसन का हो गइल, जे ओकरा के बोले नइखे देत। पांड़े जी फेरू तनी रूखरे आवाज में पूछलन– "का बात बा रे। तूँ बोलत काहे नइखस। कुछ कह त समझ में आवे। हम तोरे भरोसे खड़ा कबले रहब? नइखे चले के तवनो साफ–साफ कह।"

अबकी सिरी भगवनवा तनी कनिछियाहे उनका ओर देखत बड़ा मधिम आवाज में कहलस– "हम राउर सामान ना ले जाइब। कवनो मोटिहा ठीक क लीं। आ ओकरे से सामान ढोवा लीं।" अतना कह के ऊ चउराहा के भीड़–भाड़ में गुम हो गइल। पांड़ेजी के लागल जइसे उनका के केहू अचक्के आकास से भुइँयाँ प पटक देले होखे! थोरकी देर ले उ मुगसुम खाड़ रहले। बदलल समय के उनका कवनो आभास ना रहे। सामान का ओर एक बेर उ तकलन भीतरे–भीतरे अपना के तउललन आ सोचलन कि सामान कान्हा प चाहे माथा प उठाके चलल जाव। आखिर घरे त जाहीं के बा। हँ, गलती त जरूर भइल बा। बेटा साथे आवे के तइयार रहे। साथे रहित त हतना तकलीफ ना होइत। इहे कुल्ह सोचत उ सामान उठावे के तइयारी कइलन। उ सामान उठावत रहन तले केहू के आवाज से उनकर हाथ रुक गइल– "का, हो पांड़े बाबा, कब अइलऽ हा? का हाल चाल बा?" कहत देवेन्दर सिंह आके खाढ़ हो गइलन। पांड़ेजी के देख के तनिकी सा मुसकिअइलन। "बुझाता कवनो सामान ढोवे के तइयार नइखन स होत। ना नूँ होइहें स। रउवा गाँव छोड़के जिनिगी भर शहर में रहलीं। गाँव के रउवा कुछ पते नइखे। गाँव बहुते बदल गइल बा। एहीजा राजनीति के हवा लाग गइल बा लोगन के। जान–साँसत में पड़ल रहत बा। शहरवा में त लोग कम से कम शान्ति से कमात–खात बड़ुए।" पांड़ेजी चुपचाप देवेन्दर के बात भकुआ अस ठाड़ होके सुनत रहन। देवेन्दर के चुप होते ऊ कहलन, छोड़ऽ जाये द ई सब झमेला। का हरज बा आपन सामान उठावे में। चलऽ घरे चलल जाव। आ पांड़ेजी आपन सामान उठाके कान्ह प धइले आ चल दिहले। एगो बैग कान्ह में लटकवले आ एगो हाथ में टंगले आ चउराहा से नीचे उतर के बड़की बाग के नीचे वाला रास्ता प उतर अइले।

सिरी भगवान पांड़े जी के झोला आ सामान कान्हा प उठा के जात देखते रहे। उनका के सामान ढोवत देख के ओकर करेजा ककरी अइसन फाटत रहे। मन रोवे–रोवे हो गइलस बाकिर का करो। अब समय बदल गइल बा।

उ चाहियो के कुछ नइखे कर सकत। अगर अइन–कानून तुड़िहें त दंड के भागी बनिहें। केहू साथ ना दीही। सब गारी–गुप्ता करे लागेला। पांड़े जी के बात इयाद परते ओकर मन–परान रोआइन हो गइल। पांड़ेजी कबो ओकरा साथे जन–मजूरा वाला बेवहार ना कइलन। जब–जब उ बहरा से अइहें ओकरा के अपना भिरी बइठा के खूब मिठाई खिअइहें, घरहूँ ले जाये खातिर दीहें। जबले घरे रहिहें ओकर खाना–पीना उनके साथे होई। जे खइहें से खिअइहें। साल में एक बेरा होली में घरे अइहें त ओकरा के धोती–कुरता जरूर दीहें। ई बात ईयाद परते ओकर हाथ अपना धोती–कुरता प चल गइल। इहो त उनके दिहल ह। अपना अतना सावंग कहाँ बा कि धोआ धोती आ मलमल के कुरता खरीद के पेन्हो। बाकिर उ का करो? जमाना के त आग लोग गइल बा। सभे पागल हो गइल बा। आपसी प्रेम–भाव आ भाईचारा त कपूर के गंध अइसन हवा में उड़ गइल बा। गाँव जे पहिले एक रहे अब बँटा गइल बा, जाँत–पाँत में अगड़ा–पिछड़ा में। आदमी आदमी ना रहके खाली उपभोग के चीज बन के रह गइल बा। आदमी जेकरा साथे– खेलल–कूदल सेयान भइल, आज ओकरा के देख के मुँह फेर लेवे के पड़ेला। एही कुल्ह उधेड़ बुन में परल सिरी भगवान ऊपर नीचे होत रहलन तले सुरेश मास्टर के आवाज से ओकर ध्यान टूटल।

– "का हो सिरी भगवान, का सोंचत बाड़ऽ, पांड़े बाबा के बोझा ढोवत देख के तोहरा नीक नइखे नूँ लागत। आरे मरदवा कबले बँधुआ मजूर बनल रहबे। बड़ा दिन ले ई लोग राज कइले बा। तनी अँखफोर बनऽ लोग। अपना ताकत के अंदाजा करऽ। ई सामाजिक न्याय के जमाना बा। सभे एक बराबर बा। केहू बड़–छोट नइखे। आज पूछिहे ना पांड़े बाबा के कइसन मजा मिलल होई, जब आपन सामान माथा पर उठा के ले गइलन हां। देखऽ, हम जानत बानी उनका खातिर तोहरा मन में बड़ा श्रद्धा बा, मोह बा बाकिर एगो बात सुन ल। आदमी मोह में पड़के कमजोर हो जाला। आ ई बड़का सब आज ले हमनी के एही मोह–ममता के भँजा के आपन पोसुआ गुलाम बनवले बाड़न स। आ हमनी के श्रद्धा से आपन माथ नवावत ओकनी के आगे झुकत रहल बानी। मोह तेयाग द। मन के कड़ा करऽ। ल हई सुरती ठोकऽ। चल होने बगइचा देने।" कहत मास्टर ओकरे धइले बगइचा देने चल गइलन।

सुरेश मास्टर के पीछे–पीछे सिरी भगवान चल देलन। कवनो चरो त ना रहे। ना गइला प दंड देबे के पड़ित। दूनो जाना चुपचाप चल जात बाड़न। केहू–केहू से बोलत नइखे बाकिर चेहरा देखला से पता चलत बा दूनों आदमी भीतरे–भीतर कुछ सोचत बा। दूनो आदमी बेचैन बा। चुप्पी तुड़त सुरेश मास्टर कहत बाड़न– "देखऽ मरदे, आज हमनी के एकते के नू कमाल बा कि सब कुछ बदल गइल बा। काल्ह तक हमनी का जेकरा इसारा प नाचत रहीं जा उहे आज हमनी के इसारा प नाच रहल बा। आ ई बदलाव कवनो एक दिन में ना आइल हा। एकरा खातिर बड़ा संघर्ष करे के परल हा।"

"अच्छा मास्टर, एगो बात हमरा समझ में ना आइल, ऊ ई कि आदमी पहिले आदमी बा कि जात? तूँ लोग आ नेतवा सब त उज्जर–उज्जर कुरता धोती पेन्हके भासन देत बाड़ऽ सामाजिक न्याय आ समता ले आवे के, जात के नाँव पर। आदमीयत के नाँव पर काहे नइखऽ करत? आ जहाँ ले जाते के सवाल बा, हम पूछल चाहत बानी– जब नेतवा आवेलन स त पांड़ेजी के दुआर पर ठहरिहें स, खान–पिआन ओहिजे होला। ओह घरी सिरी भगवान अइसन जात के लोग कहवाँ रहेला? केहू कुत्तो–कउवा अइसन ना पूछे।"

"देखऽ, तोहरा ई सब ना बुझाई। ईहे राजनीति ह। आदमी दुसमन के पेट में घुस के ओकर पेट फार देला। देखत बाड़ऽ नूँ ए लोगन के हालत कइसन खराब हो गइल हा। कइसन पांड़े जी आपन झोला–झक्कड़ ढोवत बाड़न। ना त पहिले हाथ दोमावत तोहरा आगे–आगे चलिहें आ तूं सिअरन पांड़े अस पोंछ सटकवले उनकर सामान माथ प उठवले पीछे–पीछे लोकनी अस चलबऽ। देखऽ ना, एह साल कटिया ना होई तब अउर मजा आई।"

– "मजा आई, कथी मजा आई, तूँ मजूरन के रोकबऽ, रोक के का करबऽ, केकर बिगड़बऽ। मजूरन के। ओह लोग के का होई? देखलऽ पर साल दिनेसर सिंहवा खेते में आग लगवा देलस, कहलस चलऽ खाद के काम करी। ओकर का बिगड़ल। बिगड़ल त ओह लोगन के जे कटिया क के छव महीना के भोजन जुटा लेत रहे। सुनहिलाँ एह साल एगो मशीन अइसन आ रहल बा जे एक ओर से कटिआ करी आ दोसरा ओर से साफ सुथरा अनाज निकली। करऽ लोग हड़ताल, तोहनी के का बा? गरीब सब से जबरन चंदा उगाह के चिक्कन–चिक्कन खात बाड़ऽ आ सुघर पेन्हत बाड़ऽ। हनूँ। हमनी अइसन कादो करे के पड़ित आ कटनी करे के पड़ित त आटा–दाल के भाव मालूम होइत। हम त कहत बानीं अबहुँओ तूँ लोग आपन राह बदलऽ। एही में लोगन के कल्याण बा।"

– "हे भाई, देखऽ तूँ अबहूँओ पांड़ेजी के उपकार से दबल बाड़ऽ। अरे मरदे, उ तोरा के कवनो चीज सेतिहे देत रहन? तोहरा के खटावत रहलन तब नूँ तोहरा के कुछ

देत रहन। तनी उनकर कमवा छोड़ देले बाड़ऽ आ अब जाके देखऽ। तोहार कइसन खातिर करत बाड़न। दुआर प ना चढ़े दीहें। कुत्ता अइसन दुत्कार के भगा दीहें। बड़का सब के सुभाव तूँ जनबे ना करऽ।"

– "अच्छा आपन गेआन तूँ अपने पाले रखऽ। मनलीं कि तूँ पढ़–लिख गइलऽ। बाकिर आदमी के मन में का बा ई तूँ ना पहचान सकऽ। तोहरा लोग के खेती–मती त हमरे अइसन बेकल लोग बा जे जात के नाँव प कट जात बा। आ ससुर के मिलत अधेला नइखे। दिल्ली–पटना में सब नेतवा एके साथे बइठेलन स। कवना के कवनो से दुसमनी नइखे। मास्टर जतना दिन चलत बा दोकान, चला ल।" कहत सिरी भगवान गाँव का ओर चल देले।

पांड़ेजी घाम में पसेना से लथ–पथ भइल सामान उठवले चलल जात रहन। बैग कबो दहिना हाथ से बायाँ में लेस। कबो बड़का बेग बाँया कान्ह प। फेरा–फेरी करत आगे बढ़ल जात रहन। बड़की बगइचा के उत्तरवारी कोना प कुआँ बा। ई कुआँ परमेसर राय के खानदानी कुआँ ह। एह प सालो भर लाठा–कुड़ी लागल रहेला। ऊ सामान कान्हा प से उतार के सुस्ताए खातिर कुआँ के जगत प बइठ गइलें। सोंचले तनी ठंढा के पानी पीअब। गरमइले पानी पीअला से सरदीं–खाँसी होखे के डर रहेला। कुआँ के जगत प बइठत उ तौलिया निकाल के पसेना पोंछलन। झोला ढोअला से दूनो हाथ पता के रत–रत लाल हो गइल रहे। मन तनी अस्थिर भइल त उनका सिरी भगवान के ईयाद आइल। आखिर ऊ काहे अइसन कइलस। जबले बतिअवलन तबले गमछी से मुँह बन्हले रहल। कबो मूँड़ी ऊपर ना उठवलस। अइसन त कबो ना होत रहे। बुझाता ओकरो नयका जमाना के हवा लाग गइल बा। बाकिर उनका ई बिसवास ना होत रहे। का अतना दिन के संबंध बालू के भीत अइसन भरभरा के ढह गइल! ऊ त कबहूँ अइसन ना सोचत रहन। कबो अइसन ना कइलन कि अपना के मालिक आ ओकरा के नोकर बूझस। जब बाहर से अइहें त ओकरा के मिठाई दीहें; कपड़ा दीहें। साथे बइठा के खिअइहें। अइसन कबो ना भइल होई कि ऊ बइठ के दाल–भात तरकारी खात होखस आ ओकरा के सतुआ दिआइल होखे। हरमेश ओकरे के छोट भाई अस मानत रहन। ओकरा त ना बदले के चाहत रहे। भले दुनिया बदल जाइत। उनका इयाद पड़त बा कुछ दिन पहिले बड़का भइया के चिट्ठी आइल रहे। उनका चिट्ठी से कुछ–कुछ गाँव बदलत स्वरूप के पता चलत रहे बाकिर स्थिति अइसन भयंकर हो गइल होई एकर अनुमान उनका ना रहे। भइया के चिट्ठी के बात उनका इयाद पड़त बा लिखले रहन– "गाँव में अब मजूरन के भरोसे खेती कइल बड़ा कठिन काम हो गइल बा। रोज–रोज गोलबंदी हो रहल बा, कहियो मजूरी बढ़ावे के त कहियो बनी बढ़ावे के सवाल प। किसान के दसा का ओर केहू का ना देखे के फुरसत बा ना सोंचे के। सालो–साल मारा पड़ रहल बा। एह से सोंच रहल बानीं एगो ट्रैक्टर ले लिहल जाइत त कमे मजूरन में काम चल जाइत।" ओह चिट्ठी के भयावहता के खुलासा अब उनका हो रहल बा। माथ प चुहचुहाइल पसेना के तौलिया से पोंछत उठके उ लाठा–कुड़ी से पानी निकाल के हाथ–मुँह धोअलन आ चुरूआ से पानी पीके मन के थिर कइलन। फेरू हिम्मत क के सब सामान उठवलन। एहिजा से गाँव त कवनो दूर नइखे। हउहे नूँ लउकत बा, बाकिर तिरछे–तिरछे खेतन पड़े गइल बड़ा महँगा पड़ेला। उपायो त नइखे कवनो। उ चुपचाप सामान उठा के गाँव का ओर चल देत बाड़न।

सिरी भगवान कसहूँ सुरेश मास्टर के पिंड छोड़ाके भागे खातिर चल देलन। उ चउराहा से बड़की बगइचा वाला राह ना ध के सीधे राह धइलन। सीधे राह गाँव के पूरुबे–पूरुब उनका महल्ला में पहुँच जाला। बगइचा वाला राह गाँव के बीच से जाला। ओह पड़े गइला प पांड़ेजी के दुआर पड़े जाये के पड़ेला। एह से ऊ सीधे वाला राह पकड़लस। राहता में ओकरा भीतरी विचार के तर्क चलत रहे। सुरेश मास्टर के कुछ बात ओकरा ठीको लागेला। अउर जे कहीं, मस्टरवा के ई एगो बात त ओकरो अच्छा लागेला। कम से कम लोग अपना ताकत के पहचान त गइल बा। आपन बात अपना हक के बात बिना झिझक के कह त सकत बा। बाकिर एकरा साथे–साथे जात–पात के अइसन बिसाइन गंध चारो ओर फैल गइल बा कि नाक नइखे दिहल जात। पहिले उहे कइसन साफ सुथरा रहत रहे। पांड़ेजी के घर से साल में दू बार त ओकरा कपड़ा–लत्ता मिल जात रहे। आ अब जबसे गाँव में पाटीबन्दी चल रहल बा, सब कुछ बदल गइल बा। मस्टरवा के डरे ओह लोग के दुआर देने गइल छूट गइल बा, आदमी के हालत दिन प दिन खराब होत जा रहल बा। राते मीटिंग में मस्टरवा के खूबे विरोध भइल रहे। आखिर बिना काम कइले कबले आदमी भुखले बिलबिलात रही। मिलजुल के काम सलटवला प ई दुरगत ना होइत। उहे मीटिंग में खड़ा होके कहले रहे– "मास्टर तूँ त अपने नीमन पेन्हत–ओढत बाड़ऽ। हमनी का तोहरा एक बोली प सब कुछ तेज देलीं, हमनी के हालत का हो गइल बा देखत बाड़ऽ? हमनी मजूर से भिखमंगा बन गइलीं जा। ओह लोग के का बिगड़त बा? लोग खेते में आग लगा के

फसल जरा देत बा। आ तूँ लोग मीटिंग करऽ, सबके राय द कि फसल लूट ल। नीमनो आदमी के जबून बनावत बाड़ऽ जा। चूल्हा–भाड़ में जावो तोहार क्रांति। हम त अब जे हमार मन कही से करब।"

ओह दिन ओकरा देखा–देखी अउरू दू–तीन आदमी ओकरा ओर से बोलत रहे बाकिर मस्टरवा के भासन के आगे फेरू सभे एकवट के गोलबंद हो गइल। ओह दिन बड़ा थूकम फजिहत भइल रहे। ओकर हाल ओह साँप अइसन हो गइल रहे जे छुछुन्दर के ना छोड़ सकत रहे ना लील सकत रहे। आ सबसे डर त मस्टरवा के धमकी भरल घोषणा के रहे कि जे पाटी के खिलाफ जाई ओकरा के देख लेल जाई। ई बात ईयाद पड़ते ओकर देह सिहर जात बा। बड़ा खतरनाक बाड़न स भाई। तनी–मनी में गोली–बन्दूक प उतर आवेलन स। पिछिला साल के बात ह, बलेसर यादव के लइका दोसरा पार्टी के परचार में लागल रहे। ओकरा के डेरवले स, धमकवले स। जब ऊ ना मानल त ओकर लास पोखरी में उतरात मिलल। बाकिर एह से लोगन के का मिलल! लोगन के गरीबी दूर हो जाइत। लोगन के जीये के लूर सहूर बदल जाइत त कुछ समझ में आइत। लोग गोबर अस फूल, गइल बा। कहाँ कवनो गरीब के बेटी के बिआह लोग करवा देता। खाली नाटक तमाशा करत बाड़न स। आपन कुरुसी के हिफाजत खातिर। ओकरा इयाद पड़त बा। ओह साल एलेक्सन में बूथ लूट के फेरा में ताना–तनी हो गइल। गोली चलल आ चमटोली के दूगो मराइयो गइल स। चकमक कार में नेता लोग आइल। नफरत के आग में घीव डाल के लोग गइल। घोषणा भइल मरल लोगन के परिवार के दू–दू लाख रोपेआ देल जाई आ एक–एक गो लइकन के सरकारी नोकरी दिआई। का भइल, ई सभे जानत बा। जवन मर गइलन त ओकनी के परिवार उजड़ गइल। ओकरा बुझइबे ना करे कहँवा चल जाला सामाजिक न्याय ओह घरी जब अपने जात बिरादर के लोग अपना से कमजोर के जमीन हड़प लेला। ई सब झूठ बा, बाकिर का करे। अब उहो डरे चुपचाप रहेला। ओकनिए के कहल करेला। आखिर करस का। उनुकर हाल अबरा के मेहरारू वाला बडुए। सोंचेला, चलऽ कहीं झटका में बेटवा के नर–नोकरी हो जाई त जनम सुफल हो जाई। एही उहा–पोह में उ अपना दुआर प पहुँच आइल।

पसेना से लदफदाइल सामान ले ले जब पांड़ेजी दुआर प पहुँचले त उनकर भतीजा आ भाई धउरले आके हाथे–पाथे सामान लेल। भतीजा कहलस– "रउवा चिट्ठी लिख देवे के नूँ चाहत रहे। रउवा का पता बा कि इहँवा रोज का होत बा। चलीं चल के हाथ मुँह धोईं।" उ ओसरा में रखल खटिआ प जाके बइठ जात बाड़न। सुस्ता के कपड़ा खोलत बाड़न। सब लोगन से पयलगी होत बा। लइका धउर के पानी पीये के ले आवत बाड़न स। गाँव–घर के समाचार होत बा। उ बड़ भाई के बात चिहा के सुनत बाड़न। उनका भाई के बात प विश्वास नइखे होत बाकिर बात त साँचे बा। का आज सिरी भगवान के बरताव उनका के फेर से सोंचे के बाध्य नइखे करत? इहे नूँ रहे कि बसे–टमटम प से सामान लोक लेत रहे। देखते धउरी, बबुआ जी रउवा चुपचाप बइठीं। खाली सामान बता दीं। आप त गजबे हो गइल। कइ बेर पुछला के बाद त ऊ बोलल। आ बोलल त टका अइसन जबाब देलस– "कवनो दोसर मजूरा क लीहीं। हमरा से मोटरी ना ढोआई।" आ पांड़े जी खीसी ताव में सब सामान उठवले दुआर प चल अइलें।

सिरी भगवनवा के बात जब उनकर बड़ भाई सुनलन त हँसे लगले। कहलन– "जानत नइखऽ बबुआ, उहो ससुरा आज–काल्ह नेता बन गइल बा। काम–धाम छोड़ के एने–ओने लखेरा अस घूमत चलेला। देखलही होइबऽ। कइसन मलेच्छ अइसन कइले रहल हा। सब फुटानी भुला गइलस। अब त बोलवलो प ना आवे। माई मरल रहइस त कुछ रोपेया भेजवा देले रहीं। जानऽ तारऽ रोपेया लवटावत उ कहले रहे, हम कवनो भिखमंगा ना हईं कि दान कइल रोपेआ रखब। आ बाद में पता चलल कि हैण्डनोट बना के जवाहिर राय से पच्चीस रोपेये सैकड़ा सूद प रोपेआ लेलस किरिया करम करे खातिर। एक दिन अकेले में भेंटाइल रहे त पूछलीं, कुछ ना बोलल चुपचाप मूंड़ी गोतले आगे बढ़ गइल। ओकरा के एह हाल में देखि के मन बड़ा दुखित हो जाला। बाकिर समय के फेरा ह। अइसने हवा बहल बा। हमरा त बुझाते नइखे लोग कहँवा जा रहल बा?

पांड़ेजी चुपचाप भइया के बात सुनत रहन। भइया के एगो बात उनको ना बुझाइल। आखिर सिरी भगवान बात करत खा उनको से नजर ना मिलवलस। भइयो से बतिआवत खा मूंड़ी गोतले रहे। जरूर कुछ बात बा। कवनो अइसन लाचारो बा जे ओकरा बढ़त पैर के रोक रहल बा। ना त उ अइसन आदमी ना रहे। अच्छा, जे होखे। जब ओकरा समझ में आई त अपने रास्ता प आई। का कहल जा सकता बा। इहे कुल्हि सोंचत उ सूत गइले।

सिरीभगवान दुपहरिया में घरे आके बिना खइले–पीयले जाके बथानी में सूत गइल। बेटी आके खाये खातिर जगवलस त मन ठीक ना होखे के बहाना बना देलस। आज ओकरा मन में तूफान मचल रहे। गाँव के केहू

दोसरा संगे अइसन भइल रहित त ओकरा कवनो परवाह ना रहे। बाकिर ओह आदमी के आज उ मुँह प जबाब दे देलस जे देवता बा। ओकर मन बार–बार ओकरे धिरकारत रहे। कतनो महटियावे के कोसिस करे बाकी नीन ना लागत रहे। मन खराब होखे के बात सुन के ओकर मेहरारू आ गइली आ लगली खाये के मनुहार करे। उ कुछ बोले ना। खाली अतने कहे कि मन ठीक नइखे। मेहरारू के बहुत पुछला प ऊ सबेरे के सब घटना कह गइल। ओकर मेहरारू चुपचाप मूरत अइसन सब सुनत रहइस। जब उ आपन बात कह के चुप भइल त मेहरारू कहलस– "काहे नइखऽ मस्टरवा से कहत कि बेटी के बिआह बिना पइसा के कहीं करवा देवो। एह बेरा सब जात–पात के बात भुला जाला। ओह घरी त लोग कहेला बिआह–शादी त बरोबरी के चीज ह। जात भइला से सभे एके हो जाई। हम कहत बानी चुपचाप चल के खा। तोहार कवन गलती बा। राति खा जा के पांड़े बाबा से माफी मांग लीहऽ। भोरे के भुलाइल साँझ के घरे लवटेवाला आदमी के भुलाइल ना कहल जाला। हमार त मन कहत बा, पांड़े बाबा जरूर तोहरा खातिर धोती कुरता ले आइल होइहें। मिठाइयो लेआइल होइहें। एही बढ़नीमारन के चलते सब कुछ छूटल जाता। ना त आदमी कतना चैन से रहत रहे। उठऽ जा के मुँह हाथ धोलऽ। हम खाना लेके आवत बानी। चलऽ उठऽ। भला मरद के बच्चा मुँह लुकावेला। तू का केहू के बस में बाड़ऽ। उठऽ, तोहार मन जे कहत बा उहे करऽ।" मेहरारू के बात से ओकरा जइसे छूटल किनारा मिल गइल रहे। ओकरा बुझाइल जइसे ओकरा में एगो नया जीवन के संचार हो गइल होखे। ओकर मन साफ हो गइल रहे जइसे पहिल बरखा से धोआ के आकास फरिछ हो जाला। अब ओकरा भीतरे एगो अजब उत्साह के समुन्दर हिलकोरा मारे लागल रहे, उ चिन्ता मुक्त हो गइल रहे।

सांझ खा खइला पीयला का बाद सभे के खटिया दलान प बहरी लागल। गरमी के दिन में त असहूँ गाँव में लोग बहरी सूतेला। बाकिर एने हाल–साल से स्थिति बदल गइल बा। एह से जवान लोग भीतर सूतेला आ अउर लोग बहरी दुआर प। सूते के बेरा सभे अपना–अपना खटिया प कवनो ना कवनो हथिआर लुका के सूतेला। उनको खटिआ के किनारे बिछौना के नीचे एगो फरसा उनकर भतीजा लेआ के लुका के रख देलस। ई सब देख के उनका अजबे लागत बा। मने–मन पछतात बाड़न। बेकार बा गाँव में बसे के बात सोंचल। शहरे अच्छा बा। आपन कमा–खा। केहू–केहू से मतलब ना राखे। एहीजा त लोग एक दोसरा के जानी दुसमन बन गइल बा। बाकिर अइसन निरमल चांदनी रात आ अइसन सुन्दर हवा शहर में कहँवा मिली। मन तरस के रह जाला। लाइन कटला प त अउर हालत खराब हो जाला। कतनो बिगड़ला के बादो आजो गाँव बढ़िया बा। सिरी भगवान अइसन लोग भलहीं कवनो पेंच में पड़के अइसन करत होखे बाकी दिल आजो ओह लोग के साफ बा। दिल में कवनो दांव–पेंच नइखे। उनकर मन कहत बा आज ऊ जरूर भेंट करे आई। उ इहे कुल्हि सोंचत रहन। नीन उनुका आँख से कपूर के गंध अइसन उड़ गइल रहे। रात गिरे लागल रहे। उनका अगल–बगल के खटिआ प सूतल लोग के नाक–बाजे लागल रहे। सभे निरभेद सूत गइल रहे! गाँव में सून–सन्नाटा हो गइल रहे। कबो–कबो दूर कहीं से कुत्तन के लड़े के आवाज सुनाई देत रहे। उ चुपचाप आकास में उगल चनरमा के देखत दहन। उनका बिसवास रहे सिरी भगवान जरूर आई। ओकर राह देखत–देखत कबो–कबो उनकर आँख झपक जाये। पछेया हवा तनी तेज बहे लागल रहे। पांड़ेजी के आँख आधा खुला रहे आधा बन्द। उ अर्द्धनिद्रा के अवस्था में रहन। उनुका केहू के आवे के आहट भइल। गोशाला में बान्हल गाय एक बेरा रम्भाइल। उ देखले एगो आदमी मुँह तोपले उनका दुआर ओर बढ़ल आवत रहे। उनका मन में शंका भइल। उनकर हाथ बगल में रखल फरसा प कस गइल। बाकिर उ कुछ बोललन ना। उ साया धीरे–धीरे चाहा अस चारो ओर देखत आगा बढ़त रहे। उहो साँस सधले चुपचाप सब खिलकट देखत रहन। आ हाथ के मुट्ठी फरसा के डंटा प अउरे कसत जात रहन। थोड़े देर में उ साया आके उनका गोड़तारी खाड़ भइल! उ कुछ पूछे के चहले तले उ साया अपना मुँह प से गमछा हटा के उनका पैर प आपन मूंडी ध देले रहे। ओकरा आँख से गिरत लोर देख के उ उठले। आरे ई सिरी भगवान हवे। बइठ मरदवा। आवऽ हेने। आ उ ओकरा के चउकी प बइठा लेलें। अँजोरिया रात में सउँसे गाँव निरभेद सूतल रहे। सिरी भगवान चुपचाप पांड़ेजी के सामने बइठल रहन। उनुका आँख से बहत अविरल आँसू मन के भीतरे के सब कालिमा के धो देले रहे। पांड़ेजी चुपचाप ओकरे देखत रहन। उ उठके कोठरी में से मिठाई के पाकिट ले अइले आ जबरदस्ती अपना हाथे ओकरा मुँह में मिठाई ठूंस देले। उ मिठाई खात रहे। पांड़ेजी चुपचाप देखत रहन। बुझात रहे जइसे उ कहत होखे पांड़ेजी हम बदलल नइखीं। पांड़ेजी हम बदलल नइखीं। सऊँसे गाँव अँजोरिया में डूबल रहे। ●●

चितकबरा पहाड़ वाला गाँव

अशोक द्विवेदी

चितकबरा पहाड़ का अरियाँ अरियाँ जवन ऊँच–खाल डहरि ओने गइल रहे, ओकरा दूनो ओर छोट–बड़ गई किसिम के बनइला फेंड़ रहलन स। कुछ हरियर पतई से झपसल आ कुछ एकदम निझाइल। टप्पा–टोइयाँ कुछ कँटइला झाड़ आ मुँजवानी।

पुलिया का बगल में बनावल चउतरा पर खड़ा हमरा मन में एक–ब–एक खेयाल आइल कि ओह सुनसान निरजन राह से आवे वाली आदिवासी मेहरारुवन के करेजा कतना पोढ़ बा। साँझि खा जब ओह पहाड़ के अपना अँकवारि में भरेले त अचके एगो करियाह बादर ओकरा किनारा रेंगे लागेला। अन्हार के चद्दर फारत, बजार से लवटत मेहरारुवन के जमात निधड़क फाल डालत, पहाड़ का ओह पार अइसे चल जाला, जइसे ऊ डहरि जुग–जुगांतर से उनहन के चीन्हत जानत होखे आ चितकबरा पहाड़ उन्हनी के रखवारी करत होखे।

थोरिकी भर हटि के दू तीन फर्लांग दक्खिन एगो अउर पहाड़ रहे, जहवाँ गाड़ल दू गो ऊँचा खम्हा पर टँगाइल दू गो टाली साफे लउकत रहुवी सऽ। उहाँ से खम्भा–दर–खम्हा खिंचाइल तार फैक्ट्री में चलि गइल रहुवे। 'रोप वे' पर लटकल ई टाली जब अपना 'फुल इस्पीड' में फैक्ट्री का ओर जाली स, त उन्हनी के चिचियाहट आ कर्कस आवाज एह शान्त इलाका के शांति छिया–बिया क देला आ सड़क प जात लोग बरबस मूड़ी उठाइ के ऊपर देखे लागेला।

पुलिया का बायाँ अलँगे बनल ढलान चितकबरा पहाड़ का ओर गइल रहे। ओकरा बारे में जाने खातिर हमार मन अभी कुनकुनात रहे कि एगो नंग धड़ंग आदिमी ढलान से उतरत लउकल। हमरा भीतर से एगो आवाज निकले–निकले भइल, बाकि गर में बाझि गइल। जइसे हम कुछ पुछतीं, ऊ आदमी होह निकल गइल। 'आज जरूर हम ओने जाइब बे गइले खाली सुनल–सुनावल बात आ कपोल–कल्पित कहानियन का आधार पर इहाँ का बासिन्दन का बारे में कवनो धारना बना के लवटल हमके हमेसा कचोटत रही', हम सोचलीं आ हमार गोड़ खुद–ब–खुद ढलान का तरफ बढ़ गइल।

जवन डहरि हमके लम्मा भइल सुनसान, निरजन आ पातर लागल रहुवे, निगिचा गइला पर साफ–सुथरा, चिक्कन आ चाकर लागे लगुवे। बे–पतई के लँगटे खड़ा उदास फेंड़न के टुसियाइल डाढ़ि ई बतावे लगुवी सन कि जल्दिये ई हरियर–हरियर पतइयन से तोपा जइहन स। तकरीबन दू किलोमीटर आगा गइला पर हमके जवन कुछ लउकुवे ऊ अपना आप में एगो अचरजे रहुवे।

लम्मा भइल भकसावन लागे वाला ऊ चितकबरा पहाड़ आगा जाके एगो आसान ढाल में बदल गइल रहुवे। हमरा सोझा एगो बहुत बड़हन घाटी रहुवे। चारु ओरि से फेंड़न से घेराइल। 'बुझला एक दू किलोमीटर अउरू आगा गइला पर जंगल होई.....' हम सोचुवीं। ढाल से नीचे एगो हरियर मनसायन गाँव लउकत रहुवे। तकरीबन

पाँच–छव बिगहा में फइलल ओह समतल जगहा में, ठावाँ–ठँई पत्थल सरियाइ के बनावल कई गो घर उहाँ के रहे वालन के जीवट आ साहस के छछात सबूत रहुवन स। हम आपन नजर एक बेर चितकबरा पहाड़ पर डलुवीं। ओकरा ऊँच बड़हन काया पर अनगिनत छोट बड़ फेंड़ आ झाड़ी उगल रहुवे। ओही पर एगो दू गो गाइयो बकरी चरत लउकत रहुवी स।

गाँव कहाये वाला एह दस पनरह घरन का टोला का चारू ओर खेत के छोट–छोट कई गो टुकड़ा रहुवे, जवना के हरियरी ई बतावत रहुवे कि ई थोरिकी भर लोग अपना पौरुख आ मेहनत से एह जगह के धीरे–धीरे खेती जोग बना लेले बा। हम ढलान से नीचे उतरि आइल रहुवीं। घाम आ पसेना से अकुताइल मने मन ईहे सोचत रहुवीं कि कहाँ से कहाँ हम एह अनचीन्हल जगहा प आ गइनीं। अतने में एगो टनकार गीत के सुरलहरी हमार ध्यान अपना ओर घींचि लेहुवे। हम ओही दिसा में, छाँह फइलवले खड़ा फेंड़ का ओर फलगरे बढ़ि गउवीं।

ओरियइँ–ओरि पान बोअलीं
अहो रे पान बोअलीं
सोइ पान चढ़ि गइले छन्हियाँ
त छन्हियाँ सुरँग भइले... ....

वाह? के कही कि ई निपढ़ पहाड़ी लोगन के गाँव हऽ? कुछ मेहरारू एगो छोटहन फेंड़ का नीचे बइठि के गावत रहुवी स। लगहीं एगो फूस के ओहार ओढ़ले दू कोठरी वाला घर रहुवे। ओकरा दुआरी पर, कोरा में एगो आल्हर लड़िका लेले एगो जवान मेहरारू हँसत रहुवे। बुझला ई मेहरारू लड़िका भइला के खुसी में सोहर गावत बाड़ी स। एह दुपहरिया में, अपना खाली समय के चटख आ जियतार रंग देबे खातिर गावल, इन्हनी खातिर कतना जरूरी बा?

.... हम ओह ऊँच जगहा प फेंड़ तर खड़ा सोचत रहुवीं। 'आरे सोइ पान चढ़ि गइले छन्हियाँ, त छन्हियाँ सुरंग भइले....

अब सेइ पान चाभेले सोमारू राम
जँवरे सोमारू पिच ढारेले
तीसी देई के अँचरे
त अँचरा सुरंग भइले.... ....।'

गाइ के पगहा धइके घींचत एगो गोर लमछर लइकी कहीं से आइल आ घर का पूरुब ओरी गाड़ल खूँटा में ओके बान्हि देलस। फेरु ओकरा थान पर मुँह रगरत बछरू के गर में लपटाइल रसरी खोललस आ दोसरा खूँटा में बान्हि के, ओही फेंड़ का नीचे, हँसत धवरि आइल। ओकरा आवते गीत अउरू टनकार हो गइल।

अब अँवरेहि कँवरे ननदिया
त हुनुकि–ठुनुकि बोले
भउजी कहाँ रंगवउलिउ अँचरवा
त अँचरा सुरंग भइले?

हम गीत के अरथ समुझे के कोसिस करे लगुवीं। ओरी ओरी बोवल पान के लतर छान्ही पर चढ़ि के चारू ओर पसर गइल बा। छान्ही ओसे सुन्दर लागतिया। पान के बीड़ा बना के खाये वाला अउर केहू ना, तीसी देई के सवाँग सोमारू होइहन। पान खइला का बाद प्रेम–बतकही में उनकर पीक तीसी देई का अँचरा पर परि गइल आ रंगदार हो गइल। गोरकी लइकी के हाथ के इसारा समुझि के गोदी में लड़िका लेले महेरारू ठठाइ के हँसे लागल रहे। ओकरा दाँत के सफेदी जइसे चारू ओर छिटा गइल। मेहरारू फेरू लहकि के गवली सन...

ननदी पनवाँ त चाभइ तोहर भइया
त अब तोहर भइया
पिच ढारि देहलिन अँचरवा
त अँचरा सुरंग भइले हो...

गीत के आखिरी लाइन आवत आवत कूल्हि हँसे लगली सन। एही बीचे केहू के जोर से चिल्हिकला के अवाज सुनाइल आ कूल्हि औरत उठि के खड़ा हो गइली सन। हमरो नजरि पहाड़ का दोसरा ओरी ढलान से उतरत ओह अदिमी प चलि गइल, जेकरा कपार प लकड़ी के एगो भारी बोझा रहे। ओकरा तनकिये पाछा एगो दोसर हट्टा–कट्टा अदिमी कवनो बूढ़ के पिठइँयाँ लदले, गते गते नीचे उतरत रहे।

– "का भयल रे ऽ ऽ?" एगो बूढ़ मेहरारु बदहवास ओनिये धवरल। बोझा लिहले अदिमी निगिचा पहुँचि गइल रहे। ऊहो तनिकी भर मुँह उठा के चिल्हिकल–

– "बाढ़ू काका लकड़ी तोरत के फेंड़ से गिरि गएन।"

– "का भयल हो भइया हमरे बाबू के?" गोरकी लइकी अन्हुवाइल ओनिये भागल। ओकरा कपार के आँचर नीचे गिरि के लसरात रहे।

– "अरे बस थोड़ी सा चोट लगी हय; घबड़ाए का कउनो बात नहीं रे जुगनी!" बोझा पटकला का बाद ऊ नवहा

अँगुरी से माथ क पसेना काछत बोलल आ ओनिये बढ़ गइल।

फेर कूल्हि मिलि के धीरे धीरे उहाँ पहुँचल अदिमी का पीठि से बुढ़वा के उतारे लगलन सऽ।

– "लऽ! ई हरदी–चूना बुढ़ऊ के हाथे गोड़े आ पीठि पर लगाय द लोगिन। हम अबहियें इनके गरम दूध–हरदी लियावत हईं। पी लिहैं त दरद कम होइ जाये।" तीसी देई कहाये वाली मेहरारू एक ठे बड़हन कटोरा जुगनी के थम्हावत घर में भागि गइल।

हमार मन भारी हो गइल रहे। अचके ई कइसन बिघिन परि गइल। अब उहाँ ढेर देर ले रुकल हमके अजीब लागत रहे। सोचलीं, चुपचाप लवट चले के चाहीं, ना त केहू के नजर परल त बेमतलब पूछ–पुछउवल में अबेर हो जाई। पहाड़ का ओही झाड़ीदार ऊँच–खाल डहरि से लवटत खा, हमके बकरी चरावत कुछ लडिका लउकलन सऽ। उन्हनी का आँखि में हमके ओहर से जात देखि कुछ चिहइला के अंदाज रहे। हमके पियास लाग गइल रहे। चाह–पानी का गरज से, हम पुलिया से कालोनी जाये का बजाय बजार का ओर चल दिहनी। कई ठे ट्रक हाँय–हाँय करत, धूरि उड़ावत बगल से गुजर गइले सन, बाकि हमरा ओघरी कुछ ना बुझाइल। रहि–रहि दिमाग में चितकबरा पहाड़ के गोदी में बसल ऊ गाँव आ ओइजा के रहवइयन के चित्र उभरि आवत रहे।

एह पहाड़ी इलाका में अइले अभी दुइये–तीन दिन भइल रहे। हमार ओवरसियर दोस्त इहाँ का बारे में चिट्ठी लिखले रहलन.... "इहाँ बस पहाड़े पहाड़ बा। चारू ओर पत्थल के टुकड़े फइलल लउकी। पहाड़ काटे, तूरे आ लदान करे वाला मजूरन का सँगे एह नीरस जगहा में बहुत उदासी आ मायूसी बा। चीझ समान इहवाँ बहुत महँगा बा। इहाँ के मूल बाशिन्दन में छछात गरीबी आ असिच्छा बा। उनहन के तौर–तरीका ओइसहीं पुरान। ई अतना सिधवा आ निरछली बाड़न सऽ कि उनहन के भूख के फयदा केहू उठा सकेला... ।",

चिट्ठी के इहे कुछ लाइन हमके इहाँ आवे खातिर मजबूर कऽ देले रहे। इहाँ अइला प फैक्ट्री का अलावा, जवन कुछ लउकल ओमे अफसर आ लेबर कालोनी, एकान्ता में बनल एगो मनोरंजन हाल, एगो ऊँच पहाड़ी प नया डिजाइन के बनावल मन्दिर आ ई खरबिदार ढंग से दूनो पटरी पर लागल टुटपुँजिहा बजार। एमें पाँच सात गो पक्का दोकानन आ घरन के छोड़ि दिहल जाव त बकिया दोकान बड़–छोट गुमटी आ 'टीन शेड' वाला घरन में बाड़ी स। उन्हने में ठावाँ–ठईं बीचे में घुसरल कुछ टूटल फूटल गुमटी आ मड़ई डालल चाह मिठाई के दोकान बा।

आजु पता ना काहें हमके इहाँ ढेर उदासी आ सन्नाटा लागत बा। फैक्ट्री का बड़हन देवाल का अरियाँ कुछ 'करकट शेड' बनावल बा आ ओकरा आगा समतल छोट मैदान में बीसन गो ट्रक लागल बाड़न सऽ। साइत ऊ टीन के शेड ड्राइबर–खलासियन के रुके–ठहरे खातिर बनावल होई, जवन इहाँ से सीमेन्ट ढोवे आवत होइहें सऽ।

मनसायन के टाइम बस सँझिये खा लउकेला। जब फैक्ट्री से छूटल मजदूर–कर्मचारी बहरियालन स आ बजार के पटरी प लागल दोकानन में रौनक आ जाला। इहाँ के मूल बाशिन्दा फैक्ट्री लगलो पर, एह फैक्ट्री से कटल, अपना पुरान ढंग–ढर्रा में जी रहल बाड़न स। बुद्धी, बल बेंवत कूल्हि अछइत, गरीब आ बेरोजगार।

पहाड़न का एह देस में आस–पास अउरी गाँव होइहन सऽ आ उहाँ नया जमाना के फयदा आ बिकासो पहुँचल होई; बाकि चितकबरा पहाड़ का पाछा बसल ओह छोट गाँव आ उहाँ के रहवइयन के देखला का बाद, हमके इहे समझ में आवऽता कि ऊ अबहियों जिनिगी के लड़ाई बड़ा मेहनत, मसक्कत् आ फटेहाली में लड़ि रहल बाड़न स। जंगल नावे मातर के रहि गइल बा। खेती नाँवे मातर के हो सकल बा। बस गाय, बकरी, मुर्गा मुर्गी, लकड़ी आ गोइँठा बेचल। कुछे अइसन होइहें स, जवन इहाँ साहब सुब्बा आ ठीकेदारन किहाँ नोकरी का नाँव पर सेवा–टहल करत होइहें स।

साँझ भइला, जब दिन भर के तवाइल पहाड़ गर्मी छोड़े आ सेराये लागेलन स त एगो अजीब किसिम के उमस आ चिपचिपाहट चारू ओरि फइल जाला। फैक्ट्री से निकलत मजदूरन के झुंड अनाधुन सड़क पर भागेला आ दू भाग में बँट जाला। एगो बजार का ओरी आ दुसरका लेबर कालोनी का ओरी। फेर निकलेलन स इंजीनियर, साहेब आ फैक्ट्री के बाबू। आजुओ हम अपना ओभरसियर दोस्त के इंतजार में सड़क का बायाँ अलँगे एगो छोट अदनार गुलमोहर का छाँह में खड़ा रहनी। हमरा पाछा ओइसने अउर कई गो छोट छोट गुलमोहर के फेंड़ रहलन सऽ। जवन सड़क से मन्दिर का सीढ़ी ले बड़ा तरतीब से लागवल गइल रहलन स।

सुर्ती ठोंकत, बीड़ी धरावत ढेर मजदूर अब आगा बढ़ि गइल रहलन स। उनहन का पसेनियाइल देंहिं के

महक अभिन ले हमरा नाक में सुरसुरात रहे। चितकबरा पहाड़ का ओर से आवे वाली डहरि से कई गो मरद आ मेहरारुअन के टोली बजार का ओर चलि गइल रहे। उभरल जबड़ा, धुरियाइल कपार आ गुल्ली अस छटकल माँसपेसी वाला कुछ उघारे निघार अदिमी, अबहियें कपार पर लकड़ी के बोझ लेले गुजर गइले हा स। खड़ा–खड़ा हमार मन अब अझुरा गइल...., हम सोचलीं।

थोरहीं देर में हमके ढलान से सड़क पर चढ़त कुछ औरतन के नया जमात लउकल। उनहनों के कपार पर; गोइंठा के खाँची, पत्तल के बंडल आ लकड़ी के बोझा रहे। एगो मेहरारू, जवना के पेट कुछ उभरल रहे, अपना हाथ में दू गो मुर्गा लेले रहे। उनहन के गोड़ रसरी से बान्हल रहे। कुल्हिन के सरीर पर औसत किसिम के सूती साड़ी रहे। एकाध गो का साड़ी में दोसरा कपड़ा के चिप्पी आ बड़–बड़ पेवन लउकत रहे। हम उनहन का पाछा–पाछा बजार का ओर बढ़त रहनी।

लकड़ी के बोझा लेले एगो सँवराह आ चोख नैन–नक्स वाली नवहा लइकी का पाछा गोंइठा के खाँची लेले उहे गोरकी लमछर लइकी 'जुगनी' रहे, जवन काल्हु घाही बुढ़वा का ओर बाबू–बाबू कहि के दवरल रहे। सड़क का किनारा खड़ा एगो ड्राइबर आ एगो खलासी पहिलहीं से उनहन के तजबीजत रहलन स। ड्राइबर कुछ कहलस आ कूल्हि ठउरी थथम गइली सन।

– "फुटकर निकाला ना बाबू!" सँवरकी लइकी के चलकल हमके लम्मे भइल सुनाइल।

कान्ही पर तौलिया धइले, गंजी–लुंगी पहिरले ओह ड्राइबर के उमिर तीस–पैंतीस का आसपास रहल होई। ओकरा हाथ में पचास के नोट रहे। ओकर आँखि अजीब कामुक आ छेछड़ा अस सँवरकी लइकी का कसमसाता देंहि पर गड़ल रहुवी स आ ऊ बेहया लेखा दाँत चियरले ओकरा से कुछ कहत रहे।

– "फुटकर नाहीं रही तऽ का तोहार लकड़ी ना बेचाये?"

– "ठीक हय। तो हब हम फुटकर करावे का जिमवार ना होउब।"

– "ठीक हव, तब लकड़ी ले चलऽ!" ड्राइवर हँसत पटरी का तरफ खड़ा ट्रक का ओर बढ़ि गइल। सँवरकी मुस्कियाइल आ अइँठि के ओकरा पाछा चल दिहलस।

– "कहाँ पटकि दीं?" सँवरकी के सवाल सुनाइल

– "उहाँ, हो ट्रक का लग्गे!" ड्राइवर हाथ से इसारा कइलस।

इंतजार में खड़ा जुगनी के भौंह टेढ़ हो गइल। बुझला ओके ड्राइवर के रंग–ढंग नीक ना लागल। ऊ जाये लागल त ओकरा पाछा खड़ा उभरल पेट वाली औरत टोकलस, "कुसुम्ही के आ जाये देतू बहिनी!"

– "ऊ इहैं देरी करी लुचुटी! पता नाहीं काहे हमका एकर चाल–ढाल नीक नाई लागत हय!" जुगनी के बड़–बड़ आँखिन में खीसि झलकत रहे।

हमार नजर छनभर खातिर ट्रक कालऽ इतमीनान से मुस्कियात बतियावत कुसुम्हीं पर गइल। ड्राइवर नोट ओकरा ओरी बढ़ावत पुलिया का ओर कुछ इसारा करत रहुवे।

– "हम लोगन चलत हईं कुसुम्ही ढेर देर करी!" कहिके जुगनी बजार का ओर बढ़ गइल। ओकरा पाछा दू गो अउर मेहरारू चल दिहुवी स। उभरल पेट वाली औरत एगो बुढ़िया का सँगे उहें रुकल रहुवे।

चाह का दोकान का ओरि बढ़त हम ओह जवान लइकियन का बारे में सोचत रहुवीं, ... दूनों में कतना फरक बा। एगो एह बजार के हिस्सा बन चुकल बिया आ दुसरकी अब बने जा तिया। लागऽता जुगनी पहिले–पहिल बजार में आइल बिया हो सकेला बाप का घाही भइला का कारन मजबूरी में ओके आवे के परल होखे। कुसुम्ही के चंचलता, सोखी आ खुलापन देखि के साफे बुझा जाता कि ऊ चलता–पुर्जा आ चल्हाँक बिया, जबकि जुगनी के सोभाव में गम्हिराई, सीधापन आ निरछली भइला के सबूत मिलऽता।

चाय वाला किहाँ आलू चाँप आ समोसा खातिर धक्का–मुक्की करत फैक्ट्री–मजदूरन में साफ कपड़ा वाला बाबू 'चाय जल्दी' के शोर मचावत, अउँजा रहल बाड़न स। हम अउर आगा, दोसरा चाह का दोकान का ओर घुमले रहुवीं कि हमार ओभरसियर दोस्त लउकि गउवन। उनका सँगे एगो फेसनेबुल टाइप के नौजवान रहुवे।

– "इनसे मिलऽ! ई हउवन इन्जीनियर सोमनाथ जी, एकदम मस्त आ दिलफेंक।"

उनसे हाथ मिलावत खा, हमार नजर उनका नजर के पीछा करत लिट्टी वाला ओह दोकान का ओर चलि गउवे, उहाँ जुगनी खड़ा रहुवे। ओकर खाली खाँची अब ओकरा बायाँ हाथ में लटकल रहुवे। हम अपना दोस्त के तकुवीं। हमार मनोभाव समझि के ऊ खँखारत बोलुवन, "चलऽ भाई, एक–एक कप चाह हो जाव!"

– "यार तूँ त जानते बाड़ऽ, एह बेरा हम चाह ना पीहीं!

भाई साहब के पियावऽ! तबले हमहूँ मनफेरवट क लिहीं!" सोमनाथ बड़ा बेतकल्लुफी से कहुवन आ ओनिये चल दिहुवन, जेने जुगनी गइल रहुवे। हमके उनकर ई ओछ ढंग नीक ना लगुवे।

चाह पीयत खा हमार दोस्त उनका बारे में बतउवन, "यार, ई बड़ा अजीत आदमी हऽ। खाली एगो नोकर का सँगे रहेला ओतना बड़ क्वाटर में। सुरू सुरू में जब ई इहाँ आइल रहे, त एकर मनवे ना लागे, बाकि एघरी त ई बेल्कुल रंगे बदल देले बा। रोज साँझि खा बजार में उँउड़ियाई। मेडिकल का दोकान वाला से दारू के एकाध गिलास लीही आ रात गइला क्वाटर पर जाई।"

– "का, एइजा मेडिकल का दोकान में शराबो बेचाला?" हम पुछुवीं।

– "ना भाई, ऊ दोकानदार एइजा मकान बनवले बा। ओकरा पीछा वाला कोठारी में ऊ खास डाक्टर आ इंजीनियर लोग खातिर अंग्रेजी शराब के बेवस्था क देला। बाकि एकर त रोजे के धंधा बा। बेमतलब पइसा फूँकेला। इहाँ का एगो दूगो लइकियन के पटवलहूँ बा ससुरा। देखलऽ हा ना, ओह गोरकी लइकी का पाछा कइसे लपछियाइल लागि गइल हा।"

चाह के पुरवा फेंकत हम पुछुवीं, "त का एइजा के लइकी अतना बदचलन बाड़ी सन?"

– "ना भाई, हम ई नइखीं कहत। दरसल भूख आ जरूरत का अउर चीझन का चलते ए गरीबन के लचारी आ सोझबकई के फायदा अइसन लोग उठावे में माहिर होला। एनिये कहीं के एगो नया उमिर के नोकर रखले बा। ऊ एकर खाना–पीना का इंतजाम का साथे अउर किसिम के देखभाल करेला।"

– "बड़ा घटिहा बा ससुरा!" हम चाह का दोकान से उठत कहुवीं।

– "हमहूँ कुछ तर–तरकारी ले लिहीं!" हमार दोस्त चाह वाला के पइसा देत कहुवन।

तरकारी के एगो बड़हन दुकान का सोझा गुजरत खा, हमरा ई बुझउवे जइसे ए पहाड़ी इलाका में शहर से आवे वाली तरकारियन के कुंजड़ा, बासिये में मिलाइ के बेचेलन स। कुछ मेहरारू खाँची में।

– "का भाव बा हो?" हमार दोस्त एगो से पुछुवन?

– "सात रुपया किलो!"

हरियर हरियर घन रोआँ वाली, करइली लेखा ओह तरकारी के हम पहिले पहिल देखले रहुवीं।

– "ई कवन तरकारी ह?" हम एगो हाथ में उठावत पुछुवीं।

– "एके एइजा 'खेकसा' कहल जाला! एकर तरकारी परोरा का भुजिया नियर लागेला आ भात दाल पर बहुत नीक लागेला। हमार दोस्त रुमाल में बान्हत सब्जी हमके थमावत कहुवन।"

पइसा दिहला का बाद रुमाल हमरा हाथ से लेत ऊ पुछुवन, 'चलबऽ? कि अभी रुकबऽ?'

– "चलऽ हम थोरी अउरी घूम फिर लीं!" हम अनमनाहे कहुवीं।

किरिन डूबे लागल रहे आ धीरे धीरे अन्हार के छतरी बजार का बहरा तनाये लागल रहे। बड़ दोकानन में बल्ब आ ट्यूबलाइट जर गइल रहे। हम एगो मेडिकल स्टोर पर जाके पेट का गैस के एगो दवाई लेबे लगुवीं।

– "दरद के दवाई हय?" पाछा से कवनो मेहरारू के बोली सुनि के हम तकलीं। एगो बुढ़िया का सँगे जुगनी खड़ा रहे।

– "कइसन दरद बा? पेट में?" दोकानदार पुछलस।

– "नाहीं, चोट लगी बाय। ओही पर लगावे वाली चाही।"

सड़क पर इंजीनियर सोमनाथ लउकलन। जइसे ऊ जुगनी के लवटे के राह देखत होखसु। ओही जा थोरिकी भर हटि के कुसुम्ही एगो मेहरारू सँगे खड़ा रहे।

जुगनी दवाई लेके जब सड़क पर पहुँचल त सोमनाथ ओकरा बगल से निकलत कुछ कहत लउकलन। जुगनी उनका ओर आँख तरेर के तकलस, फेर कुछ कहि के चल दिहलस। कुसुम्हीं हँसत ओकरा पाछा हो गइल। सोमनाथ कुछ खिसियइला अस खड़ा रहलन। दूर जुगनी मेहरारूअन का सँगे एगो अँगौछी गंजी वाला दोकान पर खड़ा रहे। साइत उनहन के उहाँ कुछ कीने बेसाहे के होई। हमहूँ रमत झमत बजार से बहरा चल दिहनी।

जुगनी बाकई सुघ्घर रहे। रूप–रंग, देहि के गढ़ाव कूल्हि लेहाज से। एके नजर में केहू के अपना ओर आकर्षित करे में त कुसुम्यिों कम ना रहे; बाकिर जुगनी के चमक–दमक से एकदम अलग रहे वाला सोभाव, ओकर विशेषता बन गइल रहे। जइसे इहाँ के फेंड़ पौधा आ फूल प्रकृति के कूल्हि कोप झेलियो के अपना सहज भाव में खिल जालन सऽ आ देखे में टटका सुन्दर आ

आकर्षक लागेलन सऽ, ओइसहीं हमके जुगनी लागल।

पुलिया का चउतरा पर बइठल हम चितकबरा पहाड़ के चुपचाप अन्हार में लुकात देखत रहुवीं। बजार उड़सि चलल रहुवे। लम्मा भइल इंजीनियर सोमनाथ एगो मइलाह पाएँट–बुसट वाला करिया नवहा का सँगे आवत लउकुवन। हम आपन मुँह सड़क का दोसरा ओर घुमा लिहुवीं।

– "बड़ी कड़क लइकी बिया! ससुरी तनिको टस से मस ना भइँलि हा। तेंही कुछ उपाय करु! तोके सौ रुपिया अलग से इनाम पक्का!"

– "नाँय मालिक पहाड़ वाले गाँव की लड़की है ऊ। एकदम पक्का मिजाज होत है इनहन का। ऊ रुपया पइसा से बस में ना आए। ओके देख के ही समझ में आ जात है कि ऊ बड़ी करुवी हय!"

– "चुप सारे, तें कवनो काम के नइखे।" खउआइल सोमनाथ ओके डपट दिहलन।

अपना चाल का असफलता से खिसियाइल इंजीनियर साहब कालोनी जाए वाली सड़क पर मुड़ गइलन। उनका पाछा पाछा चुपचाप चलत ओह नोकर के बात से हमके समझ में इहे अउवे कि पहाड़ वाला ओह गाँव के औरत अपना प्रति सजग आ सील वाली होली सन। बाकि दिन में कुसुम्ही के देखि के त ई नइखे बुझात।

ठंढा हवा का चलला से देंहि के चिपचिपाहट खतम हो गइल रहुवे। पहाड़ का ऊँचाई पर, जगर मगर लाइट में लउकत मंदिर, ए बेरा बड़ा शांतिमय आ मनभावन लागत रहुवे। पहाड़ काटि के बनावल सीढ़ी का दूनों ओर लगावल छोट–छोट फेंड़न के हरियरी मंदिर पर जरत बल्ब का मद्धिम अँजोर में अउर अच्छा लागत रहुवे।

– "अरे पगली, तैं का जानत हई? ऊ फेक्ट्री में बहुत बड़ा अपसर हय! तैंने झिड़िक दिया उसे। अरे ऊ चाहे तों एक मिलिट में तोरे बापू के दरबान बना देय।" ढलान से नीचे उतरत मेहरारुवन में साइत ई आवाज कुसुम्ही के रहे।

– "तो चल काहें नहीं गई तूँही ओकरे सँग? तोरे बापू के ऊ दरबान बना देत। अउर खबरदार, हमें ई सब बात नीक नाँय लगत।"

– "जुगनी, अगर ऊचाहि देय, तो तोहका जबरन घर से उठवाय लेय।"

– "देख कुसुम्ही, जरूरत परलै पर हम जान लेबै और देवै दूनो जानत हई। औ इज्जत के जिनिगी जियै क अउर बहुत रास्ता हय। तैं तो बहकि गई हय! अपन जिनिगी नरक करे जात हई। हम्में तो अब तोहरे सँग आवहूँ जाये में लाज लगत हय!" जुगनी कहत कहत दउड़त आगा चलि गइल।

दूर धुँधलाह होत जात कुछ मेहरारून के टोली में सामिल होत, जुगनी साँचो हमके पहाड़ के बेटी लागल। कुसुम्ही ओसे काफी पाछा छूट गइल रहे। हमके लागल, जइसे ऊ जान बूझ के पाछा छूट गइल रहे। ओकरा मद्धिम होत चाल से हमके इहे समझ में आइल।

अचानक कवनो ट्रक के तेज रोसनी में हमार आँखि चकमका गइल। हम दोसरा ओर मुँह घुमा लिहनी। ट्रक पुलिया का पहिलहीं ढलान का लगे रुकि गइल। ओकरा भीतर जरत बलब के मद्धिम रोसनी में हमके ऊहे दिन वाला ड्राइबर लउकल। इंजन बन क के, इतमीनान से ऊ नीचे उतरल आ टार्च जरावत, ढलान से नीचे उतरि गइल। थोरहीं देर बाद ओकरा टार्च के अँजोर में, ऊँचाई पर बहुत धीरे–धीरे डेग डालत कुसुम्ही लउकल। चितकबरा पहाड़ का ओह निसबध राह में ओ घरी ऊ एकदम अकेल रहे। ●●

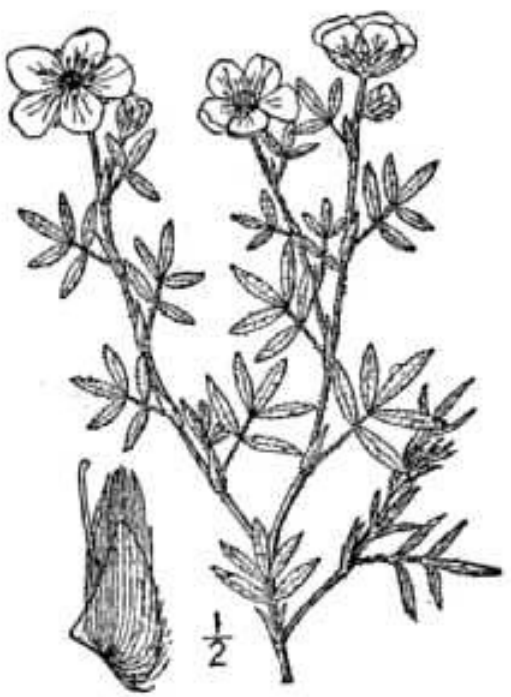

जरसी गाइ के बछरू

✍ रामदेव शुक्ल

साहेब के गाड़ी दुआर पर आके खाड़ भइलि। डराइबर उतरि के पछिला फाटक खोलि के खाड़ हो गइलें, तब साहेब धीरे धीरे उतरलें। तबलें गाँव के लइकन के झोंझ पहुँचि के गाड़ी घेरि के जमकि गइल। रजमन उनहन के घुड़के लगलें– "ज्जारे! अब त रोज गाँव में गाड़ी घोड़ा अवते रहेला, अब का झोंझ लगवले बाड़ऽ स?" साहेब कहलन– "जाए दऽ काका, डिक्की में से समान निकड़वावऽ ओमें बिस्कुट होखी। लइकन के दे दऽ"।

रजमन एह घर के हरवाह चरवाह–सिरवाह सब कुछ हवें। उनका तनी अचरज भइल कि साहेब त कब्बो गाँव के लइकन के कुच्छ नाहीं दिहले रहलें आजु ले। जब जब गाँवें आवेलें लइका एही तरे झोंझ लगावेलें सो, साहेब कब्बों ओकनी कोर तकबो नाहीं करेलें। सोझे अपनी बइठका में ढुकि के 'छीमानुस' 'छीमानुस' करे लागेलें– "यह गन्दा है! यह साफ नहीं है, यह ले आओ, वह हटाओ!" रजमन चुपचाप सब इन्तजाम करते रहेलें। आजु लइकन के बिस्कुट बाँटत रहले आ सोचत रहले कि उनकर साहेब के मिजाज एतना नरम कइसे हो गइल?

एहर ओहर देखि के साहेब पुछले– "काका! माई कहाँ बा?" रजमन के पाकल चेहरा पर मुसकी ऊगलि। कहलें– "जरसी गाइ बियाइलि बा। मालकिन बरमथाने कथा सूनत बानीं। बस अब थोरकिए देर में संख बजबे करी। तबले चाह बना देईं?"

डराइबर कहलें– "रहे दऽ हम चाह थरमस में ले आइल बानीं। अम्मा जी के आवे द।"

साहेब का पुरनकी बात मन परि गइल। उनका खुलल आँखिन की समने ऊ दिन, सिनेमा की फिरकी लेखा घूमे लागल, जब ऊ आई.ए.एस. में चुनइला की बाद पहिले दिने गाँवें आइल रहलें। ओह समे बाबूजी जीयत रहलें। दुआर पर रजमन भगई बन्हलें कुरुई में भूजा खात रहलें आ उनकर भइया जेंवरि बरत रहलें। ओहि दिन बाबूजी आ माई केहू के नाहीं देखलें त रजमन की भइया से पुछलें– "ए बाबा! माई बाबूजी कहाँ बा लोग?" बिरजू बाबा हुलसि के कहलें– "जानत नाहिं बाड़ऽ का ए बाबू? अरे आपन मालिक मालिकाइन बरमथाने कथा सुनत बानीं।"

जेतना बड़हन खुसियाली के खबर बाबू रामसरन शर्मा की लग्गे रहल, ओकरी समने गाई के बाछा बियइले के कवन बाति? छउकल–छउकल बाबू बरमथाने पहुँचि के कहलें– "बाबूजी! राउर तपस्या फलि गइल। हम आई.ए.एस. हो गइलीं। अब त अउरी कथा सुने के परी!"

बाबूजी पूछलें– "का हो गइलऽ? एसे का होखी?" बाबू कहलें– "आरे हम

कलट्टर हो गइनीं। बाऊजी उठि परलें, तले पंडीजी बाँहि पकड़ि के बइठवनीं। कहनीं आपो लिलवती कलौती के हालि कइल चाहत बानी का? पहिले बइठि के पूरा कथा सुनि लेईं, तब ई जगहि छोड़बि।" पंडीजी बाबुओ से कहनीं– "ए बाबू! रउरहूँ बइठि जाईं। बड़े भागि से सतनराएन सामी के कथा के समें आ गइल बानीं। कथा सुनि के परसाद लेके, तब ई जगहि छोड़ीं आ कवनो बाति कहीं सुनीं।"

बाबू बइठि गइलें। कथा पुरहर सुनि के परसाद पाके बाद में अपनी माई के समुझावे लगलें कि ऊ अब केतना पावर वाला अफसर बनि गइल बाड़े। ओह गाँव जवार में केहू पटवारियों नाहीं भइल रहे, जब रामसरन कलट्टर हो गइले। धीरे धीरे जवार मथार में सोर हो गइल। अब केहू उनके नाँव नाहीं धरे। सब केहू साहेब कहे लागल। इहाँ तकले कि उनके बाऊओजी उनकर नाँव नाहीं धरे। ऊहो साहेब कहे लगलें। उनके माई तब्बो उनके बाबू कहें आ अब्बो बाबुए कहेली।

ऊहे दिन मन परल, ऊहे कुलि बाति चभुलावत रहलें, तले माई बरमथाने से कथा सुनि के लवटि अइलीं। एकहक डेग धरत कवनो तरे रहता चलें। साहेब रहतवें में जाके माई के गोड़ धइले आ कहलें अब तोरा कहीं जाए के नाहीं चाहीं। एही जा कथा सुनि लेतू। कहीं ढिमिला जइबू त हाथ गोड़ टुटि जाई।

अस्सी बरिस के बूढ़ा हुलसि के कहली– "जायदऽ बाबू! देवता पितर के नाँव पर जवन कुछ हो जा, कऽ लेवे दऽ। अब त चलाचली लगले बा।"

साहेब हुलसि के कहलें– "जरूर तोर गाइ बाछा बियाइलि बा, तब्बे बरमथाने कथा कहववले हऽ।" तबले रजमन मचिया ले आके धऽ दिहलें। बूढ़ा मचिया पर बइठि के साँस अत्थिर कइली। बेटा के परसाद दिहली। अउर सबके परसाद बाँटे के रजमन के हुकुम दिहली। फेर कहली– "ए बाबू! ऊ जबाना गइल जब बाछा बियइले पर कथा सुनल जात रहे। अब त जरसी गाइ के जबाना बा। जरसी के बाछा बनरे के गुह एहसन कवनो काम काज के नाहीं होला। आपन जरसी गाइ बाछी बियाइलि बा, एह खुसी में कथा सुननी हाँ। इ बाछी तइयार होखी त दस बारह हजार में बिकाई आ बाछा के भाव जानते बाड़ऽ?"

कहि के बूढ़ा, साहेब की मुँहें कावर निहारे लगली। साहेब सोचलें कि जब बाछी दस–बारह हजार के होखी तब बाछा केतनों कम होई त दू चारि हजार के त होइबे करी। बूढ़ी उनकी मन के बात बुझि गइली। कहली– "जब देसी गाइ के बाछा बियइले पर कथा सुनल जात रहे त निम्मन बाछा दू अढ़ाई सौ रूपया में बिकात रहलें, आ ओह दू अढ़ाई सौ रुपया के मोल केतना रहे, एही से बूझऽ कि जवन सोना आजुकाल पाँच हजार रूपया भरी बिकात बा, तवन चालीस रूपया भरी बिकात रहे।" साहेब का मन परि गइल कि ओही सालि उनकर बियाह भइल रहे त सोना चालीस रूपया भरी की भाव से किनाइल रहे। केहू कहल कि सोना एतना महँगा गइल त बाऊजी कहलें– "जाए दऽ कवन गोहूँ बेचि के कीने के परत बा?"

माई कहली– "आजुकाल देसी गाइ के निम्मन बाछा के दाम दुइयो हजार नइखे लागत आ जरसी के त का कहल जाव? एकरे पहिले आपन गाइ जरसी बाछा बियाइल रहे, ओके दुआरे पर से हटावल गर्हू हो गइल। कवनो पुछबें नाहीं करे सों। एगो नेटुआ आइल त कहलसि कि एक सौ रूपया देइबि।" हम कहनीं "का करबऽ?" त कहलसि कि– "कुछ दिन खिया पिया के बेपारी कि हाथे बेंचि देइबि।" बाद में रजमन कहलें कि कसाई कि हाथे बेचे खातिर नेटुआ ले जाले सों। हम बिना एक्को पइसा लिहले मंगरी के दे दिहलनीं। ऊ कहलसि कि जूठ काँठ खियाइबि। गोहरा चिपरी पाथे के गोबर त मिली।

ई त हालि बा जरसी के बाछा के। न हर चले न हेंगा, न गाड़ी खींचे। कवनो कामकाज के नाहीं होले स। जाये दऽ हम कवने बाति में अझुरा गइनीं, पहिले लइकन के हालचालि बतावऽ। दुलहिन कइसे बाड़ी? बड़की कहाँ बा? हमार नाती कहाँ बा? ओकनी के काहें नाहीं ले अइल हऽ?

साहेब कहले केहू एह देस में होखे तब न तहरी लग्गे ले आईं। बड़की आ उनके दुलहा अमेरिका में बसि गइल बा लोग। छोटकू ओही जा पढ़त बाड़े आ ओह लोगन के महतारियो ओहि जा गइल बाड़ी। ऊ लोग त हमहूँ के ओही जा बोलावत बा लोग। बाकि हम तहके छोड़ि के कइसे जाईं?

"उदास जनि होखऽ। छव महिना साल भरि में हमार देहि छूटि जाई त तुहँऊँ चलि जइहऽ।"

कहि के बूढ़ धरती पर हथोरी टेकि के उठे लगली। साहेब आगे बढ़ि के सहारा दिहलें आ घर की भित्तर की ओर चलत चलत कहलें– "अब हम तहरी लगही रहे के खातिर आइल बानीं।"

बूढ़ा खुसी के मारे चिहा गइली। करिहाँव सोझ कऽ के ठाढ़ हो गइली। सोझे अपने बाबू की आँखिन में ताकि के पुछली "सच्चो कहत बाड़ऽ?"

साहेब कहलें– "हँरे माई! सच्चो कहत बानीं।" विसवास न होखे त डराइबर से पूछिले, "हम एहिजा रहे खातिर आइल बानीं।"

रजमन साहेब के बाति सुनि के जेतना चिहइले ओतने खुस भइले। उनकर जिनगी एही दुआर पर बीति गइल रहे। अब उमिरि साठि से अधिका हो गइल। उनके बपसी मरे लगलें त बुढ़वा बाबा से कहि गइले कि रजमन के रच्छा कइल जाई। बुढ़वा बाबा रजमन के अपनिए लग्गे राखि लिहलें। दुआर पर के टहल टिकोरा करें आ पढ़बो करें। साहेब कलट्टर हो गइलें। उनका घर दुआर से कवनो मतलबे नाहिं रहि गइल। जब बुढ़वा मालिक के देंहि छूटि गइल, तब साहेब अइले आ कामकिरिया की बाद अपनी माई से कहलें– "अब तेहूँ हमन की साथे चलि के सहरिए में रहु।" माई साथे नाहि गइली। कहली– "नाहि ए बाबू! हमार गुजर सहर में नाहीं होखी। रजमन हमरी लग्गे बाड़े। इनका साथे हम घर दुआर सम्हारि लेबि। तहार बाऊजी इनके गाँव की नाता से भाई लागत रहले बाकि बेटा एइसन मानें। हमहूँ इनके दुसरका बेटा मानी लें। तहरा जब समें मिली त आके देखि सुनि जइहऽ। हमके गँउवे में रहे दऽ।"

साहेब तबसे आजुले रजमन काका के कब्बो हलुक पातर कुछ नाहीं कहलें। साल दूसाल में आवेलें एक दू दिन रहेले। एक बेर मेम साहब आइल रहली त दुसरहीं दिले लवटि गइली। अब सुनत बानें कि ऊ अमिरिका चलि गइली। रजमन सोचलें– साहेब गाँव में रहिहें त ठीके बा। एतना दूध दही होत बा, कुछ सुकारथ होई खेतियोबारी ढंग से होखी।

साँझि भइल त साहेब कहलें– "रजमन काका, तनी जाके चोन्हर भाई के बोला ले आवऽ।" चोन्हर के नाँव उनके बाप राजीव विलोचन धइले रहलें बाकि जब ऊ लइका रहलें तब्बे से आँखि मूनि मूनि दूसरा के रिगावें। अइसन बानि परि गइल कि कब्बो पुरहर आँखि खोलबे नाहीं करें। प्राइमरी के मुंसी जी एक दिन कहलें– "का चोन्हर अइसन ताकेलऽ?" तबसे उनकर नाँव चोन्हर परि गइल। पहिले उनका रीसि बरे बाकि अब त सबे चोन्हरे बाबा कहेला। नाँव चाहे भलहीं चोन्हर हवे, अकिलि के आगर हवें। साहेब के सम्हउरिया हवें। साहेब जब आवेलें तब दूनू जने के बइठकी जमेले। रजमन बोला ले अइले। राम रहारी कि बाद चोन्हर पुछलें– "का हो साहेब! कवनो नुनगर खबरि सुनावऽ।" "नूनगर खबर इ बा कि हम एमपी के चुनाव लड़े जात बानीं। एही क्षेत्र से टिकट मिलि गइल बा। गाँव में रहि के आजुए से परचार सुरू कऽ देबे के बा। एहमें तहार मदत चाहीं।" कहि के साहेब चोन्हर कोर देखलें। चोन्हर के आँखि कई बेर चकचोन्हिआइलि। मुसकी मारि के पूछलें– "एहमें बेथाह रूपेया खरच होला। कहीं से मीलल बा?"

"अरे मिली कहाँ से? जवन पर्टिया टिकट दिहले बा ऊ रूपया लेके टिकट देले। हमरे लग्गे रूपया पइसा के कम्मी नइखे। बस तू अइसन जोगाड़ लगावऽ कि एह बेर हम एमपी हो जाईं।" कहिके साहेब चोन्हर के बता दिहलें कि जेतना चाहीं ओतना रूपया पइसा ऊ खरच करिहें, काम हो जाए के चाहीं। चोन्हर मन में सोचलें कि चलऽ बड़ा धन कमइले बाड़ऽ अब कुछु गलो। उप्पर से जोर से हुंकारी भरले– "हँ होऽ, चलऽ।"

दुसरहीं दिन से परचार जमि के होखे लागल। पाँच ठो गाड़ी आ गइली स। कस्बा में परचार दफतर खुलि गइल। गँउवों में रोज चाह पकउड़ी, खाना बने लागल। लोग जुटि के खाए खरचे लागल। जइसे जइसे चुनाव निगिचाए लागल, खरचा बढ़े लागल। बकसा बकसा नोट सहर से आवे आ चारि दिन में ओरा जाव।

रजमन देखत रहें। कुछु कहलो चाहें बाकि बहुत कुछ सोचि के चुपा जायँ। एक से एक बनोर आके चाभत बाड़े सों आ बंडल नोट ले जात बाड़े सों। नाहीं देखि गइल त एक दिन पुछि परले– "साहेब! एतना रूपेया खरच कऽ के जवन नोकरी रउवाँ पाइबि ओमे केतना तनखाह मिली? का कलट्टरो से ढेर मिली?" साहेब हँसि परले। कहलें– "नाहीं हो काका। तनखाह तऽ कलट्टर से अधिका नाहीं मिली। बाकि ईहे बूझिलऽ

कि कलट्टर की लग्गे चाहे केतना पावर होखे, एमपी चाहे जेतना फटीचर होखे– एक बेर एमपी हो जाला तऽ कलट्टरो के बाप हो जाला। कई जने कलट्टर लोग एमपी के जूता पर पालिस लगावेला लोग। बुझलऽ काका?"

रजमन बउरा गइले। सोचे लगले कि एमपी का होला? का कुलि देस के मालिक एम्पिए होलें? रजमन के चेहरा देखि के साहेब हँसि परलें। पुछलें– "अच्छा काका! सुदेसी जी मन परत बाड़ें तहरा?"

"काहें ऊ नाहीं मन परिहें साहेब? बाऊजी रहनीं त ऊ हकासल पियासल आवें। कई दिन से अन्न पानी से भेंट नाहीं भइल रहे। बाऊजी कहीं कि नहा लेईं तब खाईं, बाकिर सुदेसीजी जवनें पावें, तवने भकोसे लागें। दू चारि दिन रहि के खा पी के हरियरा जायँ तब बाऊजी से धोती गमछा, रूपेया पइसा ले के जायँ। उनके केहु कइसे बिसारि देई?" रजमन कहलें।

साहेब समुझवलें– "देखऽ ऊ मुवले का पहिले एक बेर एमपी भइल रहलें। जनम जनम के दुख दलिद्दर भागि गइल। उनके बेटा एम्मपी भइलें त कवनो सहर अइसन नइखे, जहवाँ उनके कोठी कार न होखे?"

रजमन कुछ बोलें ओसे पहिलहीं साहेब के माई पुछि परली– "ए बाबू! आखिर कहवाँ से एतना रूपेया आवेला एमपी लोगन की लग्गे?"

साहेब कहलें– "कहाँ से आई? जेतना धन बा देस में, ओह सब पर एम्पिए लोगन के कब्जा बा न? अब देखऽ कि हर साल दू करोड़ रूपेया एक एम्पी के मीलेला, अपने इलाका के विकास करावे खातिर। विकास केतना होला आ ऊ रूपेया कहाँ चलि जाला, ई सब केहु जानेला? एमपी लोग के न रेल में पइसा लागे, न जहाज में लागे, न दिल्ली में मकान के केराया देबे के बा, न कवनो चिन्ता फिकिर बा। तनी एसा नटई दुखाइल त सोझे बिलाइत जाके सरकारी खरचा पर दवाई होखेला। एमपी लोगन के लइका लइकी केतनो गदहा होखे लोग, सबसे बड़का इस्कूल में पढ़ेला लोग। पढ़ि के इंजीनियर, डाकटर अफसर होला लोग आ नाहीं त फेरू एमपी भइले की राहि पर त लागिए जाला लोग। अब ईहे बुझऽ कि बाघ के बच्चा बाघे न होखी, बकरी नाहीं न होखी।"

साहेब जानिए नाहिं पवले कि कब चोन्हर आके उनकी पाछे खाड़ हो गइल रहलें। जब चोन्हर खँखरले तब साहेब मूड़ी फेरि के तकले। चोन्हर के देखि के उठि गइले। कहले– "बतावऽ का हालि बा? परचार का कहत बा? वोटर लोग के का मन बा?"

चोन्हर उनकर बाँहि धऽ के चारि डेग फरके ले गइलें आ धीरे धीरे कहें लगलें– "देखऽ हालि त कवनो ठीक नइखे। वोटर के मन आ तिरिया चरितर केहू बूझि नाहीं पाई। बाकि एक बात बा कि जवने कंडिडेट से तहरा सबसे ढेर खतरा बा, ऊ त टरक भरि–भरि पाउच बँटवावत बा।"

"पाउच? कथी के पाउच?" साहेब चिहुंकलें। "ज्जा मरदे! एतना बड़हन साहेब होके पाउचे नाहीं जनलऽ? आरे अब देसी सराब बोतल में नइखे बिकात। अब पाउच में बिकाला। ठेका पर से लिहले, दाँते से कटले आ सोझे मुँह में....।"

चोन्हर आपन मुँह उप्पर उठा के ओमें कुछ गिरवले के इसारा कइले। तबले कई जने परचारक लोग आ गइलें। सबके चेहरा चमकत रहल। सब के मुँह से एक्के बाति निकड़त रहल– "साहेब! आपे जीतत बानीं। सबकर हालत खराब हो गइल बा।"

साहेब की आँखि में नसा झलके लागल। चोन्हर चुपा गइलें। सोचे लगले कि एह नसा के उतार नइखे। चलऽ अब त ऊहे हालि बा कि एक जने बार बनवावे गइले त हजाम से पुछलें हमरे कपार पर केतना बार बा? त ऊ कहलस, अपनहीं गनि लीह? तहरी कपार पर केतना बार बा?

चोन्हर घरे लवटत खा सोचे लगलें कि सहेबवा की लग्गे केतना रूपया बा, एकर थाहे नइखे लागत। लगलें हिसाब जोरे कि केतना रूपया अबहिन ले खरच हो गइल बा, त अथाह समुन्दर में पँवरलें जइसन बुझाइल। तिसरे चउथे दिन एक दू बक्सा सौ सौ आ पाँच पाँच सौ के नोट से भरल आवेला आ ओरात देरी नाहीं लागेला। कहाँ धइल होई एतना रूपया? गिनती पहाड़ा उनका खूब आवत रहल, बाकि सहेबवा के एह खरचा के अन्दाज लगावल चोन्हर की दिमाग से बहरा हो गइल।

साँझि होते रजमन हाजिर हो गइले। चोन्हर पुछले– "का हो रजमन! का बाति हऽ कइसे उपराइल बाड़ऽ?" रजमन कहलें– "साहेब अब्बे बोलवनी हँ।"

चोन्हर के मन त नाहीं करत रहल बाकि रजमन की साथे चलि गइले। साहेब फिकिरि की मारे एहर से ओहर मेल्हत रहलें। चोन्हर के देखले त इनके साथे लेके कोठरी में चलि गइले। गम्हीर चेहरा देखि के चोन्हर पूछले– "का हो? कवनो नई बाति हो गइल का? काहे एतना गम्हीर लागत बाड़ऽ?"

साहेब कुछ देर ले चोन्हर की आँखिन में ताकत रहले। उनके दूनू हाथ अपनी हाथे में थाम्हि के कहले– "चोन्हर भाई! हम कवनो तरे ई चुनाव जीतल चाहत बानीं। रूपया पइसा के कवनो फिकिरि मति करऽ– बतावऽ अउर का कइल जाव? जबसे पाउच वाली बात बतवलऽ हऽ तब से कुछ डर लागे लागल बा। अब का करे के चाहीं, ईहे बतावऽ।" चोन्हर साहेब के फिकिरि के मने मन मजा लेवे लगलें। कहलें– "त का तूहऊँ पाउच बँटवावे के सोचत बाड़ऽ?" साहेब हँसि परलें। कहलें– "सोचत त नइखीं बाकिर तूँ सोचि के बतावऽ कि ऊहो कइल जरूरी बा का?" चोन्हर चिहा गइले। मन में कहलें– "तऽ बाति इहाँ ले पहुँचि गइलि बा।" परगट कहलें– "देखऽ पाउच त नाहीं, बाकि हमरी मगज में एक ठो बाति आवति बा। पाउच जवने लोगन में बँटात बा, ऊ भेड़ि हऽ लोग। ओह लोगनि के हाँके वाला जवन चरवाह बाँड़े स, ओह कुल्हिनि के खूब खिया पिया के आ कुछु ले देके अपनी ओर फोरि लीहल जाव, त काम फरिया जाई।"

कुछे देर दूनू जने में खुसुर फुसुर भइल। ओकरी आधा घंटा बाद साहेब की कोठरी में गाँव के सबसे बड़का लुहेड़ा जुटि गइले। साहेब बिलइती दारू के बोतल खोलि दिहले। चिखना मंगा लीहल गइल। साहेब आ चोन्हर त नाहीं पियत रहल लोग, बाकि पाँच गो नवहा चहकि चहकि बिलइती आ चिखना के मजा लेवे लगलें सँऽ। जइसे जइसे नसा चढ़त गइल ओकनी के बतकही रंगदार हो गइल। एगो कहलस– "साहेब! आपै जीतबि। अउर केहू जीती नाहीं सकेला।" दुसरका कहलस– "दूसर केहू जीती त उनके सोझे दागि देबि।" तिसरका कहलसि– "दूसर केहू जितबे कइसे करी?" चउथका कहलसि– "आरे भाई! तहनी के कइल कुछु होई? आरे हम अक्केल्ले सब देखि लेबि।"

साहेब का बुझाइल कि ई काम नाहीं कइल चाहत रहल हऽ। एह लखेरन से चुनाव जीतल अउर मुस्किल हो जाई। बाकि चुप्पे रहि गइले।

दारू पी के चुनाव में जितावे वालन का चलि गइले पर साहब पछताए लगलें। कहलें– "चोन्हर भाई! एह सारन के बोलावल ठीक नइखे बाकि अब आ गइलन स, अब का कइल जाव?"

चोन्हर कहलें– "देखऽ भाई! तू एतना दिन ले कलट्टरी कइलऽ, एक से एक ओहदा पर रहि के देस दुनिया के चरवलऽ अब हम तहके समुझावे लायक नइखीं, बाकि एक बात कहबि कि जब तूँ राजनीति की कोठा पर चढ़े जात बाड़ऽ त रंडी–भडुवन से कबले बँचल रहबऽ? वोट बटोरे के होखे तऽ एही कुल्हिन के मदद लेबे के परी।"

बाति पुरहरो नाहीं भइल रहे कि ऊ कुल्हि लवटि के आ गइले स। नसा अउर तेजिया गइल रहे। अवते एगो साहेब के बाँहि पकड़ि के कहलसि– "ए साहेब! आप जीति जाइल जाई त हमके नोकरिया मिलि जाई न?" ओकरा मुँह से शराब भभकत रहल। साहेब सोचियो नाहीं पवलें कि का करें, तबले दुसरका छड़कि के दुसरकी बाँहि धऽ लिहलसि आ कहलस– "ए साहेब! चुनउवा त आपे जीतबि, बाकि हमार मोकदिमवा फँसिला करा देबि न?"

रीसि कि मारे साहेब के देंहि जरे लागल। मन में आइल कि ए कुल्हिन के जूता से पिटवाईं बाकि लालच के लगाम लागि गइल। कवनो तरे ओह दूनू से आपन बाँहि छोड़ा के साहेब फरका भइलें आ चोन्हर के इसारा कइलें कि जल्दी से जल्दी ए कुल्हिन के आँखि के समने से हटावऽ। चोन्हर ओकनी के समुझा के उनका आँखि के फरके ले चललें।

चलत–चलत एगो कहलसि, "हमार काम नाहीं होखी तऽ बुझि लीहऽ।" दुसरका कहलस– "चल सारे आजु ले ई केहू के कवनो काम कइले बाड़ें कि हमन के करिहें?" तिसरका जोर से हँसल आ कहलसि– "अरे ई जरसी के बछरू हवें।" कहि के एतना जोर से हँसल कि रहतवे में ढहि परल। कुल्हि ओके घेरि के बइठि गइले सन आ 'बछरू हो बछरू' कहि के रोवे लगले सन।

– विश्वविद्यालय आवास, हीरापुरी पार्क रोड, गोरखपुर, 'पाती'–1999 ●●

महासमर ठाटे परेला

✍ प्रकाश उदय

(एक)

जोड़ा कम्मरवन के जाड़। कुछ मसकल कुछ मुसरी के चाटल चदर पर। रात भर। झर–झर–झर चाँदनिया छप्पर से चद्दर तक रात भर। भरो रात चलल हवा। गर्मी के रात के निगोड़ा ए पाला में हाड़–हाड़ से हिलल–मिलल बड़ी धधा–धधा। दाँतन पा दाँत कटकटाले स महामंत्र। रात भर। महासमर काटे के बाटे। मुश्किल से बीतल बा पहिले पहर बाकिर, लागत बा रात भर कि बीत गइल रात भर कि बाकी बा रात भर।

हँसी–खुशी जीए के सै–सै जतन बा, अतने का कम बा कि आन्ही ना उपटल। त जै जै जै चद्दर के, छप्पर के जै–जै। जै–जै चाँदनिया के, उपटल ना जवन तवन अन्हिया के जै–जै। जै–जै–जै जाड़ा के बेटी जड़इया बेरामी के, परे साल आइल, ईहे महीना आ ईहे पख, धइलस रमलैका के। कहलस पियरिया के माई कि "सउतिन तुनाहीं, जियते हम बानी आ जियते जी हमरा, तें हमरे भतरा के धरबे?" त भाई रे, के जाने कवन–कवन काढ़ा दवाई से, सउतिन जड़इया से संइया के जाँगर त जबरन छोड़वलस, पर जाही दिन, ताही दिन उहे–उहे जाड़ा के बेटी जड़इया, विकट कटकटा के धइलस पलट के पियरिया के माई के। तीन दिन तीन रात। चउथा दिन लाल नया चदरा चढ़ा देलस। बुआ जी बतवली कि मरल ना, तरल पियरिया के माई। कि देखऽ कि तिरथ–बरथ कुछुओ ना करनी आ कइसन सोहागिन के मरनी। रहल रमलैका त भइयन, मरद जो होखे त अइसन! भोर ले बइठल रहल ह चिता के अगोर के। बहुत तपल तपलस तप कइलस। जइसन ऊ सती रहल तइसन सता ईहो निकलल रमलैका। अपना के बहुते सतवलस। आन जो बताइत मन नहिंयो पतियाइत, बाकिर ई बात भउजी रसरनिया बतवलस कि अपना के रमलैका बहुते, बहुत जादे अधिका सतवलस कि देखऽ कि कइसन कुकाठ ई पाला आ कइसन चाँदनिया के माया आ कइसन रमलैका ई साला कि रूई ना, दुई ना, धूई ना...

रूई त गइल पियरिया के साथे। ले आइल रहुए पियरिये के माई नइहरे से अपना, बाकस नया एगो, बाकस प बान्ह के रजाई। ओसहीं, उहे–उहे बाकस प उहे–उहे बान्ह के रजाई, पियरिया के कइलस बिदाई। अपने से बाकस रँगववलस, अपने से खोल बदलववलस रजाई के।

"आ हमनी के बिहुनी?" – कहलस रमलैका खिसिया के। त कहलस पियरिया के माई मुसुका के कि "हमनी के का रे, कट जाई सट के...."। बतवलस सरिया के कि "होखे दे हड़वर के धान, अपनन के नया हम रजाई बनावाइब...."।

"तें ना समझबे रे। सगुनी ह बाकस ई, सगुनी ह संइया, ई रूई। रोपनी–कवरिया अस हमनी के जोड़ी के संग जइसन रखलन स, रखिहें स तसही बनवले पियरियो दू बेकत के दूई...।"

सगुनी रहल हा ऊ बाकस, सगुनी रहल हा ऊ रूई। रहले स जले तले रहल रमलैको के दूई। रूई ना दूई ना। केकरो दबवले ना दबल जे पियरिया के माई, ना दाबि पावल चहलो पर कबहूँ रमलैको, तवना के हड़वर दबवलस मुखियवा....। जानेले दुनिया के

धुँई बिना अगिनी ना अगिन बिना धूँई....।

धूँई त उठले रहे अबगे, रमलैका के अँखिया झपकते। लउकल कि उहे–उहे चिता आ देखऽ चहुँओर से कि धधकल। जगला में कहँवा अब तापेला कउड़ा भा कुच्छो रमलैका, सुतलो में तापे ना पवलस। उचटि गइलि नीन बाँह लपट दे लफवते आ ऊहे चदरिया आ ऊहे चाँदनिया आ ऊहे छपरिया.... कहाँ बा अशोक बाटिका में अगिनिया।.... अबहीं त बाकी बा भरो रात रतिया.... महासमर काटे के बाटे।

अछा त अबकियो त आई नू जाड़ा के बेटी जड़इया। अउर कहाँ जाई ऊ भइया, ठहरल पहचान के पुरनकी मड़इया। पियरिया के माई रे, तोर रहे तबकी त अबकी के बारी बा हमरी। थर–थर–थर काँपी ई जोड़ा कम्मरवन के जाड़–आग के गर्मी से। सुनते ना बा बेटा झीर–झीर चदरा के मुँहफट ए नर्मी से।

बाकिर.... बाकिर झर–झार चाँदनिया, छप्पर से चद्दर तक... चित्त–पट्ट करवट पर ईहो त छूटी, छिना जाई। कहँवा ई पाइब, ई कहाँ हमें पाई.....

(दू)

चोर–चोर शोर उठल, पछयारी टोला से। धर धर धर.... धउर–धउर.... ओहर ना, एहर... एहर–एहर आवे के, ध लेले बानी हम सारे के। हँ हँ पटकि देब, बाकिर ई भागे त.... हरे हरे राम–राम ई त रमलैका ह। हद बा कि बोलबो ना कइलस कुछ। अच्छा त रमलैका भैवा रे, हमनी ए साला दुसाला में लद–फद त देख लिते तेंही कुछ बढ़ के, कुछ अगवढ़ ले। एहरे गइल होई नीछछ बधार बा, चोरन के अउर कवन दिशा में अड़ान बा। त भैवा रे, रमलैका, ले लम्मी, चाबस.... चाबसबसबस....

"ही ही ही हा हा हा.... सुनत नू बाड़ऽ दिलावर हो भाया, ई जे रमलैका बा साला, बा बड़िए दमवाला। देखऽ कि चलनी मतिन एक चद्दर प ठाटत बा पाला। अजबे ई दुनिया ए भाया, छछात चिरईखाना। एक से जिनावर एक बान्हल। कुछ बिगड़ल कुछ सीधा कुछ साधल। जइसे कि ईहे रमलैका। कतना दो सिधवा। आ एकरे जे रहल हिया जोरू अः कइसन कँटीली, बोतल में देसी बिलेती अस दारू। देखले नूं बाड़ऽ तू मुखिया के नाके बाटे जे कटल के निशान, ओकरे ह दीहल परसाद। अधरतिए बोलवले, चिउरा कुटावे के बहाने। ततले हाँड़ी पटकलस कपारे। तीन मास रहले खटवाँसे बेचारे। अब त सिधार गइल, बाकिर बेचारी। फूटि गइल करमे रमलैका के। हड़वर हड़पि गइले मुखिया। त मुखियो के माई गजबे निकलली नू डाइन। ना त.... बेरामी ह कवनो सर्दी आ खाँसी.... अच्छा त गजबे कँटीली रमलैका के रहल मेहरारू। मूँ गइल अब त बेचारी। आ–हा–हा कइसन लहास रहे.... रमलैका, आ गइले....?", "आ गइलीं"।

"ना भइया, हमरे परछँइया ह। तूहुँ भरमा गइलऽ! ई सभ चाँदनिया के माया ह।"

"चोर साला ना भेंटल?"

"ना भेंटल?"

"लामे ले गइले हा?"

"गइली ह।"

"तौनो प ना भेंटल?"

"ना भेंटल।"

"जोर से धउरले?"

"धउरली।"

"तौनो प...."

"ना भेंटल।"

"लउकल त कम से कम"

"ना लउकल"

"अच्छा त खइनी बा?"

"नइखे।"

"नइखे? आ चोरवा लउकबो ना कइलस?"

"लउकबो ना कइलस।"

"फोरन रा के घर के पिछुतिया तें झँकले हा?"

"झँकली हा?"

"लउकल हा?"

"ना लउकल।"

"फोरन रा के घरनी..."

"लउकली ना।"

"अच्छा त राम कसम रमलैका। उनुको ऊ बहुते गहिर नीन बाटे। अबकी त सुनलीं हा कोंहड़ा फरल बाटे बहुते लदर के पिछुत्ती में उनुका। खाँढ़ी, छान्ह प, भर–भर अँकवार के। देखले हा ध्यान से?"

"का पता। रेंड़ कुछ लउकल हा अलबत्ता।"

"ओ हो हो हा हा हा.... सुनत नू बाड़ऽ दिलावर हो भाया तू त तरहत्थी प रेंड़ी के ढेंढ़ी लड़वलऽ ना भाया कबहिंयो शहरे में रहलऽ हरमेस। गजबे ई खेल। गजबे चिकन होला रेंड़ी के तेल। गजबे के चिक्कन नू फोरन के घरनी। सुभाव के। बरो–बनिहार के, दुसाधो चमार के कहेली कि एजी, कि एजी, लीं सीधा लीं, खाएक लीं कि ना रामलाएक जी? अच्छा त मरद परदेस बा लम्पट आवारा के दस किसिम भेंस बा माँह–मैदान में फोरन के घर बा चोर डकउतिया के बड़ा भारी डर बा.... बा कि ना, रमलैका, बा कि ना?...."

"काहे ना.... तू बोलत बाड़ऽ त बड़ले बा।"

"अच्छा त चोर सा...."

"ला ना भेंटल। लउकल तक ना साला। अपने ना लउकल ना फोरन के घरनी लउकवलस ना कोंहड़े में सरवा लुकाइल आ फेरू अब के जाने कहिया दो आई...."

"आछा–आछा–आछा। आछा ए रामलाएक भाई। हमरा त कुछ–कुछ पहिलहिंए बुझाइल हा कि चोर कवनो थोरे न आइल हा। बुला भउजी सपनवे में अपना बउअइली हा। अछा त भउजियो के कवन दोष....",

"कवन दोष....?"

"सपना प केकर बा कवन जोर....?"

"कवना जोर...."

"अच्छा त जा सुति जा.... नीके कइलऽ कुछ धउरि गइलऽ। निकहा गरमइलऽ, पसेने फेनइलऽ। जाड़ा मरा गइल। का हो.... निना गइलऽ? जा सुति जा....",

(तीन)

जइसे सब अइले, सब चलि गइले। सोचलस रमलैका कि चलि गइले भल कइले। बाबा कबीरा त कहिए कहि कइले कि दुनिया है माया है। कागज के पुड़िया है, बुन्दम पड़न्ते गल जाना है। सब साला माया है। माया के रहलि ह पियरिया के माई। चलि देसल, भल कइलस। माया के मसकल चदरिया ई। माया के छेहर छपरिया से बरखत चननिया के माया। माया के हड़वर हड़पि लेलस सरवा मुखियवा के माया। माया हो माया, की त मुँआवऽ ना त सुतावऽ....

(चार)

भूँ–भूँ–भूँ। कुतवा ह। ना–ना–ना, कुतिया ह। कुकुर–बहू। ही–ही–ही। भूँ–भूँ–भूँ। ही–ही। भूँ–भूँ। ही। भूँ। भूँ–भूँ–भूँ। ही–ही–ही। भरपेट हँसलस रमलैका–हो–हो–हो। भों–भों–भों– भरपेट भुँकलस कुतियवो। कुतिए जो जाने त जाने, रमलैका का जाने, हँसला में भुँकला में कतना फरक बा। हँसेला चनरमो, हँसेली चनरमा के कनियो चननियो। तब त ना भूँकेलू कुतियो। अलबत्ते रमलैका जब ही–ही तब कुतिया भूँ–भूँ.....

बाकिर रोज थोड़े न आवेला चोर, जाड़ में, अँजोरिया में! ऊ त आज आ गइल, देह गरमा गइल, पसेने नहा गइल। रोज कहाँ चार–चोर केहू बउआला। ऊ त आज बउआइल आ देह गरमाइल। रोज कहाँ भूँकेले कुतियो। आ रोज कहाँ आवेला हँसियो।

एक बात सोचलस रमलैका। कि भूँकत बिया ना, कूँखऽतिया कुतिया। सचहूँ बहुत बाटे पाला, बेचारी के के पूछे वाला! सपनन के चोरवन के पाछे त खलिसा अदमिये के आवेला भागे!

त ए कुतिया, आ, आऽजो। कुत्ती जी.... पुच–पुच। कुत–कुत–कुत.... आऽ जो ना, आऽजो.... कुत–कुत–कुत.... दुत, अइबे त आउ ना त मर हरमजादी.... का खइले बाड़िस? बड़ घर के कौरा? का कइले बाड़िस? बबुआन टोला के दौरा? कुत्ती तें नाहीं, फट्टल बा चद्दर त अतना निरद्दर।

(पाँच)

एही चदरिया में देहिया लपेटले पहिले–पहिल आइल रहुए ससुरार, पियरिया के माई। अब आगे के का कहीं हवाल ए कुतिया रानी, आगे का का कहीं हवाल। जेंव–के–तेंव, चहलीं त हमहूँ कि धइ दीं चदरिया, पर आगे के का कहीं हवाल ए रानी कुतिया, आगे के का कहीं हवाल।

कि कइसे जड़इयो जो अइलस आ लाल नया टह–टह चदरियो चढ़इलस त एके गो बस! अइसन अभागा कि शुरूए से..... शुरूए से साला हम रह गइलीं पाछा, शुरूए से आगा रहत आइल साली, पियरिया के माई.....

जड़इया का अबकी ना आई?

ठेंऽगा। ले–दे के एगो जड़इए बस बाटे का? पछयारी टोला ना? चोर ना? चोर–चोर शोर ना? बउआहूँ भर केकरो भउजी के जोर ना? अपने बउआइब हम। कि चोर–चोर ..... ले भागल चदरा के हमरा, धावऽ जा, धावऽ लो.....'

अबगहिंए सुत्तब। आ बउआइब। अतना आ अतना आ अतना बउआइब कि सब सारे के घरनी जी। देख लिहें, ए कुतिया देखिहे तें...

बाकिर, जोड़ा कम्मरवन के जाड़, कुछ मसकल कुछ मुसरी के काटल चदर पर, रातभर। भरोरात उड़ल रहल नीन चटक चाँदनी के साथे....

महासमर काटे के बाटे। मारेला महासमर, मरहूँ ना देला। 'मारेला महासमर, मरहूँ ना देला'– रमलैका कहलस। कहलस ना, गवलस। पहिले त गँवे–गँवे गवलस आ जोर जब लगवलस त कुतियो कढ़वलस। त झीर–झीर गवलस चदरिया आ झर–झर चाँदनिया आ झिर–झिर गवलस बयार...

कि काटे कटे ना, महासमर ठाटे परेला....

होत फजिर लोग–बाग चकचिह कि कवन रहे सरवा कि आके खरिहानी से खटउर उठवलस आ ले जाके फरदाँवा, अहथिर से तपलस आ तेही खटउरवा त सुत्तल मुखियवा कुछुओ ना जनलस!

– बड़ागाँव डिग्री कालेज, वाराणसी।

'पाती'–1998

दयालु

✍ बरमेश्वर सिंह

मोती बाबू से केहू के दुःख ना देखल जाला। ऊ तुरन्त द्रवित हो जालें। बलुक, कउनो दुखिया के मदद करे खातिर ऊ हरदम तइयार रहेलें। साँच पूछीं त ए ममिला में उनुकर दिल दरियाव बा। केहू के बेमारी हेमारी होखे। केहू के बेटा–बेटी के पढ़ाई–लिखाई के खरचा ना जुटत होखे, त मोती बाबू ओइसना आदमी के मदद करे खातिर तन–मन–धन से तइयार हो जाले। ऊ कब, केकर–केकर आ कतना मदद करि चुकल बाड़ें, ई बतिया सउंसे गाँव में श्रद्धा का संगे कहल–सुनल जाला। बाकिर, मोती बाबू त जइसे मौनियां बाबा बाड़ें। ऊ अइसन कुल्हि बातन के हिसाब भला काहें खातिर राखसु?

एक दिन उनुकर औरत उनुका के टोकली– "लागत बा कि रउवा सब कुछ लुटाइये के दम लेहबि?"

मोती बाबू हँसलें– "हम का लुटा रहल बानीं?"

– "जेही सेही के अनाप–सनाप कुछ से कुछ देत जा रहल बानी आ ओकर कउनो हिसाबो किताब ना।"

– "शिव–शिव! अरे, हम यदि केहू के सौ पचास से मददे करि दे रहल बानी, त ओकर हिसाब का राखे के बा?"

– "हम रउवा के केहू के मदद करे से थोड़े रोकत बानीं? मदद त आदमिये नू अदमी के करेला? बाकिर, मदद लेबहूँ वाला के कुछ लाज–शरम होखे के चाहीं। आखिर उन्हनी के कुछ सोचे के चाहीं कि ना!"

– "तू जानत नइखू। मदद लेवे वाला बेचारा होला। भला ओइसन आदमी के कुछ सोचे के कहाँ फुर्सत बा?"

– "वाह–वाह! कर्जा लेके गटक जाई आ लौटावे खातिर फुर्सत नइखे? आखिर धरम–ईमान कउनो चीज बा कि ना!"

– "बा, बलुक धरम–ईमान त बहुत बड़ चीज बा। बाकिर आदमी के लाचारी केहू से बड़ चीज होला। अब, केहू के लाचारी के हम का हिसाब–किताब राखीं।"

– "रउवा जे बुझाये करीं। हमरे से गलती हो गइल कि हम रउवा के टोकि दिहलीं। मोती बाबू के औरत अनसा के कहली।"

मोती बाबू ठठा के हँसि दिहलें। फिरू ऊ आपन औरत के तनी दुलरावत कहलें– "यदि हम केहू के मदद करिये देत बानी, त ओह से हमनी के, का घटि जात बा? शंकर भगवान की कृपा से रोज–रोज बढ़ँतिये पर बा। ठीक बा कि जमींदारी चलि गइल। बाकिर, अबहीं अतना जगह–जमीन बा कि घर बइठले चार–पाँच सौ

मन गल्ला आ जाला। एकरा अलावे आरा से पटना, दू–दू गो बस चलेला। आरा शहर में आपन मार्केट बड़ले बा। बड़ बेटा डाक्टर बाड़े। पतोह डाक्टरनी बड़ले बाड़ी। छोडकू बी.डी.ओ. होइये गइल बाड़ें। उनुका खातिर तू प्रोफेसर पतोह देखिये आइल बाड़ू?"

अतना कहि के मोती बाबू थोड़ी देर खातिर रूकि गइलें। फिरू ऊ आपन औरत के आँख में आँख डालत आगे कहलें– "अच्छा इ त बतावऽ, आवे वाला लगन में छोटकू के बाजा बाजी नूं?"

मोती बाबू के एह बात पर मोती बाबू के औरत गेंदा के फूल अस लहालोट हो गइली। बेटा के बिआह के संबंध में बतकही सुनि के कउनो मतारी के अन्तरमन गुदगुदा जाला।

मोती बाबू हो–हो करि हँसि दिहलें। फिरू ऊ आपन औरत से एकदम से सटि के बोललें– "हमरा से तोहार संगत त जवानी में भइल। फिरू हमार लड़िकाई के बात तू कइसे जानत बाड़ू?"

अतना कहि के मोती बाबू आपन औरत के पीठ पर हाथ फेरल चहलें। तलुक उनुकर औरत छटकि के दूर हो गइली। कहलीं– "जाईं! रउवा त आठो पहर इहे कुल्हि लउकेला! सियार के मन बसे, ककड़ी के खेत में!"

– "अरे तनी सुनबो त करऽ!" मोती बाबू आपन औरत के दोबारा पोघलावे के ख्याल से कहलें– "भागत काहें बाड़ू? अबही त हम ना कुछ कहलीं, ना कुछ कइलीं।"

मोती बाबू के औरत हाथ के इशारा से मना करत कहली– "ना बाबा! हमरा अबहीं शंकर भगवान के मंदिर में दीया बारे जाये के बा।"

मोती बाबू कुछ सोचि के सहमि गइले। फिरू ऊ दूनो हाथ से आपन माथ खजुआवे लगलें। उनुका इयाद पड़ल– "शिव–शिव! ई त सावन के महीना बा। एह महिना में त उनुकर औरत शंकर भगवान के दूनों टाइम पूजा करेली। एह महीना में त उनुका किहाँ माँस–मछली के, के कहो प्याज–लहसुन तकले ना चले।" मोती बाबू ओही तरी आपन माथ खजुआवत आगे कहलें– "शिव–शिव! हम त भुलाइये गइल रहीं। जा–जा! तू पहिले शंकर भगवान के मंदिर में दीया बारि आवऽ। साँझ होखहीं वाला बा।"

मोती बाबू के औरत घर के भीतर जाय लगली। बाकिर, दू डेग आगे बढ़ला के बाद ऊ फिरू लवटत कहली– "हँ, इयाद पड़ल! सबेरे रउवा आरे गइला के बाद बुचिया आइल रहे।"

मोती बाबू बुझले ना। पूछले– "कउन बुचिया?"

– "बुचिया के नइखीं चिन्हत! अरे, भगेरना के बहू, लालचन्द के पतोहिया। लालचन्द के बहू अपना किहाँ चउका बर्तन करत रहे, भुला गइनीं?"

मोती बाबू के इयाद रहे। चार–पाँच बरिस पहिले सोन नदी के बाढ़ में ओकर घर ढहि गइल रहे। तब ऊ अपना परिवार का संगे अपना नइहर में जा के बसि गइल रहे। ओकर नइहर सुरौधा कोलोनी में बा। इहवाँ से तीन चार मील दूर। बाकिर, साल भीतरे बेचारी के उहवों घर उजड़ि गइल रहे। सुरौधा कोलोनी में फइलल हैजा लालचन्द आ लालचन्द बहू के प्राण हरि लिहले रहे। बचि गइल रहे खाली भगेरना। लालचन्द बहू के बेटा। बीसेक बरिस के नवही।

"त का भगेरना के बिआह हो गइल, आ बुचिया ओकरे मेहरारू ह?" मोती बाबू सोचलें। फिरू त मोती बाबू के एगो दूर के बात इयाद पड़ि गइल। भगेरना जब पेट में रहे, तब ओकर माई, लालचन्द बहू अपना पेट का ओर इशारा करत उनुका से कहले रहे– "मालिक! रउवा देखबि, ई रउवे पर जाई।"

हालांकि ओह घड़ी मोती बाबू आ लालचन्द बहू के ले के गाँव में तरह–तरह के बात उठल रहे। बाकिर गाँव में खाली विश्वामित्र के यज्ञ में हड्डी डाले वालन के खन्दाने त ना नू रहेला? गाँव में रामजी आ लखन लाल जी के बंशजों त अबहीं बड़ले नू बाड़े? ऊहे लोग ओह घड़ी ताल ठोकि के बोलल रहे– "सूरज पर थूकल बुद्धिमानी नइखे।"

एकरा बाद केकर मजाल रहे कि खोंखित? मोती बाबू ओह घड़ी के बात इयाद करि के हँसि दिहलें। अचके उनुका के हँसत देखि के उनुकर औरत उनुका के टोकली– "का बात बा? रउवा एह तरी हँसत काहें बानीं?"

मोती बाबू अचकचा गइलें। उनुका लागल, जइसे ऊ सेन्ह पर पकड़ा गइल होखसु। बाकिर, तुरते

ऊ अपना के सम्हारत कहलें– "कुछ ना, बलुक इहे सोचि रहल बानी कि भगेरना अपना शादी में हमरा के पूछबो ना कइलसु।"

– "ऊ बेचारा का पूछित! ऊ कउनो डोली चढ़ के बिआह थोड़े कइले बा? ऊ त कोईलवर के बबुर घाट पर बालू ढोवत खानी बुचिया से अइसन अझुड़ा गइल कि उन्हनी दूनों के संगे–संगे रहे के पड़ल। अब अइसना में ऊ केकरा के पूछित!" मोती बाबू के औरत बात के साफ करत कहली।

– "बाकिर, ई कुल्हि तोहरा कइसे मालूम भइल?"

– "सबेरे बुचिया आइल रहे नू! ऊहे कहत रहे।"

– "अउरी का कहत रहे बुचिया? ऊ आइल काहें खातिर रहे?"

– "बेचारी एह घड़ी बड़ा फेर में फँसि गइल बिया। शंकर भगवान ओइसन दुःख कवनो शत्रुओ के जनि देसु।",

– "का भइल, अइसन कउन दुःख आ गइल बा, बुचिया पर?"

– भगेरना बहुत जोरे बेमार बा। ओकरा बचे के कउनो उमेद नइखे।

– "अच्छा! का भइल बा ओकरा? रोग कउन बा?",

– "ओकरा काला जर हो गइल बा। बुचिया बेचारी ओकर इलाज आरा के शुक्ला डाक्टर से करववले रहे। बाकिर, कउनों फायदा ना भइल। रोग अउरी बढ़िये रहल बा। अब बुचिया ओकरा के पटना ले जाये के जोगाड़ में बिया। बाकिर, बेचारी का लगे पइसा नइखे। रउवा कुछ मदद करि दिहतीं त भगेरना के जान बचि जाइत। बुचिया बेचारी बड़ा कलपत रहे। ऊ एही खातिर आइल रहे।"

– "आयं! भगेरना अतना बेमार बा?.... ओकरा काला जर हो गइल बा? ....ई त बड़ा खतरनाक बेमारी होला..... च्चु!" मोती बाबू के अफसोस त भइले कइल अचरजो भइल। फिरू ऊ ओही लपेट में आगे कहलें– "भगेरना के त बचावहीं के पड़ी, चाहे जतना खरचा होखे।"

– "बुचिया आवते होखी। हम ओकरा के आजे साँझि खा बोलवले रहीं। अब त साँझ होखते बो। हम ओकरा के इहो बतवले रहीं कि ओह घड़ी तकले मालिक आरे से आ जइहें।"

– "ठीक बा! आवे दऽ!! भगेरना त आपने आदमी बा। हम ओकर माई के उपकार आ सेवा कइसे भुला सकत बानीं?"

अतना कहि के मोती बाबू दरवाजा के सहन से उठि के अपना कोठरी में चलि गइलें। कोठरी में जा के ऊ चउकी पर बइठि गइलें। फिरू ऊ अपना जनेव में बान्हल चाभी के अपना अंगुरी पर नचावत भगेरना के विषय में सोचे लगले।

ओने मोती बाबू के औरतो दरवाजा से सहन से उठि के घरे जा के स्नान–ध्यान कइली। फिरू ऊ माचिस, रूई आ घीव के शीशी ले के शंकर भगवान के मंदिर में दीया बारे खातिर चलि गइली।

मोती बाबू के औरत अबहीं शंकर भगवान के मंदिर में पहुँचलो ना होइहें, कि मोती बाबू के नोकर आके मोती बाबू से कहलस– "मालिक! एगो मेहरारू आइल बिया।"

मोती बाबू अपना कोठरी के बाहर अइलें। फिर ऊ आपन नजर अहाता में चारों ओर दउड़वलें। गेट का लगे बीस–बाइस बरिस के एगो औरत खाड़ रहे। सांवर, गदराइल देहि, नाक–नक्स तीखा, देखे में मनभावन।

मोती बाबू नोकर से पूछलें– "कउन बा?"

नोकर बतवलसु– "पता ना मालिक! हम ओकरा के पहचानत नइखीं। ऊ अपना नांव बुचिया बतावत बिया।"

– "बुचिया! अरे रे, ओकरा के भेज। हम ओकरे इन्तजार में बानी।" मोती बाबू कहलें। फिरू ऊ ओही सिलसिला में नोकर से आगे कहलें– "सुनऽ! हई पइसा ले आ तू ओनहीं से दोकान चलि जइहें। दू पाकिट अगरबत्ती लावे के बा। पूजा खातिर अगरबत्ती एकदम से खतम हो गइल बा।"

– जी मालिक! नोकर कहलसु आ ऊ तेजी का संगे गेट का ओर लपकि गइल।

बुचिया सकुचइला–शर्मइला अस मोती बाबू

का लगे आ के खाड़ हो गइल। फिरू ऊ आपन दूनों हाथ जोड़ि के मोती बाबू के प्रणाम कइलसु।

मोती बाबू कहलें– "खुश रहऽ खुश रहऽ! तूहीं बुचिया हवे।"

– बुचिया सकुचल बोलल– "जी मालिक!"

– "अरे तू सकुचात काहें बाड़े? इहो घर तोर आपने ह। इहवाँ सकुचाये के कउनो काम नइखे।"

– "जी मालिक!"

– "का जी मालिक! भगेरना दू महीना से बेमार बा आ तू हमरा के खबर तकले ना कइले?"

– "का कहीं मालिक! सांसो लेबे के फुर्सत मिले तब नू? पहिले त हम अपना हियाव भर उनुकर इलाज करवइलीं। दिन–दिन भर बालू ढोवलीं। आ जे कमइलीं, से उनुके में झोंकि दिहलीं। बाकिर अब हमार हिम्मत टूटि गइल बा मालिक! अब हमार देह इचिको नइखे चलत।"

– "अच्छा, अच्छा! हम बानीं नू, कुल्हि ठीक हो जाई। तू इचिको घबड़ो जनि।"

– "हं ए मालिक! हमरा सवांग के जीभ पर एह घड़ी बस राउरे नांव बा। एह घड़ी ऊ खाली इहे रट लगावत रहलें कि मालिक बहुत दयालु बाड़ें। तू उनुके किहाँ जो। हम उनुके कहला पर रउवा शरन में आइल बानीं। हमरा मरद के बचा लीहीं मालिक! राउर बड़ी किरिपा होखी।"

– "बुचिया! हम कहत बानी नू कि तू इचिको चिन्ता जनि कर। अब तू सही जगह पर आ गइल बाड़े। भगेरना के हम कतना मानत रहीं, तू का जनबे? तोर सास रहित त ऊ तोरा के बताइत।"

– "हं ए मालिक! राउर ई उपकार हम जिनगी भर ना भुलाइबि।"

– "हम कहत बानी नू कि अब तोहरा चिन्ता करे के जरूरत नइखे।"

– "दोहाई मालिक! अब त राउरे भरोसा बा। हमरा लगे त अब कुछुओ नइखे रहि गइल। बलुक, अब त खाहूँ के लाला पड़ि गइल बा।"

मोती बाबू मुस्कइलें। फिरू ऊ बुचिया से सटि गइलें आ ओकर ठोढ़ी धई के कहलें– "तू का कहत बाड़े, बुचिया! तोहरा पाले का नइखे? अरे पगली! तोहरा पाले जवन खजाना बा, ऊ त कउनो सेठो साहुकार के पाले ना होई।"

बुचिया जइसे चिहुंकि गइल। बाकिर, तइयो ऊ मोती बाबू के कहे के मरम ना बूझि पवलसि। ऊ अनजान अस पुछलसि– "का कहत बानी मालिक! हमरा लगे अब का बचल बा? बर्तन बासन तकले त बिकि चुकल बा।"

– "अरे बुचिया रानी! तू हमरा के काहें के भरमावत बाड़े? तोहार ई रूप भला कउनो खजाना से कम बा? अतना कहि के मोती बाबू बुचिया के गाल थपथपा दिहलें।"

बुचिया सहमि के पीछे हटि गइल। फिरू ऊ कलपत कहलसु, "रउवा ई का कहत बानी मालिक! मालिक त बाप लेखा होखेलन।"

मोती बाबू ठठा के हँसले। फिर ऊ मँजल खेलाड़ी अस एगो जबरदस्ते दांव फेंकलें– "देख बुचिया! भगेरना के काला जार भइल बा। ई रोग सौ–पचास में छुटे वाला नइखे। एह में हजार के बजार लागी। अइसना में यदि तू आपन दिल दरियाव ना करबे, त भगेरना के मुअले बूझ। ओकरा बाद तोर का हाल होई। सेई सोचि ले।"

अतना कहि के मोती बाबू बुचिया के कलाई पकड़ि लिहले। एकरा बाद ऊ बुचिया के अपना कोठरी का ओर खींचे लगले। बाकिर पता ना कइसे बुचिया गरई मछरी अस छटकि के सरसरात गेट का ओर लपकि गइल।

गेट पर पहुँचि के बुचिया थोड़ी देर खातिर रूकि गइल। फिरू ऊ पीछे मुड़ि के मोती बाबू के देखलस आ गेट का बीचो बीच 'आक थू' करत सुरौधा कालोनी का ओर दुलुकिये पर दउड़ि गइल।

– धनडीहा, भोजपुर,
पाती'–1999 ●●

गुरु दक्षिणा

अनिल ओझा नीरद

पं0 गंगानाथ उपाध्याय के प्रायमरी स्कूल के हेडमास्टर के पद से रिटायर भइला अब करीब पाँच साल पूरा होखे वाला बा, बाकी अबहीं ले उनुकर पेंशन मीलल शुरू नइखे भइल। बेचारू, जिला पेंशन आफिस के चक्कर लगा लगा के थाकि चुकल बाड़े बाकी सरकारी अमला का उनुका पर कौनो दया नइखे आवत। उम्र का एह पड़ाव पर जहाँ अब ऊ शांति से आपन बाँचल खूचल जिनिगी काटे के सोचत रहले, उहाँ करीब पाँच साल त पेंशन आफिस के चक्करे काटे में बीत गइल। आगे राम जानसु का होई? कहिया ले सलटी ई झमेला आ कहिया से मीलल शुरू होई पेंशन? का मुअला का बाद? बाह रे सरकारी कायदा–कानून। सीधा–सीधा काम में हतना झमेला बा त अझुराह काम के हाल का होत होई। कोर्ट–कचहरी के बात त सुनले रहनी हँ कि उहाँ, दांव–पेंच चलेला, एह से फैसला में देरी होला, बाकी पेंशन जइसन वाजिब हक मिले में देरी? बात कुछु समझ में नइखे आवत। ऊहो तब, जब हमरा ऊपर कवनो केस–मोकदिमा नइखे। सर्विस में कवनो दाग धब्बा नइखे, तब? जब हमरा लेखा आदिमी के ई हाल बा, त एह देश के त भगवाने मालिक बाड़े।

अइसहीं बहुत कुछ सोचत–बिचारत, उपधिया जी, आजुवो पेंशन आफिस आइल रहले आ दू–चारि घंटा ले, एह बाबू से ओह बाबू आ एह कलर्क से ओह कलर्क लोगन के टेबुल पर चक्कर कटले, सबकर चिरउरी–बिनती कइले, बाकी ऊहे पुरनका जबाब कि, अभीं रउआ से पहिले के फाइल सलटावे के बाकी बाड़ी स, फेर साहेब अभीं बहुत बीजी बाड़ें, बातो करे के फुरसत नइखे, अभीं रउआ महीना–दू महीना बाद आईं त देखल जाई, सुनि के, भारी मन से, मध दुपहरिये में आजु पेंशन आफिस के बाहर निकल पड़ल रहले।

बाहर निकलले त घाम एकदम कपार पर रहे, एह से ऊ अपना झोरा में से गमछा निकाले के बिचार कइले ताकी माथ पर धइके त आगे बढ़ीं। अभीं ऊ कुछु सोचत झोरा में हाथ डललहीं रहले, तले उनुका सामने से दू–गो मेहरारू निकलि के पेंशन आफिस के गेट का ओर बढ़ि गइली स।

पंडी जी आपन गमछा निकाल के अभीं माथ पर धरहीं वाला रहले, तले ओह में से एगो मेहरारू लवटि के आके एकदम उनुका सामने खड़ा हो गइलि। पंडी जी एकदम अचकचा गइले। तनी पाछा हटले आ टुक–टुक ओकरा के ताके लगले। आँखि त कुछु कमजोर होइये गइल रहे, बाकी तबो अभीं रास्ता पेंडा खातिर चश्मा के जरूरत ना पड़त रहे उनुका। ऊ ओकरा के चीन्हे के कोशिश करते रहले तले ऊ बोलि पड़लि– "माफ करब, हम तनी रउआ के चीन्हे के कोशिश करत रहनी हँ। कहीं रउआ उपधियाजी मास्टर साहेब ना नू हईं, जे कबों रुदरपुर के प्राइमरी स्कूल में पढ़ावत रहनीं?"

उपधियाजी बहुत ध्यान से ओह महिला का ओर देखत रहले, बाकि कहीं

से ऊ परिचित ना बुझात रहली। उमिर इहे करीब पैंतिस–चालिस के बीच के बुझात रहे। उनुका अपना गांव के ऊ लागत ना रहली आ एह उमिर के कवनो दोसर मेहरारू से, सिवा अपना बेटिन्हि के, अइसन परिचय ना रहे, जे एकदम उनुका सामने आके खड़ा हो जाउ आ एहतरे बात करे के चेष्टा करे। बाकी तबो, ई कुल्हि सोचतो–सोचत उनुका मुँह से अतना त निकलिये गइल कि– "हँ, हम ऊहे उपधिया जी हईं।"

अभीं ऊ अउर कुछु बोलसु भा पूछसु तले ऊ महिला एकदम से उनुका गोड़ पर झुकि गइलि आ गोड़ छूके गोड़ लागत कहलसि– पा लागी पंडी जी!

"लेकिन बचिया, हम त तोरा के एकदम नइखीं चीन्हत!"

"अरे रउआ कइसे चीन्हबि पंडी जी, केतना छोट पर त देखले बानीं हमरा के। शायद दस–बारह बरिस के उमिर तक। तीन–चार साल त, बेसी से बेसी, हमरा के रउआ पढ़वलहीं बानी, तले ले त राउर ट्रान्सफरे हो गइल रहे। अब एतना छोट पर के देखल, रउआ कइसे इयाद रही? बाकी हमरा मन के आइना से ई सूरत थोरे उतर जाई। हम त देखते चीन्हि लिहनी हँ, तबो शंका मिटावे खातिर पूछे के पड़ल हऽ। केतना त हम रोवल रहनीं ओह दिन, जब रउआ ऊ स्कूल छोड़ि के जात रहीं।"

"हम अबहियों, ठीक से नइखीं इयाद क पावत बचवा, तोहरा के। तनी ठीक से इयाद परावऽ। कवनो खास बात बता के।" उपधिया जी ओही तरे ओकरा के टुकुर–टुकुर ताकत कहले। "तोहार नांव का ह?"

"फुलकेसिया"। कवनो फुलकेसिया इयादि बिया रउआ? अब रउआ के इयाद परावे खातिर त इहे नाँव बतावे के परी, ना त अब त हमार नांव बा– श्रीमती फुलकेश्वरी देबी महतो। मेम्बर–जिला शिक्षा परिषद्, महिला समिति। सेक्रेटरी–आंगन–बाड़ी शिक्षिका संघ। अध्यक्ष– जिला दलित महिला संघ। आ अब त प्रांतीय महिला मानवाधिकार समिति में, दलित प्रकोष्ठ से एगो नामित सदस्यो बानी। अब एह कुल्हि विशेषण वाला नाम से त रउआ एकदम परिचित ना होखब, हम जानऽतानी, बाकी, लइकाई वाली फुलकेसिया त रउआ ना भुलाये के चाहीं, जेकरा के, कबों अपना स्कूल के पिछुवारी वाला खेतन में गोबर आ कंड़रा बीनत बाकी स्कूल का ओर हरदम ध्यान लगवले आ कबो–कबो रउआ सभ के रटावत आ लइकनि के दोहरावत आवाज में आवाज मिलावत सुनि के, रउआ अचानक स्कूल के पिछुवारी चलि आइल रहनीं आ जेकर हाथ पकड़ि के एकदम से स्कूल में ले जाके खड़ा क देले रहनी। का ऊ फुलकेसिया इयाद बिया रउआ कि ओकरो के भुला गइल बानी?

सिनेमा के रील लेखा, भा किताबि के फड़फाड़ात पन्नन्ह लेखा, उपधिया जी, जाने कब आ केतना साल पीछे, ओह प्रायमरी स्कूल में, पहुँच गइल रहनी। ढाही के चलते रुद्रपुर के प्राइमरी स्कूल के पक्का भवन, जब गंगाजी में ढहि–बहि गइल रहे, त ओकरा के उठाके एही नया बसल रुदरपुर आ पुरान बस्ती मूड़ाडीह गांव के बीच, परबोधपुर के देबीतर बाजार में बसा दीहल गइल रहे। टेम्परोरी। ना कवनो छत, ना कवनो छान्ही। एकदम से फेड़न्हि का नीचे आ देबीतर के खुला बाजार में लागत रहे, तब ई स्कूल। फेर धीरे–धीरे गांव के लोग, अपना लइकन्हि के जाड़ा–पाला आ घाम–बरसात से बचावे के बिचार से, चन्दा कके, एकआध गो पाला–पलानी लगवा देले रहे आ अब कुछु क्लास बहरी आ कुछु क्लास भितरी लागे लागल रहले स। ठीक एही घरी उपधिया जी हरदी के प्राइमरी स्कूल से ट्रान्सफर होके एहिजा आइल रहले।

अभी ऊ दूइये–चार दिन अपना क्लास में पढ़वले होइहें कि एकदिन उनुका अइसन बुझाइल कि जइसे टाट के पीछे से कवनो एगो लइका के आवाज आ रहल बा, जवन क्लास में पढ़ावल जाये वाला, भा रटावल जाये वाला बातन के हू–ब–हू दोहरा रहल बा। पहिले त ऊ एकरा के अपना मन के भ्रम समझले आ आवाज के प्रतिध्वनि। फेर सोचले कि आखिर पाला–पलानी के क्लास में भला प्रतिध्वनि कहाँ से आई? एही तरी एक दिन ऊ अपना क्लास में पढ़ावत रहले आ लइकन के गिनती रटवावत रहले–एक एकाई, दू एकाई....। त उनुका फेर अइसने आभास भइल। अब टाट के बनल देवाल में कवनो जँगला त रहे ना कि ऊ झट से बहरी झांकि के देखि लेस। एह पर उनुका मन में बिचार आइल। ऊ एगो लइका के इशारा से बोला के अपना जगह पर खड़ा कइले आ ओकरा से रटवावे वाला काम चालू रखे के कहि के, बहरी निकलले आ घूमि के पिछुवारी पहुँच गइले।

सन्न रहि गइले उहाँ के दृश्य देखि के ऊ त। टाट से लगभग मुँह सटवले, भीतर देखे के असफल चेष्टा करत, बाकी एकदम ओनिये ध्यान लगवले, कई जगह से फाटल आ चीकट फराक पहिरले, डाँड़ पर एगो टूटल–छितराइल खंचिया धइले, जवना में कुछु ताजा गोबर आ कुछु सूखल कंड़रा भरल रहे, एगो सात–आठ साल के लइकी, दीन–दुनिया से बेखबर, घाम–बतास आ

इहाँ तक कि अपना डांड़ पर धइल ओह भारी खंचिया के बोझ तक के परवाह न करत, एकदम ऊहे दोहरावे में मगन बिया, जवन भीतर रटावल जा रहल बा। धीरे–धीरे, एकदम कछुवा के चाल चलत, उपधिया जी आगे बढ़ले, बिना कुछु बोलले ओकरा पीछे जाके खड़ा भइले आ टाट पर धइल ओकर हाथ पकड़ लिहले।

एकाएक जइसे केहू ओकरा पर हमला क देले होखे, अइसे ऊ लइकी चिहुंकि गइल। ओकरा डांड़ पर के खंचिया उलटि गइल आ ऊ उपधिया जी का ओर देखि के, एकदम सेन्हि पर धरइला चोर लेखा, आपन हाथ छोड़ावे के चेष्टा करे लागलि आ ना छुटला पर जोर–जोर से रोवे लागलि। ओकरा रोवे के आवाज एतना जोर के रहे कि भीतर के क्लास के पढ़ाई त बन्दे हो गइल, आसोपास के क्लास से एक आध जाना मास्टर लोग आ कुछु लइका निकल अइले, कि जाने का हो गइल।

उपधिया जी के त जइसे कठया मार दिहलस। ऊ ओकर हाथ छोड़ के ओकरा के चुप करावे लगले बाकी ऊ चुप होखे के नावें ना लेत रहे। ओकरा जइसे बुझात रहे कि अब ई लोग हमरा के मारी। जइसे–तइसे सब लोग मिल के ओकरा के चुप करावल आ उपधिया जी ओकर हाथ धइले, लेले–देले, अपना क्लास में चलि अइले। फेर जइसे ओकराके समझावत कहले कि "देख बेटी, हम तोहरा के मारब ना, ना केहू तोहरा के कुछु कही। चुप रहबू त हमनी का तोहरा के मिठाइयो खियाइबि जा, बस तूं आपना नाँव बताव त।"

जइसे जबह होखे से पहिले कवनो बकरा कसाई के देखत होखे, ओइसे चारू ओर देखि के, बाकी शायद मिठाई के बात सुन के, बहुत मुश्किल से ओकरा मुँह से निकलल– "फुलकेसिया"। आवाज बाकी अबहिंयो रोंवासे रहे।

"वाह! बहुत बढ़ियां नाँव बा ई त, फूल जइसन लइकी के नाम त फुलकेसिया होखहीं के चाहीं।" उपधिया जी कहले, फेरू पूछले–

"आ बाबूजी के नांव?"

"बाबू नइखन।"

"बाबू नइखन माने?"

"ऊ मू गइले।"

"अरे राम–राम। ई त बहुत बाउर भइल। एही उमिर में तोहरा मउअतियो से सामना हो गइल बा? कइसे मुअले?"

"नइखीं जानत। हम बहुत छोट रहनी।"

"आ माई?"

"माई बाड़ी।"

"त माइये के नाँव बताव?"

सुनि के ओकरा हँसी बर गइल होखे जइसे, ओइसे कहलसि– धत्। माइयो के नाँव होला कहीं? ओकरा के त बस माई कहल जाला, अउर का!

ओकर जबाब सुनि के उपधियो जी का हंसी बर गइल। ओहिजा खड़ा अउरियो मास्टर आ लइका लोग हँसि परल। फेर उपधिया जी पुछले– "कहां रहेलू?"

"मूड़ाडीह में। मामा किहाँ"

"मामा किहाँ काहें?"

"अरे बाह। बाबू मू गइले त अउर कहां रहब? जहां माई रही उहंवें नू।"

उपधिया जी बूझि गइले कि बाप का मुअते, एकरा मतारी के, ओकरा ससुरारी वाला लोग, मनहूस कहि के, भा अपना बेटा के खाये–चबाये वाला कहि के, बेटी का संगे घर से निकाल देले होई आ बेचारी का अपना भाई किहां शरण लेबे के परल होई। ऊ अब एह लइकी से एह बारे में अउर कुछु पूछल उचित ना समझले आ सोचले कि बाद में एकरा माई से मिलि के, एकरा बारे में जानकारी लीहल जाई। ऊ आगे पुछले–

"स्कूल के पिछुआरी का करत रहलू ह?"

"गोबर आ कंड़रा बीनत रहनी हँ। देखलऽ हा ना, खँइची में भरल रहल हा। तोहरा चलते ऊहो गिर गइल हा। अब माई हमरा के मारी त के बचाई?"

"हम बचाइब। हम तहरा संगे तहरा घरे चलब, भा तहरा माई के एहिजे बोला लेब। अच्छा ई बताव, जब तूं गोबर–कंड़रा बीने आइल रहलू हा त स्कूल के टाट से लागल का करत रहलू हा?"

"पढ़त रहनी हां।"

"का?"

"ऊहे जवन तूं लइकन के पढ़ावत रहलऽ हा। हमरा पढ़ल नीमन लागेला। रोज एही तरे पिछुवारी खड़ा होके पढ़ेनी।"

"अच्छा! त अभीं तक का का पढ़ले बाड़ू?"

"कुल्हि चीज। गिनती, पहाड़ा, क, ख, ग, घ, मात्रा, जवन तहन लोग लइकन के रटावेलऽ, हमरा कुल्हि इयादि बा।"

"अरे वाह। त तनी हमनियों के सुनाव त!"

"आ ई देखि के, उपधिया जी का संगहीं कुल्हि मास्टर आ लइका लोगन का ताज्जुब भइल कि ऊ लइकी एके सांस में– सइ तक गिनती, बीस तक पहाड़ा, पूरा ककहरा, मात्रा, सब सुना गइल। उपधिया जी का एकदम से, एकलव्य के इयाद आ गइल, जे खाली द्रोण के मूर्ति का आगा खड़ा होके, संउसे धनुर्विद्या के ज्ञाता हो गइल, आ आजु उनुका आगा ई अबोध लइकी खड़ा बिया, जे स्कूल के पिछुआरी खड़ा होके आपन प्रारंभिक पढ़ाई परूा क लेले बिया। आ संजोग अइसन कि दूनों के पीछे कारण एके लउकत बा– गरीबी, अभाव। बाह रे प्रतिभा तूं कवनो स्थिति में, केहू के मुंहताज ना हऊ। तबो जाने काहें– राम आ कृष्ण के अपवाद रूप में छोड़ि दीहल जाउ, त कवनो सम्पन्न घर में अइसन प्रतिभा दोसर उभर के सामने ना आइल। शायद एही से एह लोगन के अवतार मानल जाला आ एकलव्य के अभागा।"

खैर, उपधिया जी अपना भावुकता से बाहर निकलले आ आगे पुछले–

"कुछु लिखहूँ आवेला?"

"लीखे कइसे आई। हम कवनो इसकूल में पढ़ी ले।"

"त स्कूल में पढ़े काहें ना आव?"

"कइसे आईं? हमरा माई के पासे कवनो पइसा बा, जे हमार नाँव इसकूल में लिखवाई। फेर कॉपी–किताब कहां से आई?"

"अच्छा, अगर हम तहार नाँव, बिना पइसे के स्कूल में लीखि दीहीं, आ कॉपियो–किताब कीन दीहीं, त तूं स्कूल में पढ़बू?"

"हं! तब काहें ना पढ़बि? हमरा पढ़े के बड़ा मन करेला। बाकी...."

"बाकी का?"

"बाकी माई से एक बेर पूछे के परी। ऊ कही तबे नूं!"

"त ठीक बा, जा अपना माई के बोला ले आवऽ। हम आजुवे तोहरा नाँव स्कूल में लीखि देइब।"

"आ हमार मिठाई? तूं त हमरा के मिठाई देबे के कहले रहल हा, त का बिना मिठाइये खइले जाईं?" एक दम बाल–सुलभ ठिठाई का संगे, तपास से बोललि ऊ।

ओकर बात सुनि के एक बेर फेर सभे हँसि दीहल। पहिले ओकरा भोलापन फेर ओकरा मासूमियत आ अब तनी ढिठा गइला पर सबके मन गदगद हो गइल रहे। उपधियो जी का अपना भूल के एहसास भइल। मिठाई खिआवे के कहिए के त ऊ एकरा से अतना बात कइ पवले हा। ऊ फट दे पाकिट से पइसा निकाल के एगो लइका के मिठाई ले आवे खातिर दउरवले।

अभी एने ई कुल्हि बातचीत होते रहे, तले एहीं बीचे ओह लइकी के मतारी एकदम से हाँफत–कांपत आके स्कूल के ओह कमरा के सामने खड़ा हो गइलि आ लागलि चिचिआये– "फुलकेसिया....ऽ....ऽ। फुलकेसिया. ...ऽ....ऽ। का भइल हा रे, काहें खातिर ई लोग तोरा के धइले बा? का कइले हा? शनीचरी कहत रहलि हा कि इसकूल के मास्टर लोग तोरा के पकड़ि लेले बा।" .... फेरु ऊ एक जाना मास्टर के आगा हाथ जोरि के गिड़गिड़ाये लागलि– "देखीं सभे, अगर हमरा लइकी से कवनो गलती हो गइल होखे त ओकरा के माफ क दीं सभे। हम रउआ सभ के हाथ जोरऽतानी, पांव परऽतानी। ऊ कवनो चोर चुहारिन ना ह। तबो अगर गलती से इस्कूल के कवनो सामान उठा लेले होखी, त हम ओकरा से वापिस करवा देब। अगर कुछु नोकसान क देले होखी त हम ओकर हरजाना भरि देबि, बाकी हमरा लइकी के पुलिस–उलिस में मति देब सभे। हम ओकरा ओर से रउआ सभ से माफी मांगत बानी। ऊ नादान बिआ, गलती क सकेले, बाकी रउआ सभ त समझदार बानी, पढ़ल–लिखल बानीं, मास्टर बानीं, ओकरा के माफ क दीं सभे....।" आ एही तरे बोलत–बोलत, हाथ जोड़लहीं ऊ रोवे लगली.... आ अपने में बुदबुदाये लगली– करमजली के जाने कहाँ से पढ़े–लीखे के सवख पैदा हो गइल। जब देख तब इसकुलवे से सटल रहेले, जइसे एहीजे कुल्हि गोबर–कंड़रा परल होखे। कवनो ना कवनो बहाना कके एनिये आ जाले, जइसे एही में एकर परान बसत होखे। सुतलो में जाने कादो–कादो रटत रहेले।... अब हम कहां से पढ़ाई–लिखाईं एकरा के। कवन कारु के खजाना गड़ल बा हमरा लगे। जनमते बाप के खा गइल। एकरा चलते हम घर से बेघर हो गइनीं आ अब ना जाने कवना घाट के लगाई? बाप–भाई ना रहिते त माथो तोपे के जगह ना मीलित।.... ऊ त मू गइले आ एकरा के छोड़ि गइले हमरा के भोगावे खातिर। एकरे चलते हम दोसर घर बसावे के तेयार ना भइनीं कि ई टूवर हो जाई आ ईहे हमार कुल्हि करम करे के तेयार रहतिया। .... आ एही तरी अउरी जाने का का ऊ बड़बड़ात रहली।....!!

अतना देर से उपधिया जी ओह औरत के ध्यान

से देखत रहले। उमिर कवनो बेसी त ना रहे। ईहे करीब पचीस–तीस के बीचे रहल होई, बाकी समय के चाबुक जइसे ओकरा के पचास से ऊ पहुंचा देले रहे। एक एक अंग से गरीबी के मार झलकत रहे। फाटल–चीटल लूगा, तितर–बितर माथ के बार, जवन बतावत रहे कि बरिसन से एह माथ का तेलो तासन से भेंट ना भइल होई, बाकी तबो ओकरा के देखला से ई बुझात रहे कि लइकाईं में ई खूब सुन्दर रहल होई। उपधिया जी आगे बढ़ि के ओकरा के शांत करे के चेष्टा करे लगले–

"देखीं रउआ गलत समझत बानीं। राउर लइकी अइसन कुछुओ नइखे कइले कि हमनी के बान्हि के रखले बानी जा, भा पुलिस में देबे के विचार करऽतानीं जा। अरे राउर लइकी त हीरा के टुकड़ा बिया। एकदम कोइला के खदान से निकलल, बाकी बिना तराशल हीरा। अगर एकरा के तराश दीहल जाउ त ई अनमोल हो सकेले। एकदम कोहिनूर लेखा। देखीं रउआ हमार बात खूब शान्ति से सुने आ समझे के चेष्टा करीं। राउर बेटी बहुत प्रतिभावान बिया। एकरा में पढ़े के बहुत ललक बा। एको दिन स्कूल नइखे आइल तबो स्कूल में पढ़े वाला कवनो लइका से बहुत तेज बिया। इयाद त एकरा कुल्हि बा, बस अक्षर–ज्ञान भइल जरूरी बा। आ ई त स्कूले में होई। एह से हम चाहत बानी कि अगर जो रउआ इजाजत दीहीं त एकर नाँव स्कूल में लिख लीहल जाउ। एकरा खातिर रउआ कवनो पइसा–वइसा ना देबे के परी। बाकी हमार त ईहे इच्छा हो रहल बा कि अगर एकरा पढ़े के एतना सवख बा त पढ़े दीं। हई गोबर–गोंइठा में मति फंसाई। हो सकेला एकरा तकदीर में, रउआ से अलग, कुछु अउर बने के लीखल होखे! आगे राउर मरजी!"

फुलकेसिया के माई ओही तरी डबडबाइल आंखि आ भर्राइल आवाज में बोललि– ई रउआ का कहत बानी पंडी जी, हमरा त कुछु समझे में नइखे आवत। अरे हम, एगो छोट जाति कहाये वाला, मुसहर के बेटी, जेकरा खानदान में नइहरे ना ससुरे कवनो लइको स्कूल में मुंह ना देखल, ओकर अब बेटी पढ़ी? हम जे बिआह के दुइये बरिस बाद बिधवा हो गइनीं, आ एक साल के आल्हर बेटी गोदी में लेले ई कहि के घर से निकाल दीहल गइनी कि "भतार के त खाइये गइले, अब का इहंवा रहि के हमनी के चबइबे? फेर तें कवन हमनी के वंश चलावे वाला बिआइल बाड़े कि तोरा के इहां राखि के सेंई जा?" अब ओकर ऊहे अभागी बेटी स्कूल में पढ़ी? आगे बढ़ी। ई कुल्हि कइसे होई पंडी जी? हम कइसे क पाइब?

"देखीं रउआ एह में कुछु नइखे करे के। जवन कुछु करे के होई तवन हम करबक। रउआ खाली इजाजत दीहीं। प्राइमरी तक के पढ़ाई के मुफ्त व्यवस्था हमरा ओर से रहल। फेर अगर पढ़े में तेज भइल त आगे सरकार से ओजिफा वगैरह मिल सकेला। अगर नाहियो मिली, आ आगे पढ़े के एकर इच्छा होई त हम चाहें कतहीं रहब, एकरा खातिर व्यवस्था करब। हमार दू गो बेटी बाड़ी स। आजु से सोचब जे तीनि गो हो गइली स। बाकिर हमार बिनती बा कि एह हीरा के तराशे में रउआ बाधा मति बनीं। पढ़े–लीखे दीं एकरा के। हमरा बहुत संभावना लउकत बा एकरा में।"

एही बीचे ऊ लइका मिठाई लेके आ गइल रहे। सबसे पहिले त मिठाई फुलकेसिया के दिआइल। फेर ओकरा मतारियों से मुंह मीठ करे के कहल गइल, बाकी ऊ ओहिजा सबके सामने खाये के राजी ना भइली, कइसो हाथ में लेके मुट्ठी बान्हि लिहली। उपधिया जी के पारखी नजर ताड़ गइल कि ऊ राजी हो गइली। फुलकेसिया के नांव ओही दिने स्कूल में लिखा गइल। ऊ पढ़ल शुरू क दिहलसि। उपधिया जी ओकरा खातिर सांझियो खा एक–आध घंटा बेसी समय देबे लगले। हीरा त हीरा रहे, देरिये से सही, छेनी के धार परल, तराशल जाये लागल, निखरे लागल आ पहिले साले, एके बेर तिसरा क्लास के इम्तहान दिहलसि, पास हो गइलि।

अइसन ना रहे कि ओकरा पढ़ाई में अउरी कवनो तरह के बाधा ना आइल। नाना–नानी त ना, बाकी मामा–मामी के बहुत बाउर लागल ई बात। ओकर मामी त, जेकर बेटा–बेटी मंगरुआ आ शनीचरी ना पढ़त रहले स, आ जेकरा फुलकेसिया के चलते अपना घर के काम–धाम में बहुत मदति मीलत रहे, एह बात पर बहुत बवाल कइली। मतारी–बेटी के अपना घर से निकालि दिहली। बाकी बाप त बापे ह, बेटी खातिर अलगा एगो पलानी लगा दिहले आ फुलकेसिया के माई आपन संसार बसा लिहलसि। गोबर–गोंइठा पाथ के बेचल–खोंचल त ओकर पहिलहीं से चलत रहे, एकरा अलावहूं ऊ लोगन के खेतन में मजदूरी करे, आ एक–आध घरन में कुटिया–पिसिया के काम ध लिहलसि। यानी अब ऊ अपना बेटी के भागि संवारे में जीवे–जांगरे जुटि गइलि।

फुलकेसिया चउथो क्लास में पास भइलि। अपना क्लास में फस्ट आइलि। उपधिया जी के मेहनत आ ओकर लगन रंग ले आइल। पांचवा क्लास यानी,

प्रायमरी के फाइनल परीक्षा भइल आ फुलकेसिया जिला में टॉप कइलसि। आगे पढ़े खातिर ओकरा के सरकार से ओजिफा मीले के घोषणा भइल आ बड़ा उत्साह से उपधिया जी ओकर नांव रुदरपुर के मिडिल स्कूल में कक्षा छव में लिखवा दीहले। सांझि खा के ओकर ट्यूशन अबहिंयो जारी रखले रहले, कि तले एही बीचे, एह स्कूल से उनुका ट्रान्सफर के ऑर्डर आ गइल। ई बात जब फुलकेसिया के मालूम भइल त ऊ भोकरि–भोकरि के रोवलि। गोड़ पकड़ि के ऊ उपधिया जी से पुछलसि कि "पंडी जी, अब हमरा के, के पढ़ाई? रउआ मति जाईं। रउआ चलि जाइबि त हम फेर से अनाथ हो जाइबि। अब हमार का होई?"

बड़ा मुश्किल से उपधिया जी तब ओकरा के चुप करा पवले रहले, आ कहले रहले कि देख बेटी, हमार त सरकारी नोकरी ह। सरकार के ऑर्डर हमरा मानहीं के परी। एकरा खिलाफ केहू ना लड़ि सके। आ फेर अब त तूं समझदार हो गइल बाड़ू, पढ़े में तेज बाड़ू, खूब मन लगा के पढ़िहऽ। मिडिल तक त तहरा कवनो असुबिधा ना होई। मिडिल पास कके हमरा के खबर करिहऽ, हम कतहीं रहब, तोहरा आगे के पढ़ाई के व्यवस्था जरूर करब। फेर ओकरा माई के हिदायत देत कि, बेटी के पढ़ाई में तनिको कोताही मति बरतिहऽ। जहां तक ओकरा पढ़े के मन होई पढ़इहऽ। आदिमी बनइहऽ। हमार सहयोग तहन लोग के हमेशा मिलत रही, अपना ट्रान्सफर के कागज उठवले, आंखि पोंछित चलि दिहले।

———— ———— ———— ———— ————

"पंडी जी!..... पंडी जी!!.... सामने खड़ा फुलकेसिया के जोर–जोर से चिचियावे के आवाज कान में पड़ल, त उपधिया जी जइसे नीनि से जगले।"

"..... आँय .....हं .....हं..... बोलऽ।"

"कहां हेरा गइनी?"

"कहीं ना हो। तनी पुरान बात इयाद पारे लागल रहनी हँ। लइकाईं के फुलकेसिया आ आजु के फुलकेश्वरी देबी। अब हम कइसे चिन्हितीं तोहरा के? तब के देखल आ अब के देखल का एके लेखा बा?"

"ई सब राउर देन ह गुरुजी। ना रउआ हमरा के अक्षर–ज्ञान करवले रहितीं ना ई फुलकेसिया बदलित। शायद अपना माइये लेखा गोबर–पाथत–पाथत मरि जाइत।"

"का तोहरा माइयो?"

"हं, पंडी जी, माइयो एह दुनिया में ना रहलि। जवन दुनियां ओकरा के जिनिगी भरि सतवलसि ओकरा के जइसे के तइसे छोड़ि के चलि गइलि।"

"लेकिन ई कइसे हो। अतना जल्दी?"

"अब पता ना एकरा के जल्दी कहीं कि देरी। बाकिर रउआ गइला का बाद, अपना जिनिगी के कुल्हि निराशा आ हताशा का बादो, जइसे ओकरा जीये के एगो मकसद मिल गइल रहे। ओकरा अन्हार जिनिगी में रउआ जइसे एगो चिराग दे गइल रहनी। ऊ दिन–राति ओकरा के बरले रहे में जी–जान से लागलि रहे। एगो मिशन लेखा। हमार मिडिल के रिजल्ट आइल, हम फेर टॉप कइले रहनी। उत्साह बढ़ि गइल रहे हमरा दूनो मतारी बेटी के। आगे के पढ़ाई के प्लान करे खातिर हमनी का रउआ से सलाह करे रउरा गांवे गइनीं जा, बाकी ओहिजा पता चलल कि रउआ त कवनो ट्रेनिंग खातिर लखनऊ गइल बानीं। शायद हेडमास्टर होखे वाला बानीं। अब हमनी के कूबति कहाँ रहे कि रउआ के लखनऊ खोजे जइतीं जा। मन मारि के लवटि अइनी जा। आगे पढ़े के हमार बहुत मन रहे। माइयो के ईहे इच्छा रहे। रउआ चेता जे गइल रहनीं। बाकी शहर में राखि के पढ़ावे के बूता त माई में रहे ना, एह से हमार आ आपन सपना चकनाचूर होत देखि माई भीतर से टूटि गइलि। धीरे–धीरे ई घाव ओकरा के भितरे–भीतर साले लागल आ शायद एही के चलते एक दिन ओकरा करेजा में अइसन हूक ऊठल कि ऊ दुनिया से उठि गइलि।"

हम तिसरा बेर अनाथ भइल रहनी ओह दिन। पहिले बाप के मुअला पर, फेर रउआ छोड़ि के गइला पर आ अब माई के मुअला पर। नाना–नानी सहारा ना रहित त हमहूं बुता गइल रहितीं। मामा–मामी त पहिलहीं हमरा से जरत रहले। अब त अउरू राख हो गइल रहे लोग। खाली बापे के ना मतारियो के खाये चबाये वाला कहे लागल रहे लोग। हमार सूरत तक ना देखल चाहत रहे लोग, बाकी गांव–समाज के समझवला का चलते, भा दबाव में आके बस एतना एहसान कइल लोग कि हमरा ओह कांच उमिर में, एगो दोआह लइका से बिआह क दीहल लोग।

हम नइहर से ससुरा आ गइनी। भागि से समझौता भले क लेले रहनी, बाकी पढ़ाई छुटला के टीस त लोर बनि के बेरबागर बहिये जात रहे। तले एही बीचे हम एगो संकल्प ले लिहनी। हमरा मरद के पहिलकी

मेहरारू से दू गो लइका–लइकी रहले स। हम मन में तय कइनी कि इन्हीं के पढ़ाइबि। अपने पढ़के ना त इन्हनी के पढ़ा के त हम अपना मन में कुलबुलात पढ़ाई के कीड़न्हि के कुछु शान्त कइये सकेनी। हम उन्हनी के पढ़ावल शुरू क दिहनी। आपन कुल्हि कॉपी–किताब हम अपना संगही लेले गइल रहनी। ओह से हमरा थोरे बल मीलल। फेर एह दल में हम अपना छोट ननद आ देवरो के शामिल क लिनी। सासु पहिले कुछु बिरोध कइली, बाकि ससुर के ई कहला पर कि जाये द कवन बाउर काम करऽतिया, पढ़ल लिखल बहुरिया बिया त कुछु नीमने नू करऽतिया। केहू के बिगारत त नइखे नू, सासु शान्त हो गइली। हमार हौसला बढ़ल। खाली समय काटे के एगो बहाना मिल गइल रहे हमरा, काहें कि हमार मरद कवनो तहसील के अमीन के अरदली रहले। काम पर जासु त एक–एक हफ्ता भा पनरहो दिन पर लवटसु। एही बीचे हम अपना बिरादरी के कुछु अउरी लइका लइकिन के एह पढ़ाई–अभियान में शामिल कइनीं। केहू के बाप–मतारी एकर खुल के बिरोध ना कइल। हमार घर ऊ पाठशाला चलि निकलल। मन लागे लागल। अइसन बुझाइल कि हमार पढ़ल–लिखल कुछु सुकलान भइल। तले एही बीच हमरा एगो अउरी बात के पता चलल। हमार मरद एक बेर बात–बात में बतवले कि सरकार एगो स्कीम बनवले बिया कि गांव के बेपढ़ल–लिखल मेहरारू–लइकिनि के पढ़ावे खातिर कवनो पढ़ल–लिखल मेहरारू के, जे इन्हनी के शिक्षित क सके, आंगन–बाड़ी नाम के स्कूल के लाइसेन्स दीही, जवना खातिर कवनो स्कूल के जरूरत ना होई, बल्कि ई स्कूल ओकरा आंगने में चली। एही से एकर नांव आंगन–बाड़ी स्कूल धइल बा। हम उनुका से कहि के एकर लाइसेन्स ले लिहनी। आसपास के कई गो गांवन में अइसन स्कूल खुलल स। अच्छा परिणाम भइल। हमार स्कूल त खूब नाम कमइलसि। हमरा स्कूल के लइकी–मेहरारू बढ़िया रिजल्ट दिहली स। घर के आमदनियों बढ़ल आ हमरा पढ़ाई–लिखाई के कुछु मोलो भइल।

एही कुल्हि सिलसिला में "हमरा जिला शिक्षा बोर्ड आ शिक्षा परिषद् के कई बेर चक्करो लगावे के परल। हम कुछु विशेष चर्चा में आवे लगनी काहें कि मीटिंग बगैरह में जमि के बोलीं आ बहस करीं। लोगन के नजर में चढ़े लगनी। गांव के ग्राम पंचायत चुनाव में खड़ा होखे के प्रस्तावो हमरा लगे आइल। काहें से कि हमारा गांव के सीट महिला सीट घोषित हो गइल रहे, ओहू में सेडूल कास्ट के महिला खातिर। हमरा ना चहलो पर एकरा खातिर तेयार होखे के परल। हम चुनाव में खड़ा भइनी आ जीति गइनी। तब शायद सबसे कम उमिरि के हमहीं एगो महिला ग्राम–प्रधान चुनाइल रहनीं। हमार हौसला बुलन्दी पर त रहे बाकी मन में पढ़ाई के कीड़ा अभी शान्त ना भइल रहे। हम मने मन एगो अउर फैसला क लिहनी कि आगे हाईस्कूल के परीक्षा हम प्राइवेट परीक्षार्थी के रूप में देबि। तेयारी शुरू क दिहनी। शहर–आइल–जाइल त लागले रहे। बोर्ड से सिलेबस ले अइनी आ कुछु किताब–कॉपी जुटा के अपनो पढ़ाई शुरू क दिहनी। फार्म भरनी, परीक्षा दिहनी आ पास हो गइनी। बाकी एकरा बाद के पढ़ाई चाहियों के पूरा ना क पवनी। हमरा कमजोर कंधा पर धीरे–धीरे बहुत जिम्मेदारी लदा गइल रहली स। आंगन–बाड़ी स्कूल समिति के हम सेक्रेटरी चुना गइल रहनी। जिला स्तर पर हमरा काम के प्रशंसा होत गइल। एही बीचे जिला में पहिलका दलित महिला संघ बनल त ओकर कार्यकारी अध्यक्ष के भार हमरे कंधा पर आ गइल। जब हम ओकरो के बखूबी अंजाम दिहनीं, त सरकार के नजर में अइसन चढ़नी कि राज्य स्तर पर महिला मानवाधिकार आयोग जब गठित भइल त दलित महिला वर्ग से हमरे के ओकर एगो सदस्य मनोनीत क दिहलसि। आ अब हमार जिम्मेवारी अतना बढ़ि गइल बा कि बस गांव से बलिया आ बलिया से लखनऊ दउरत रहे में कुल्हि समय बीति रहल बा। हजारों तरह के समस्या बा लोगन के, अब जब केहू हमरा सामने आ जाला त हमरा से ना कइल ना बने। सरकार के प्रतिनिधि भइला का बादो कई बेर त सरकारे के खिलाफ बोले के पड़ेला, लड़े के पड़ेला। बस अफसोस ईहे बा कि हमार आगे पढ़े के सपना सपने रहि गइल। मैट्रिक त कइसो–कइसो क लिहनी, बाकी एकरा बाद त अतना बवाल में फंसि गइनीं कि फेर चाहियो के आगे के पढ़ाई संभव ना हो सकल। लेकिन खैर, चलीं जेतना भइल ऊहो रउवे कृपा से भइल ना त ओह फुलकेसिया के आजु फुलकेश्वरी देवी कहि के, के पुकारित।" (एगो हल्का हंसी)!

"आ तोहार आंगन–बाड़ी स्कूल। ओकर का भइल? का ओकरा के बंद क दिहलू?"

"अरे ना पंडीजी, ओकरा के कइसे बंद क देबि। ओकरे चलते त हमरा अतना आत्मबल मीलल। ओकरा के आजु काल्हु हमार सासु चलावत बाड़ी। हम अपना

सासुओ के अब अतना पढ़ा देले बानीं कि ऊ दोसरा के पढ़ा सकेली।"

"बहुत सुन्दर! ई तूं बहुत नीमन काम कइले बाड़ू। तोहार शिक्षित भइल, दरअसल अब जा के सार्थक भइल। शिक्षा के मंदिर के दिया हमेशा जरत रहे के चाहीं।"

"जरऽता पंडीजी जरऽता। रउआ आसिरबाद से खूब जोर शोर से जरऽता। लेकिन हई लीं, हम त खाली अपने गरुड़–पुराण रउआ के सुनावत रहि गइनीं, रउआ बारे में त कुछु पुछुबे ना कइनीं कि रउआ एहिजा का करत बानीं। का रउओ अपना पेंशन खातिर, अपना जिन्दा रहला के प्रमाण–पत्र, पेंशन आफिस में जमा करावे के जरूरत पड़ि गइल रहल हऽ?"

"अरे बेटी, जिन्दा रहे के प्रमाण–पत्र त तब नूं जमा करावे के जरूरत पड़ी, जब पेंशन मीलल शुरू होई। रिटायर भइला करीब पांच साल पूरा होखे चलल, बाकी हमार त आजु ले पेंशने शुरू ना भइल।"

"का कहऽतानी पंडी जी? राउर अभी ले पेंशने ना शुरू भइल? लेकिन ऊ काहें? का कहऽता लोग?"

"अरे बचवा, कुछु कहित लोग ठीक से तब नू बुझाइत। ऊ लोग त बस टरकावत चलि जा रहल बा। आजु आवऽ, काल्हु आवऽ, परसों आवऽ। अभी तोहार फाइले नइखे आइल। त आजु साहेब नइखन। अभीं पहिलहीं के फाइल नइखे सलटल। अब हमरा त ना कवनो तिकड़म आवे, ना हम कवनो छल–कपट जानीला। बस जइसे दउरावत बा लोग ओइसे दउरि रहल बानीं।"

"हम समझि गइनीं पंडीजी। सोझिया के मुंह कुकुर चाटे। बाकी रउआ घबराईं मति। राउर काम अब होके रही। आ भगवान चहिहें त आजुवे होई। दरअसल गुरुजी, अब रउआ सभे वाला जमाना त रहि नइखे गइल। सोझिया आ सिधवा के जमाना। आजु के समाज जेतना भ्रष्ट भइल बा, सरकारियो तंत्र ओतने भ्रष्ट भइल बा। बल्कि ओहू से बेसी। नेता से कर्मचारी तक सब एके चट्टा–बट्टा के लोग हो गइल बा। बाकी तबो सरकार आजु काल्हु जनता का दबावे में आके सही, एह तंत्र पर कुछु अंकुश लगावे खातिर कई गो आयोग आ समिति गठित कइले बिया, जहां जाके जनता आपन गोहार लगा सकेले। अब जरूरत बा लोगन के जागरूक भइला के, अपना अधिकार आ कर्त्तव्य के जानकारी रखला के आ ओकरा माध्यम से आपन लड़ाई लड़ला के। अब रउआ लेखा सोझिया के गुजारा भइल त सचहूं कठिन बा। बाकी चलीं भगवान जवन करेले तवन ठीके करेले। संयोगे सही बाकी तबो राउर मुलाकात आजु निमना आदिमी से हो गइल बा। हमार बहुत इच्छा रहल हऽ कि एक बेर रउआ से भेंट हो जाइत, त हम अपना सफलता खातिर राउर आसिरबाद ले लिहितीं आ आजु ऊ संयोग जुटि गइल। त चलीं, हमार मनसा पूरल त अब रउओ पूरी। लात के देवता बात ना बूझसु। रउआ पेंशन–अधिकारी मिस्टर खत्री के त रग–रग से हम वाकिफ बानीं। आजु देखीं कइसे उनुका के बात बुझवावत बानीं। आईं चलीं हमरा संगे।" कहि के ऊ उपाधियाजी के बांहि धइली आ लेले–देले पेंशन–आफिस में घुस गइली।

पेंशन ऑफिस में हड़कम्प मचि गइल। उपाधियाजी आ फुलकेश्वरी देवी के संगे। भला इनिकर उनुका से का संबंध। जे जे बाबू आ क्लर्क लोग आजु ले उपधिया जी के तंग कइले रहे, सबकर नाड़ा ढील हो गइल। कुछु लोग फुलकेश्वरी देबी के देखि के, उठि के नमस्ते कइल चाहल, बाकी ऊ केहू का ओर ध्यान ना दिहली। बस अपना हाथ के फाइल, अपना साथ वाला मेहरारू के दिहली आ कहली कि "हई धरऽ अब आजु कवनो दोसर काम ना होई। आजु बस गुरु जी के काम होई।" आ ई कहत–कहत सबका संगहीं मिस्टर खत्री के केबिन में घुसि गइली।

मिस्टर खत्री त अवाक्। बइठल–बइठल एक–आध आदिमी से गपियावत रहले, कि इनिका के देखते कुर्सी छोड़ि के हड़बड़इले, हाथ जोरि के खड़ा हो गइले, सामने बइठल लोगन के बाहर जाये के इशारा कइले आ मुस्कुराये के असफल चेष्टा करत कहले– "अरे मैंडम आप? नमस्ते। आईं बइठीं। कहीं अचानक कइसे आइल भइल हऽ?"

"ऊ त हम बतइबे करब, बाकी बिना कवनो भूमिका के। बस सीधा सीधा ई बताईं कि उपधिया मास्टर साहेब के पेंशन के फाइल आजु ले रउआ आफिस में काहें अँटकल बा। का पांचो साल कम पड़ जाता एगो फाइल आगे सरकावे में आ ओकरा पर कारवाई करे में। रउआ सभ के नीयत के पता त हमरा बड़ले बा, बाकी इहां के हमार गुरु हईं, प्रारम्भिक गुरु। बताईं इहाँ के फाइल सलटावे खातिर रउआ सभ का कतना घूस चांहीं? ऊ हम देबि आ अभीं देबि।"

"अरे, अरे ई का कहत बानी। के घूस माँगल हऽ इहां से। हम अभीं पूछताछ करतानी। हमरा त एह बारे में कवनो जानकारिये नइखे।"

"लेकिन, हमरा जानकारी बा। रउओ बार में आ रउआ बिभागो में। ई मति भुलाईं कि रउआ खिलाफ पहिलहूं कईगो शिकायत आ चुकल बा, हमार आयोग में, आ हमरे चलते ऊ अभीं तक दबल बा, कहीं त कुल्हि खोलवा दीं।"

"अरे, अरे अइसन मति करीं मैडम। हम बरबाद हो जाइब। हम अभीं इहांके फाइल मंगवावत बानीं। एक आध दिन में कुल्हि फारमल्टी पूरा कके अगिले हफ्ता चेक इहां के बैंक में भेंजवा देब।"

"अगिला हफ्ता आ एक–आध दिन त बहुत होला खत्री जी। इहे कहि कहि के त रउआ सभ पांच साल काटि चुकल बानी बाकी अब रउआ सभ के पांचो घंटा समय ना दिआई। ई काम आज आ अभीं पूरा होई। दफ्तर बंद होखे से पहिले चेक पर साइन हो जाये के चाहीं, हम देखि के तबे जाइब। चेक काल्हु बैंक में जमा होखे के चाहीं। हं, उपधिया जी अभीं जिन्दा बानी एकर प्रमाण सामने बा आ गवाह बानी हम।"

मिस्टर खत्री फेर कुछु कहल चहले, बाकी फुलकेश्वरी जी फेर उनुका के घुड़ुकि दिहली। फाइल ओही घरी मंगावल गइल। कुल्हि संबंधित क्लर्क आ बाबू लोग मशीन लेखा एक के बाद एक दउरल शुरू भइल। घंटा भरि में कुल्हि फारमल्टी पूरा हो गइल। पेमेन्ट के आर्डर पास हो गइल आ चार बजे से पहिले चेक बन के साइन करे खातिर खत्री जी का टेबुल पर आ गइल। एने खत्री जी चेक पर साइन कइले, ओने फुलकेश्वरी देबी मुस्कुरात कुर्सी से उठि के खड़ा हो गइली।

जात जात बाकी खत्री जी के एक बेर हिदायत दे गइली कि "खत्रीजी, अब तनी अपना के सुधार लीं। निरीह लोगन के सतावल छोड़ि दीं। बइठ के लोगन से गपिअवला आ नोट तहिअवला का संगे, कुछु कामो करीं, आ कुछु परसेंट त इमानदारी बरतीं, ना त एक दिन रउआ संगे संगे राउर परिवारो निरीह हो जाई। हम खाली रउआ लइकन के मुंह देख के अभीं ले छोड़ि रहल बानीं, बाकी पानी अगर कपार से ऊपर हो जाई त हमहूं कुछु ना क पाइब, ई ध्यान राखब।" कहि के ऊ फेर उपधिया जी के बाँहि धइली आ उनुका केबिन से बाहर आ गइली।

उपधिया जी अवाक् रहले, गदगद रहले, बाहर निकलले त कहले कि तनी रूकु त बचिया, एक बेर फेर तोरा के ठीक से देखि लीं।

"का भइल गुरु जी।"

"अरे हम देखल चाहत बानी कि का हम सचहूं कवनो अइसन बिरवा, कवनो खेत से उखारि के रोपले रहनी, जवन आजु एतना बिराट रूप ले लेले बा कि सबका के छाँह दे रहल बा।"

"बस ई कुल्हि राउर कृपा ह गुरुजी। खाली हमरा के आसिरबाद दीहीं कि हम असहीं बेबस लोगन के सहायता करत रहीं। अरे, एगो अउर बात त हम भुलाइये गइनी हँ, आसिरबाद त रउआ एगो अउरी अदिमी के देबे के बा। ई त हम रउआ के बतइबे ना कइनी हँ कि रउआ एक बेटी से एगो नातियो बा, जवन अब हाईस्कूल में पढ़ि रहल बा, एक दिन घरे आईं त ओकरो के आसिरबाद दे जाईं।"

"जरूर देब बाकी एगो शर्त पर।"

"शर्त आ रउर?"

"हं।"

"त कहीं।"

"त चलऽ, जइसे लइकाईं में तोहार मुंह मीठ करा के तोहरा के अक्षर ज्ञान करवले रहनी, आजु फेर हमरा हाथे आपन मुंह मीठ कइ ल। हम दोसरा कवनो तरह से तोहार प्रति उपकार ना क सकीं।" कहत–कहत उपधिया जी भावुक हो गइले।

प्रतिउपकार करे के मोका त रउआ हमरा के आजु दिहनी हँ सांच पूछीं त। बहुत दिन से मन में ई मलाल रहल ह कि हम रउआ से दोबारा ना मिलि पवनी, राउर कवनो तरह के सेवा ना कर पवनीं। आजु ऊ मोका देके रउआ हमारा के धन्य क दिहनीं। एकरा के हमार उपकार ना, एक तरह से गुरूदक्षिण समझीं, जवना के आजु ले ना चुकवला के अफसोसो हमरा मन में बहुत रहल ह। रहि गइल मुंह मीठ करे के बात, त ऊ त हम करबे करबि। आखिर बेटी हंई राउर। बाप के मिठाई पर त हमेशा अधिकार रही बेटी के। बाकी बेटी का, एके बात के दुख रहि जाला पंडीजी।

"ऊ का हो?"

"कवनो बाप, अपना बेटी के जनम पर, मिठाई ना बाँटे।" ●●

दिनेश पाण्डेय
आठ कविता

(एक) हरि कवन लाभ

हरि कवन लाभ
पग परले।

आँखि अछइते रूप न सूझल
जगतबोध ना निपजल।
कवन साँच ई कहाँ बुझाइल
भाफ, तुहिन, अङरत जल।
मति के सब मगरूरी झरलसि
आंतरजोत न बरले।

एक नदी अबिरल जलधारा
माँकत चलीं कछारे।
ना लँघान, ना नाइ, न माँझी,
के बिधि जाइबि पारे।
अनगिन चान नयन में पँवरल
अमरित बून न झरले।

राखे बदे बजूद आपनो
मरि-मरि जोग जुगाईं।
आन जोग हम कइसे साधीं
सोच-सोच अझुराईं।
ना हम आइब, ना हम जाइब,
का फिर पचि-पचि मरले?

(दू) माई री

माई री
मछरी होइतीं।
झिंझिरी खेलती,
घुमरी परतीं,
उलटी धारे
गउमुख चढ़तीं।
जेने चहितीं,
ओने जइतीं
नदिया तरतीं।
कौनो मछुआ डालित
महाजाल त ना?

सुगनी होइतीं।
सोना नभ में
भाँवरि परतीं,
सुरुज-चनरमा
कावर उड़तीं।
काइनात के
चारू ओरी
पाँख पसरतीं।
कउन अहेरी बनित
जिउ के काल त ना?

हरिना होइतीं।
सघन अरन में
कुरचत रहितीं,
दूभी चरतीं,
अमरित पिअतीं।
बरगद छाँही
सेज डसइतीं,
थकन बिसरतीं।
कउने बघवा नोचित
तन के खाल त ना?

(तीन) भोरहरिया के चान

निसबद राति भयाउनि झिल्ली झनकारलि हो,
बिलमि बोलल बनबिहग बलम के गोहारलि हो।

सँग नहिं सासु ननदिया लराकी परोसिनि हो,
केहु न हरे तन पीर, न कोउ सहजोगिनि हो।

डुबि-धँसि जास सलेहरि सेइ उकसावेलि हो,
गोतिन चरितो बिचित्र सुमंगल गावेलि हो।

ढुलकल रयन निगोरी तुहिन कनी बरसल हो,
अँचरे उतरलनि चान अनँदराग सरसल हो।

(चार) अभिलास

नाहीं मोरी धनि अमरइया
ना एकहूँ अमिआ तरु हो
कौने भाँति पूरीं अभिलास
कि जिनिगी बिराना मरु हो।

कहवाँ से लाइबि टिकोरवा
पुदीन के पतइया नु हो
कइसे तू पीसबू चटनियाँ
बदनो नाहीं खनहन हो।

धीर धर धनिया तू धीर धर,
बैना तोरी मानबि हो
हमहूँ जाइबि नंदनबनवा
अँठुली एगो आनबि हो।

रुसस-फुलस चाहे इनर देव
भले मोहि बज्र मारें हो
सजनी के राखि लेहबि टेक
चाहे तन-लहु गारें हो।

अँगना में जमिहें अमोलवा
पतइया खइर रंगे हो
लुहूचुहू होइहें बिरिछवा
त झुमिहें हमन संगे हो।

(पाँच) ताल-माटी

बिहने-बिहने जनी जागेलि
गेसू सझुरावलि ए
झरि गइले माँगि के सेनूर
ताल रंग लोहित ए।

उचुकेलि बेलि तरु सिहरेलें,
हवा सोहरावलि ए,
पोखरी में काँपेला जहान,
चनरमा तिरोहित ए।

तलई से सुरुज समेटलि
हौले गोलिआवलि ए।
लेई के उछारेलि अकास,
ई अग-जग मोहित ए।

(छह) चितरेखन

घर पिछुअरवा चमेली बेलि फुल्ल झरि लावऽल ए।
तिलड़ी गुँथावेले पियरवा जुरहिं पहिरावऽल ए।

करेलि बयारि कनबतिया बदनगंध पसरलि ए।
सेई बासे भरलि बातास सघन बने ससरलि ए।

छाई गइलें करिया अन्हार बदर घेरि आइल ए।
चारू ओरि रचे चक्रब्यूह मनवों अगुताइल ए।

लचकेलि बाँस के फुनुगिया, पतई अँइठि गइलि ए।
फुनुगी प थथमे आकास आ रयना गझिन भइलि ए।

निनियारी अँखिया के कोरे सपन एगो देखलि ए।
सरग से उतरी सुन्नर धिया, नैना चितरेखलि ए।

(सात) सोहिनी शरद

अब रहले उड़ि निर्भय पंछी,
साफ भइल कुछ कारा।
घुलल जात बा रंग सियाही,
निखर रहल जग सारा।

फुलल कास धवरी गैयन के,
उमगल दल खुरछारे।
धनखेती में गाभ भरल लखि,
बहुअरि केश सँवारे।

आइ गइल अब शरद सोहिनी,
हवा कटखनी लागे।
काहिल खिन्न निरासल मन में,
पुलक उमीदी जागे।

रात चाननी थार रुपहली,
भरि-भरि खीर परोसे।
अमरित धार छिरिक मधु-पावनि,
सगरे अग-जग पोसे।

(आठ) पद

साधो सगरी धोख-पुतुल बा।
'देखब नाहिं बेजायँ' कठिन ब्रत कबहूँ ठनले रहलन।
ऊ कइसे अनगिन कुकांड के सोझे आँखिन सहलन?
'कहब न कुछ गलतंस' रातदिन एकरे हक्कर पारल।
होते इचि बिपरीत हाल के सब सिद्धांत बिसारल।
खाक मिलल मरजाद बात के एको करम न छूटल।
मानुस मुख से जहर बमन के कीर्तिमान सब टूटल।
'सुनब न ऊ सब बात जवन ना होखी जन हितकारी।'
भेद खुलल ए भीखम हठ के होखल बात उघारी।
आला पर जे बनरन बइठल अब ले रहल गुलाटी।
होखे ना परतीति सहज में सब धोखा के टाटी।

सरकारी आवास-100/400, राजवंशीनगर,
रोड-2, पो० शास्त्रीनगर, पटना-23

राम-रसायन से

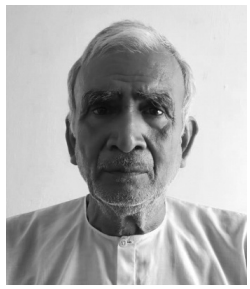

रमेश राय

रावन की तेरही करिके,
जगती मे विभीषन नाम कमायो।
कर-जोरि सिपारिस करि करिके,
कुल-बाभन को भरपेट खिलायो।।

सूकर स्वान क पेट भरल,
अब जूठन पै नहि दाँत गड़ायो।
परिपूरन यज्ञ भइल नृपवर,
इक कोन से ''कन्गन'' सोर मचायो।।

''वरवै''
१ अब तो चढल कतिकवा, मन सिहरात।
काम बढ़ल सुरसा-सम, नाहिं ओरात।।
२ अब घुमड़त घन कारे, चढ़ल असार।
मगन मोरनी नाचत, पंख पसार।।

ग्रा०-भुजही पो०-सौसरवाँ, जिला-मऊँ

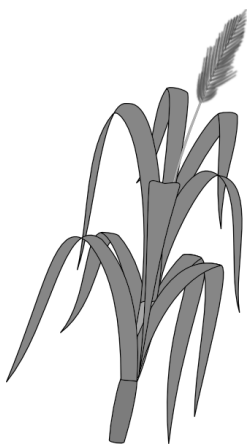

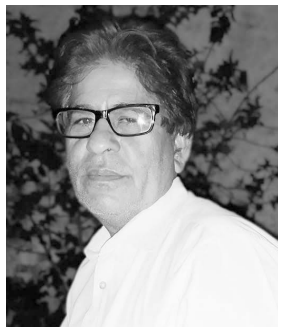

सुभाष पान्डेय ‘ संगीत’

जबहिं तवल हियरा हिम-पाथर,
आँखिन ढुलकल लोर,
आइल गीत उतरि के।
भूभुरि तपन देह-मन दाहल
उठल पीर गहिरोर,
आइल गीत उतरि के।

रहिया की धूरि नियन उड़लि पिरितिया
देखते ढहलि जस बालू के भितिया
बारल सँझवत काँपे कपसल
लउके नाहीं भोर
आइल गीत उतरि के।

अधनींनि सपना में सुन्नर सुरतिया
झाँकि जात खिड़की से नित अधिरतिया
भरि अंग सटा मितवा बिलगल
करि के हिया कठोर
आइल गीत उतरि के।

अचके सियात मुँह लागि जात पहरा
पाँव बान्हि हीत नित पठवे लमहरा
रहिया परिखत पउवाँ थथमल
दिखे ओर ना छोर
आइल गीत उतरि के।

पढ़ि ना पावत केहू लिखल लकिरिया
गुणा भाग जोड़ ना ह मिलल उमिरिया
जोरत गाँठत बान्हत फसकल
जब नेहिया क डोर
आइल गीत उतरि के।

अधनिनिया में उनकर सपना
बिसरल दरद उपाटि गइल।
हमसे हमके बाँटि गइल।

निठुर रात की बेचैनी के
हाल बतावे सिकुरल बिस्तर
नींनि आँखि की लुकाछिपी में
दिल पर जइसे लागल नश्तर
निसबद रतिया मनचन्दा के
पसरल डैना काटि गइल।

साँस प्रान के बंध सनातन
लागे जइसे अबहीं दरकल
आसमान के तानल छप्पर
पँउवा तर के धरती खरकल
निर्मम हाथे मुँह पर पट्टी
निर्दय बनि के साटि गइल।

उसिने सँवरल सजल देह के
सुधि के ताप बहुत बढ़िआइल
बिच्छी जइसन डंक मारि के
रूप सलोना तुरत बिलाइल।
पुतरिन में पइसे का पहिले
अरजी हमरी छाँटि गइल।

❑ मुसहरी, गोपालगंज-841426

☑ योगेन्द्र शर्मा 'योगी'

(एक)

पहिन के कुर्ता उज्जर उज्जर
दिल के दाग छुपावत बाटें
मुहझऊँसन के लाज न आवत
भारत बंद करावत बाटें।

हम किसान माटी हव माई
ममता के अजमावत बाटें
हमरै खाय दहीजरा देखा
हमरा के भरमावत बाटें।

माड़-भात चोखा चटनी में
हमरे सेंध लगावत बाटें
हमरै रोटी गुड़ो खाय़ कै
हमके स्वाद बतावत बाटें।

मोसे छीन भोरहरी हमरा
सपना अजब देखावत बाटें
बूझ के आन्हर मोके गोइंया
दिनहीं चाँन देखावत बाटें।

हम गवाँर गँवईं के मनई
हमके पाठ पढ़ावत बाटें
महल के अपने चिनगारी से
मड़ई मोर जरावत बाटें।

गजब जमाना आयल मितवा
कुकुरो गीत सुनावत बाटें
कउअे अपना के अब देखीं
'योगी' हंस बोलावत बाटें।

मुँहझऊँसन के लाज आवत
भारत बंद करावत बाटें।।

(दू)

सेखी ना बघारा न उभारा ढेर छतिया
दिन होइ हमरो गुजर जाई रतिया।
भोर के किरिनिया बोलाय हो धधाय धरी
बात मोरी आजु गठियाय लिहा गँठिया।

रोब ना देखावा हड़कावा नाही पगे पगे
अँखिया के पुतरी सम्हारा हे सँगतिया,
शहरी बनल बाड़ा कोट जे पहिन के तू
हमनी के बोल देला झट से देहतिया,

सुना पहिचान मोरो कान खोली साफ साफ
गँवई के मनई करीला हम खेतिया,
अन्न उपजाईला खियाईंला जहाँन के हो
जानऽ ताड़ा तोहूँ अरु जानेला जगतिया,

पूस माघ तपनी के ताप के बिताय देहीं
बरखा के जोहि जोहि काट लेहीं जेठिया,
गोड़वा उघार भले कछनी लपेटीं बाबू
बेचीं ना ईमान होखे केतनो बिपतिया,

मड़ई उठाईं मिलि होरिका जराईं
रंग खेली हरसाई नाचीं गाई फांग गितिया,
आवे जे बरात घरे पास या पड़ोस में त
अबहीं ले पुछि के खियाईं भात रोटियां,

पहुना पहुँनई क अबो ह रिवाज जहाँ
हाल चाल लेहीं त बिछाय देहीं खटिया,
टीबी नाही बाटे अकबार भलहीं न होखे
कहनी सुनाय मनसाय देहीं मतिया,

चाउमीन बरगर के हाल नाही जानी भले
कचरी निमोना से सजाय भरीं टटिया,
हाय बाय हंथवा हिलाय ना सोहाय मोहे
राम राम पाँय लगीं बाय मोरी रीतिया,

अँगना में तुलसी दुलहिया घुँघट में हो
लोक लाज अबहीं बचावत ताड़ी तिरिया,
डेऊढ़ी डकँत के ससुर आ भसुर अबो
खोखंत खँखार के जनाय देन गोड़िया,

सुखवा के मिली जुली काट लेहीं हँसी खुशी
दुखवा कै लोरवा बटाय लेहीं अँखिया,
तब्बो बुझ ताटा हो गँवार गर हमनी के
'योगी' गाँव आई कबो सूँघ लिहा मटिया।।

❑ भीषमपुर, चकिया, चन्दौली (उत्तर प्रदेश)

गंगा प्रसाद अरुण

के गीत

(एक)

मनगीत

सूई के नोख भर पिरीत के
अँजुरिन अछरंग भरल
चई जुड़ल चरचा में मीत के।

बित्ता भर बउसाव
हाथन फुल्ला-रुस्सी
बाँही भर बहम के परेत,
डेग से डेरा जाला
मेढ़की-कुदान मान
लंग्गी भर लाग-बाझ हेत।

चुटकी भर चाहत आ
बूक भर बिछोह के
कुछ मीठा, कुछ अनुभव तीत के।

मुट्ठी भर ममता आ
चुरुआ भर चाँप में
पसरन में परबत के चाह,
अँजुरिन इयादन के
भरल भरल जिनिगी में
तरपन आ दाही परवाह।

(दू)

पारम्परिक नापी-जोखी में संबंध

सुरता पथारी से
गिली-आँटी ओछा के
पाँजा भर पवनी के रीत के।

फिल्ली भर डहरी में
नासमझी काँच-कीच
भर ठेहुन काँट-कूस- पाँक,
जाँघ भर जमीर-मान
डाँड़े भर अनबन से
श्रंग कहाँ कुल्हि ठीक-ठाक।

टटके टिकासन भर
बूड़े के चाह बनल
पोरसा भर पानी में गीत के।

21 बी. रोड- जोन-4, संडे मार्केट,
बिरसानगर टेल्को, जमशेदपुर-831019

शशि प्रेमदेव के दू गो ग़ज़ल

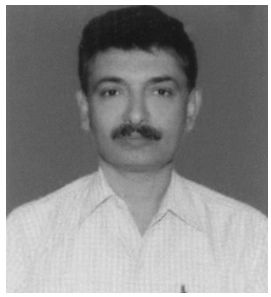

(एक)

पीर आँतर में भरल सज्जी, उड़न छू हो गइल!
एह् तरे केहू हँसल.... लागल कि जादू हो गइल!

लूटि लेलसि चैन कब्बो, यार कऽ कातिल अदा
अउर कब्बो आँखि ओकर, चोर-डाकू हो गइल!

काट एकरो खोजिए ली लोग, देखिहऽ, जल्दिए
आज से भलहीं नया कानून लागू हो गइल!

साटि के हर प्रश्न का उत्तर में एगो "पाँच सौ"
फेर एह् सख्ती का जुग में, पास पप्पू हो गइल!

हार के जूआ में, सदियन कऽ सहेजल सम्पदा
बाप-दादा कऽ दुलरुआ गाँव झण्डू हो गइल!

दाखिला जसहीं सियासत में भइल शैतान कऽ
नाँव रातो-रात ओकर "दीनबन्धू" हो गइल!

मिहनती ऊहो रहल पहिले बहुत, लेकिन 'शशी'
नौकरी मिलते कलर्की कऽ, निखट्टू हो गइल!

(दू)

भले ऊ डकइती करत खा मराई!
शहीदे क' ओकरो के दर्जा दिआई!

रहल जे कसाई, इलेक्शन का पहिले
इलेक्शन का बादो रही ऊ कसाई!

मुहब्बत अयोध्या क' झगड़ा त' हऽ ना
कि राजा से परजा ले फैदा उठाई!

बइठि के जो खाई त' कहिया ले केहू
नवरसा का बल पऽ 'बड़कवा' कहाई!

बजट तऽ सितम्बर में जारी भइल बा
मई में, गरीबन ले पहुँची रजाई!

देखइहऽ कबो जिन् उ' दिन, ए विधाता
जरीं देखि के, आन कऽ हम कमाई!

बना के 'शशी', फेरु जनता के उल्लू
सियासत, तवायफ-मतिन मुस्कियाई!

❑ प्रवक्ता (अंग्रेजी), कुंवर सिंह
इण्टर कालेज, बलिया

लोकतंत्र महिमा : भाग-2

हीरालाल 'हीरा'

जाड़ा हाड़ कँपावे लागल
सभकर फिकिर बढ़ावे लागल
जरी कहाँ ले गोंइठी-पुअरा
अदिमी खुदे फुँकाइल जाता।

अगहनिया बा दुअरा गाँजल
गोहूँ मटर बोआए लागल
बेमसरफ के चिउरा कूटे-
खातिर सभ बउराइल जाता।

स्वारथ में सभ बा लाचार
ऊपर से चाहीं अधिकार
करतब केहू जानत नइखे
कहला पर तरनाइल जाता।

समाजसेवी गली-गली
चाल-ढ़ाल बा सब नकली
बैनर-पोस्टर माथा लदले
लोगन पर गढ़ुआइल जाता।

का नीमन का बाउर बाटे
बानर रीन्हत जाउर बाटे
भेंड़ि चाल में जनता दउरे
सभकर मती मराइल जाता।

एम०पी०, एमेले, परधानी
पइसा खरचे, जइसे पानी
देखि के इनकर धमाचउकड़ी
गाँव-नगर अउँजाइल जाता।

टीका लगते भइले साँड़
रोक-छेंक ना कवनो डाँड़
मनबढ़ई में अगल-बगल के
जगह जमीन लिखाइल जाता।

साड़ी, कम्बल, कबहूँ चेक
कबहूँ लोला देले फेंक
जनता के का हाल बताईं
ओतने में उतराइल जाता।

आतंकी घुसपैठी आवे
सैनिक रोके, जान गँवावे
कवनो जदि पकड़ाइल ओमें
झूठो के चिचिआइल जाता।

रिस्ता नाता सिकुड़ल जाता
आपसु में सब बिछुड़ल जाता
एह बिकास से का फैदा जब
लोक-भाव कठुआइल जाता।

❑ नई बस्ती, रामपुर उदयभान, बलिया

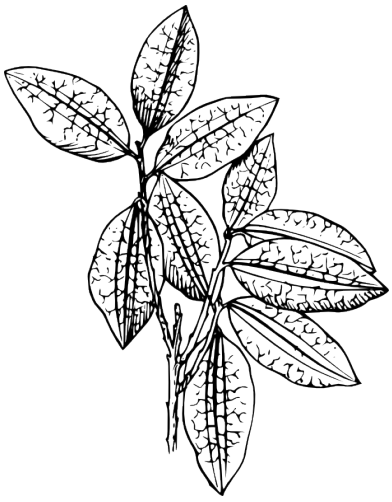

घर सुधरी त जग सुधरी

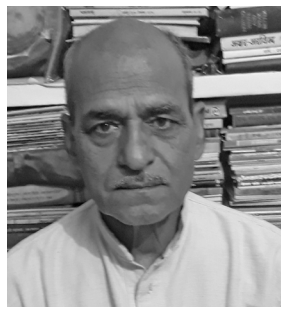

विजय मिश्र

ओह दिन बाँसडीह जाए के रहल। मोटर साइकिल निकाल के स्टार्ट कइनी त पेट्रोल कम बुझाइल। कुछे दूरी पर पेट्रोल टंकी रहे, उहाँ पहुँचते सामने से एगो लइका हमरा बाइक के आगे आपन गाड़ी पेसि के तेजिए में ..... देखावत बोलल– "पचास के दे दऽ।" तेलो वाला पचास रुपया लेके ओके तेल देबे लागल। हमरा कुछ खुनुस त बरल, बाकिर सोचनी कि ओके सामने से हटावे के गरज से तेल वाला ओके पहिले दिहलस। तेल लेके ऊ गाड़ी घुमवलस आ मुँह भरल पान के पीत मारत चल गइल। हम भकुआइल ताकते रहि गइनी, जइसे हमरे से कवनो गलती हो गइल होखे। – "इहे लाटसाहिया तहके ले डूबी।" भुनभुनात तेल वाला हमरा ओर ताक के बोलल– "बाबा अइसन लोग कबो ना सुधरी। बोलीं केतना के दे दीं?"

– "सुधरी हो, समय पर सब सुधरि जाला। तू– "" आ हम ठीक रहीं जा बस।" हम दू सौ रुपया आगा बढ़ावत कहनी आ आपन राह पकड़नी। रास्ता में ओह लइका के मनसोखई मन में घुमरियात रहे। कहे के त कहा गइल– सब सुधरि जाई, बाकिर कब आ कइसे?

नया पीढ़ी के पसन ना पसन, खान–पान, संग–साथ आ रहन–चाल कुल्हि में, फरक आ गइल बा। सोझहीं उन्हन क अनेति देखियो–सुन के, केहू बोलत–टोकत नइखे। ना कवनो बिचार बा, ना व्यवहार। मनबढ़ूपन आजादी बन्द हो गइल। सोचला में ब्रेक लाग गइल। गाड़ी स्टार्टे ना होखे, किक मारीं तबो ना। आखिर पसीना–पसीना हो गइनी।

उहाँ सटले मिस्त्री के दुकान रहे। गाड़ी डगराइके, उहाँ ले गइनी। मिस्त्री से बतवनी त ऊ कहलस, "रुक जाईं अबे देखतानी।" एही बीचे दूगो पढनिहार लइका जवन सिगरेट पीअत रहलन सऽ बोलबाजी कइलन सऽ– "बबुआ के बिआह में मिलल रहल हा का?"

एक त हमार मन अऊँजाइल रहे आ इन्हन के मजाकिया लहजा में कहल बात सुनि के मुँह से निकल गइल– "ना एक बबुआ, ई जे तहन लोग सिगरेट खींचऽ ताड़ऽ लोग ईहे सब फजूल पइसा, बचा के हम बाइक खरीदले बानी।"

लइका लोग झेंपल आ सिगरेट फेंक के चप्पल से बुतावत बोलल लोग– "बाबा, खिसिया गइनी का? मिस्त्रियो हमार गाड़ी एने–ओने देखलस फेरू तेल बन्द क के स्टार्ट कइलस, गाड़ी स्टार्ट हो गइल, बतवलसि ओभर–फ्लो रहल हा। गाड़ी खाड़ करीं त तेल बन्द क दिहल करीं, कवनो दिक्कत ना होई। हमहूँ गाड़ी लेके आगा बढ़ गइनी। कचहरी में कुछ काम रहे। घरे अइनी त चाय पानी का बाद जब सलसन्त भइनी त आजु के बात फेरू मन में घूमे लागल। दू तरह के व्यवहार हम तुलना कइनी– एक तरफ ऊ उदंड लइका पान के पीक लगहीं थुकलस, छींटा परवलसि आ सान से चलता बनल। केहू कुछ बोलल–टोकल ना जइसे थथमा मार गइल होखे। दुसरा तरफ लड़िकन पर हमरा बात के लिहाज आइल आ सिगरेट फेंक के बुता दिहलन स। टोकटोक के असर पड़ल, लिहाज कइलन सऽ। हमरो विसवास बढ़ल कि जब कहीं कुछ गलती लउके उहाँ घर के हर बूढ़ बुजुर्ग, समाज के सब समझदार लोग यदि सही मन से टोकटाक करी त स्थिति में कुछ त सुधार होई। जब घर के गार्जियन अपना परिवार के लड़िकन क ढेर मन बढ़ाई त लड़िका अइसहीं असभ्य आ उद्दंड होत जइहें सऽ। पहिले घर सुधरी, तबे जग सुधरी। ●●

जेनरेशन गैप

अरविन्द कुमार सिंह

शैलेन्द्र जी से मिले खातिर ढेर लोगन के भीड़ लागल रहे। ऊ चपरासी से पुछलन कि मिले वाला लोग में कवनो जन प्रतिनिधि त नइखे? फेर आपन आफिस के काम जल्दी जल्दी निपटवलन। आजु उनका इकलौता बेटा के जनम दिन रहे। सोचलन कि आजु हम अपना परिवार के संगे कवनों ठीक–ठाक होटल में खाना खाइब। घरे फोन कइला पर पता चलल कि बेटा अपना मेहरारू के लेके अपना दोस्तन के संगे बाहर खाए–पीए के प्रोग्राम बनवले बा। अपना लइका से बात करिके मन के सब बात बतवले। उनका लइका पर कवनो फरक ना पड़ल। लइका कहलस कि हम अपना उमर के लइकन के संगे पहिले से प्रोग्राम बनवले बानी।

शैलेन्द्र जी के आछा ना लागल। ऊ सोचे लगले कि कवनो बहुत बड़ा डिमांड हम कइले ना रहनी हँ। अपना लइका के हम सब डिमाण्ड पूरा कइले बानी। बारातघर, एगो होटल, आउर एगो जिम खोलवा देले बानी कि ओकरा कवनो दिक्कत ना होखे। दिल्ली पढ़े के कहलस, फेरू बंगलोर जाये के जिद कइलस। सभ बात मननी। एकरा पढ़े जाए खातिर एगो गाड़ी भी कीन के दे दिहनी।

आफिस में भीतर एगो आराम करेके कमरा रहे। सोचलन की दस बीस मिनट आराम कर लीं। ओह बेरा उनके आपन बाबूजी के याद आवे लेंग। दसवीं क्लास में अपना स्कूल में हम सबसे अधिक नम्बर पवले रहली। बाबूजी सोचलन की आई.आई.टी. या कवनों बड़ इंजीनियरिंग कालेज से बी0टेक कइला पर जिनगी बन जाई। वो समय में (1977–1978) फिजिक्स, मैथ, केमिस्ट्री के नम्बर के आधार पर बढ़िया कालेज में एडमिशन हो जात रहे। उनकर बाबूजी ओही स्कूल में गणित पढ़ावत रहलन जनवा में उ पढ़त रहले। 11वीं में आके उ मेहनत कइले, अउर अच्छा नम्बर आइल। 12वीं में आइके संगत गड़बड़ा गइल। कुछु उमिरो के तकाजा रहुवे। ए उमिर में लइकिन के चकर में पड़ल कवनों अचरज के बाति ना होला। गांव में केहुके रिश्तेदारी में एगो सुनर लइकी आइल रहे। ओहि घर में इनके साथ के एगो लइका पढ़त रहे। उ गणित में कमजोर रहे। एक दू बार उ आपना घरे बुलवलस। इ चहितन त उहे इनका घरे आ जात। लेकिन वोही लइकिया के चक्कर में इ ओकरा घरे चल गइलन। उहो इनकर शकल सूरत अउर पढ़ाई के बारे में जानि गइल रहल। उ 11वीं में पढ़त रहल। जब तक उ गाँव में रहुवे, इ कई बार "गणित" पढ़ावे पहुँचे लगलन। एही बीच नाटक नौटंकी देखे के शौक जाग गइल। शादी बिआह में नौटंकी देखे खातिर भीड़ लागत रहे। मरजाद के दिन त आउर माजा आवे। ओ समय नौटंकी में जेतना नाचे वाली आवे, ओकरा में ओतने भीड़ लागे। दिक्कत इ रहे कि अपना गाँव में देखे के ना मिले। पढे वाला लइका भला नाच नौटंकी देखी। इ समाज के लोग ना माने।

बगल के एगो गाँव में नाच पार्टी आइल रहे, पलान बनल की एके जरूर देखल

जाई। शैलेन्द्र जी के पढाई पर कम अउर नाच नौटंकी पर ध्यान ज्यादा रहल। एही बीच छमाही इम्तेहान भइल। इनकर गणित में बहुत कम नम्बर आइल। बाबूजी अउर माई परेशान रहल लोग। शैलेन्द्र जी से पुछाहट भइल। बतवलन की गणित के कुछ टापिक समझ में ना आवेला। हाईस्कूल के गणित अउर 12वीं के गणित में बहुते अन्तर बा। इनके बाबूजी एह बात पर नाराज रहले कि ई बाति बतावे के चाहत रहे, फेरू से सब पढवलन। सही बाति त रहे कि ई पढ़ते कम रहलन। ओ दिन ई राति में 11–12 बजे नाच देखे चलि दिहलन। तकिया पर चादर ओढ़ा दिहलन ताकि लागे की हम सूति गइल बानी। इनकर बाबूजी अब इनका उपर ध्यान देत रहलन, इनका ई ना पता रहे। आखिर बाप, बापे होला। राति के 4–5 बजे लौटि के बिस्तरा में घुसि गइलन। स्कूल जाये के पहिले इनकर बाबूजी बड़ा प्यार से बोलवलन।

इनके माई भी उहवें खाड़ा रहे। चेहरवा थोड़ा उदास रहे। एकरा पहिले की ई कुछ समझस, कसिके एगो झापड़ गाल लाल कर देहलसि। माई आगे बढ़ि के बाबूजी के रोकलस। वइसे भी ऊ दूसरा झापड़ा मारला के मूड में ना रहले। "जइसन मन करे अब करऽ। तू बड़ हो गइल। बस ई झापड़ याद रखिहऽ। अब कबहुँ ना मारब, ना पूछब। जाहाँ मन करे जा, नाच देखऽ चाहे कउनो लइकी के गणित पढ़ावऽ, लेकिन इ बाति यादि रखिहऽ कि तोहरा पर बड़ घमंड हमन के कइले रहनी। तूँ तोड़ि देहलऽ।

शैलेन्द्र जी के ई अन्दाजा ना रहे। झापड़ खइला के बाद बड़ा तेज गुस्सा आइल, लेकिन बाबूजी के बाति सुनके दुख भइल। महाभारत पढ़ले रहलन। भीष्म के प्रतिज्ञा यादि आ गइल। उहें किरिया खइलन की अब बाबूजी के देखा देबि। नाच देखल बन्द। पढ़ला के अलावा अउर कउनो काम नाहीं। कई बेरि माई फुटबाल खेले खातिर गाँव के स्कूल के फील्ड पर भेजे के सोचलस। लेकिन उनकर प्रतिज्ञा ना टूटल।

जब रिजल्ट आइल, इनका स्कूल के सब मास्टर चिहा गइलन। अब तक के सब रिकाई टूट गइल रहे। गणित, फिजिक्स आउर केमिस्टरी में 85 परसेन्ट से अधिक नम्बर रहे। ओ साल आई.आई.टी. में सेलेक्शन त ना भइल, बाकिर नम्बर के आधार पर एगो अच्छा इंजीनियरिंग कालेज में एडमिशन हो गइल। इनके बाबूजी के इच्छा रहे कि एक साल तैयारी करिके आई. आई.टी. से पढसु। शैलेन्द्र जी के सोच रहे कि एक साल बरबाद काहे करीं। ब्रांड नाम खातिर एक साल पीछे होखे में नुकसान बा। इंजीनियरिंग कइला के बाद इनके तुरंत नौकरी मिल गइल। पहिले सोचलन कि सिविल सेवा या कवनों अउरो प्रतियोगी परीक्षा में बइठीं। लेकिन ना बइठले। इनकर मन इंजीनियरिंग के काम में लाग गइल। बाबूजी अउर माई शाबासी दिहल। बाबूजी जब अपना झापड़ मारला पर दुखी होखे लगलन तब शैलेन्द्र जी बतवलन कि अगर उ झापड़ ना पड़ित त ऊ शायद आई.टी.आई. या पालिटेक्नीक ज्वाइन करतें। उ झापड़ इनकर जिन्दगी बदल दिहलस। ज्वाइन कइला के बाद जब बाबूजी मिललन त इनसे एगो वादा करेके कहलन। शैलेन्द्र जी त अब श्रवण कुमार बनि गइल रहलन। वादा कइलन कि जिनगी में कबहूँ केहू के दिल ना दुखाइब। इ वादा जिनगी भर निभवलन।

आशीर्वाद के फल रहल की आजु ओही विभाग के इंजीनियर इन चीफ यानि विभाग के मुखिया बाड़न।

चपरासी चाय खातिर आवाज दिहलस। चाय पी के, अम्बेसडर गाड़ी में बइठि के घरे चल दिहलन। रास्ता भर इहे सोचलन कि आपन इकलौता बेटा के पाले में कौन गलती कइलन। जवन चहलस, कइलीं। रुपिया, पैसा के कवनो कमी नइखे। जब बातचीत छेड़ऽ त लइका "जेनरेशन गैप" के बाति करेला। लागल कि शायद ओ तरह के झापड़ या दंड ना दिहल उनकर सबसे बड़ गलती रहे। अब त देर हो गइल बा। अब उ हमरा अनुसार थोड़े चली। 58–59 साल के होई गइनी। अब चला चली के बेरा में का समझाईं। बढ़िया रही कि हमहीं समझ जाईं। हमनी के जनरेशन खीलि सहे खातिर बनल बा।

तब तक घर पर आके गाड़ी रुकि गइल। अंदर सोफा पर मेहरारू उदास होके, नया कपड़ा पहिन के बइठल रहली। पुछलन कि का बात बा? बतवली कि बबुआ के जन्म दिन पर ओकरे साथे जाये खातिर तैयार भइनीं हा। लेकिन उ त अउरे प्रोग्राम बनवले बा। "आरे उ नया जनरेशन के लइका हऽ। ओकरा के हम उमिर लइकन के साथ इन्ज्वाय करे द। हमनी के अलगा से पार्टी मनावल जाई। हँ, बीयर पीये दीहऽ बस।" शैलेन्द्र जी बखूबी अपना कष्ट के छिपा दिहलन।

❑ 6/8, विनीत खण्ड-6,
गोमतीनगर, लखनऊ-226010

गुदगुदी में लोर

आशारानी लाल

अबहिंए सोझा एतना न परछाई रेंगत रहीसन कि ना बुझाय कि कवना के ढेर निहारीं आ कवना के कम। मन अउँजिया गइल रहे। देखलीं कि कुल परछाइँयन बिचे तऽ हमहीं खड़ा बानीं, ई कुल तऽ अपने बाड़ीसऽ, साथे–साथे ओमें जे लोगवो लउकता–ऊहो अपने बा। लगलीं निहारे। असल में बात ई रहे कि हम अकेलहीं बइठल रहीं।

अकेलहूँ बइठे के एगो बेरा होला। ई बेरा कब होई आ कब एकर सामना करे के परी– एके केहू जानेला ना। हम तऽ अपना भर जिनगी ई बात सोचलहूँ ना रहीं, बाकी जब कपारे पर गइल, तब का करीं? हमार बाबूजी हमार बियाह भरल–पूरल घर में कइले रहन। ओह घरी हमरा घर में खम–खम लोग भरल रहत रहे। हमरा दूगो ससुर आ दूगो सास रही। हम दूनो ससुर के बड़का आ छोटका बाबूजी कहत रहीं, ओसहीं सासो लोगिन के बड़की आ छोटकी अम्माँ कहल करीं। बहुत दिन ले हमरा ना बुझाइल कि एह बड़का–बड़की आ छोटका–छोटकी में, के हमार अपन सास–ससुर बा। हमरा ई बात केहू से पुछहूँ के धिधिरिक ना परत रहे, हँ मने–मने चिन्हे परिचे के सोचत रहत रहीं। एह सोचला–बिचरला में केतना दिन–रात बीत गइल, ना बुझाइल, काहे कि सूरज बाबा क उगल आ बूड़ल देखे के तऽ कबो हमके मोके ना भेंटात रहे।

सूरज आ चाँन त ओह घरवा के लोगवे रहे। कहते बानी कि ओह घर में बहुते लोग रहे। बियाह का पहिलीं सुनले रहीं कि हमार दुलहा छव भाई आ चार बहिन रहन। ओहू में ऊ सबसे बड़ भाई रहन। घर क बड़की पतोह बनला से सबकर अरमान हमरे पर टीकल रहत रहे। घर में दिन–रात देवर–ननद लोग भरल रहत रहे, तब हम कब सूरज आ चान का ओरी ताकीं। हमार मनवा तऽ ओही लोगिन क देख–देखके कपसल रहत रहे। केहू क सोझा तऽ हम खटिया–मचिया पर बइठते ना रहीं, कबो बइठे के मोको भेंटाय तब भड़ से केवाड़ी भुड़के आ घर में केहू न केहू हाजिर हो जात रहे– ई बात कहते–कहते कि अरे! हमार भउजी अकेले बइठल बाड़ी का? ऊ तऽ उदासिए गइल होइहन, चाहे अपना नइहर क अँगना में पहुँच गइल होइहन, तबे नऽ कहे लोग कि– का–ए–भउजी तोहके के पकड़ले रहल हऽ – कि कूदके खटिया पर से नीचे बइठ गइलू हऽ। तोहार भइया लोग तोहके दबोचले ना–नऽ रहल हऽ? का– करीं, हमरा त ई कुल बात ओह घड़ी बुझाते ना रहे।

ऊ घर हमार ससुरा रहे, एहिसे उहाँ क छोटो लइका–लइकी हमसे ओहदा में बड़े रहे। छोटो से अदब–लिहाज आ इज्जत से बतियावल हमार फर्जी बनत रहे। हम ओह घर क पतोह रहीं चाहें दुलहिन–बलहिन बनल रहीं तब हमके चाँहीं कि भुंइयाँ चटाई चाहे बोरा बिछा के बइठीं। कवनो देवर ननद से ऊपर हमके बइठे के ना चाँहीं। मने–मने एह बात के ठेस हमके बहुत चोट पहुँचावत रहत रहे, बाकी देवर लोग कुछु–कुछु कहिके हँसावत रहत रहे तब मन क घाव छू मंतर हो जात रहे। हमहूँ ओह

लोगिन क बाते में सब खुनुस भुला जात रहीं।

एक सबेरे से सास–ननद क आवाजाही शुरू हो जात रहे, रोज सबेरे भोर होते होते, जब चुहचुहियवा बोलेले, ओही घड़ी हमके अपना देंह क काम से फुरसत पावे के परत रहे। सब लोगवे कहत रहे कि दुलहिन क उठल, हाथ–मुँह धोवल, नहाइल–धोवल केहू के देखे के ना चाँहीं। हमहूँ इहे करत रहीं। डर लागत रहत रहे कि ननद लोग के घर में घुसे के बेरा हो जाई। अवते लागी लोग हाथ चमका के आ थपरी बजाके हमके चिकोटी काटे; साथहीं तरह–तरह क बोलो बोली– कि राते का भइल रहे ए– भउजी? हमार त मन करे कि एह लोग के लगाईं– दू चपत, बाकी हमार खीस जुरते गायबो हो जात रहे।

कबो–कबो हम इहे सोचीं कि बाबूजी कहले रहन कि हम ओह घर क बड़ पतोह बन के जाइब तब बहुते मान–मर्यादा आ इज्जत पाइब। बाकी इहाँ तऽ हमहीं सबसे छोट बनल रहीं। असल में बाबूजी त दुअरा पर रहत रहन, घर का भितरी का होला– ऊ जनते ना रहन। हम केतनो पढ़ल लिखल रहीं त का, एह घड़ी आ ओह लोगन क बिचे हमार कुल पढ़ाई–लिखई क गिआन ओसहीं भुला गइल रहे– जइसे ऊधव क गिआन गोपिन लोग का सोझा। कहे के ई बा कि ओह घर में सब एक दूसरा क भाई–बहिन, माई–बाप, चाचा–चाची चाहे बेटा–बेटी क एगो गुटे रहे। ई गुट सियारन क बोली जब न तब बोलल करत रहे। जइसे एगो सियार हुँआ–हुआँ करेला तब कुल्ही एके साथे हुँआ–हुआँ करे लागेलन सन। असहीं घर में पतोहन क कवनो बेजाँय चाहे बोली–चाली पर भर घरवे चिल्लाए जागत रहे। पतोह क कइसे रहे के चाँहीं, केकरा से बोले–बतियावे के चाँहीं, कबो नइहर क बखान ना करे के चाँहीं एह कुल नियम–कानून क जानकार पूरा घरवे रहे, एहिसे सब एकही बोली एक्के साथे बोले लागे। ई कुल ओह घर क रहन–चाल देखके हमहीं नाहीं गाँव जवार क सब पतोह लोग चुपा गइल। मेहरारून क इहे चुप्पी ओह लोग के देबी बना देलस– ए बाबूजी।

बाबूजी देबी क पदवी पाके मेहरारू लोग खुश भइल कि ना– ई बात तऽ केहू पुछबे ना कइल। तब अब रउरा सुनी कि राउर दीहल गुलजार घर में कइगो पतोहन के अइला से खूबे लोग बढ़ गइल। हम ओह घर क खाली बड़की पतोहे ना हीं, हमरो बेटा–बेटी, पतोह–दामाद, नाती–नतकुर, पोता–पोती बहुते लोग आइल आ ऊ घर अब बवरी लोगिन से खमच गइल रहे। ओह घर में ए– बाबूजी हम बहुते खुश रहीं, दिन–रात सबका बीचे चहचहातो रहीं, बाकी भइल का कि राउर एह दुलारी धिया चाहे भगमनिया बेटी क भगिए एक बेरिए उलट–पटल गइल। ऊ लोगिन क बीचे रहियो के अकेल हो गइलीं आ उदास रहे लगलीं।

बाबूजी भरल घर क लोगवा तऽ अबो रउरा बेटी के खूबे पूछेला, बोलेला, बतियावेला, बाकी सोझा केहू लउकेला ना। ऊ लोग रउरा बेटी के हँसइबो करेला, कबो–कबो चिकोटियो काटेला तबो कवनो मनई–मानुष सोझा रहिके ई कुल ना करेला। रउरा पूछब कि तब ई कुल कइसे होला– तऽ सुनी! एगो छोटहन करिया मशीन जेके लोग मोबाइल कहेला– उहे लोग हमरा हथवा में धरा देले बा आ कहले बा कि ई जब इ मोबाइल घनघनाई तब हम एकर एगो बटन दबाके अपना कान में सटा लिहल करब। हमके ओह लोगिन क कुल बात ओहि में सुना जाई। सब बतिया सुनियो के हमार मन ओह लोगिन के देखे खातिर ओसहीं तरसत रहि जात रहे, जइसे–जाड़ा–पाला क दिन में दुअरा पर पसरल घाम सुन के ओके लोढ़े खातिर भितरी घर में बइठल पतोहन के। सबकर बोली– बात आ बिचार तऽ कबो–कबो ओह मशीन से सुनाइए जाला, बाकी ए बाबूजी– ऊहाँ हमके कवनो मनई–मानुष ना लउकेला। ऊ घर जेके एक बेरी मनसाइन घर कहल जात रहे, ओइजा बात–बात में हँसी–ठहाका गूँजत रहत रहे– अब ओइसन घर तऽ लउकबे ना करे। ई मनवा लोगिन से भरल–पूरल घर में रहियो के सबसे बोले बतियावे खातिर छटपटाते रहि जाता, ओसहीं जइसे पानी से बहरा आके मछरी छटपटाले।

साँच पूछीं तऽ ए बाबूजी! अब हम रउवा के गुहार लगा के ई कहल चाहतानी कि राउर सउँपल लोगिन से भरल घर में हम अकेल भऽ गइल बानीं, जबकि घर भर क सब लोगवा हमार अपने बा। एही घड़ी राउर सोच कि दू–गो ससुर आ दूगो सास अवरी दसगो भाई–बहिन क बिचे हमरा के रउवा भेंजले रहीं– कुल पुरान बात भऽ गइल बा। अब ई घर लोगिन क नया गिआन से भर गइल बा। घर बाहर सब जगह एह मोबाइल क हवा एतना तेज बह रहल बा कि ऊ अब लूहे बनके नइखे रह गइल, ऊ आन्ही–तूफान क रूप ध्यार लेले बा। जेकरा लगे मोबाइल बा ऊ केहू दूसरा का ओरी तकते नइखे। हरदम ओही में ताकत–झाँकत

रहऽता। एगो कवि गागर में सागर क बात कहले रहन, बाकी इ नन्ही चुकी मोबाइल जइसन सीसी में तऽ पूरा दुनिया–जहाने भर गइल बा। बाबूजी! एहिसे छोट–बड़ सब एके अपना हाथे में लेले रहता। इहे कहे के परता कि– "पास रहिके भी हैं कितनी दूरियाँ, हाय रे इंसान की मजबूरियाँ।" ई मजबूरी हमरा जइसन सब उमिरगरो लोगिन के भऽ गइल बा।

अब हमरो चहचहात सुख के दिन क अन्त हो गइल बा। लगता कि ऊ दिनवे उलट–पलट गइल बा। बोले–बतियावे के तऽ सभे बोलत–बतियावत बा, बाकी सोझा केहू लउकत नइखे। पछतावा इहे बा कि हम एह नया पढ़ाई के तऽ पढ़लहूँ नइखीं नऽ– एहिसे अब सब लोगिन का बीचे बउराहिन बन गइल बानी। हम तऽ जब पढ़त रहीं त ना– त् रेडियो देखले रहीं, नऽ टी0बी0, तब आज क ई नया–नया मशीन जेके– टच मोबाइल, कम्प्यूटर आ लैप–टाप कहल जाला कइसे जानब? अब ई कुल तरह–तरह क मशीन आके सब जगहा अपन अइसन तूफानी हवा चला देले बा– कि हमरा अइसन उमरदराज पुरनका लोग एह भरल घर में रहियो के अकेल भऽ गइल बा। पुरनका लोगिन क अकेल बइठल देखिके घरवा क कुल मनसाइन चहचहात बतिया झुण्ड बना के बेर–बेर झूमत–झामत चल आवत बाड़ी सऽ आ ओह लोग के घेर लेत बाड़ीसन। एह झूमत इयादन के परछाईं सब ओरी पसर जाता। कबो–कबो मन मार के, हमरो के बइठल देख के ई कुल पुरनकी बतिया गुदगुदावे लागत बाड़ी सऽ तऽ कबो जोर–जोर से चिकोटी काट लेत बाड़ीस, तबो हमार मनवाँ हँसत–बिहँसत नइखे, बलुक दुनू अँख्यिा भर जा तारीसन। काहे अइसन होता, हमरो नइखे बुझात– गुदगुदी में ई लोर कइसे बहे लागता? अकेले बइठके हँसलो तऽ हम नइखीं नऽ जानत तब बुझाता कि ई रोवलके आसान बा। एह उमिर में सबका बीचे रहियो कि, हमरा अस लोग अब अकेलहीं भऽ गइल बा।

लागता कि अब असहीं अकेल चुपचाप बइठल–बइठल हमनी के जिनगी के ई दिया एह इयाद क परछाईंन के बीचे कब आ कइसे बुता जाई– ए घरी के लोग जानियो ना पाई। बुताइल दिया बाती क बास जब मोबाइल वाला लोगिन का नाक में जाई तब न लोगवा हड़बड़ा के दउरी–भागी।

❑ काकानगर, डी-2/147, नई दिल्ली-110003

काल करोना

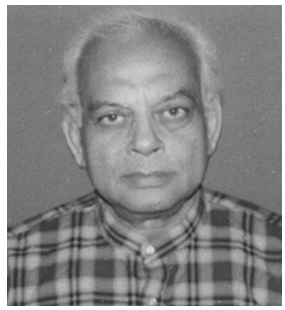

राजगुप्त

– "सुनऽ ताडू हो!" राज अपना मेहरारू के हाँक लगवले।

– "बोलीं जी" रानी सवचली।

– "अबले चाय ना मिलल"

– "दूध नइखे आइल"

– "ऊ काहें?"

– "रोज हम लिआवत रहली हँ, अब रउरा लिआइल करीं।"

– "काहें के आपन आदति बिगाड़ऽ ताडू? दूध लिआवे में तोहार टहललो हो जात रहल ह। एक पंथ दू काज।"

– "उल्टे चोर कोतवाल के डाँटे। हम दउड़ीं आ रउरा टीवी देखीं। छुटी बा त हमार हाथ बटावे के चाहीं। लाक डाउन में घर से कइसे बहरिआई हम? अब रउरे बजार पेठिया करे के पड़ी। तनि हमरो मरम बूझी कि कवना धान के होरहा होला? एक दूजे खातिर बनल बानीं जा। आफिस बन्दी में तनिको त नेवर होखी। "

– "पहिले काहें ना बतवलू ह। अब असकति लागता? हम का जानत रहली हँ कि दुइये दिन में आपन बानि बिगाड़ लेब?"

– "साफ साफ कान खोलि के सूनि ली। हम मुँह पर अन्हवट लगा के बजारे ना जाइब। जे चारि दिन पहिले हमके देखले होई उ आज देखी त का कहीं? "मय मेहरारू मास्क पहिर के बजारे जा ताड़ी स। हमरा से बजार–बेसाह ना होई। आधा कीनब आध ा भुला जाइब। के मेहरारू के डाँट खाई। खोभसे लगबू कि हई ना लिआइल बानी त हऊ काहे भुला गइली।" करोना मलेछवा के खाली मेहरारुअने से डाह रहल ह। लोग क मुँह पर पर्दा लगा के सज्जी दुनिया के जैन मुनि बना दिहलसि ह। चोर लेखा गमछी लुगा से मुँह लुकवा के बहरी गइला पर के चिन्ही कि के जाता? कइसे कहाइबि कि फलाना बो हई। ना लिपिस्टिक, ना पाउडर, ना काजर, ना फेसियर सज्जी सुन्दर घर (व्यूटी पार्लर) बन्द बा। बार करिया करे वाला (डाई) कहियने से ओराइल बा। पाकल बार लेके बजार निकलल आकाश से जोन्ही तुड़ला के बराबर बा। सिंगार के समानन के दोकान कहियने से बन्द बा। अइसना में कहीं जा त मैडम जी कहे वाला दोकानदार आन्टी आ दादी कहिहें स। जवन सूनि खीसि बरी। रेवती रेमण जी कवना अपना जाति के बुझली ह। कहल जाला हँसुआ अपने ओरि खीचेला। इहाँ त ठीक उल्टा हो गइल। मेहरारून के कवनो छूट ना दे के लोहा लोहे के काट ली, सज्जी सुख मेहरारून क काटि दिहली। मेहरारू होके मेहरारून क मरम ना बुझली। बलुक अउरी कसि के थोपि दिहली। इची साबुनो के दाम कम कइले रहती। सवतिया डाह में अउरी हनि दिहली। दोहरा मार परल हमनी पर। एक त करइली, दोसर नीम चढ़ल। अपने सई बरिस पहिले के दशा देखा दिहलसि। मेहरारू पहिले चउकठ ना लाँघत रहली। हरामजादा करोना बड़ी देखजरना बा। सज्जी देश में लाक डाउन। खबरदार बे मुँह बन्हले घर से केहू निकल गइल। पुलिस लाठी भांजि के सोझ क दे तिया। अइसन अनेति केहू देखले सुनले ना रहल ह? एगो चिरई के पूत ले सड़की पर ना लउके? अइसन मुअना के मुड़ी अइँठ देबे के चाहीं ना त जन्मते नून चटा देबे के चाहीं। मेहरारून के सज्जी सिंगार करोना लूटि लिहलसि। ऊपर से का मेहरारू का मरद सभकर सुन्दराई तोपि दिहलसि। बेगर मुँहतोपन मास्क के पुलिस चालान क दे तिया, जुर्माना ठोंकि दे तिया।

सरकार के अनेति देखीं। सरकार मीना बाजार ना खोलि के शराब के दोकान खोलवा दिहलसि। जेकर बानि छूटत रहल ह ओके सराबोर क दिहलसि। के नइखे जानत कि शराब से जेयादा सिंगार के समानन पर टेक्स बा। मेहरारू हाडा–माटा अस लूझि पड़ती स। हजारों हजारो बरिस पहिले असुर तपस्या क के देवतन से वरदान पावंत रहले। बाकिर जब ओन्हनी अत्याचार बढ़े लागे त भगवान ओन्हनी के मारे खातिर अवतार लेत रहले। सइ बरिस पहिले प्लेग महामारी करोड़ो आदमी के इ कीट–पतिंगा का तरे मुआ दिहलसि। अबके ओही रूप के दोहरावत चीन बुहान में करोना के कीड़ा बना दिहलसि। जइसे ऊंखि में देंवका आ ईंटा में लोनिया लागि जाला। ओही गने चीन से बरदान पाके करोना के कंस उपटि गइल।

बाजा कहीं बाजत नइखे। खेतन में फूल सुखाता, मन्दिर बन्द बा। भरल रहे वाला बाजार मेहरारून बेगर सुन्न बा। कब्रिस्तान अस सुन्न सपाट। ट्रेन, बस कुछुउ नइखे चलत, जे जहाँ रहे महिनवन से ओइजे लुकाइल बा। होली में जे छुट्टी पर आइल रहे उ लवटि के गइल ना। स्कूल कालेज बन्द। आदिम जमाना के आदमी जइसे। कपड़ा धोवे फीचे वाला धोबी नइखे मिलत। एक से एक झरेला लोग दाढ़ी बार बढ़ा के सधुआ गइल बाड़े। कैंची आ उस्तरा में ले करोना? लोगन के बहरी के हवा खाये खातिर बाया बाया तरसि जाता। किसान के मेहनति पर पानी फिर जाता। कपार पीटि क भूखि बुता ले ताड़े। खेत के सब्जियों खेते में सड़ि जाता।

अछइत चीजु आ मिले ना। मुख्यमंत्री लोग कहल कि शहर छोड़ि के केहू घर वापस ना जाई, सभके खाना दरिये पर मिली। मकान मालिक किराया ना मंगिहें। बाकिर भइल एकर उल्टा। लहकावे आ बहकावहूँ वाला एकर फैदा उठवलन सऽ। किराया के कारन आ भूखि के मारे मजूरा शहर छोड़ि भागे लगले। भाग परा के शहर मजूरन से खाली हो गइल। सरकार सुरूवे में एलान क दिहलसि कि जेकर मिल फैक्ट्री में एकहू मरीज मिली त ओकर फैक्ट्री सील हो जाई आ मुकदमा चली। एकर नतीजा भइल कि डर के मारे फैक्ट्री बन्द करे के पड़ल। दाना खाना बेगर मजूरा भागे लगले घरे। कुछ मुख्यमंत्री लोग अपना बचन से पल्ला झाड़ि लिहल। "भूखे भजन ना होई गोपाला" मजुरा जान हथेली पर लेकर हजार दू हजार किलोमीटर जाये खातिर मेहनत कइके

छवरि ध लिहले। दुनिया के नउँवा अचरज देखि सुनि के सभके करेजा फाटे लागल। ठेला पर अपना परिवार के बइठा के घर घर के राहि पकड़ि लेहले। अइसन बली के बारे में सोचे वाला केहू ना मिले आ शहर में समाजिक संस्था गलियन में खाना बँटवावे। एकसुर में हमार महारानी बोलत गइली कि तबले बगल के रहे वाला डाक्टर बाबू आ गइले। आवते कहले राज बाबू! एगो गरमा–गरम चाह पिआवऽ। बइठकी में एगो चाय से काम नइखे चलत। राजबाबू नमस्कार चाचाजी कहिके उहाँ के बइठे खातिर कुर्सी खींचि लिहले। कहले, "बइठीं पाँच मिनट में दूध लेके आवतानी। रउरा ना आइल रहतीं त अबे हमनी से बहसे चलत रहि। रउरे चलते हमरो के चाय त अब मिल जाई।

चाय पीके डाक्टर बाबू बोलले। करोना सउँसे संसार के बदरी की तरे छांपि ले ले बा। जवना क कवनो ओरे छोर नइखे। हर सौ बरिस बाद कवनो ना कवनो महामारी आवेला। जल्दी जाये वाला नइखे। हर द हरवाह द नव हाथ के पैनो दऽ। एह बेमारी में केतना बरउवा बा, फइले–फइले रह। सटऽ सूटऽ जनि। एकरा बगैर मरद मेहरारू एकही पलंग पर कइसे सूतिहें। बेरि बेरि हाथ धोवऽ, काढा पीयऽ। बाहर से आइल बाड़ऽ त 14 दिन से 21 दिन अस्पताल जेल ले सेन्टराइज्ड? एकरा खातिर केतना प्रचार, मोबाइल पर भइल बा। बाप रे बाप! महावीरो जी से जेयादा बली, बाहुबली सिद्धि प्राप्त काल करोना। एकर एतना दवाई कि गिनला से गिनाई ना। अउरी बेमारी से संसार में केतना लोग मुअल ओकर गिनतिये ना? सुनि के करेजा काँपि जाता। हिरोशिमा से लगान लेके आइल बा। खूंखार बा त कुछ ले के जाई। कहीं कहीं त हजारनो आदमी साफ। चीन के बुहान शहर के लैब में एह बेमारी के फ्लास्क फूटि गइल। करोना बेमारी के कीटाणु चीन बना के रखल चाहत रहे। ओकर आबादी एतना बढ़ि गइल बा कि ओ के जगह–जमीन के जरूरत बा। सोचले रहे कि एह कीटाणु के फइला के अगल बगल के धरती के कब्जा क लेइब। बाकिर लैब में कीटाणु बुहान शहर के हवा में जइसे फइल गइले। इतिहास गवाह बा चीन करोना के बुहाने में ओकर समाधि बना दिहलसि। बाकिर जवन कीटाणु देश बिदेश में फइल गइले ओके, के रोकी? काहें से ओतना अमीर देशन में ओकर सुरक्षा आ दवाई ना रहे। तब हारि पाछि चीन से मंगावे के पड़ल। जवन दवाई दूसरा देश में ना लहल। बाकिर चीन दुसरा देश के अर्थव्यवस्था के बिगाड़ि के करोना के दवाई बेंचि के आपन अर्थव्यवस्था पटरी पर लिया दिहलसि। एक दिन दोकान बन्द कइला में दोकानदार के नानी इयाद आवे लागत रहली ह। एह पारी डेढ़ महीना के एकदम्म से लाक डाउन। जहाँ रोज झाड़ल बहारत जात रहल ह, ओइजा डेढ़ महीना ले दोकान के ताले ना खुलल। सभके कंगाल बना दिहलसि। जे रोज इनार खोनत रहल ह रोजे पानी पियत रहल ह, ओकर गुजारा कइसे भइल होखी? सरकारो का सफाई देई। ओकर त सबसे जेयादा नोकसान भइल बा। रेल, बस, ऑफिस एक–बाएके बन्द हो जा त अरबो–खरबों के रोज के आमदनी पर शनि देव के प्रकोप। बैंकन में अंगुली पर गिनला भर के ग्राहक ना। एहंगने भला केहू कइसे जीअल होई। केहू बेराम पाड़ि जाउ त डाक्टर किहाँ ले पहुँचे के कवनो सवारी ना। जे भूखि के मारि से गांव से दिल्ली गइल उहे आज ओइजा के भूखि से मारल गांवे लवटता। जइसे उडि जहाज के पंछी फेरू जहाज पर आवे। डाक्टर, पुलिस, सफाई कर्मचारी जेतना सम्मान के योग्य रहल हँ कही ओसे ज्यादा सम्मान पैदल चलिके घर आवे वाला लोग के होखल चाहत रहल ह। हवाई जहाज से ओह लोगन पर फूल बरसावे के चाहीं जे भूखि–पिआस के मारल जे हजारनो मील पैदल चलल। करोना महामारी से एगो फायदा त भइल ह, राजबाबू कि भुलाइल दोस्त, मित्र, रिश्तेदार इयाद परले ह। खूब गहि के सबसे बात भइल ह। फजिर के भुलाइल सांझि खां घरे आ जा त भुलाइल ना कहाला। वाह रे मोबाइल, खूब गहिके आमने–सामने बात भइल ह।

दोसर जबरदस्त फायदा इ भइल ह कि देश के गन्दगी मेटि गइल ह। सरकार जेतना पइसा गंगा सफाई खातिर पहिले खर्चा कइले रहे, करोना के चलते बे पइसा के गंगा माई साफ फरछिन हो गइली। भरि सीकम पानी पीये लायक हो गइल ह। बरिसन से मइल भइल मकान, घर, दोकान पर दवाई के छिड़काव से ऊ शुद्ध हो गइल ह। यमुनाजी त एतना ना साफ हो गइली ह कि पेनी में गिरल पइसा साफे लउकता। फेंड़न पर के धूरि गरदा एकदम से साफ। हरिअर हरिअर पतइन के देख मन जुड़ा जात रहल ह। जवना चिरइन के बोली ना सुनात रहल ह। उहो चिरई डाल–पात पर चहक चहक के फूदके लगली ह। बातावरण एतना साफ कि शुद्ध आक्सीजन से फेफड़ा जुड़ा जात रहे। शहर में कूड़ा जहाँ चार–चार ट्रक निकलत रहे, ओइजा छोटकी गाड़ी में ले ना बटुराता। सफाई कर्मचारी बे सड़क बहरले खुश रहत रहले। आदमी केतना परदूषन गन्दगी फइलावत रहल ह, अब जनाता।

जंगल के जानवर शहर के सड़कन पर छुट्टा घुमत बाड़े, स्वच्छन्द, निर्भय होके शहर के आबोहवा ले ताड़े। करोना करतन सफाई? जवन जानवर कूड़ा करकट प्लास्टिक खाके आपन पेट भरत रहले ह, ऊ लाचार हो गइल बाड़े। के उनका के खाना खिआई? शहर में कहीं तालाब, पोखरा, पानी टैंक बा ना जहाँ से आपन पियास बुझइहें। शादी बिआह सभ बन। कसाई चीन पर करोना दुनिया में फइलावे खातिर राष्ट्रसंघ में मुकदमा चले के चाहीं। बेमार देशन के मुआवजा मिले के चाहीं। अइसन बेमारी केहू के ना छोड़लसि ह। चाहे उ कर्मचारी होखे, डाक्टर होखे, अफसर होखे, राष्ट्रपति भा प्रध ानमंत्री होखे। कहाउति एक घर डाइनो बक्सेली। बाकिर करोना महाकाल? डाक्टर बाबू के फोन बाजे लागल। उ उठि के चलि गइले। जात जात रुकि के कहले, केतना आदमी के करोना बानि बदलि दिहलसि ह। बहुत जाना त घर में बइठल बइठल खा खाके मोटा गइले ह; हानि के साथे–साथे लाभो मिलल हऽ। लोगन के थोर बहुत अनुशासन आ जिये के ढंग त सिखाइये दिहलस ई कोरोना।

– राज साड़ी घर, चौक कटरा, बलिया।

कथा भर औकात

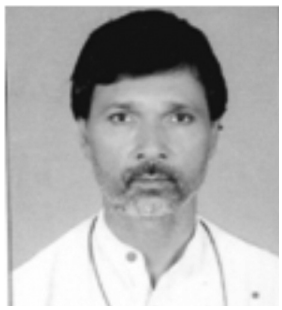

प्रकाश उदय

एगो कवना दो देश में, एगो राजा रहन। रजवा के सात गो रानी रही। सातो रनियन से एकए गो लइका रहे। जवना रानी से पुछाय तवन बतावे कि हमरा एगो राजकुँवर, रजवा बिना पुछले बतावे कि हमरा सात गो।

आ एगो कवना दो दोसरा देश में, एगो रानी रही। रनिया के सात गो राजा रहन। सातो रजवन से एकए गो लइकी रहे। जवना राजा से पुछाय तवन बतावे कि हमरा एगो राजकुँवरी, रनिया बिना पुछले बतावे कि हमरा सात गो।

रजवा के सातो राजकुँवर जले छोटे–छोटे रहले तले रजवा के दिन उन्हनी के साथे खेलत–खेलावत मजे में बीतल, बाकिर बढ़त–बढ़त सातो राजकुँवर जब एकइस पार क गइले त आपुसे में खेले लगले, रजवा अकेल पर गइल। सातो राजकुँवर जब आपुसे में खेले लगले त सातो रनियन में दिदिया–बुचिया होखे लागल। रजवा दुसरकी के बोलावे त ना आवे कि तिसरकी के अँगुरी पड़कावे के बा, छठवीं के बोलावे त ना आवे कि पहिलकी के ढील हेरे के बा। सतवीं कहे कि चउथकी साथे दू दान अवरू गोटी खेल लेब, त पँचवीं से कहब कि राजा जी बोलावत बाड़े जइबू त जा, ना त दू दान तूहूँ खेल ल। रजवा अवरू अकेल पर गइल।

जवना रानी से पुछाय तवन बतावे कि हमरा सात गो राजकुँवर, रजवा से पुछाइत त बताइत कि हमरा केहू ना।

त राजा कहले कि हमरा एगो अठवीं रानी चाहीं। चहला के देर रहे। जतना हथिवाह, ओकरा से दोगिना घोड़वाह, आ जतना घोड़वाह, ओह से दोगिना पाँवपैदल सिपाही लिहले, आ चल दिहले अठवीं रानी के जोह में।

रनिया के सातो राजकुँवरी जले छोटे–छोटे रहली तले रनिया के दिन उन्हनी के साथे खेलत–खेलावत मजे में बीतल, बाकिर बढ़त–बढ़त सातो राजकुँवरी जब अठारह पार कइली त आपुसे में खेले लगली, रनिया अकेल पर गइल। सातो राजकुँवरी जब आपुसे में खेले लगली त सातो रजवन में भइया–बबुआ होखे लागल। रनिया दुसरकू के बोलावे त ना आवे कि तिसरकू खातिर चुनौटी में चूना भरवावे जाए के बा, छठऊँ के बोलावे त ना आवे कि पहिलकू के मिर्जई में खोंच लागल बा, रफू करावे जाय के बा। सतऊँ कहे कि चउथकू से दू गाल बतिया लेब त पँचऊँ से कहब कि रानी जी बोलावत बाड़ी जइबऽ त जा, ना त दू गाल तूहूँ बतिया ल। रनिया अवरू अकेल पर गइल।

जवना राजा से पुछाय तवन बतावे कि हमरा सात गो राजकुँवरी, रनिया से पुछाइत त बताइत कि हमरा केहू ना।

त रानी कहली कि हमरा एगो अठवाँ राजा चाहीं। चहला के देर रहे।

जतना हथिवाह, ओकरा से दोगिना घोड़वाह, आ जतना घोड़वाह, ओह से दोगिना पाँवपैदल सिपाही लिहली आ चल दिहली अठवाँ राजा के जोह में।

अब चाहे आज चाहे काल्ह चाहे परसों, चाहे एह जंगल में चाहे ओह में, चाहे एह नगर में चाहे ओह में, 'अठवीं–रानी–चाहीं' राजा के, 'अठवाँ–राजा–चाहीं' रानी से भेंट त होखहीं के रहे। त भेंट भइल। रजवा के हाथी रनिया के हाथी से कहले स कि भला भेंटइलऽ स भाई, ना त ई रजवा हरमजादा अभी अवरू के जाने कतना धउराइत ! रनिया के घोड़ा रजवा के घोड़ा से कहले स कि भला भेंटइलऽ स भाई, ना त ई रनिया हरमजादी अभी अवरू के जाने कतना धउराइत ! अइसने कुछ एने के पाँवपैदल के ओने के पाँवपैदल से आ ओने के पाँवपैदल के एने के पाँवपैदल से कहे के रहे, बाकिर कहल केहू से केहू ना कुछुओ, कि कवन ठेकान कि कवन जाके रजवा के काने लगा आई, रनिया के काने लगा आई, कि फलनवा कहत रहे कि रजवा हरमजादा, फलनवा कहत रहे कि रनिया हरमजादी ! जवन बात हथियन प भरोसा क के हाथीलोग कह के हलुकाऽ गइल आ घोड़वन प भरोसा क के घोड़ालोग कह के हलुकाऽ गइल, तवने बात के बोझा लेले–देले हथिवाह, घोड़वाह आ पाँवपैदल भाईजीलोग जब जमीन प ढहला लेखा बइठल त हथियन के बड़ा मोह लागल, घोड़वन के बड़ा मोह लागल। मोह लागल, त उन्हनी के अपना–अपना पोंछ से, अपना–अपना देह के माछी–मच्छड़ के साथे–साथे थोर–बहुत उन्हनियो के देह के माछी–मच्छड़ उड़वलन स, आ एही माया–मोह के चक्कर में, जइसे सब दिन, तइसे ओहू दिन, खूँटा ना तुड़वलन स।

बाकिर पोंछ ना रजवा के रहे, ना रनिया के रहे। त के उड़ावे माछी, के उड़ावे मच्छड़। ना रजवा के आँखिन नीन, ना रनिया के आँखिन नीन। त बइठला के अनमाना, दुन्नो में दुक्खम–सुक्खम होखे लागल। कइसे–कइसे... पुछाइल आ अँइसे–अँइसे...बतावल गइल। त पता चलल कि इनिका एगो अठवाँ के आस, उनुका एगो अठवीं के तरास। त होत–होत भइल कि अठवाँ लायक हम होखीं त हमरे के अठवाँ होखे द, त होत–होत भइल कि अठवीं लायक हम होखीं त हमरे के अठवीं होखे द। त भइल कि सातो रानी का कहिहें, सातो राजा का कहिहें ! त भइल कि उँह, ना ढील हेरे से फुरसत पइहें ना कुछ कहे पइहें, भइल कि उँह, ना चुनौटी भरवावे से फुरसत पइहें, ना कुछ कहे पइहें। त भइल कि सातो राजकुँवर का कहिहें, सातो राजकुँवरी का कहिहें !

राजा कहहीं जात रहन कि 'उँह', रानी कहहीं जात रही कि 'उँह', कि राजा के मन के रजाई अन्हरिया में चल गइल, एकइस–गुना–सात–साल के बपाई अँजोरिया में चल आइल, रानी के मन के रनियाई अन्हरिया में चल गइल, अठारह–गुना–सात–साल के मतरियाई अँजोरिया में चल आइल। बाप के अपना तिसरकू के चउथका साल के बेरामी इयाद परल कि कइसे केहू के गोदी जाय त काँय–काँय करते रह जाय, हमरा गोदी आवते चुपा जाय ! इयाद परल त लगले सुसुके। मतारी के अपना सतवीं के छठवाँ साल के बदमासी इयाद परल कि कइसे अपने रानी बन गइल, अपना बाकी बहिनियन के राजा बनवलस आ गिनला प एगो कम पवलस त छेरियाऽ गइल कि माई के सात गो राजा, हमरा एगो कम कइसे ! इयाद परल त लगली बिहँसे। भइल कि काहे तू बिहँसलू, काहे तू सुसुकलऽ। बतवली कि काहे हम बिहँसलीं त ऊहो बिहँसले, बतवले कि काहे हम सुसुकलीं त ईहो सुसुकली।

सुसुकत–बिहँसत बिहान भइल। बिहान भइल त रानी कहली कि अ हो, जब सात से मनभरन ना भइल त अठवाँ से होइए जाई, एकर कवन गरण्टी ! त राजा कहले कि हँ हो, जब सात से ना भइल मनभरन त अठवीं से होइए जाई एकर कवन गरण्टी !

त एने से रानी कहली कि ए हो, काहे ना हमके बना ल तू आपन सम... आ ओने से राजा कहले कि हे हो, काहे ना हमके बना ल तू आपन सम... आ ओने से रानी कहली कि 'धिन', आ एने से राजा कहले कि 'धी'। राजा जब रानी के मीठेमुँहे 'समधिन' कह के गोहरवले, त राजा के लागल कि रानी प सोभल ई समधिन कहाइल, आ रानी जब राजा के मीठेमुँहे 'समधी' कह के गोहरवली, त रानी के लागल कि राजा प सोभल ई समधी कहाइल।

पता ना कि साँच कि झूठ, बाकिर सुने में आवेला कि चिन्हाय मत तवना खातिर बस अतने कि समधी के 'धी' के 'धा' में बदल दियाइल आ ओही समधी–समधिन वाला दिन के इयाद में तबला के बोल में 'धा धिन धिन धा' आइल।

त भइल कि ए हो, हमरा त तूहीं एगो समधी भेंटइबऽ, तहरा त सात गो समधी भेंटइहें ! त भइल कि हे हो, हमरा त तूहीं एगो समधिन भेंटइबू, तहरा त सात गो समधिन भेंटइहें ! त भइल कि समधी त सातो समधिन के सात गो भेंटइहें आ भेंटइहे त सातो समधी के सात गो समधिन। बाकिर तवन त तब, जब सातो समधी के, सातो समधिन, कहिहें कि ओक्के, सातो समधिन सातो समधी के कहिहें कि ओक्के। त भइल कि कइसे ना कहिहें कि ओक्के। अब्भी ना कहिहें त तब त कहिहें जब राजकुँवरी कहिहें स कि राजकुँवरसब ओक्के, राजकुँवर कहिहें स कि राजकुँवरीसब ओक्के। त भइल कि ना कहिहें स राजकुँवरी तब ? ना कहिहें स राजकुँवर तब ? तब, रानी होके सोचली जब रानी, त सोचली कि केकरा बेंवत कि रानी से बाँव–दहिन जाई ! तब, राजा होके सोचले जब राजा, त सोचले कि केकरा बेंवत कि राजा से बाँव–दहिन जाई ! बाकिर माई होके सोचली जब रानी त चिन्ता से चललली, फिक्किर में पर गइली। बाप होके सोचले जब राजा त चिन्ता से चलले फिक्किर में पर गइले।

अब जब रजवे चिन्ता से चल के फिक्किर में, जब रनिए चिन्ता से चल के फिक्किर में, त के पूछेला हाथी के, के पूछेला घोड़ा के। के पूछेला हथिवाह के, के पूछेला घोड़वाह के। के पूछेला पाँवपैदल के। जले सहले सहाइल तले त सहाइल, जब ना सहाइल, त हार–दाँव देके, पाँवपैदललोग घोड़वाहन के कान में, घोड़वाहलोग हथिवाहन के कान में फुस्फुस्फुसाइल कि, की त कहऽ स भाई, ना त केहू से कुच्छो कहवावऽ स भाई... कि आन के चिन्ता में, आन के फिक्किर में आपन दिन कतना नसाई ! हमनो के घर बा, दुआर बा, खेत बा, बधार बा, कि हमनो के बाल–बाचा बा, कि हमनो के बाबू, कि हमनो के माई !

त हथिवाहलोग हाथी से कहवावल, घोड़वाहलोग घोड़ा से कहवावल। कहवावल त हाथीलोग कहले हँकड़ के, आ घोड़ालोग हिनहिना के कहले कि तेहीं एगो नइखस रे रजवा, तेहीं एगो नइखिस रे रनिया, हमनियो के बानीं। हथियन के हँकड़ल जब सुनाइल, सुनाइल जब घोड़वन के हिनहिनाइल त रजवा के चिन्ता चटक गइल, फिक्किर फेंकाऽ गइल, रनिया के चिन्ता चटक गइल, फिक्किर फेंकाऽ गइल। त कहले राजा कि एगो हमहीं त नइखीं, सात गो राजकुँवर बाड़े, सातो के सात गो माई। त हमहीं काहे सोचीं, ऊहो लोग सोची। त कहली रानी कि एगो हमहीं त नइखीं, सात गो राजकुँवरी बाड़ी, सातो के सात गो बपसी। त हमहीं काहे सोचीं, ऊहो लोग सोची। त भइल कि केहू के केहू प थोपल मत जाय, जइसे हम पा गइलीं तोह के, तू हम के, सब्भे के सब्भे के पावे दिआय।

हथियन के गुरभेली खिया के आ घोड़वन के रहिला, तनाइल तम्बू उखड़ाइल आ बिदाई के गाना गवाइल। रानी आपन सात हाथी देके राजा के बिदाई कइली, सोना–चानी के हउदा से साज के, राजा आपन सात घोड़ा देके रानी के बिदाई कइले, सोना–चानी के जीन से साज के। रानी राजा के गुन गावत अपना राज, अपना रनिवास में गइली, राजा रानी के गुन गावत अपना राज, अपना रजवास में गइले।

एने रानी के गुन गवला से राजा जब फुरसत पवले त अपना सातो रानी से जा–जा के कहले कि हमरा त पतोह के सवख, तहार तू जानऽ। त सातो रानी बटोराऽ के कहली कि हमनी के सवख त तहरा से जादे। त राजा कहले कि जोहीं ? त सातो जनी कहली कि जोहब जा हमनी के, तहार कवन, पतोह जोहे जइबऽ, मेहरारू लेके आ जइबऽ ! त राजा कहले कि हथिसार में सोना–चानी के हउदा–साजल सात गो हाथी बा, लेके जा, जोहऽ जा। कहला के देर रहे, सातो जनी चल देली।

ओने राजा के गुन गवला से रानी जब फुरसत पवली त अपना सातो राजा से जा–जा के कहली कि हमरा त दमाद के सवख, तहार तू जानऽ। त सातो राजा बटोराऽ के कहले कि हमनी के सवख त तहरा से जादे। त रानी कहली कि जोहीं ? त सातो जना कहले कि जोहब जा हमनी के, तहार कवन, दमाद जोहे जइबू भतार लेके आ जइबू। त रानी कहली कि घोड़साल में सोना–चानी के जीन–साजल सात गो घोड़ा बा, लेके जा, जोहऽ जा। कहला के देर रहे, सातो जना चल देले।

हथियन के रस्ता चीन्हल रहे, घोड़वन के रस्ता जानल रहे। रानीलोग हथियन के हेने हुदुकावे, बाकिर ऊ ओनहीं जायँ जेने जाय के रहे। राजालोग घोड़वन के होने हाँके, बाकिर ऊ ओनहीं जायँ जेने जाय के रहे। त एने रानीलोग कहल, ओने राजालोग कहल कि बुझाता कि भगवान के कुछ आपन मर्जी बा।

ऊ दिन आ आज के दिन, जवना बात प आपन कवनो बस ना, तवना के 'भगवान के मर्जी' कहे के चलन, तहिया जवन चालू भइल, तवन आज ले चलत बा, चलते जात बा।

घोड़ालोग कतनो रेहों–रेहों चलल, दुलकी प, आ हाथीलोग कतनो तेज चलल, दोमत, बाकिर जहाँ पहुँचे के रहल तहाँ घोड़ालोग, राजालोग के लेले–देले, जइसे हर दाईं हर ठाईं पहुँचेला, ओसहीं एह कथवो में, एहू ठइँया एहू दइँया, हाथीलोग से पहिले पहुँच गइल। राजालोग घोड़ा के पेट प कतनो एँड़ियावल, घोड़ा लोग अड़ गइल, त अड़ गइल। त राजालोग बूझ गइल कि ईहे बुला ऊ, भगवान के मर्जी वाला जगहा ह। सोचले त रहे लोग कि भगवान के मर्जी वाला जगहा प सात गो दमाद–जोग नवहा–नवतरिया एँड़ी–दोंड़ी–तिल्ली–चहुँरी–चाँप–सेख–सुतिर्जा करत भेंटाऽ जइहें, बाकी इहँवा त जेने देखऽ तेने, घोड़ा आ हाथी के लीद, तम्बू–कनात के खूँटा आ बाँस। दसो दिशा ताक के आ झाँक के, जब बइठल लोग थाक के, त हरियर मन ठूँठ भइल, भगवान प भइल भरोसा बुझाइल कि टूट गइल। ई टुटलका जले सहले सहाइल, तले त सहाइल, जब ना सहाइल, त हार–दाँव देके, अपना के साफ–सफाई में जोतल लोग, अहरा बोझल लोग, आटा मँड़ाय लागल, आलू–बैगन भुनाय लागल। अदिमी पीछे सात के हिसाब से सात–साते उनचास आ एगो अपना रनिया के जोड़ के पचास गो फुटेहरी के आटा सनाइल आ मँड़ाइल, बाकिर गढ़ाइल त गिनाइल त पचास के दुन्ना, एक प दू सुन्ना हो गइल। जे सनले रहल सेकर कहनाम कि हमरे दोष, अधिका सनाऽ गइल, जे मँड़ले रहल सेकर कहनाम कि हमरे दोष, अधिका मँड़ाऽ गइल। बाकिर, दोष देबे खातिर नया–नया भेंटाइल रहन भगवान, त सबके दोष सबसे उठा के उनुके माथे मढ़ाऽ गइल।

अभी फुटेहरी झराते रहे, चोखा मिंसाते रहे कि सातो हाथीलोग सातो रानीलोग के लेले–देले आ गइल। रानीलोग जब देखल कि सब कुछ अतना साफ आ सगरो अतना सफाई, आ हाथी से उतरत कहीं कि सेवकाई में सत–सत गो सुग्घर जवान पहिलहिंए से बाटी–चोखा बना के हाजिर, त जाहिर बात कि भगवान प ओह लोग के भरोसा अवरू अटूट भइल। ओने राजालोग जब देखल कि अचके में सोझा, अइसन अटूट आ अइसन अचूक सुघराई, त भगवान से टूट गइल भरोसा फेरू से जूट गइल।

ऊ दिन, आ आज के दिन, तहिए से भगवान प मरदन के भरोसा बात पीछे टूटत आ बात पीछे जूटत, आ तहिए से भगवान प मउगिन के भरोसा एक बे जूटल त भगवनवो के तुरले ना टूटल।

त टूट के भइल स्वागत–सत्कार। जे सनले रहन से कहले कि भला कि बढ़ाऽ के सनलीं, जे मँड़ले रहन से कहले कि भला कि बढ़ाऽ के मँड़लीं। कहाँ उठाँव कहाँ बइठाँव का खियाँव का पियाँव के लागल जब झरी, आ रानीलोग सुनली जब सातो सेवकान के लस–फस बतकही, बाते–बाते जी–जी, त जान गइली कि इन्हनी के ना खेत के ना बधार के, हमने–अस अद–बद के कवनो–ना–कवनो दरबार के। बाते–बाते जनली लोग कि जइसे हमनी के एगो के सात गो, ओसहीं इन्हनियो के एगो के सात गो। त दुन्नो तरफ से, बाते–बाते भइल कि जिनिगी भ त एक–साथे–साते के जनलीं जा, धन्न भगवान, कि एही जिनगानी में आज, सात–साथे–सात के जनलीं जा। त राजालोग कहले कि आवत बेर रनिया से ना कहले रहितीं जा कि 'तें जइबे जोहे दमाद त भतार लेके आ जइबे', त आज लवटि के देखइतीं जा कि देख, हमन सातो के सात गो, तोरा एको ना। रानीलोग कहली कि आवत बेर रजवा से ना कहले रहितीं जा कि 'तें जइबे जोहे पतोह त मेहरारू लेके आ जइबे', त आज लवटि के देखइतीं जा कि देख, हमन सातो के सात गो, तोरा एको ना।

जब राजालोग जानल कि रानीलोग के सात गो पतोह के दरकार त कहल लोग कि धन्न भगवान कि कुँइया पठवलऽ पियासा के पास। जब रानीलोग जानल कि राजालोग के सात गो दमाद के दरकार त कहल लोग कि धन्न भगवान कि कुँइया पठवलऽ पियासा के पास। जब पारापारी राजालोग पारापारी रानीलोग के पारापारी श्समधिनश कह के गोहरावल, त राजालोग के पारापारी लागल कि रानीलोग प सोभल ई समधिन कहाइल पारापारी। जब पारापारी रानीलोग पारापारी राजालोग के पारापारी 'समधी' कह के गोहरावल, त रानीलोग के पारापारी लागल कि राजालोग प सोभल ई समधी कहाइल पारापारी।

पता ना कि साँच कि झूठ, बाकिर सुने में आवेला कि चिन्हाय मत तवना खातिर बस अतने कि तनी–मनी हेर के फेराइल, फेर के हेराइल आ ओही समधी–समधिन वाला दिन के इयाद में तबला के सोरह

मतरा वाला समूचा तीन ताल आइल,'धा धिन धिन धा, धा धिन धिन धा, धा तिन तिन ता, ता धिन धिन ता'।

अब, जले कथा के सुननिहार ई हिसाब लगइहें कि एक–एक रानी कै–कै बेरा समधिन कह के गोहरावल गइली, कि एक–एक राजा कै–कै बेर समधी कह के गोहरावल गइले आ कुल कै बेरा समधिन आ कै बेरा समधी के भइल गोहार, आ जले सही हिसाब के सबका से पहिले लगवनिहार अपना ईनाम में एक पीछे सात के हिसाब से खवाइल बाटी के बाद बाँचल बाटी के चोखा संगे पइहें आ कले–कले खइहें, तले सातो रजवा, सातो रनिया सोच–साच के फारिग हो जाय भर पा जइहें टाइम कि घर–बइठी रनिया जो ना मानी, तब ! कि घर–बइठा रजवा जो ना मानी, तब ! कि ना मनिहें खेलत–पिछुआरी सब राजकुँवारी जो, तब ? कि ना मनिहें खेलत–दलानी सब राजकुँवारा जो, तब ?

सातो रानी सातो राजा, अभी 'ना–मनिहें–तब' के चिन्ता से चलबो ना कइले, 'का–होई–तब' के फिक्किर के पँजरा अभी पहुँचलो ना रहले कि हाथीलोग हँकड़ देल, घोड़ालोग हिनहिनाइ देल। त भइल कि हमहन के तरफ से तोनहन के ओक्के, तोनहन के तरफ से हमहन के ओक्के, बाकी के तरफ से बाकी के ओक्के बाकी सब जाने। केहू के केहू प थोपे वाला हम के, तू के ! हमन जइसे पा गइली तोनहन के, तोनहन हमन के, सब्भे के सब्भे के पावे दिआय।

त हथियन के गुरभेली खिया के आ घोड़वन के रहिला, बिदाई में एने से गवाइल कि मोका परी त तोनहन खाती सातो जन थुम्ही–अस गड़ा जाइब, ओने से गवाइल कि मोका परी त तोनहन खाती सातो जनी तम्मू–अस तना जाइब। रानी लोग आपन सातो हाथी राजालोग के देल, राजालोग आपन सातो घोड़ा रानीलोग के देल आ रानीलोग अपना राजकुँवरलोग के भाग सराहत अपना राजा के रजवास पहुँचल, राजालोग अपना राजकुँवरी लोग के भाग सराहत अपना रानी के रनिवास पहुँचल।

ओने राजा देखले कि रानीलोग हाथी प गइल, घोड़ा प आइल त बूझ गइले कि रानी होके गइलिन लोग, समधिन होके अइलिन लोग। ऊ लोग कुछ कहिती, ओकरा पहिलहिंए कहले कि जवन तहन लोग के मंजूर तवनो हमरो मंजूर, अपना लइकन से बाकिर, पुछिहऽ लोग जरूर। त कहल लोग कि ओह लोग से जब पूछब जा तब पूछब जा, अबहीं त नइखे बुझात, कि बिना कुछ बतवले जे बूझ गइल बात, अइसन मनबुझना अपना पियवा के, कइसे में छोड़ीं जा अकेल !

राजा अकेल से सतकेल भइले आ सतकेल भइले त अइसन झेल गइले, कि मने–मने कहले कि भला भगवान, कि सात साते रहल, आठ ना भइल ! बाकिर, ओही भला भगवान के मार कि जब सात के आइल बात, त सब कुछ भुला के, अचके में पूछ बइठले कि अ हो, सातो समधिन के, सातो समधी, बरोबरे परले पसन्न कि कुछ बेसी कम ? त सातो जनी पुछली कि क हो, तू कइसे जनलऽ कि अद–बद के साते गो ? ना बेसी ना कम ? रजवा क हक–बक बन्द। कुल्हि किस्सा गा–गा के परल सुनावे कि कइसे–कइसे, सात समधी जहँवा से तोनहन कमइलू, तहँवे से हमहूँ, अगसर एगो समधिन कमइलीं। रानीलोग कहली कि बाड़ऽ त रजऊ तू भारी खिलाड़ी, बाकिर का, कि हमहन प आपन सम्बन्धिन तू थोपलऽ ना, अपना से आपन सम्बन्धी कमाय से हमहन के रोकलऽ ना, त समधिन तहारी, हमनो के ए राजा, जतना तोहरा, ओतने पियारी...।

एने रानी देखली कि राजालोग घोड़ा प गइल, हाथी प आइल त बूझ गइली कि राजा होके गइलन लोग, समधी होके अइलन लोग। ऊ लोग कुछ कहिते, ओकरा पहिलहिंए कहली कि जवन तहन लोग के मंजूर तवनो हमरो मंजूर, अपना लइकिन से बाकिर, पुछिहऽ लोग जरूर। त कहल लोग कि ओह लोग से जब पूछब जा तब पूछब जा, अबहीं त नइखे बुझात, कि बिना कुछ बतवले जे बूझ गइल बात, अइसन मनबुझनी अपना बनिया के, कइसे में छोड़ीं जा अकेल !

रानी अकेल से सतकेल भइली आ सतकेल भइली त अइसन झेल गइली, कि मने–मने कहली कि भला भगवान, कि सात साते रहल, आठ ना भइल ! बाकिर, ओही भला भगवान के मार कि जब सात के आइल बात, त सब कुछ भुला के, अचके में पूछ बइठली कि अ हो, सातो समधी के, सातो समधिन, बरोबरे परली पसन्न कि कुछ बेसी कम ? त सातो जने पुछले कि क हो, तू कइसे जनलू कि अद–बद के साते गो ? ना बेसी ना कम ? रनिया के हक–बक बन्द। कुल्हि किस्सा गा–गा के परल सुनावे कि सात समधिन जहँवा से तोनहन कमइलऽ, तहँवे से हमहूँ, अगसर एगो समधी कमइलीं। राजालोग कहल कि बाडू त रनियऊ तू भारी

खिलाड़िन, बाकिर का, कि हमहन प आपन सम्बन्धी तू थोपलू ना, अपना से आपन सम्बन्धिन कमाय से हमहन के रोकलू ना, त समधी तहार, हमनो के ए रानी, जतना तोहरा, ओतने पियार...।

ओने राजा अपना सातो रानी साथे बइठले, सातो राजकुँवर के बोलवले, सब–सब बात बतवले, बतवले कि हमहन के आपन सम्बन्धिन से, अपना सम्बन्धी से राजी, अब तोनहन के बारी। जइसे मन तइसे जाँचऽ जा, सँवाचऽ जा आ आके बतावऽ जा। तोनहन के राजी त हमहन के राजी आ तोनहन के ना जी त हमहन के ना जी।

एने रानी अपना सातो राजा साथे बइठली, सातो राजकुँवरी के बोलवली, सब–सब बात बतवली, बतवली कि हमहन के आपन सम्बन्धी से, अपना सम्बन्धिन से राजी, अब तोनहन के बारी। जइसे मन तइसे जाँचऽ जा, सँवाचऽ जा आ आके बतावऽ जा। तोनहन के राजी त हमहन के राजी आ तोनहन के ना जी त हमहन के ना जी।

एने सातो राजकुँवरी मूँड़ी में मूँड़ी जोड़ के बइठली, ओने सातो राजकुँवर मूँड़ी में मूँड़ी जोड़ के बइठले। कइसे जाँचल जाय, कइसे सँवाचल जाय ! उपाय–उकित लगावल गइल, जोग–जुगत जगावल गइल। राजकुँवरवन के एकमत में देर भइल, राजकुँवरियन के मति तनी जल्दी एकमेक भइल। त सातोजानी, भेस बना लिहली कड़ियल मर्दानी। मोछ डंकमारू, दाढ़ी जानमारू। सँउसे घोड़साल से बीछ के, एक रंग–रूप के, छुअत में उड़न्त, सात गो घोड़ा लहावल लोग, अपना हाथे खरहरावल लोग, हीरा–मोती से सजावल लोग, आ लगावल लोग एँड़, त एक्के उड़ान में नदी–पहाड़ के पार, अपना आपन–बननिहार सुन्नर–से–सुन्नर–स–सुग्घर–से–सुग्घर ससुरार। हरियर खेत आ सकस खरिहान, आ रहबट सब, राही–बटोही के छहाँय भर छावल, चिरइन के खोंता लगावे भर बढ़ के बनावल। जेकरा से पूछऽ से रजवा के गुन गावत, रनियन के गुन गावत, राजकुँवरवन के गुन गुनगुनात। राजकुँवरी सुनली जा त अइसन उछहली जा कि लगली जा खुला मैदान में घोड़ा धउरावे, करतब–प–करतब जगावे। लोग–बाग जुट अइले, घर–घर से उठ अइले। मजमा के आगे, ठाढ़ भइले आके, राजकुँवर सातो–के सातो, जनता के जै–जै–जैकार–बिच फरके से बरत–जगमगात, एक–एक करतब प चिहात, सिहात, एँड़ी से मूँड़ी ले दोम के, देखनिहार–देखौनिहार के जोश में जोश मिलावत, थपरी बजावत, गमछा लहरावत। देखली जा उन्हनी के अँइसे उपट के जब देखत, त आप–से–आप, करतब में अवरू कुछ आइल कमाल, अवरू कुछ कइली धमाल।

साँझ भइल, साँझ से रात भइल। लोग–बाग त अपना–अपना गिरिही लवटि गइल, बाकिर, राजकुँवर, सातो–के–सातो, ठगइला–अस ठाढ़–के–ठाढ़। कहले जा कि भइया कमाल के करतबी तू सातो जवान, तोनहन से दुनो हाथ दसो नोह जोड़ के अरदास, कि जतना मन ततना लगा ल जा दाम, नगद में माँगऽ भा सोना भा चानी, जमीन भा जजात, बाकिर, कहे के बा अतने, आ ऊहो लजात–लजात, कि घोड़ा ई सातो हमनी के दे द जा, बदला में जवन मन, जतना मन ले ल जा। पुछाइल कि से त ठीक बा, बाकिर ई त बतावऽ कि घोड़ा ई चाहीं त काहे खाती ? बतावल गइल कि कुछुए दिन बाद, बन–ठन के दुलहा–दमाद, जाय के बाटे बराती, तवने खाती, घोड़ा ई सातो के सातो हमनी के चाहीं। पुछाइल कि तय बा बियाह कि कुछ बाकी बा ? तय बा त ले जा, शादी–बियाह में भइल मददगार त पुन्न के काम ... बाकिर कुछुओ जो बाकी बा त घोड़ा त हमहन के अतना ना दामी बा ... अतना ना दामी बा ... कि देले ना तोनहन से कब्बो दियाई। त बतावल गइल कि झूठ कहाई त मूँह दुखाई, दू तिहाई तय बा, एक तिहाई बाकी बा। समधी के तरफ से समधिन के हामी बा, समधिन के तरफ से समधी के हामी बा। समधी से समधीसब, समधिन से समधिनसब राजी बा। राजी सब समधी सब समधिन से, राजी सब समधिन सब समधी से। बाकिर का, कि दुलहिनसब तरफ से ई हामी, बाटे कि नाहीं, हमनी के जानीं ना, आ हमनी के हामी अभी बाकी बा...।

त भइल कि बाकी ना रहित, त आजे आ अबहिन, सातो घुड़सवारन के सहित, घोड़ा ई सातो–के–सातो, तोनहन के होइत, बाकिर ... बाकिर, तोनहन के हामी अभी बाकी बा त घोड़ा ई बहुतो से अधिका से जादहीं कुछ दामी बा। ओतना भर ना सोना–चानी तोनहन के पास बा, ना रुपया–पइसा, ना जमीन–जैजात। त राजा के बेटा भइले, छिनबऽ त छीन त लइबऽ जा, किनबऽ त कीन ना पइबऽ जा।

–– त तोहनियो के मानऽ कि छीन न पाइब जा, आ हमनियो के मनलीं कि कीन न पाइब जा। त तीसर कवनो उपाय बतइबऽ त बतावऽ जा, ना त खाली हाथे लवटावऽ जा।

–– उपाय त बा, बाकिर बतावत में हमहन के लाज बा, मानत में तोनहन के ईजत प आँच बा। हमनी से बतावल ना जाई, तोहनी से मानल ना जाई।

देर ले भइल कि बतावऽ–बतावऽ, देर ले भइल कि जाय द, छोड़ऽ, हटावऽ। तीन बे कहाइल कि सुन के खिसियइबऽ जा, तीन बे कहाइल कि सुन के खिसियाइब ना। तब जाके कई–कई किस्त में कहाइल कि घोड़ा ई सातो–के–सातो, लेके त केहू चल जाई, बाकिर का, कि इन्हनिन के आपन बना के त ऊहे रखि पाई, जे पिछला घोड़वाहन से, घोड़ा पीछे सात लात खाई। त तोनहन त रानी–बेटउआ, हमहन के करतब कमउआ, कइसे में खइबऽ जा हमहन से लात, त रात भइल, जइतऽ जा, दाल–भात खइतऽ जा माई–बाप साथ...

त कहले जा राजकुँवर कि से त सही बात, कि बहुत भइल रात, देखत त बाटे ना आस–पास केनियो से केहू, तलुओ देखात बा इन्हनी के नान्हे, लाल, कमल–कोमल सुकवार...। त बड़कू से छोटकू ले कहले कि अप्पन जब गर्रज त भला कवन हर्रज !

त चुपचाप, पीठ उघार के भइल लोग ठाढ़, मूँद के आँख, मने–मने मिनती कि जतना जल्दी बीते, बीत जाय सात के गिनती। बाकिर का, कि पहिला परल जब लात, दुसरका के जइसे कि जाग गइल आस, आ अजब अन्हरगर्दी कि जब हो गइल कि हो गइल सात, त छोटकू से बड़कू ले जतना चिहा के, ओतने दुखाऽ के, कहले कि हाय हो ! हतना जल्दी !

सातो करतबी, सातो घोड़ा के लगाम जब सातो लतियावल के धरावल त केहू ना जानल कि लगाम धरावे वाला लोग लगाम धरावे के पहिले गलती से हाथ धराऽ देल कि लगाम धारे वाला लोग लगाम धारे के पहिले गलती से हाथ ध लेल। गलती सुधरल किदो सुधारल गइल, आ जात–जात बड़ा सँपर के कहल गइल आ बिना कुछ कहले सुनल गइल कि हे हो तू सातो करतबी, धन्न भाग अइलऽ जा, करतब देखइलऽ जा, आ अइसन ई अजगुत घोड़ा लहवइलऽ जा। त हमनी के घोड़ा पुरनका अब खोलऽ जा, आ हाथ जोड़ तोनहन से अतने निहोरा बा कि जवन भइल केहुओ से कुछुओ मत बोलऽ जा, रतेराती देसवा से बहरी तू हो ल जा कि जाने मत केहू कि कुछ सउदा होखेला एहूँ !

चलि देले सात–साथ पूरुब आ सात–साथ पच्छिम। पुरुब ओर भइल कि भइया हो बबुआ हो, पिठिया प कइसन दो होता सनसनी ! पच्छिम ओर भइल कि दिदिया रे बुचिया रे, तलुआ में कइसन दो होता गुदगुदी !

राजकुँवरी सातो के सातो बता दिहली हँस के कि हमहन के हे बापू, हमहन के हे अम्मा, तोनहन के बस में। तोनहने के राजी में राजी। त भइल कि आहा, अब होखे तइयारी। गहना गढ़ाय कपड़ा सिआय। त भइल कि राजकुँवर ना होइहें राजी त का होई सब–सब तइयारी ! तँवाई ? त भइल कि काहे तँवाई, आपन तइयारी अपना कामे आई।

भगवान के माया कि शादी–बियाह के, जड़ाऊ से लेके झमकाऊ ले, सोना से चानी ले, हीरा से मोती ले, गहना से गुरिया ले साज के, आ साज–सिंगार के, ओढ़ान–पहिरान के सब–सब सरजाम सत–सत गो हाथी प लाद के, आ अपने, सोरहो सिंगार से एँड़ी से चोटी ले मात के, तर–ऊपर सुन्नर से सुग्घर, सात गो सहेली पधार अइली सीधे रनिवास में, लंक लचकावत, नैन मटकावत, पहिरला से जादे झमकावत कि हम मनिहारिन आ हम सजवनिहारिन, कि हम चुड़िहारिन आ हम पेन्हवनिहारिन, कि हम सोनारिन आ हम गढ़निहारिन, आ एक जनी जे बँचली से कहली कि बाकी सब हम, हम मेहँदी–लगवनिहारिन, हम गोदना–गोदनिहारिन, हम जुलुफ–झरनिहारिन...। दसो दिशा से घेर के, शुरू भइल देखे–देखावे के सिलसिला, लार टपक जाय, चीझ–बतुस अइसन नगीना, दाम बाकिर बहुतो से अतना ना जादे से अधिका से अधिका, कि सुन–गुन के पूस में टघर टपके टप–टप पसीना। तउलावत–मोलावत, सभनी जब थकली त कहली कि जेकरा नौ मन घीव होखे सेही ढरकावे आ राधा नचावे, हमनी त बबुनी हो, अपना घरे चलनी। रह गइली राजकुँवरी सातो–के–सातो। सातो हाथी प साजल सब–सब सरजाम निकलवा लेली, मोल–तोल करत–करत तीन पहर रात बितवा देली। अंतकाल कहली कि चीज त तोहनी के सब–सब अनमोल, आ अपने तू सभनी गुन के गिरोह, बाकिर का, कि बाप–मतारी के सँउसे खजाना खलियावल, हमनी से

कइसे के सँपरी ! त माफ करऽ बहिनी तू सात, समेटऽ जा सब–सब सरजाम, हमनो के हाथ बँटाइब जा, आ अतना जे तोनहन से मेहनत करवलीं, तवना के कीमत, जतना भर सावंग, चुकाइब जा। त भइल कि रनिवास में पसारल सामान, लवटा के अब कइसे ले जाइब जा ! हमनी के घूम–घूम–घरे–घरे–घुस बेचनिहारिन। छूँछे लवटला प केहू ना, कबहीं ना, कतहूँ ना पूछी। केकरा के कवन मुँह देखाइब जा। हमन के त धरम कि की त बेंच के जाईं जा, ना त मुँहकरखी लगाईं जा। त की त कीनिए ल, आ ना त रानी के, राजा के बेटी तू लोग, निमना मने छिनिए ल।

त भइल कि बा कवनो तीसर उपाय ? त भइल कि उपाय त बा, बाकिर बतावत में हमहन के लाज बा, मानत में तोनहन के इज्जत प आँच बा। हमनी से बतावल ना जाई, तोहनी से मानल ना जाई !

देर ले भइल कि बतावऽ–बतावऽ, देर ले भइल कि जाय द, छोड़ऽ, हटावऽ। तीन बे कहाइल कि सुन के खिसियइबू जा, तीन बे कहाइल कि सुन के खिसियाइब ना। तब जा के कई–कई किस्त में कहाइल कि कुछुओ के कीमत, की त दाम ना त पियार। दाम से दीहल में, दाम से लीहल में, सेर भ बरक्कत, त सवा सेर, प्यार से दीहल में, प्यार से लीहल में। त एकएगो हाथी के सब–सब सामान, सत–सत बस चुम्मन चटा दे, आ जे चाहे ले जाके अपना सनूक में सजा ले। बाकिर का, कि तोनहन त राजा–बेटुइया, हमनी के घरघुमनी गुँइया, कइसे तू हमहन के गाले लगइबू जा, त रात भइल, जइतू जा, पिहितू जा, खइतू जा, हमनी के छोड़–छाड़ सब कुछ, केनियो मुँहकरखी लगावे, चलि जाय दिहितू जा...!

त कहली जा राजकुँवरी कि से त सही बात, बहुत भइल रात, देखत त बाटे ना आसपास केनियो से केहू। आ देखे त देखे। जइसन हम सातो बहिनिया तइसन तू हमहन के सातो सखिया, सब गुन गुनिया। त भला कहऽ दिदिया, भला कहऽ बुचिया, चुमावन में केकरा आ कइसन गुनावन !

बाकिर का, कि एने, सातो बहिनिया भितर–घर पहुँचते, गाल तरहत्थी प धइले–धरइले, कहली कि बुचिया रे, दिदिया रे, गलवा प कइसन दो होता सिहरावन...!

आ ओने, रनिवास से, आ जनानी लिबास से बहरी निकलते, राजकुँवर सातो भयकड़ा, कहले कि भइया रे, बबुआ रे, अइला–अस काहे ना अइलीं जा, भगला–अस काहे के भइलीं जा ? अइसन ई होला चुमावन ? इगुत्ती–पिछुत्ती ले लुत्ती–लगावन !

अब जब बा सब सब से राजी, त भला बतावऽ एह कथा में, कहानी में, अब का धइल बाटे बाकी ! एक बस एकरा अलावा कि बाजल बाजा, ढोल–नगाड़ा, धूम–धड़ाका। मटकोड़–मँड़वान, हर्दी–भतवान। संझा–पराती, मतिरपूजा–घिढारी। देवतन के, पितरन के, नेवतन। इमली घोंटावल, लावा मेरावल। सेनुरदान–कन्यादान। मन्तर–झूमर, अंगेया–बीजे, कच्ची–पक्की...।

कोहबर में पहुँचले जब दुलहा लोग, त कहाइल कि अइसन कबित्त कुछ सुनावऽ कि दुलहिन लोग सुनते घूँघट–पट खोल दे। त कोरस में सातो के सातो सुनवले, श्बाह–बाह रे बाह मोर चूम–चटामश। आ सुनते के साथ, दुलहिन लोग दन्न–दे घूँघट हटवली, झम्म–से सातो दुलहवन के आँखिन में झँकली आ सातो में सातो घरघुमनी गुँइयन के देखली मुसुकात त पहिले त लजइली जा, तब मुसुकइली जा, आ ठठा के हँसली जा तवना के बाद। दुलहा लोग चिहाइल कि हमहन त हँसी के अतना बरवलीं जा, मुसुकिए से काम चलवलीं जा, आ इन्हनी के देखऽ कि अपने से आपन मजाक ! त दुलहिन लोग कहली कि कहीं त कबित्त के पुराईं जा ? भइल कि पुराईं जा। त पुरवली जा, आ गा के सुनवली जा कि श्एक–एक घोड़ा प सत–सत लात, आवऽ बतियावऽ जा चूम–चटामश। सुनते के साथ, दन्न–दे उठले जा, झम्म–से दुलहियन के आँखिन में झँकले जा, आ सातो में करतब–कमउअन के पवले मुस्कात त पहिले त लजइले जा, तब मुसुकइले जा, आ ठठा के हँसले जा तवना के बाद।

कोहबर के सातो दुलहवन के हँसी हहात, सातो दुलहियन के हँसी हहात, हुलसल चलल जब उधियात, सुख–सुधियन–सनात, त सातो समधी, सातो समधिन से भेंटत, समधी राजा आ समधिन रानी के समेटत, अरजा तक, परजा तक पहुँचल उजास, हाथी तक, घोड़ा तक पहुँचल, आ तय बा कि कथा के सुनवइयो तक पहुँची, कहवइयो तक पहुँची, आ जे कँउची से कतनो कँउची, तय बा कि ओहू तक पहुँची।

ओंइसे, एह कथवा के असहूँ कहल जाला, सुनल जाला असहूँ, कि एगो, चाहे जै गो, कवनो

देश के राजकुमारी रही, एगो, चाहे जै गो, कवनो देश के राजकुमार रहन, बियाह के बात चलल, त रजकुमरिया बदललस भेस, दाढ़ी–मोंछ लगवलस आ सामकरन घोड़ा धउरा के पहुँच गइल रजकुमरवा के देश, लागल घोड़ा धउरावे, एक से एक करतब देखावे। जे देखे से करतब प लोभाय, देखलस रजकुमरवा, त घोड़ा प लोभा गइल, कहलस कि हमरा चाहीं त ईहे घोड़ा चाहीं। साथी–सँघाती सहित्ते घुड़सवरवा किहाँ पहुँचल कि बेंची त कीन लेब, ना बेंची त छीन लेब। कहलस कि हे हो, घोड़ा के दाम लगावऽ आ अब्भी के अब्भी, नगदे पावऽ भुगतान, आ घोड़ा के रास थमावऽ। त कहलस घुड़सवार रजकुमरिया कि दाम बताइब त तू त राजकुमार, तहार त कुछ बिगड़ी ना, बाकिर का, कि तहार ई साथी–संघाती बेहोश होके गिरिहें जा त उठवले ना उठिहें जा, झुट्ठे हतियारी हमरा माथा प लागी। त राजकुमार, सब साथी–संघाती से कहले कि तोहनी के दूर तनी जइहऽ जा, बोलाइब त घोड़ा के लगाम धरे अइहऽ जा। एकन्ता पवली त राजकुमारी कहली कि ए हो, दाम त जवन बा तवन बड़ले बा, बाकिर निमना मने तू जद्दीजे दू लात हमरा से खा ल त घोड़ा ई मुफुते में पा ल। रजकुमरवा के कवनो कमी त रहे ना, बाकिर मुफुत के नाँवे अइसन ललचल कि अगल–बगल केहू ना लउकल त दन्न दे दू लात खा लेलस पीठ उघार के, आ बिना केनियो तकले, बिना अपना साथी–संघाती के बोलवले, घोड़ा के लगाम धइले, निकल गइले।

राजकुमारी लवटली आ बाप के बतवली कि रजकुमरवा तहरा दमाद लायक नइखे। पुछले कि काहे, त कहली कि मारऽ, मुफ्तुल्ला ह। त कहले बाप कि जवन पंडितवा बियाह ई बतवले बा, तवन गनना मिला के छतीसो गुन गिनवले बा, कि गजब के मेल बा, बियाह बस भइला के देर बा, ई उनुका किस्मत के खोली, ऊ इनिका किस्मत के खोली, कि भगवान के बनावल ई जोड़ी, ऊहे टूट जाई जे एकरा के तोड़ी। त तूहीं बतावऽ कि कइसे एह बियाह के बात हम तूरीं, तुरला के त माने कि अपने टूटीं ! त कहली राजकुमारी कि बियाह जो होइयो जाई त हम त दुलहाराम से एक्के बात अइसन बोलब कि सुन के जो भगिहें त कयामत के पहिले लवटि के ना अइहें। त कहले बाप कि ईहो बढ़िएँ ! भगिहें त तें त अपनो रजवा पइबे उनुको रजवा पइबे। भल के भल–भलिए !

रजकुमरवा के बारी। बदललस भेस, दाढ़ी–मोंछ लगवलस आ जा पहुँचल ओही रजकुमरिया के देस, दोकान सजा के बइठल आ अतना दामी–दामी गहना–गुरिया धइलस कि ऐरू–गैरू लोग त दोकान में अइबो कइलन त अइलन आ गइलन। त भइल कि अब त राजकुमारी जब अइहन त ऊहे कुछ–ना–कुछ कीन–बेसाह के जइहन। त राजकुमारी अगराइल अइलिन, मन भ गहना तउलइलिन। कहली कि दाम बतावऽ, आ अब्भी के अब्भी, नगदे पावऽ। त कहलस रजकुमरवा कि दाम बताइब त तू त राजकुमारी, तहार त कुछ बिगड़ी ना, बाकिर तहार ई जतना जानी सखी–सलेहर, से सब बेहोश होके गिरिहें त उठवले ना उठिहें, हमार दुकनदारी बिगड़िहें। त राजकुमारी सखी–सलेहर लोग से कहली कि तू लोग बहरी जा, बोलाइब त सामान उठावे अइहऽ जा। एकन्ता पवले त राजकुमार कहले कि ए हो, दाम त जवन बा तवन बड़ले बा, बाकिर निमना मने तू, अधिका ना, दू चुम्मा हमके चटा देबू त सँउसे दोकान के सब–सब सामान ई, मुफुते में पा लेबू। रजकुमरिया के कवनो कमी त रहे ना, बाकिर मुफुत के नाँवे अइसन मन ललचल कि अगल–बगल केहू ना लउकल त दन्न दे दू चुम्मा धरा देली, आ बिना केनियो तकले, सखी–सलेहर लोग के बिना बोलवले, सँउसे सामान अपने उठवली, निकल गइली।

राजकुमार लवटले आ अपना मतारी के बतवले कि रजकुमरिया तहरा पतोह लायक नइखे। पुछली कि काहे, त कहले कि मारऽ, मुफ्तुल्ली ह। त कहली मतारी कि जवन पंडितवा बियाह ई बतवले बा, तवन गनना मिला के छतीसो गुन गिनवले बा, कि गजब के मेल बा, बियाह बस भइला के देर बा, ई उनुका किस्मत के खोली, ऊ इनिका किस्मत के खोली, कि भगवान के बनावल ई जोड़ी, ऊहे टूट जाई जे एकरा के तोड़ी। त तूहीं बतावऽ कि कइसे एह बियाह के बात हम तूरीं, तुरला के त माने कि अपने टूटीं ! त कहले राजकुमार कि बियाह जो होइयो जाई त हम त दुलहिनराम से एक्के बात अइसन बोलब कि सुन के जो भगिहें त कयामत के पहिले लवटि के ना अइहें। त कहली मतारी कि ईहो बढ़िएँ ! भगिहें त तें त अपनो रजवा पइबे, उनुको रजवा पइबे। भल के भल–भलिए !

त भइल बियाह, ओसहीं, जइसे रजवन के होला। रुपल्ली मँगाय त तोड़ा, एगो मँगाय त जोड़ा। जब मन्तर पढ़ाय लागल त कहलस दुलहवा कि ए बाबा,

एक मन्तर हमहूँ बोलब। त भइल कि बोलऽ। त बोलल दुलहवा कि श्ओम–नोम ओम–नोम ओम भगवन्तम, चुम्मम चटन्तम्चट सउदा पटन्तम, तवने में सज्ज–धज्ज बियहे बइठन्तम, लज्ज ना लगन्तम।श मन्तर बोल के मुँदले आँख कि अब जब भाग जाई बिहुनी, तब्बे खोलब। केनियो ना कुछ सरसराइल त अब्बे खोलले। खोलले त देखले कि मन्तर के पहिले ले, चुका–मुका बइठल जे बिहुनी, से, मन्तर के बाद, कुछ अधिके थसकर के, अल्थी में पल्थी दे बइठल। अल्थी में पल्थी दे बइठल दुलहिया अब बोलल कि ए बाबा, एक मन्तर हमहूँ अब बोलब। त भइल कि बोलऽ। त बोलल कि श्ओम–नोम ओम–नोम ओम भगवन्तम, लातम खातम पीठ उघरन्तम, आसकरन घोड़ के आस पुरवन्तम, तवने प चट्ट–पट्ट बियहे पहुँचन्तम, लज्ज ना लगन्तम।श मन्तर के पहिले ले चुका–मुका बइठल दुलहवा, मन्तर के बाद, कुछ अधिके थसकर के, अल्थी में पल्थी दे बइठल।

अहा ... भगवान के बनावल ई जोड़ी ! टूट जाई ऊहे जे एकरा के तोड़ी ! त कइसे एह कथवा के, कथा के कहवइया अब छोड़े ! त कइसे एह कथवा के, कथा के सुनवइया अब छोड़े ! भय बा भयावन कि छूट मत जाय, ऊहे जे छोड़े ! त मत छोड़े, मत छूटे, तवनो के कइले उपाय, दोसर के, ऊहे भगवान। असहीं त ना जी, भगवाने कहाले भगवान ! उनुके कइले ई भइल चमत्कार कि कलऊ में, उहे रजकुमरिया, श्फ्रीश के नाम से लिहलस अवतार। आ उहे रजकुमरवा जब कलऊ में आइल, त नाम धराइल श्डिस्काउंटश। अब उठल सवाल कि राज–रजवाड़ा के बात, राज–रजवाड़ा के जात, त कहाँ एह फ्री जी के रखाय, कहाँ एह डिस्काउंट जी के रहबट दिआय ? राजमहल अब कहाँ कहूँ रहल, सभनी प पीपर, सभनी प बरगद, सब–के–सब ढहल। त फेरू से अइले भगवाने जी कामे। बड़े–बड़े सेठवन के सपना में अइले, कहले कि ऊठ, आ अइसन–अइसन मॉल, अइसन–अइसन शॉपिंग मॉल उठ के उठाव, उठवाव, कि राजमहल झूठ ! त रउरो जाईं, हमहूँ जाइब, वन प वन के, टू के, थ्री के फ्री के फैदा उठाईं, हमहूँ उठाइब। त आईं, हम्हूँ करीं, रउरो, आ उहो करे काउंट, कि कवना माल प कतना डिस्काउंट !

ओंइसे एह कथवा के असहूँ कहल जाला, सुनल जाला असहूँ, कि रजकुमरिया जब कहलस कि दू लात खइबऽ त मुफुते में घोड़ा ई पइबऽ, त कहलस रजकुमरवा कि आँख प तहरा पट्टी बन्हवाइब, तबे लात खाइब। त पट्टी बन्हाइल आ लात खवाइल। रजकुमरवा जब कहलस कि दू चुम्मा देइबू त मुफुते ई गहना कुल्हि पइबू, त कहलस रजकुमरिया कि आँख प तहरा पट्टी बन्हवाइब, तब्बे गाल बढ़ाइब। त पट्टी बन्हाइल आ चुम्मा दियाइल। बियाह के बेदी प राजकुमार जब चुम्मा के नाम प मरले गाभी, आ ओने से राजकुमारी, पटक दिहली तवना प लात के बात, त हँसले राजकुमार कि बन्हाइल त रहे तहरा आँख प पट्टी, जनलू ना कि लात जे खाइल ऊ हम ना, हमार गोड़–दबवना। त हँसली राजकुमारी कि बन्हाइल त रहे तहरा आँख प पट्टी, जनलऽ ना कि चुम्मा जे दिहली ऊ हम ना, हमार गोड़–दबवनी। त कहले राजकुमार कि कहाँ बाड़ी तहार गोड़–दबवनी, हम उनुके से बियहब। त कहली राजकुमारी कि बताइब, बाकिर पहिले बतावऽ कि कहाँ बा तहार ऊ गोड़–दबवना, हम ओकरे से बियहब।

त जइसे दिन बहुरल गोड़–दबवना के, जइसे दिन बहुरल गोड़–दबवनी के ओंइसे सभकर बहुरे।

बाकिर, एह कथवा के असहूँ कहल जाला, सुनल जाला असहूँ, कि कहलस गोड़–दबवना कि लतखोरी कबूल बा, बाकिर अइसन लतमरनी से बियाह ?! ना ना रे बाबा ना ! कहलस गोड़–दबवनी कि चुम–चटावन कबूल बा, बाकिर अइसन चुम–चटना से बियाह ?! ना ना रे बाबा ना !

त कथवा ई असहूँ कहल जाला, सुनल जाला असहूँ, कि बियाह भइल ओही गोड़–दबवनी के, ओही गोड़–दबवना से। आ तवना बियाह में, राजकुमारी, बस अतने, कि नचली, आ राजकुमार, बस अतने, कि गवले। बियाह से अधिका कुछ भइल, त अतने, कि ई उनुका नचला प गवले, ऊ इनिका गवला प नचली। आ नाचत आ गावत, भरल भवन में, नैनन से नैनन में के जाने का दो बतियावल लोग, कहल आ नटल, रीझल आ खीझल, आ आँख से आँख जब मिलावल लोग, त के जाने काहे, आ के जाने केकरा से अतना लजाइल लोग कि हाथ में हाथ, धइले–धरवले, के जाने कब दो, चलि भइले दुन्नो परानी, केने दो, कहँवा दो, चम्म से चमकि के आ झम्म से झमकि के, भरलका भवनवे से ना जी, एह कथवो कहलका से बहरा निकलि के !

त कथा–बाहर बात त, भइया हो, बबुआ हो, कथा–बाहर बात ! तवना के कहे भ, सुनावे भ, कहाँ कवनो कथा–कहवइया के औकात ! ●●

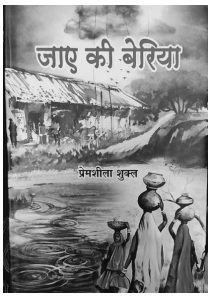

'जाए के बेरिया' : 'लोकमन' आ 'लोकचरित' के स्वर

डा0 अशोक द्विवेदी

('जाए के बेरिया' (कहानी संग्रह) : प्रेमशीला शुक्ल, अभिधा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर-२, मूल्य- २५०/-,)

(एक)

श्रीमती प्रेमशीला शुक्ल भोजपुरी के विचारशील कहानीकारन में गिनल जाली। नारी गरिमा आ ओकरा सम्मान का दिसाईं सचेत प्रेमशीला जी में नारी संवेदन आ रचनात्मक सोच के परिपक्वता बा। स्त्री जीवन आ ओकरा मन के थाह लेत, प्रेमशीला जी गृहस्थी, दाम्पत्य, प्रेम आ स्त्री–पुरुष संबंध का विविध पहलुअन के सुभाविक अंकन कइले बाड़ी। पुरुष–समाज में, स्त्री–स्वतंत्रता के छटपटाहट, बन्धन आ मुक्ति के अन्तर्द्वन्द, विसंगति आ नियति के जियतार उरेह करत, प्रेमशीला जी कहानी में ओह तमाम स्थितियन के रेघरियावत मिलिहें, जहाँ दबल–घेराइल हास–हुलास, व्यथा–वेदना आ अवसाद का साथ प्रेम के पीर, झिलमिलात लउकी। लोक आ लोकाचार में जरि–सोर फेंकले संकीर्णता, पक्षपात, अन्याय आदि पर प्रेमशीला जी प्रत्यक्ष हस्तक्षेप ना कइके, अप्रत्यक्ष सवाल जरूर करत बाड़ी। कुछ कहानियन में उनकर पात्र अपने भीतर कुलबुलात, सोचत–गुनत अपने से बतियावत मिलिहें। एह पात्रन के, कहानी में चित्रित करत खा प्रेमशीला जी कुशल शिल्पी लेखा कथा–बिनावट करत बाड़ी। कहानी के संयोजन आ सुभाविक निबाह में ऊ सफल बाड़ी।

पनरह कहानियन का एह संकलन में, लगभग कूल्हि कहानी, 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' आ "पाती" पत्रिका में छपल बाड़ी सऽ। इन्हनी में 'कथ' (कन्टेन्ट) के वैविध्य आ गहिराई बा। चरित्र चित्रण बा, संदर्भजनित सुभाविक संवाद का साथ कलात्मक ट्रीटमेन्ट बा। भोजपुरी अंचल आ भाषा समाज के अनुभूत साँच के कहानी में रुचिगर ढंग से स्मृति–चित्रन का साथ परोसल जदपि कठिन होला, तबो प्रेमशीला जी मँजल–कथाकार लेखा एक सब के सफल निबाह कइले बाड़ी।

संग्रह में कुछ चर्चित कहानी अइसन बाड़ी सऽ, जवना प चर्चा कइल जरूरी बुझात बा। जइसे शीर्षक कहानी बा 'जाए के बेरिया'। ई बड़ी मरमस्पर्शी कहानी बा। जातीय बान्ह आ बान्हन हमनी का समाज में बरिसन से आपुसी संबंध का स्वतंत्रता, समानता आ न्याय से वंचित रखले बा। ऊँच–नीच क झुठिया तामझाम में प्रेम जइसन सुभाविक आ पवित्र भाव–बेभाव होत आइल बा। ठाकुर रामलखन आ कँहाइन सुनरी का बीचे उपजल प्रेम–संबंध के अइसन करुन प्रेम–कथा, जवन समाजिक सोच आ परिवारिक दृष्टि से बान्हल बान्ह के तूरत, पल्लवत–फुलात अन्ततः, कथित मरजादा पर सवाल खड़ा करत, करुण–अन्त के साथ लय होता। पाठक का भीतर टीस भरत बा, तरह–तरह का तर्क का साथ। इहाँ कथा लेखिका, कहानीकार लेखा अपना लूर–ढंग आ शैली में कहानी कहि जात बाड़ी आ पढ़वइया अपना जिज्ञासु–भाव के साथ कहानी पढ़ जाता। पढ़ला का बाद ओकरा भीतर जवन भाव, जवन सवाल जागो। कहानी त जवन रहे, तवने रही। कहानी कहे वाला कहानी में अपना के ना थोपे, ऊ पढ़े वाला पर छोड़ देला।

'पियासल पण्डुक' जथा शीर्षक पति–पत्नी का अन्तरंग सम्बन्ध का मधे लमहर दूरी का कारन उपजल–जागल अतृप्त प्रेम–पियास आ तड़प के कहानी हवे, जवना में 'अकथ' के कहे खातिर सांकेतिक–चित्रन के सुन्दर संयोजन बा। स्त्री–भावानुभूतियन का कोंवर–छुअन से सजावल युवा पत्नी के अव्यक्त तड़प मरम छुअत बा। बहरबाँसू पति के बिना, गाँव–घर में सासु का सँगे बन्हाइल, ओकरा जीवन के कतने बसन्त अनासही संजोग–बिना अकारथ गुजर जाता। अइसना में मन के फुसिलाव–बहलाव खातिर सन्तान वाला भाव जागत कुम्हिलात बा। कहानी का नाटकीय अन्त में ईहे भाव सांकेतिक रूप में मूर्त्त हो जाता। लेकिन कइसे? पढ़वइया के समझे–बूझे खातिर कथालेखिका अपना प्रतीक के संकेत से सझुरा देत बाड़ी– 'पियासल पण्डुक केतना दिन पियासल रही?'

प्रेमशीला जी अपना कथ में ई सँकारत बाड़ी कि उनका कहानियन के भाव–भूमि सामान्य आ परिवारिक लोगन के बीच रहत तइयार भइल बा। ईहे सामान्य लोग आ लोक–परिवेश उनका रचना–संसार में बा। उनका अनुभवो–संसार के समृद्ध करे वाला ईहे लोग बा– "हमरा घरे आवे–जाए वाला, काम करे वाला आदमी–जन, पवनी–पसारी, जेके हम बाबा–ईया, चाचा–चाची कहीं हमरी खातिर झरोखा बनल लोग. .... हम पक्का विश्वास से कहि सकत बानी कि हमरा रचनाकर्म के आधार उहे लोग आ उहे परिवेश हऽ।" संग्रह में 'सवाल दर सवाल', जनाना दीदी 'नइ के चल', कुसुमावता कथा, 'जहुँ तुहुँ अइत', 'बेटी के बात', 'प्रेम कि बैर', 'जिनिगी के राहि', 'तपेसर' जइसन कहानियन के पढ़त खा प्रेमशीला जी के 'रचनात्मक आधार' वाला 'लोक' साफ–साफ प्रतिबिम्बित होत बा। चरित्र अपना सोगहग सरूप के दरस–परस करावत बाड़न सऽ। परिवेश झलक उठऽता। जइसन पात्र तइसन भाव–भाषा वाला संवाद आ बतकही बा। प्रेमशीला जी के कई कहानी अइसन बाड़ी स जवना में कहानी के मूल कथ अन्त में खुलता बा। जिनिगी के अन्तर्वाह्य पट धीरे–धीरे खोलत प्रेमशीला जी अपना सोच–विचार के बड़ा सुघराई से कहानी में बुनत–बइठावत बाड़ी। अपना कल्पना–शक्ति आ कथा–विवेक से कहानी के सजावल–सँवारल आ सलीका से परोसले नू काम हवे कहानीकार के। ऊहो अइसन कहानी, जवन पढ़निहार के ओह स्थिति में डाल देव कि "सोचऽ अपना मन में!" ●●

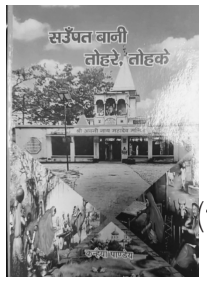

(दू)

'तोहरे, तोहके सउँपत' : काव्य-यात्रा के तिसरा पड़ाव

'सउँपत बानी तोहरे, तोहके' (कविता संकलन) : कन्हैया पाण्डेय, पाती प्रकाशन, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया, मूल्य- २००/-)

जीवन–जगत के समझत–गुनत "हेराइ गइल जिनिगी" (1999) से अपना काव्य–यात्रा के सुरूआत करे वाला कवि कन्हैया पाण्डेय कविताई का गुन–गिहिथान से भरल–पुरल सकारात्मक सोच वाला गतिशील रचनाकार हउवन। खेती–किसानी से जुड़ल रहल बाड़न। गँवई–कस्बाई जनजीवन में किसान–मजदूर के सूरतेहाल से वाकिफ बाड़न। एही से उनका रचना–संसार में अपना परिवेश आ समाज का प्रति लगाव त बटले बा, सामान्य जन का गरीबी आ तकलीफ का प्रति सह अनुभूतियो बा। नियति का मार का साथे दुर्दिन में दुख देबे वाला समाजिक–राजनीतिक बेवस्था का चक्र में निर्बल आ गरीब किसान–मजूर का प्रति संवेदनशीलता उनका कवि–कल्पना के जथारथ से बन्हले बा। कवि का नाते, अपना परिवेश में व्याप्त असमानता, अन्याय आ पक्षपात पर उनका क्षोभ बा, चिन्ताकुल करुणा आ वेदना बा, बाकिर एह सब का रचनात्मक अभिव्यक्ति में अतिशय भावुकतो बा। अइसन नइखे कि प्रेम का राग–रंग आ जीवन के हास हुलास से ऊ उदासीन होखसु, प्रकृति का सुघराई पर मुग्ध आ भाव विभोर ना होखसु। जीवन का हरेक पक्ष पर कवि के ध्यान बा। उनकर कविता गँवई–सिवान से निकल के देश आ ओकरा लमहर सीमा तक के फिकिर समेटले बिया। उनका कविता में विषय के विविधता बा, त अनुभूति के गहिराइयो बा।

अड़सठ गो कविता का ई संग्रह "सउँपत बानी तोहरे, तोहके" कन्हैया पाण्डेय के तिसरा काव्य–संग्रह हऽ, जवना में अधिकांश गीत बाड़न सऽ। घर–गृहस्थी, दाम्पत्य आ समय–संदर्भ से जुड़ल गीत। लोकराग आ लय से बन्हाइल एह गीतन में लोक–स्वर के लहर आ तरंग बा– कहीं प्रेम, कहीं विरह, कहीं पीरा, कहीं निहोरा भरल सीख बा त उलाहनो बा–

खटला से घर में सरम–लाज कइसन
हमरा से सपरी ना दुनिया के फैसन
हमनी का हवीं बनिहार।
हमार पिया माने ना कहना हमार!

....
तहरो दुलार बाबा चित से ना उतरे
उतरे ना माई के सनेह
जिनिगी ह बिटिया के मटिया के घइला
बिधना क अजबे उरेह।

....
तहरे रंग में रँगनी चुनरिया ए बालम
तुहूँ रँगवाइ लऽ
पगरिया ए बालम!

बेटी त बेटी हऽ। एक घरे पलाइल–पोसाइल, फेरु अनका घरे गइल। ससुरा गइलो पर ओसे नइहर ना छूटे। बाप–मतारी, भाई–भउजी, जोग–क्षेम का चिन्ता में, ओकर जीवन–कहानी आगा बढ़ेले। आज के विषम समय–संदर्भ आ परिस्थिति में बूढ़ पिता के हालत ओकरा के पीड़ा से विचलित क देत बा।

देखि–देखि रूप तहरो, आँखि डबडबाला हो
धेनुहिया होखल जाता
बाबा तोहरो देंहिया!
आजु पूरा जरत बाटे गउँवाँ नगरिया
नइखे बुझात कहाँ जाई ई डगरिया
देखि–देखि दुख तोहर लोग छपिटाता हो
धेनुहिया होखल जाता
बाबा तोहरो देंहिया!

आज कृषि–जगत, जवना परिवेश में बा, ऊ कन्हैया पाण्डेय का कविता–संसार में बा। व्यवस्था के विसंगति आ विद्रूप में त्रस्त–पस्त लोगन के देख–सुनि के कन्हैया पाण्डेय के कवि द्रवित, आकुल आ क्षुब्ध होइबे करी। एही से विद्रोही स्वर में, ऊ अनेत करे वाला भ्रष्ट–वर्ग के चेतावत लउकत बा–

गटकऽ लेके हक हमार तूँ
हम छछनी–छिछियाई
तूँ सूतऽ गद्दा–मसनद पर
हम भुइंयाँ लोटियाईं
हमरे धन पर मउज करऽ तूँ
करम ठोंकि हम रोईं
ना बाबा, अब ई ना होई।

अपना काव्य–यात्रा में, कविकर्म का निष्ठा का कारन कन्हैया जी अपना रचनाशीलता खातिर अनवरत संघर्ष करत आइल बाड़न। उनकर दुसरका कविता संग्रह 'तनिके दूर बिहान बा' (2007) में क्रमशः आइल निखार आ 'मेच्योरिटी' एकर प्रमान रहे। ऊ सामान्य जन का दुख आ निराशा भरल, असहज करे वाली स्थितियन का सँग–सँग, ओकरा कर्मयोगी भाव आ सकारात्मक प्रयासों के जिकिर करेलन। खासकर छोट किसान आ खेतिहर–मजदूर का जीवन के हर पक्ष पर उनकर नजर बा। सीख आ ओरहना के जरिये लोकलय के उनकर कुछ गीत त बरबस भीतर उतर जाए वाला बाड़न सऽ–

थोरिकी सा बाँचल बाटे धान अगहनिया
पिया तोहरी/नीक लागे ना रहनिया।
छोड़बऽ मजुरिया त होई ना गुजारा
इहे बाटे हमनी क जिये के सहारा
खूब समझावतारी बलमू के धनिया
पिया तोहरी/नीक लागे ना रहनिया।

भोजपुरी अंचल में दाम्पत्य आ परदेसी पति के लेके गीत लिखे के एगो लमहर कवि–परंपरा रहल बा। भिखारी ठाकुर, आ महेन्दर मिसिर त एह परंपरा के आधारे बा लोग। कमाये–खाये आ नोकरी खातिर बड़–बड़ नगरन में गइल पति आ गाँव–घर में आ नोकरी खातिर बड़–बड़ नगरन में गइल पति आ गाँव–घर में परिस्थितिवश रहला के विवश मेहरारुअन के व्यथा–बेबसी पर बहुत कुछ लिखाइल–गवाइल बा। कन्हैया पाण्डेय के कुछ गीत अनूठा बाड़न सऽ– ओमे न विरह सन्ताप बा, ना यौवन पर चढ़ल कवनो खास संकट बा, बलुक जथारथ से जूझत, बेसवाँग औरत के घर बचवला खातिर गोहार देत सनेसा बा। मामूली बातो के अरथवान ढंग से कहे के कौशल बा–

लरकल लरहिया बाटे/उजरल पलानी
कबले अइबऽ पिया
छिलबिल अँगना में पानी।
असवों के सेंवतल नइखे चुवेले पलनियाँ
भुरकुस नरियवा–थपुआ, ढहत बा मकनियाँ
उपराँ पलास्टिक कइसों/तनले हम बानी
कबले अइबऽ पिया!

लोकराग–रागिनी के गीत तबे अरथवान आ मरम छूवे वाला बनेला, जब ओमे जीवन के गाढ़ रंग आ मौलिक स्वर होला, सहज–सुभाविक 'टोन' आ जियतार चित्र होला। सिरजनवाली भाषा क बुनावट होले, संवेदित करे वाली अनुभूति क गहिराई होले। हालांकि कन्हैया जी

प्रचलित लोकगीतन का लटका–झटका आ टोन से अपना के बचा नइखन पवले। नतीजा ई कि जाने–अनजाने शब्द–पंक्ति के पुनरावृति आ दोहरावे वाला दोष आ गइल बा। ई दोष उनका पछिलो काव्य–संग्रहन में लउकेला आ एहू में बा। जइसे– 'केकरा पर करीं हम सिंगार/बलमु मोर आन्हर मिललें!', 'सवनवाँ में ना अइले बलमू', 'देवरा झाँकऽता', 'सेजरिया ए बालम', 'बलमू हमरी किरिया ना' आदि। दाम्पत्य जीवन से जुरल ऋतु गीतन में प्रकृति के आधार बनाइके, भावप्रधान संजोग–वियोग के गीत संगीतात्मक आरोह–अवरोह का साथ गावल–सुनावल जात रहल बा। एह संग्रह में एगो अइसने गीत बा, जवन प्रचलित बा। एमें नवोढ़ा पत्नी, अपना ननद से, संजोग का रससिक्त बातन के वर्णन करत बिया–

जेठ के महिनवा में झुरुके पवनवा
मड़इया नीक लागे, आहो छोटी ननदी।
कुहू–कुहू बोले जब कारी कोइलरिया
सँवरिया नीक लागे आहो छोटी ननदी।
पियवा के सँग सूतीं हम अँगनवा
जोन्हइया नीक लागे आहो छोटी ननदी।

'सउँपत बानी तोहरे, तोहके' में समरपन बा। ई कवि कन्हैया पाण्डेय का काव्य–यात्रा में तिसरा पड़ाव हऽ। एकर कवि, संघर्ष से हारल–थाकल नजर आवत बा। 'तनिके दूर बिहान बा' के कवि जथारथ से सामाना करत, अधिक मुखर आ बेबाक रहे। ऊ गाँव में समाइल विकृतियन आ राजनीतिक द्वेष–द्वन्द के जानत पहिचानत, आपसी कटुता–बैमनस्, गोलबन्दी आ खुदगर्जी वाली बात–बतकही आ ब्यवहार के बेबाकी से उजागर करत रहे। कइसन गाँव, जहाँ सिधवा के मुँह कुक्कुर चाटे, जहाँ चैन से जियल दुश्वार हो जाय–

छितराइल तार–तार उजरल बा खोंता
कउड़ी का मोले बिका गइले तोता
कउवन के काँव देख लीं!
फेंड़–रूख जहवाँ ना, रेंड़ परधान
कतहूँ सरेहिया में लउके न छाँव
पिया धन्हकत बा गाँव।

आवे जाये के नया सड़क आइल, बिजुली बत्ती सँग नया संसाधन बढ़ल, मनरेगा का नाँव पर कुछ ना कुछ भइबे कइल, इस्कूल आ स्वास्थ्य–सुविधा मिलल, बैंक–फेसल्टी बढ़ल, बोले–बतियावे वाला मोबाइल टेलीफोन भइल। ई कूल्हि भइलो का बाद का भइल? जब सनमति, सद्भाव आगैप प्रेमे ओराइ गइल। इरिखा, डाह, द्वेष आ अहंकार नाचे लागल। लाज–लेहाज आ मरजादा के बाते बेकार, धृष्टता, ढिठाई, निरंकुशता आ उज्जडई के राजनीतिक संरक्षन कइसन दो हालत बना दिहलस गाँव के। ऊ गाँव कहवाँ गइल 'जहाँ देवता क डेगे डेगे बास' रहे–

राह–घाट में बढ़ल छिनइती, झूठ बा चंबल घाटी
छत्तिस के संबन्ध भइल बा, दुख केकर के बाँटी
ठाँव–ठाँव शकुनी–दुर्जोधन, फेंके आपन दाँव रे।
बदल गइल बा, ऊहे नइखे पहिले वाला गाँव रे!

उमिर का ढलान पर कवि का भीतर जीवन के पुरनका स्मृति चित्र उभरत बाड़न स। गाँव अहरह नीन से जागत बा। आपन–पराया सभकर बिम्ब खाड़ होता– एगो करुण विषाद–भरल मोहाच्छन्न अवस्था बा। कवि के कुछ पुरान, कुछ नया दुख कविता में स्वर पावत बा। आस–भरोस के बात बेकार जनाता जिनिगी के हिसाब–किताब करत कवि के स्वर भींज उठऽता–

कमवाँ ओरइले ना, बितली जवनिया
सबही उतारि दिहले, नजरी के पनिया
हमरो बुझाइल अब आपन अवकतिया राम।

अर्थात्, ई समय समर्पन क बा। एही से जवन कुछ कवि का पास आँचल–बाँचल बा– ऊहे सँउपि रहल बा। जवन इहाँ मिलल, तवन फेरु इहवें सउँप दिहल बड़हन बात बा। 'तेरा तुझको सौंपता' वाला कवि निस्पृह–भाव अपनाइ लेव, एसे बड़ बात का होई? ●●

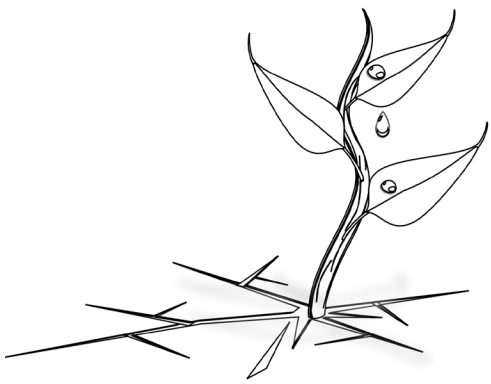

अनिल ओझा 'नीरद' के दू गो गीत

(एक)

दोसर का बूझी इहवाँ, दोसरा के बेमारी?
ऊ त बूझतारी चीलम, जेह पर चढ़ल बा अँगारी।।

देशवा के देखऽ अपना, आजु इहे हाल बा।
नेता लोग का करनी से, जनता बेहाल बा।।
मुट्ठी भरि भइले ई त, अंजुरिन्हि प' भारी।
बूझतारी चीलम, जेह पर चढ़ल बा अँगारी।।

आवेला चुनाव, इनिका ओठे परे फेफरी।
खोजे लागसु अबकी उद्धार हमार के करी?
जितला पर चमचनि के, भीड़ि लागे भारी।
बूझतारी चीलम, जेह पर चढ़ल बा अंगारी।।

एगो पारटी के शासन, अब त मोहाल बा।
मिलि-जुलि लूटें सभे, जनता के माल बा।।
घुरहू-कतवारूवो के, पाँव भइल भारी।
बूझतारी चीलम, जेह पर चढ़ल बा अँगारी।।

केकर बाटे राज, केकरा के गोहराईं?
बढ़ल ना कमाई, जेतना बढ़ल मंहगाई।।
पेटवे ले नइखे खाली, सइ गो बेमारी।
बूझतारी चीलम, जेह पर चढ़ल बा अंगारी।।

(दू)

किस्मति के हऽ खेल कि
हउवे समय के अइसन घानी।
जहवाँ जाली खेहोरानी, तहवाँ मिले आगि ना पानी।।

समय देखावे रंगई अइसन, बड़े-बड़े बहि जाले।
कुल्हिये अक्किलि कुल्हिये ताकत, कइल-धइल रहि जाले।
चतुर सुजान बनेले उजबुक, मति होई हलकानी।
जहवाँ जाली खेहोरानी, तहवां मिले आगि ना पानी।।

रावण आगे राम कबों, भीलन के आगे अर्जुन।
कबो कृष्ण रणछोड़ कहइले, समय के अइसन दुर्गुन।।
शक्ति नाहीं, समय हवे बलवान, इ रउआ मानीं।
जहवाँ जाली खेहोरानी, तहवां मिले आगि ना पानी।।

समय चलावे चक्र त तेजो तीर, कुंद होई जाला।
राजमहल के हरिश्चन्द्र, एक दिन फकीर होइ जाला।।
चोट सहे के हिम्मत चाहीं, लिखि जाई नया कहानी।
जहवाँ जाली खेहोरानी, तहवां मिले आगि ना पानी।।

मति समुझीं कमजोर इहाँ पर सब बाटे बलवान।।
तब काहें के हीन समझ, केहू के दूसत बानी।
जहवाँ जाली खेहोरानी, तहवां मिले आगि ना पानी।। ••

❑ हावड़ा, कोलकाता (पं० बंगाल)

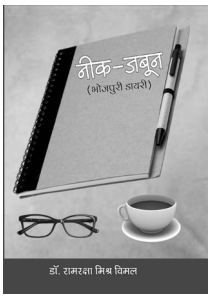

भोजपुरी साहित्य के समृद्धि) में 'नीक-जबून'

✍ डा0 अर्जुन तिवारी

('नीक-जबून' (कहानी संग्रह) : रामरक्षा मिश्र विमल, सजिल्दध्अजिल्द, मूल्य- १२०/-)

न समझने की ये बातें हैं न समझाने की
जिंदगी उचटी हुई नींद है दीवाने की।
– फिराक गोरखपुरी

दुख–सुख, हर्ष–विषाद, आशा–निराशा, हानि–लाभ, जीवन–मरण, यश–अपयश के संगहीं हमनी के जीवन चलत बा। कभी–कभी क्षणिक हास–परिहास हो जाला, जवना के यादगार बनावे खातिर कलम के सिपाही सभ आतुर रहेला आ ओकरा के लिपिबद्ध करेला। दैनिक घटना का संबंध में अपना मन का उधेड़–बुन के टाँकल एगो उत्तम विधा ह, जवना के डायरी कहल जाला। डायरी रोजाना के अनुभव आ तथ्य के स्मारक ह। डायरी लेखन में तीन बातन पर विशेष ध्यान दिहल जाला–

क– विवरण संक्षेप में होखे, तथ्यात्मक होखे।

ख– स्थान, घटना, अनुभूति स्पष्ट आ निष्पक्ष हो।

ग– कल्पनाशीलता, चित्रात्मकता, बनावटीपन से परहेज राखल जाव। लेखक के चिंतन–चरित्र–व्यक्तित्व के जाने–पहचाने के सुगम माध्यम डायरी ह। एहमें आत्मीयता, निकटता, क्रमबद्धता का समावेश से विलक्षणता आ जाला।

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल के नीक–जबून के पूरा पढ़ गइला पर हमरा आँख के आगे भक दे अँजोर हो गइल, हम भोजपुरी माई के धन–धन करे लगनीं। आज काल्हु नवका पढ़ाकू लोग कह देला कि भोजपुरी के साहित्य समृद्ध नइखे। ई कहेवाला के अब सुटुक जाएके चाहीं। 'नीक–जबून' जइसन भोजपुरी डायरी के पसंगो में दूसर भाषा के डायरी नइखे छपल। ई डायरी सत्यान्वेषण के नजीर के रूप में बा। सर्वे सत्यम् 'प्रतिष्ठितम' के अनुरूप सितंबर 2016 से अक्टूबर 2018 तक के कालखंड में जीवन में जवन–जवन घटना घटल ओकर पोस्टमार्टम करिके डॉ. विमल समाज के सचेत कइले बानीं।

एह ग्रंथ के पहिलके पन्ना जब हम पढ़नीं... 'अपना माटी के भाषा के गर्व से भाषा बनावल जा सकता, भोजपुरी में नेवता लिखल जाव'। ई पढ़ते हमारा देशरत्न बाबू राजेंद्र प्रसाद जी याद आ गइनीं। राष्ट्रपति रहते राजेंद्र बाबू अपना पोती का बियाह के कार्ड भोजपुरी में छपववले आ बँटले, जवना के शुरुआत 'सोस्ती सीरी सरब उपमा जोग....' रहे। महान लोग का चिंतन में केतना साम्य होला, एकर ई पुष्ट प्रमाण बा। एह दूरदर्शिता खातिर डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल जी के बधाई। एकरा पथ पर चलिके भोजपुरिया भाई आपन स्वाभिमान बढ़ावस त अच्छा। साँचो अइसने काम शुरू कइके भोजपुरी के स्वाभिमान से जोड़ल जा सकेला।

"रसियाव खाईं आ टन–टन काम करत रहीं' दिसंबर 2016 का डायरी में टाँकल बा। विमल जी लिखले बानीं– 'धन्य रहन हमार पूर्वज, बात–बात में बिग्यान। हम त आजुओ कहबि कि लजाईं सभे मति कि रसियाव देखिके लोग रउआँ के गरीब आ पुरान बूझे लगिहें। लउकी–भात आ रसियाव के परंपरा के जिंदा रहे दिहल जाव। एही प लउकजाबरि, अलुमकुनी, गादा के दालि, महुआ के लाटा, बजड़ा आ जोन्हरी के चिउरी, साँवा के भाका, टाडुनि के लाई आ दरिया–दही पर बात चले लागल अउर हमार कुछ बंगाली मित्र कबो अचरज से आ कबो भकुआ के हमनी के देखे लगलन।"

कृपाशंकर उपाध्याय जी भोजपुर कॉलोनी के जान रहीं, शान रहीं। आजु ओह नेह के दरियाव के इयाद से मन–प्राण भींज गइल बा –

"सूतल सनेह आके के दो जगा गइल।

जिनिगी में दरद के बा लहबर लगा गइल।"

एह पन्ना के कथ्य आ शिल्प दूनू बेजोड़ बा। आत्मीयता, स्वाभाविकता से परिपूर्ण ई डायरी सदाशयता आ मानवता के पाठ पढ़ा रहल बिया। आज के घोर मतलबी दुनिया में

'तुम्हें गैरों से कब फुर्सत, हम अपने गम से कब खाली ?
चलो बस हो चुका मिलना न तुम खाली न हम खाली।'

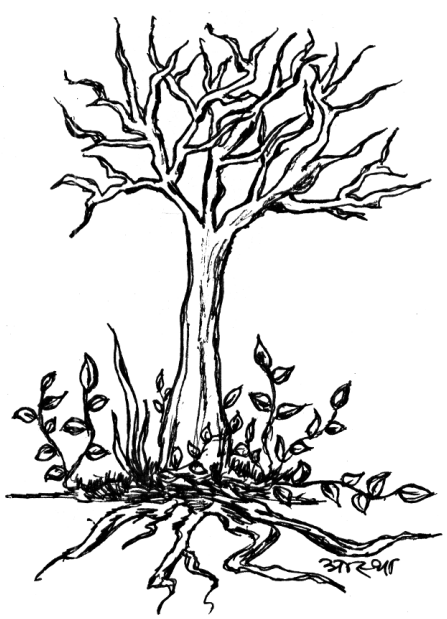

भाव–प्रवण डायरी–लेखन से मिसिर जी इतिहास पुरुष बन गइनीं।

'बगसर बिसरत नइखे' का बहाने भोजपुरी के साधक उपन्यासकार भारवि जी, भोजपुरी के गौरव 'विप्र' जी, भोजपुरी साहित्य मंडल, रामदयाल पांडेय जी, गणेश दत्त किरण आ रामेश्वर सिनहा 'पीयूष' जी के स्मरण महत्त्वपूर्ण बा। "आरा बलिया छपरा, भोजपुरी के अँचरा" हमरा खातिर पुरान पड़ गइल। हम त "बकसर बलिया छपरा, भोजपुरी के इहे अँचरा" कहींले।

'सगरी उमिरिया दरदिया के बखरा' सुनते हरिवंश पाठक 'गुमनाम' जी सामने खड़ा हो जाईंले–

"मटिया क गगरी पिरितिया क उझुकुन
जोगवत जिनिगी ओराइ
सगरी उमिरिया दरदिया के बखरा
छतिया के अगिया धुँआइ।"

एह चार लाइन के व्याख्या खातिर चार ग्रंथ लिखे के पड़ी। अल्प शब्द में अति विशाल भाव, रूपक अलंकार का बेजोड़ प्रयोग से भोजपुरी के खोइँछा भरे का चलते गुमनाम जी आ विमल जी के साधुवाद।

प्राचार्य डॉ. संजय सिंह 'सेंगर', सुनील सिन्हा के स्तंभ, धन्य बानी तुलसीदास जी, स्वामी मनोज्ञानंद, महेंद्र मिश्र के शिल्प–विधान आ कैलाश भइया जइसन पर डायरी लिखके अति विशिष्ट पल के यादगार पल के याद करत लेखक नई पीढ़ी का सामने अनुकरणीय बात–व्यवहार परोसले बाड़े ताकि साहित्य के प्रेरक तत्त्व सिद्ध हो जाव।

भोजपुरी में पहिले पहिले डायरी लिखके मिश्र जी जहाँ भोजपुरी के समृद्ध कइले बानी, वोही तरह 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' के चरितार्थ करे में अपने साहित्य–शिल्प, सौष्ठव के सदुपयोग कइले बानी। गद्य में लिखाइल ई डायरी संवेदना, मर्म आ उत्तम शैली का चलते पद्ये बुझाता। प्रकाशन नमन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स आकर्षक मुद्रण, विषिष्ट कवर पेज आ नीमन कागज के प्रयोग कइले बाड़े। उनका के अनघा बधाई। ई भोजपुरी डायरी भोजपुरी के मान, शान, स्वाभिमान बढ़ाई। एकर पाठक यशस्वी होइहें– एमें कवनो शक–सुबहा नइखे। डॉ. विमल अइसने कृति से साहित्य के भंडार भरत रहीं– हमार ईहे कामना बा। ●●